विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा फाउंडेशनल स्टेज

2022

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
फाउंडेशनल स्टेज
2022

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति

प्रस्तावना

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति की ओर से बहुत गर्व और सन्तोष के साथ मैं यह फाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) श्री धर्मेन्द्र प्रधान, माननीय शिक्षा मंत्री, भारत सरकार को प्रस्तुत कर रहा हूँ।

21वीं सदी के ज्ञान-समाज की चुनौतीपूर्ण मांगों को पूरा करने के लिए भारत स्वयं को तैयार कर सके, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 इस दिशा में एक परिवर्तनकारी पहल है। NCF, NEP 2020 के प्रमुख घटकों में से एक है। यह NEP 2020 के उद्देश्यों, सिद्धान्तों और दृष्टिकोण के आधार पर उपरोक्त परिवर्तन को सक्षम और ऊर्जावान बनाता है। इसका लक्ष्य सभी बच्चों को उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना है, जो हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित एक न्यायसंगत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के अनुरूप है।

भारत में 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए यह अब तक की पहली एकीकृत पाठ्यचर्या रूपरेखा है। यह NEP 2020 द्वारा स्कूली शिक्षा के लिए निर्मित 5+3+3+4 ‘पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय’ ढाँचे का सीधा प्रतिफल है।

फाउंडेशनल स्टेज 3-8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के एक एकीकृत दृष्टिकोण की कल्पना करता है। । इस चरण की परिवर्तनकारी प्रकृति से शिक्षा की विषयवस्तु और प्रतिफलों में गुणात्मक सुधार की उम्मीद की जाती है, जिससे हमारे बच्चों के जीवन को बेहतर भविष्य की ओर बढ़ाया जा सके। बच्चों के विकास की प्रारम्भिक अवधि से सम्बन्धित सभी अध्ययन और शोध, स्पष्ट रूप से इस निष्कर्ष की ओर ले जाते हैं कि इस दौरान उच्च गुणवत्ता वाली देखभाल और शिक्षा के सभी व्यक्तियों के लिए और इस प्रकार राष्ट्र के लिए सकारात्मक परिणाम होते हैं।

यह NCF, दुनिया भर में बहुत से अनुशासनों में हुए अत्याधुनिक शोध पर आधारित है। इनमें अन्य चीज़ों के अलावा तंत्रिका विज्ञान, मस्तिष्क अध्ययन और संज्ञानात्मक विज्ञान की बेहतर समझ शामिल है। इसके अलावा इस NCF में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की प्रैक्टिस से संचित अंतर्दृष्टि और विविध भारतीय परम्पराओं से प्राप्त विवेक व ज्ञान का भी विशिष्ट ध्यान रखा गया है।

जैसा कि NEP 2020 में स्पष्ट किया गया है, पाठ्यचर्या-संगठन, शिक्षणशास्त्र, समय व विषयवस्तु संगठन और बच्चे के समग्र अनुभव के लिए NEP अवधारणात्मक, प्रक्रियात्मक और व्यावहारिक दृष्टिकोण के मूल में ‘खेल’ का उपयोग करता है। NEP 2020 में व्यक्त बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बच्चों की उम्र के लिहाज़ से उपयुक्त रणनीतियों के साथ यह NCF एक स्पष्ट रास्ता भी दिखाता है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि NCF हमारे लोगों और राष्ट्र की ज़रूरतों-आकांक्षाओं के लिए जवाबदेह हो, इसमें सर्वश्रेष्ठ अनुभवों और ज्ञान का समावेश हो, हमने पूरे देश में व्यापक परामर्श किया। विद्यार्थियों और अभिभावकों सहित 10 लाख से अधिक इच्छुक नागरिकों, देश भर के 1.3 लाख से अधिक शिक्षकों और शिक्षाविदों, 32 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के 1550 से अधिक ज़िला स्तर के परामर्श और 35 संस्थान समूहों ने इस प्रक्रिया में भाग लिया जिससे हम लाभान्वित हुए। इसके अलावा राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों द्वारा गठित समूहों ने 25 विशेष प्रासंगिक विषयों पर 500 से अधिक पर्चे लिखे और इस प्रक्रिया में 4000 से ज़्यादा विशेषज्ञ शामिल थे। साथ ही राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा बनाए गए विशेषज्ञ समूह, जिसमें 175 से अधिक सदस्य थे, ने इन विषयों पर 25 पर्चे तैयार किए।

NCF के लिए प्राप्त इस सामूहिक ज्ञान और विवेक के इतने विपुल आधार के बाद चुनौती यह थी कि इनका विश्लेषण करते हुए एक ठोस, व्यावहारिक और प्रभावी संश्लेषण कैसे विकसित किया जाए जो धरातल पर व्यवहार में बदलाव ला सके। इसी चिन्ता के कारण NCF एक ऐसी भाषा, संरचना और विभिन्न प्रकार के दृष्टान्तों के साथ प्रस्तुत किया गया है जिससे व्यवहारकर्ता, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण शिक्षक हैं, अपनी वर्तमान वास्तविकताओं से इसे जोड़ने में सक्षम हो सकें। नए तरीक़े और दृष्टिकोण विकसित करने की ज़रूरत से उत्पन्न चुनौतियों को रेखांकित करने के लिए मैं इस समिति के काम के उपरोक्त पहलू पर ज़ोर दे रहा हूँ।

पाठ्यचर्या की यह रूपरेखा, स्कूली शिक्षा के लिए समग्र राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का एक अभिन्न अंग होगी, जो विकसित की जा रही है और जो 5+3+3+4 ढाँचे के शेष तीन चरणों को सम्बोधित करेगी, जिसमें 18 वर्ष की आयु तक के बच्चों की शिक्षा शामिल होगी। हालाँकि यह NCF अपने आप में पूरा है, पर अन्य चरणों के साथ इसके सम्बन्ध और निहितार्थ, स्कूली शिक्षा के लिए समग्र राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में तय किए जाएंगे । इसके अलावा, यह फाउंडेशनल स्टेज रूपरेखा, शिक्षा के इस स्तर के लिए शिक्षकों की तैयारी का मार्गदर्शन भी करेगी।

हम मानते हैं कि इस तरह की किसी भी रूपरेखा को ज़मीनी स्तर पर क्रियान्वयन से प्राप्त फीडबैक से सुधारा जाना चाहिए, इसके क्रियान्वयन के समुचित अनुभव के बाद हम ऐसा करेंगे।

भारतीय शिक्षा और उसके माध्यम से देश के लिए योगदान करने का अवसर हमें मिला, इसके लिए हम आभारी हैं।

के. कस्तूरीरंगन

अध्यक्ष

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति

20 अक्तूबर, 2022

बेंगलुरु

संक्षेपाक्षर और उनका विस्तार

Acronym	Full Form
BEO	Block Education Officer
BITE	Block Institutes of Teachers Education
BRC	Block Resource Centres
CBSE	Central Board of Secondary Education
CG	Curricular Goals
CRC	Cluster Resource Centres
DEO	District Educational Officer
DIET	District Institute for Education and Training
DIKSHA	Digital Infrastructure for Knowledge Sharing.
DISE	District Information System for Education
ECCE	Early Childhood Care and Education
ECE	Early Childhood Education
FLN	Foundational Literacy and Numeracy
NCF-FS	National Curricular Framework for the Foundational Stage
GDP	Gross Domestic Product
GER	Gross Enrolment Ratio
GOI	Government of India
GRR	Gradual Release of Responsibility
ICDS	Integrated Child Development Scheme
IECEI	India Early Childhood Education Impact
ITEP	Integrated Teacher Education Programme
MWCD	Ministry of Women and Child Development
NAS	National Achievement Survey
NCERT	National Council of Educational Research and Training
NCF	National Curriculum Framework
NCPFECCE	National Curricular and Pedagogical Framework for Early Childhood Care and Education
NCTE	National Council for Teacher Education
NDEAR	National Digital Education Architecture
NEP	National Education Policy
NER	Net Enrolment Ratio
NFHS	National Family Health Survey
NGO	Non-Governmental Organization
NIOS	National Institute of Open Schooling
NIPCCD	National Institute of Public Cooperation and Child Development

NIPUN	National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy Bharat Programme
PEEO	Panchayat Elementary Education Officers
POSHAN	Prime Minister's Overarching Scheme for Holistic Nutrition
PTR	Pupil–Teacher Ratio
QR	Quick Response Code
ROI	Return on investment
RtE	Right to Education
SARTHAQ	Students' and Teachers' Holistic Advancement through Quality Education
SCERT	State Council of Educational Research and Training
SEDG	Socio-Economically Disadvantaged Groups
SLAS	State Level Achievement Survey
SMC	School Management Committee
TET	Teacher Eligibility Test
TLM	Teaching Learning Materials
UDISE	Unified District Information System for Education
UNESCO	United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization
UNICEF	United Nations International Children's Emergency Fund
UT	Union Territory

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना **5**

संक्षेपाक्षर और उनका विस्तार **7**

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के बारे में **11**

अध्याय 1: प्रस्तावना और परिचय **13**

खण्ड 1.1: परिचय 15

खण्ड 1.2: भारत और दुनिया में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का विकास 19

खण्ड 1.3: NEP 2020 का विज़न 32

खण्ड 1.4: फाउंडेशनल स्टेज में बच्चे कैसे सीखते हैं? 39

खण्ड 1.5: फाउंडेशनल स्टेज के लिए स्कूल का सन्दर्भ 46

अध्याय 2: लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल **49**

खण्ड 2.1: परिभाषाएँ 51

खण्ड 2.2: लक्ष्य से सीखने के प्रतिफल तक 53

खण्ड 2.3: पाठ्यचर्या के उद्देश्य 56

खण्ड 2.4: दक्षताएँ 59

खण्ड 2.5: उदाहरणात्मक सीखने के प्रतिफल 64

अध्याय 3: भाषा शिक्षा और साक्षरता के प्रति दृष्टिकोण **71**

खण्ड 3.1: सिद्धान्त 73

खण्ड 3.2: फाउंडेशनल स्टेज पर भाषा शिक्षा और साक्षरता पर NCF का दृष्टिकोण 76

अध्याय 4: शिक्षणशास्त्र **81**

खण्ड 4.1: शिक्षणशास्त्र के सिद्धान्त 83

खण्ड 4.2: शिक्षण के लिए योजना 85

खण्ड 4.3: शिक्षकों और बच्चों के बीच सकारात्मक सम्बन्ध निर्माण करना 90

खण्ड 4.4: खेलों के ज़रिए सीखना – बातचीत, कहानियाँ, खिलौने, संगीत, कला और शिल्प 94

खण्ड 4.5: साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए रणनीतियाँ 115

खण्ड 4.6: सकारात्मक कक्षा-कक्ष वातावरण बनाना 128

खण्ड 4.7: वातावरण का आयोजन 136

अध्याय 5: शिक्षण के लिए विषयवस्तु का चयन, संगठन और संदर्भीकरण **139**

खण्ड 5.1: पाठ्यक्रम का विकास 141

खण्ड 5.2: विषयवस्तु चयन के सिद्धान्त 142

खण्ड 5.3: विषयवस्तु को संगठित करने के तरीके 148
खण्ड 5.4: शिक्षण-अधिगम सामग्री 154
खण्ड 5.5: किताबें और पाठ्यपुस्तकें 163
खण्ड 5.6: सीखने का माहौल 169

अध्याय 6: सीखना आगे बढ़ाने के लिए आकलन 173
खण्ड 6.1: आकलन के मार्गदर्शक सिद्धान्त 175
खण्ड 6.2: आकलन के तरीक़े और उपकरण 177
खण्ड 6.3: प्रभावी शिक्षण-अधिगम के लिए बच्चों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करना 184
खण्ड 6.4: आकलन का दस्तावेज़ीकरण और सम्प्रेषण 186

अध्याय 7: समय का नियोजन 191
खण्ड 7.1: दिन का नियोजन 193

अध्याय 8: अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण क्षेत्र 197
खण्ड 8.1: विकासात्मक विलम्ब और डिसेबिलिटी को संबोधित करना 199
खण्ड 8.2: स्कूल में सुरक्षा और संरक्षण 206

अध्याय 9: प्रिपरेटरी स्टेज तक की कड़ियाँ 209
खण्ड 9.1: विकासात्मक क्षेत्रों से पाठ्यचर्या के क्षेत्रों तक 211
खण्ड 9.2:पारिस्थितिकी तंत्र, शिक्षणशास्त्र और आकलन में निरन्तरता और परिवर्तन 212

अध्याय 10: एक सहयोगी पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) का निर्माण 213
खण्ड 10.1: शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाना 215
खण्ड 10.2: सीखने का समुचित माहौल सुनिश्चित करना 220
खण्ड 10.3: अकादमिक और प्रशासनिक पदाधिकारियों की भूमिका 223
खण्ड 10.4: अभिभावकों और समुदाय की भूमिका 225
खण्ड 10.5: तकनीकी का लाभ उठाना 228

अनुलग्नक 1: सीखने के प्रतिफलों के उदाहरणात्मक विवरण 231
अनुलग्नक 2: उदाहरणात्मक प्रक्रियाएँ 283
अनुलग्नक 3: फाउंडेशनल स्टेज के लिए NIPUN भारत और NCF की दक्षताओं की मैपिंग 337
अनुलग्नक 4: भारत और दुनिया भर में ECCE पर शोध 349
पारिभाषिक शब्दावली 355
सन्दर्भ (References) 359
ग्रन्थसूची (Bibliography) 361
आभार 367
राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के विकास के लिए विस्तृत और समावेशी प्रक्रिया 370

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के बारे में

फाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (National Curriculum Framework) को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy) 2020 की दृष्टि के आधार पर और इसके क्रियान्वयन को सक्षम बनाने के लिए विकसित किया गया है।

समूचे भारत के विभिन्न संस्थानों के लिए फाउंडेशनल स्टेज का अर्थ 3 से 8 वर्ष की आयु वाले बच्चे हैं। यह NEP 2020 द्वारा परिकल्पित स्कूली शिक्षा के शिक्षणशास्त्रीय पुनर्गठन और 5+3+3+4 पाठ्यचर्या का पहला चरण है।

पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या का तात्पर्य किसी भी संस्थागत व्यवस्था में शैक्षिक लक्ष्यों और उद्देश्यों के प्रति विद्यार्थियों के संगठित अनुभवों की समग्रता से है।

पाठ्यचर्या को बनाने और जीवन्त करने वाले तत्व बहुतेरे हैं। इनमें लक्ष्य और उद्देश्य, पाठ्यक्रम, सीखने-सिखाने की विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाएँ और आकलन, शिक्षण-अधिगम सामग्री, स्कूली और कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाएँ, सीखने का माहौल, संस्था की संस्कृति आदि सहित बहुत कुछ शामिल हैं।

ऐसे कई दूसरे मामले भी हैं जो पाठ्यचर्या और उसके क्रियान्वयन को प्रभावित करते हैं या पाठ्यचर्या के भीतर न होने के बावजूद उससे अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। इनमें शिक्षक और उनकी क्षमताएँ, अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी, संस्थानों तक पहुँच के मुद्दे, संसाधनों की उपलब्धता तथा प्रशासनिक और सहयोगी ढाँचे आदि शामिल हैं।

पाठ्यचर्या की रूपरेखा

समूचे देश की पाठ्यचर्या में भारत की गौरवशाली एकता और विविधता की समझ होनी चाहिए और इसके प्रति पाठ्यचर्या को पूरी तरह उत्तरदायी होना चाहिए। NEP 2020 की संकल्पना- जहाँ संस्थान और शिक्षक बेहद सशक्त हैं- जिनमें पाठ्यचर्या विकसित करना भी शामिल है- विविधता और इसके पोषण से ऊर्जा हासिल करती है। राज्यों के पास संवैधानिक अधिदेश (mandate) है कि वे अपने सभी बच्चों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करें और उनके विशिष्ट राज्यीय संदर्भ पाठ्यचर्या के प्रति उनके अपने दृष्टिकोण को तय करें।

देश भर में सामंजस्य और सद्भाव को संभव बनाते हुए तथा गुणवत्ता और समता के लिए आधार प्रदान करते हुए पाठ्यचर्या की रूपरेखा को देश में विविध पाठ्यचर्याओं को विकसित करने में मदद करने के लिए एक ढाँचे की तरह काम करना होगा।

इसलिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा पाठ्यचर्या विकसित करने के तत्व, मार्गदर्शक सिद्धान्त, लक्ष्य और संरचना प्रदान करती है। इसी के आधार पर राज्य, बोर्ड और स्कूलों के शिक्षकों सहित सम्बन्धित प्राधिकारियों द्वारा पाठ्यपुस्तकों सहित शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्यक्रम और आकलन विधियाँ विकसित की जाएंगी।

इस NCF के लक्ष्य

इस NCF का लक्ष्य, NEP 2020 की परिकल्पना के अनुसार शिक्षणशास्त्र सहित पाठ्यक्रम में सकारात्मक परिवर्तनों के माध्यम से भारत की स्कूली शिक्षा प्रणाली को सकारात्मक रूप से बदलने में मदद करना है।

ख़ासतौर पर इस NCF का लक्ष्य शिक्षा में सिर्फ़ विचारों को नहीं बल्कि व्यवहारों को भी बदलने में मदद करना है। चूँकि 'पाठ्यचर्या' शब्द, विद्यार्थियों द्वारा स्कूल में होने वाले समग्र अनुभवों को समाहित करता है, इसलिए 'व्यवहार' न सिर्फ़ पाठ्यचर्या की अन्तर्वस्तु और शिक्षणशास्त्र को सन्दर्भित करता है बल्कि इसमें स्कूल का परिवेश और संस्कृति भी शामिल है। पाठ्यचर्या का यही समग्र समस्त बदलाव, विद्यार्थियों के सीखने के समग्र अनुभवों को सकारात्मक रूप से बदलने में हमें सक्षम बनाएगा।

लक्ष्यों को संभव बनाने वाली NCF की विशेषताएँ

आरम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में हुए नवीनतम शोधों पर आधारित इस NCF का लक्ष्य यह है कि शिक्षा पेशेवर, जिसमें शिक्षक और अन्य प्रशिक्षक, स्कूल नेतृत्व, शिक्षा व्यवस्था के प्राधिकारी जैसे प्रॉजेक्ट ऑफ़िसर, क्लस्टर व ब्लॉक रिसोर्स पर्सन, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, शिक्षक-प्रशिक्षक, परीक्षा बोर्ड और पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम/पाठ्यपुस्तक विकास समूह आदि शामिल हैं, इसे समझ सकें, अपने को इससे जोड़ सकें और इसका इस्तेमाल कर सकें।

रुचि रखने वाले पाठकों को इस बात की तार्किक समझ प्रदान करना भी NCF का उद्देश्य है कि स्कूलों के लिए हमारी नई दृष्टि में शिक्षा कैसी दिखनी चाहिए। अपने पाठकों को इसके कारणों की समझ प्रदान करना भी NCF का उद्देश्य है। साथ ही NCF का यह भी उद्देश्य है कि भारतीय शिक्षा में बड़ी हिस्सेदारी रखने वाले अभिभावक, समुदाय के सदस्य और भारतीय नागरिक के रूप में कोई व्यक्ति इसमें क्या भूमिका निभा सकता है।

फिर भी इस NCF के केन्द्र में प्राथमिक रूप से शिक्षक ही है। कारण यह कि शिक्षा व्यवहारों के केन्द्र में शिक्षक ही है। जो बदलाव हम चाहते हैं, अन्ततः उसका पथ-प्रदर्शक शिक्षक ही होता है। इस तरह पाठ्यक्रम विकसित करने वालों, प्रशासकों और अन्य सहित सब को शिक्षक के दृष्टिकोण को अपनाना चाहिए।

इस प्रकार इस NCF का उद्देश्य ऐसी प्रस्तुति शैली और ढाँचा अपनाना है जो शिक्षक के लिए पठनीयता, पहुँच और प्रासंगिकता के उपरोक्त उद्देश्यों को संभव बनाए। NCF का उद्देश्य अन्तर्निहित दर्शन और सिद्धान्तों को स्पष्ट करना है, पर यह इन्हें केवल अमूर्तता के स्तर पर नहीं छोड़ता है बल्कि व्यवहार में भी लाता है।

इसे संभव बनाने के लिए और अपने विचारों को और अधिक स्पष्टता से सम्प्रेषित करने के लिए इस NCF में तरह-तरह के सन्दर्भों में वास्तविक जीवन के स्पष्ट उदाहरणों सहित व्यवहार के स्तर पर विभिन्न तरह के विवरण और विशिष्टताएँ शामिल हैं। शिक्षक या पाठ्यचर्या विकसित करने वाले इन उदाहरणों से बंधे नहीं हैं, लेकिन यह सोचा गया है कि इस तरह के विवरण प्रस्तुत NCF को समझ सकने, अपने को इससे जोड़ सकने और इसका इस्तेमाल कर सकने में मदद करेगा।

सर्वोत्तम संसाधन वाले संस्थानों की कल्पना के अनुरूप होने के साथ ही इस NCF का लक्ष्य वर्तमान आम संस्था (typical institution) और शिक्षक की वास्तविकताओं का लेखा-जोखा रखना भी है। इस तरह इस NCF का उद्देश्य हमारे सन्दर्भ की वास्तविकता से तो गहराई से जुड़ा ही है, मगर महत्वाकांक्षी भी है।

अध्याय 1
प्रस्तावना और परिचय

यह अध्याय फाउंडेशनल स्टेज के लिए NCF का एक आधार तैयार करता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा की अहमियत, भारतीय परम्परा में इसकी जड़ें, जीवन में इसके महत्त्व को रेखांकित करने वाले समसामयिक शोध व इन शुरुआती वर्षों में 'खेल' की केन्द्रीयता और इस समय परिवार व समुदाय द्वारा निभाई जाने वाली अहम भूमिका आदि को शामिल करते हुए एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

यह अध्याय NCF का मार्गदर्शन करने वाले मूल सिद्धान्तों और विज़न का भी एक ख़ाका प्रस्तुत करता है।

खण्ड 1.1
परिचय

1.1.1 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा

बच्चे के जीवन के पहले आठ साल बहुत ही अहम होते हैं। इन शुरुआती वर्षों में ही उसके जीवन भर की भलाई (well-being) और सभी आयामों यथा शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक में समग्रवृद्धि और विकास की नींव पड़ जाती है।

निश्चित रूप से, इन वर्षों में मस्तिष्क के विकास की गति, इन्सान के जीवन की किसी भी अन्य अवस्था की तुलना में अधिक तेज़ होती है। तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में हुए शोधों से हमें पता चलता है कि व्यक्ति के मस्तिष्क का 85% से अधिक हिस्सा 6 वर्ष की उम्र तक विकसित हो चुका होता है। यह शुरुआती वर्षों में बच्चे के मस्तिष्क के स्वस्थ व सतत विकास और वृद्धि के लिए उनकी उपयुक्त देखभाल और उपयुक्त प्रोत्साहन (stimulation) के विशिष्ट महत्त्व को इंगित करता है।

हाल ही में हुए शोध भी यह दर्शाते हैं कि 8 वर्ष से कम उम्र के बच्चे एक रैखिक और उम्र आधारित शैक्षिक रास्ते का अनुसरण नहीं करते। 8 वर्ष की आयु में आते-आते बच्चे अपने सीखने के रास्तों को इख़्तियार करने लगते हैं। 8 वर्ष की उम्र के बाद के सीखने और विकास की यह अन्तर्निहित विशेषताएँ भी होती हैं कि वे ग़ैर-रैखिक और गति में विविधता लिए होते हैं। हालाँकि, 8 वर्ष की आयु तक यह अन्तर इतने भिन्न होते हैं कि औसतन 8 वर्ष की आयु को सीखने के एक चरण से दूसरी चरण के संक्रमण बिन्दु के रूप में देखना प्रभावी रहता है। विशेष रूप से, केवल 8 वर्ष की आयु में ही बच्चे अधिक क्रमबद्ध (structured) रूप से सीखने के अनुकूल होने लगते हैं।

इस प्रकार प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) को आमतौर पर जन्म से आठ वर्ष तक के बच्चों की देखभाल और शिक्षा के रूप में परिभाषित किया जाता है।

1.1.2 फाउंडेशनल स्टेज

क) मुख्यतः घर पर : 0-3 वर्ष

3 साल की उम्र तक, अधिकांश बच्चे अपने घर परिवार के माहौल में बड़े होते हैं। कुछ बच्चे क्रेश (झूलाघर) भी जाते हैं। 3 साल की उम्र के बाद, बहुत से बच्चों का काफ़ी सारा समय आँगनवाड़ियों और प्री-स्कूल जैसी संस्थागत जगहों पर गुज़रता है। 3 वर्ष से अधिक उम्र के

बच्चों के लिए एक संगठित सेटिंग (organised setting) में उच्च गुणवत्ता वाली प्री-स्कूली शिक्षा प्रदान करना, NEP 2020 की प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक है।

3 वर्ष की आयु तक, घर का वातावरण ही बच्चेके लिए, पर्याप्त पोषण, अच्छी स्वास्थ्य की आदतें, ज़िम्मेदारीपूर्वक देखभाल, सुरक्षा और संरक्षण, और बचपन के आरम्भिक दिनों में सीखने के लिए प्रोत्साहन (stimulation) का एकमात्र प्रदाता होता है (और ऐसा ही होना चाहिए)। यही वह सब पहलू हैं जो ECCE का गठन करते और आधार बनते हैं। 3 वर्ष की आयु के बाद, पोषण, स्वास्थ्य, देखभाल, सुरक्षा और प्रोत्साहन जैसे घटकों पर घर पर तो काम होते ही रहना चाहिए साथ ही, आँगनवाड़ियों और प्री-स्कूली जैसे संस्थागत सेटिंग में उचित और पूरक तरीक़े से भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

3 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए, उपयुक्त ECCE में न केवल स्वास्थ्य, सुरक्षा और पोषण शामिल हैंबल्कि इसमें संज्ञानात्मक और भावनात्मक देखभाल तथा शिशु के साथ बातचीत, खेलना, घूमना, संगीत और आवाज़ें सुनना और अन्य इन्द्रियों ख़ासकर देखना, छूना आदि को विकसित करने के लिए उपयुक्त अनुभव उपलब्ध करवा पाना भी शामिल है। ताकि 3 वर्ष पूरे होते-होते, विकास के विभिन्न क्षेत्रों में इष्टतम विकासात्मक प्रतिफलों को हासिल किया जा सके। विकास के इन विभिन्न क्षेत्रों में शामिल हैं – शारीरिक और गत्यात्मक (motor), सामाजिक-भावनात्मक, संज्ञानात्मक, सम्प्रेषण, शुरुआती भाषा, उद्गामी साक्षरता और संख्या ज्ञान। यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि ये सभी क्षेत्र परस्परव्यापी हैं और निश्चित रूप से एक का विकास दूसरे पर निर्भर करता है।

घर के माहौल में 0-3 आयु वर्ग के बच्चों के लिए, उच्च गुणवत्ता वाली ECCE सुनिश्चित करने के लिए महिला व बाल विकास मंत्रालय द्वारा दिशानिर्देश और/या सुझावात्मक प्रक्रियाएँ विकसित और प्रचारित की जाएंगी।

ख) संस्थागत सेटिंग : उम्र 3 से 8

3 से 8 वर्ष की आयु के दौरान, संस्थागत माहौल में मिलने वाली उपयुक्त और उच्च गुणवत्ता वाली ECCE सभी बच्चों के लिए उपलब्ध होनी चाहिए। भारत में, आमतौर पर यह कार्यक्रम निम्नानुसार होते हैं :

i. **3-6 वर्ष**: आँगनवाड़ियों, बालवाटिकाओं और प्री-स्कूल के प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के कार्यक्रम

ii. **6-8 वर्ष**: स्कूल के प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के कार्यक्रम (कक्षा 1 व 2)

3 से 8 वर्ष की आयु तक, ECCE में स्वास्थ्य, सुरक्षा, देखभाल और पोषण पर निरन्तर ध्यान देना शामिलहैं; लेकिन साथ ही, स्वयं सहायता कौशल, गत्यात्मक कौशल, स्वच्छता, अलगाव की चिन्ता से निपटना, घूमने और व्यायाम के ज़रिए शारीरिक विकास, माता-पिता और अन्य लोगों के साथ बातचीत में अपने विचार और भावनाएँ व्यक्त करना, अपने साथियों के साथ आराम से रहना, अपने काम को पूरा करने के लिए समय दे पाना, नीतिगत गुणों का विकास, और सभी अच्छी आदतें बनाने के लिए भी ध्यान देना अहम है।

इस आयु के दौरान बच्चों के लिए खेल आधारित शिक्षा ख़ासतौर पर महत्त्वपूर्ण है। यह खेल समूह में हो सकते हैं, व्यक्तिगत हो सकते हैं। खेल आधारित शिक्षा, बच्चों की जन्मजात क्षमताओं और जिज्ञासा, सृजनात्मकता, आलोचनात्मकचिंतन, सहयोग, टीम वर्क, सामाजिक अन्तःक्रिया, समानुभूति, करुणा, समावेशिता, सम्प्रेषण, संस्कृति की सराहना, हँसी-खेलकी भावना, आस-पास के वातावरण के प्रति जागरूकता, साथ-ही-साथ शिक्षकों, अपने साथियों व अन्य के साथ सफलतापूर्वक एवं सम्मानपूर्वक बातचीत करने की योग्यता को भी पोषित करते हैं।

ग) साक्षरता और संख्या ज्ञान का महत्त्व

इन वर्षों के दौरान ECCE में शुरुआती साक्षरता और संख्या ज्ञान का विकास भी शामिल होता है, जिसमेंअक्षर, भाषाएँ, संख्याएँ, गिनना, रंग, आकृतियाँ, ड्रॉइंग/पेंटिंग, इनडोर और आउटडोर खेल, पहेली और तार्किक चिंतन, कला, शिल्प, संगीत और घूमना-फिरना आदि के बारे में सीखना शामिल है। इसका उद्देश्य ऊपर वर्णित क्षेत्रों में विकासात्मक प्रतिफलों का निर्माण करनाहै, जिसमें फ़ोकस शुरुआतीसाक्षरता, संख्या ज्ञान और पर्यावरण के बारे में जागरूकता पर है। 6-8 वर्ष की आयु सीमा के दौरान यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यही वर्ष बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (Foundational Literacy and Numeracy, FLN) की उपलब्धि का आधार बनते हैं। समग्र शिक्षा के लिए FLN का महत्त्व काफ़ी स्पष्ट है, और NEP 2020 में इस पर पूरी तरह से ज़ोर दिया गया है।

घ) फाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF)

ऊपर वर्णित सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए, NEP 2020 की नई व्यवस्था में 5+3+3+4 के तहत 3-8 वर्ष की उम्र को फाउंडेशनल स्टेज कहा गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की इस रूपरेखा का उद्देश्य, ECCE के सम्पूर्ण सन्दर्भ को लेते हुए, संस्थागत सेटिंग में फाउंडेशनल स्टेज को सम्बोधित करना है।

यह NCF संस्थागत सेटिंग में ECCE पर फ़ोकस करता है। घर के माहौल - जिसमें, परिवार, रिश्तेदार, पड़ोसी और क़रीबी समुदाय के अन्य लोग शामिल हैं - यह सभी इस उम्र के बच्चे पर काफ़ी महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। लेकिन तब भी इस दस्तावेज़ में इस बारे में ज़्यादा ज़ोर देकर बात नहीं कही गई है। इसीलिए, इस NCF में, इस उम्र में वांछित विकासात्मक प्रतिफलों को प्राप्त करने में अभिभावकों और समुदाय की भूमिका के बारे में बात होगी। लेकिन इसमें 3 वर्ष से छोटी उम्र के बच्चों के सन्दर्भ में ECCE की बात नहीं होगी, क्योंकि यह संस्थागत सेटिंग के तहत नहींआता है।

ङ) NEP 2020 का लक्ष्य

एक व्यक्ति के विकास, और समाज को होने वाले दीर्घकालीन फ़ायदे में, इस फाउंडेशनल स्टेज का विशिष्ट महत्त्व है और इसके मद्देनज़र, NEP 2020 का लक्ष्य स्पष्ट है – वर्ष 2025 तक, निःशुल्क, सुरक्षित, उच्चगुणवत्तापूर्ण, विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त ECCE प्रत्येक बच्चे को उपलब्ध हो।

यह बच्चे के जन्म की परिस्थितियाँ और उसकी पृष्ठभूमि से प्रभावित नहीं हो। गुणवत्तापूर्ण ECCE पूरी ज़िन्दगी, शैक्षिक प्रणाली में बच्चों को भागीदारी करने और फलने-फूलने में सक्षम बनातीहै। और शायद इसीलिए ECCE बराबरी का वह कारक है जो सबसे ज़बरदस्त और ताक़तवर है। फाउंडेशनल स्टेज में उच्च गुणवत्ता वाली ECCE का होना सभी बच्चों को एक अच्छे, नैतिक, विचारशील, सृजनात्मक, समानुभूति पूर्ण और उत्पादक मनुष्य बनने के सुअवसर देता है।

हमारे देश के कल्याण (Well-being) और समृद्धि के लिए, हमारे समाज के सभी सदस्यों (शिक्षकों से लेकर स्कूल के पदाधिकारियों, माता-पिता और समुदाय के सदस्यों से लेकर नीति निर्माताओं और प्रशासकों) को यह सुनिश्चित करने के लिए एक साथ आना चाहिए कि जीवन के इन शुरुआती और सबसे अहम वर्षों में प्रत्येक बच्चे को, उचित और पर्याप्त पोषण के साथ-साथ शारीरिक, संज्ञानात्मक, और सामाजिक-भावनात्मक प्रोत्साहन, उपलब्ध हो पाए। ECCE में निवेश करने के लिए मज़बूत आधार अगले भाग में विस्तार से बताया गया है।

1.1.3 प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा का आधार

पूरी दुनिया में शिक्षा, तंत्रिका विज्ञान और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में हुए शोध यह साफ़ तौर पर दर्शाते हैं कि निःशुल्क, सुलभ और उच्च गुणवत्ता वाली ECCE सुनिश्चित करना शायद सबसे अच्छा निवेश है जो कोई भी देश अपने भविष्य के लिए कर सकता है।

जैसा कि पहले ज़िक्र किया है, बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्षों में मस्तिष्क का विकास बहुत तेज़ी से होता है, और यही शुरुआती वर्षों में संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक प्रोत्साहन के महत्त्व को इंगित करता है।

बच्चे शुरुआती वर्षों में खेल आधारित गतिविधियों को सहज रूप से करते हैं। यदि बच्चों की उम्र को ध्यान में रखते हुए, उनके साथ खेल आधारित, शारीरिक, शैक्षिक और सामाजिक गतिविधियाँ हों तो वे बेहतर सीखेंगे और बेहतरी से बढ़ेंगे।

बच्चों को मिलने वाले प्रोत्साहन, मदद और पोषणकी गुणवत्ता में कमी का बच्चों के समग्र विकास पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था की अवधि जीवन भर सीखने और विकास की बुनियाद रखती है और यह वयस्क जीवन की गुणवत्ता का एक प्रमुख निर्धारक है।

इन शुरुआती वर्षों में बच्चों के साथ काम करने से सीखने में देरी को काफ़ी कम किया जा सकता है।

इस प्रकार प्रारम्भिक बाल विकास में सुधार की कोषिशें लागत न होकर एक निवेश हैं। गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा में निवेश राष्ट्र के दीर्घकालिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में मदद करता है, साथ ही भविष्य की सफलता के लिए आवश्यक व्यक्ति के स्वास्थ्य, संज्ञानात्मक कौशल और चरित्र के विकासको लक्षित करने में भी मदद करता है।

विस्तृत विवरण के लिए अनुलग्नक 4 देखें।

निष्कर्ष : मस्तिष्क के विकास से लेकर स्कूल की तैयारी तक, सीखने के बेहतर परिणाम, समानता और न्याय, रोज़गार, और देश की समृद्धि और आर्थिक विकास इन सभी कारणों के चलते – भारत को सुलभ और गुणवत्ता वाले ECCE में निवेश करना चाहिए। यह निवेश उचित निरीक्षण और सही नियमन के साथ हो ताकि, सभी बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले और विकासात्मक रूप से उपयुक्त प्रोत्साहन सुनिश्चित हो पाएँ।

खण्ड 1.2
भारत और दुनिया में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का विकास

1.2.1 प्रबुद्ध भारतीय परिप्रेक्ष्य

बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद के लिए ECCE की महत्ता को भारतीय परम्पराओं में पहचाना गया है। और बच्चे के जीवन के प्रारम्भिक वर्षों को भारत के विविध सांस्कृतिक परिदृश्य में बहुत वज़न दिया गया है।

छोटे बच्चों में मूल्यों के विकास और सामाजिक क्षमताओं सहित सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करने के लिए परम्पराओं और प्रथाओं की एक समृद्ध शृंखला इस देश में है। इस तरह की पारम्परिक देखभाल संयुक्त परिवारों और समुदाय के भीतर होती थी - बच्चे उनकी देखभाल करने वाले वयस्कों और हमउम्र साथियों के साथ होते थे।

शिक्षा का भारतीय विज़न व्यापक और गहरा रहा है, इसमें यह शामिल है कि शिक्षा को आन्तरिक और बाह्य दोनों ही तरह के विकास को पोषित करना चाहिए। बाहरी दुनिया के बारे में सीखना और अपनी आंतरिक वास्तविकता एवं स्व के बारे में सीखना साथ-साथ होना चाहिए। व्यावहारिक नज़रिया भी यही है- अच्छा स्वास्थ्य और सामाजिक-भावनात्मक कौशल, विचार कर पाने और विवेकपूर्ण चयन तथा निर्णय लेने की क्षमता का विकास, यह सब समेकित और समग्र रूप से होना चाहिए। सीखना केवल जानकारी को इकट्ठा करना नहीं है बल्कि यह स्वयं के विकास, दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों के विकास, ज्ञान के विभिन्न रूपों में विभेद करने की योग्यता और जो भी सीखा है उसे ख़ुद के लिए और समाज के फ़ायदे के लिए उपयोग कर पाने की क्षमता है।

बॉक्स 1.2 क

पंचकोष का विकास (Five-fold Development) – भारतीय परम्परा का आधारस्तम्भ

पंचकोष या पाँच परतों के साथ, बच्चा एक सम्पूर्ण इन्सान है। ये परतें हैं अन्नमय कोष (शारीरिक परत), प्राणमय कोष (जीवनशक्ति ऊर्जा परत), मनोमय (मन की परत), विज्ञानमय कोष (बौद्धिक परत) और आनंदमय कोष (आन्तरिक स्व)। हर परत के कुछ ख़ास गुण हैं। इन पाँच परतों को पोषित करने पर बच्चे का सर्वांगीण विकास होता है। हर कोष के विकास के लिए कुछ ख़ास तरीक़े डिज़ाइन किए गए हैं। ये तरीक़े इस बात को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किए गए हैं कि ये सभी कोष एक-दूसरे से आपस में जुड़े हुए हैं इसीलिए ऐसी गतिविधियाँ जिसमें किसी एक कोष का भी विकास होता है वह दूसरे कोष के विकास में योगदान देगी ही।

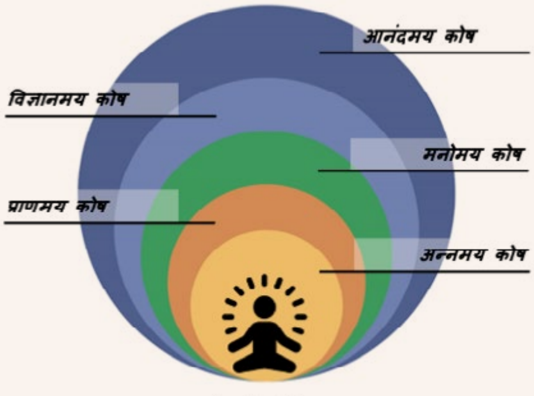

पंचकोष विकास

Icon Source: thenounproject.com

उदाहरण के लिए, सन्तुलित आहार, पारम्परिक खेल, पर्याप्त कसरत और योगासन (उपयुक्त उम्र के अनुसार) पर फ़ोकस करने से शारीरिक विकास होता है, जिससे सकल और सूक्ष्म दोनों ही तरह के गत्यात्मक कौशलों का विकास होता है। पूरे शरीर को ज़रूरी ऑक्सीज़न मिल पाए इस तरह से साँस लेना सीखना महत्त्वपूर्ण है; यह आवाज़ को भी साधता है और स्व-जागरूकता के लिए भी दिशा देता है। अलग-अलग तरह की कहानियाँ, गीत, लोरियाँ, कविताएँ, प्रार्थनाएँ, न केवल बच्चों में उनकी संस्कृति के प्रति प्यार विकसित करती हैं बल्कि उनको मूल्य आधारित दृष्टि भी देती हैं। यह सुनने और ध्यान केन्द्रित कर पाने की क्षमताओं का विकास करता है और इस तरह भाषा के विकास में भी योगदान देता है। अपने आस-पास की दुनिया, इसकी सुन्दरता और आश्चर्य को अनुभव कर पाने के लिए इन्द्रियों को भी तेज़ करने की ज़रूरत है। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में समेकित सेवा, सम्बन्धों की ख़ुशी को अनुभव करने और इसके साथ-साथ अपने समुदाय का हिस्सा होने और समुदाय के लिए कुछ अच्छा करने के लिए भी तैयार करती है।

ECCE में परिकल्पित, विकास के विभिन्न क्षेत्रों में भी पंचकोष की अवधारणा और कल्पना का ख़ाका दिखता है, ये क्षेत्र ही पाठ्यचर्या उद्देश्यों के आधार हैं, इनके बारे में अगले अध्याय में चर्चा है।

- *शारीरिक विकास : उम्र के अनुसार सन्तुलित शारीरिक विकास, शारीरिक तन्दुरुस्ती, लचीलापन, ताक़त, और सहनशीलता; इन्द्रियों का विकास; पोषण; स्वच्छता; व्यक्तिगत स्वास्थ्य; शारीरिक गतिविधियों का बढ़ना; इन्सान सौ वर्षों तक स्वस्थ जीवन जी पाए यह ध्यान में रखते हुए शरीर और आदतों का विकास।*
- *जीवन ऊर्जा का विकास (प्राणिक विकास) : ऊर्जा का सन्तुलन और संरक्षण, सकारात्मक ऊर्जा और उत्साह, सभी मुख्य तंत्रों का निर्बाध रूप से काम करना (पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र, परिसंचरण तंत्र और तंत्रिका तंत्र) अनुकम्पी और परानुकम्पी (sympathetic and parasympathetic) तंत्रिका तंत्र को सक्रिय करते हुए।*
- *भावात्मक/ मानसिक विकास : ध्यान केन्द्रित करना, शान्ति, संकल्प और इच्छाशक्ति, नकारात्मक भावनाओं से निपटना, मूल्यों का विकास, काम, लोगों और स्थितियों से जुड़ने और अलग होने का संकल्प, ख़ुशी, दृश्य और प्रदर्शन कला, संस्कृति और साहित्य।*
- *बौद्धिक विकास : अवलोकन, प्रयोग करना, विश्लेषणात्मक योग्यता, अमूर्त और अपसारी (खुला) चिंतन, संश्लेषण, तार्किक सोच, भाषा विज्ञानी कौशल, कल्पना, सृजनात्मकता, विभेदन, सामान्यीकरण और अमूर्तीकरण की शक्ति*
- *आध्यात्मिक विकास (Spiritual Development) : ख़ुशी, प्रेम और करुणा, स्वतःस्फूर्तता, आज़ादी, सौन्दर्य बोध, जागरूकता को अपने भीतर की तरफ़ मोड़ने का सफ़र (journey of 'turning the awareness inwards) I*

पंचकोष मानवीय अनुभव और समझ में शरीर और मन के जटिल रिश्ते के महत्त्व की एक प्राचीन व्याख्या है। मानव विकास का यह ग़ैर-द्विभाजी अप्रोच समग्र शिक्षा के लिए स्पष्ट रास्ता और दिशा देता है।

अन्तर्दृष्टि का फैलाव : शिक्षा की वह प्रणाली जिसमें गुरुकुल में शिक्षा होती थी, दुनिया की सबसे पुरानी प्रणाली है। यह न केवल समग्र विकास को पोषित करती है बल्कि शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच के अन्तर्सम्बन्धों के महत्त्व पर भी ज़ोर देती है और साथ-ही-साथ सीखने और विकास पर। अधिगम का आदर्श माहौल वह है जो सीखने की इच्छा पैदा करता है और इस ज्ञान को उपयोग में लाने के अवसर देता है। यह अधिगम ही है जो आंतरिक स्व (inner self) के अन्वेषण और परीक्षण के अवसर देता है।

बॉक्स 1.2 ख

प्राचीन भारत में स्मृति पर ज़ोर दिया जाता था, यह इन्सान के सम्पूर्ण विकास के लिए ज़रूरी है। प्रायः इसका ग़लत अर्थ लगाया जाता है और इसे रटने पर ज़ोर देना समझा जाता है, लेकिन सैद्धान्तिक रूप से जब बच्चे अपनी निष्ठा से ख़ुद अभ्यास करते हैं तो यह रटना नहीं होता है।

संज्ञानात्मक विज्ञान के क्षेत्र में किए गए मौजूदा शोध इंगित करते हैं कि स्मृति – क्रियाशील स्मृति और दीर्घकालीन स्मृति - दोनों ही संज्ञान और समझने में एक ख़ास भूमिका अदा करती है। कक्षा में स्मृति पर सही तरीक़े के ज़ोर नहीं देने का अक्सर परिणाम यह होता है कि पर्याप्त परिणाम हासिल नहीं हो पाते।

कक्षा में स्मृति का सीखने में उपयोग हो इसके लिए कुछ गतिविधियाँ हो सकती हैं – सोचे-समझे और नियमित अभ्यास, गहरी प्रक्रियाएँ, संकेतों को निर्मित करना, सम्बन्ध जोड़ पाना और संगति बना पाना। इस NCF के उद्देश्यों और शिक्षणशास्त्र की अप्रोच में यह परिलक्षित होता है।

और यह स्कूली शिक्षा के सभी वर्षों में, विशेष रूप से प्रिपरेटरी, मिडिल और सेकेंडरी चरणों में प्रासंगिक है।

अधिकांश भारतीय परम्पराओं में, बच्चों को शायद ही कभी कोरी/खाली स्लेट के रूप में देखा जाता है, यहाँ तक कि शिशुओं को भी। ऐसा माना जाता है कि उनके पास कुछ प्रवृतियाँ (disposition) हैं जो दुनिया के साथ उनके सम्बन्धों को प्रभावित करती हैं। इन परम्पराओं में बच्चे को एक सामाजिक प्राणी और एक अद्वितीय व्यक्ति दोनों के रूप में देखा जाता है, जो सन्दर्भ के साथ-साथ अपने चुनावों से भी प्रभावित होता है। अधिगम से बच्चे को कुछ काम करने (कर्म) और उसके फलस्वरूप मिले परिणामों को स्वीकार करने के लिए तैयार करने में मदद मिलनी चाहिए। जिस सांस्कृतिक दृष्टिकोण से शिक्षा को समझा जाता है, वही फिर व्यक्तित्व के विकास एक महत्त्वपूर्ण पहलू बन जाता है।

वैदिक युग से ही, आयुर्वेद की भारतीय प्राचीन समग्र प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली प्रारम्भिक बाल्यावस्था के तरीक़ों के लिए एक मार्गदर्शक रही है, इसकी आठ शाखाओं में से एक बच्चों की देखभाल के लिए समर्पित है।

आयुर्वेद की किताबों में बच्चों की देखभाल सम्बन्धित ज्ञान और समझ का एक समग्र दृष्टिकोण था। इनमें जैविक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण परस्पर समावेशी हैं।

आयुर्वेद के समसामयिक तरीक़ों में, कश्यप संहिता के पहले खण्ड, कौमारभृत्य को अक्सर बाल रोग, स्त्री रोग और प्रसूति के सन्दर्भ में परामर्श देने के लिए सन्दर्भित किया जाता है। यह छठी शताब्दी ईसा पूर्व में लिखा गया है ऐसा माना जाता है। आयुर्वेदिक ग्रन्थ बाल विकास के बारे में विस्तार से बताते हैं। उदाहरण के तौर पर :

i. ताज़ी हवा, हरियाली और पर्याप्त धूप से भरपूर वातावरण, बच्चे के समग्र विकास को बढ़ावा देता है।

ii. वाचा, एक कायाकल्प (rejuvenating) करने वाली जड़ी-बूटी है, यह स्वाद में कड़वी होती है और सूखे रूप में इसका प्रयोग, बच्चे के तंत्रिका तंत्र पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। संस्कृत में वाचा का अर्थ है स्पष्ट रूप से बोलना - यह जड़ी- बूटी बुद्धि और अभिव्यक्ति को उद्दीप्त करती है। वाचा को प्रतिदिन शहद के साथ लेने से वाणी में सुधार होता है (जैसे स्मृति, शब्दों का चुनाव और उनको बोलने का ढंग, टोन)।

प्रचलित रूप में (Operationally), वेद माँ और बच्चे दोनों को एक सहजीवी इकाई के रूप में देखते हैं और ये संस्कारों, या धार्मिक रिवाजों के साथ-साथ निर्धारित विकासात्मक दृष्टिकोण और बच्चों की देखभाल के तरीक़ों पर ज़ोर देते हैं। बच्चे की उम्र के आधार पर ये संस्कार बच्चे के जीवन चक्र के प्रत्येक चरण में इष्टतम शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रगति का अनुक्रम करते हैं और ये अलग-अलग विकासात्मक पड़ावों द्वारा चिह्नित होते हैं।

उदाहरण के लिए, अन्नप्राशन (आमतौर पर जन्म के बाद छठे महीने में बच्चे को ठोस भोजन देना) और विद्यारम्भ या अक्षराभ्यास (औपचारिक रूप से बच्चे को वर्णमाला से परिचित कराना) एक बच्चे के विकास से सम्बन्धित संस्कार हैं और जीवन के पहले आठ साल के भीतर कर दिए जाते हैं। ये संस्कार बच्चे के जीवन की यात्रा में चार पुरुषार्थों धर्म (धार्मिकता/सच्चाई), अर्थ (धन), काम (सुख), और मोक्ष (मुक्ति) की खोज में संलग्न होने के साधन हैं।

इसी तरह के विचार और तरीक़े पूरे देश की व्यापक सांस्कृतिक परम्पराओं में व्याप्त हैं, उदाहरण के लिए, प्राचीन संगमा युग और उसके पहले भी तमिलनाडु व इसके आस-पास में, नागा और मिज़ो परम्पराओं में और निचले हिमालय की स्थानीय परम्पराओं में।

बच्चों की देखभाल के बहुसांस्कृतिक होने का प्रमाण, जो मुख्य रूप से घर और परिवार पर आधारित था और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दिया गया, यह शिशु और बाल खेलों, लोरी, बच्चों की लोक कथाओं, तुकबन्दी और पहेलियों, लोक खिलौने और शिशुओं के लिए मालिश आदि में प्रकट होता है। यह सभी भारतीय बचपन का एक अभिन्न अंग रहा है।

बच्चों की देखभाल और विकास को लेकर, संस्कार की अवस्थाओं और आधुनिक वैज्ञानिक विचारों व ज्ञान में जो घनिष्ठ सम्बन्ध है वह उल्लेखनीय है। एक उदाहरण है छह महीने के बाद अन्नप्राशन या दूध छुड़ाना, जो वर्तमान में कही जाने वाली इस बात से पूरी तरह जुड़ता है कि जीवन के पहले छह महीनों में स्तनपान पर विशेष ज़ोर हो।

बुनियादी वैज्ञानिक सिद्धान्तों को, बच्चों को 'प्ले मोड' में प्रदर्शित करने के लिए पारम्परिक लोक खिलौनों जैसे लट्टू, बाँसुरी और मिट्टी के बर्तनों का उपयोग किया जाता था। शिशुओं के खेलों की प्रकृति ऐसी थी जिन्हें पियाज़े की विकासात्मक अवस्थाओं के अनुरूप, संवेदीगत्यात्मक कह सकते हैं। कविताएँ, पहेलियाँ और कहानियाँ जिनमें बच्चों को मज़ा आता है वे बच्चों को भाषा के वातावरण में डूबने देती हैं। जहाँ, इनमें से कुछ प्रथाएँ अभी भी बड़े या संयुक्त परिवारों में दिखाई दे रही हैं, वहीं पारिवारिक संरचनाओं में बदलाव और एकल परिवारों की ओर रुझान के परिणामस्वरूप ये प्रथाएँ कमज़ोर भी हो रही हैं।

सहस्राब्दियों से विकसित, भारत की इन विविध और जीवन्त ECCE परम्पराओं की समृद्ध श्रृंखला को जीवित रखने के लिए तथा इनकी प्रभाविता और स्थानीयता को सुनिश्चित करने के लिए, इन्हें भी ECCE के पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय फ्रेमवर्क में उपयुक्त रूप से शामिल किया जाना चाहिए। यह संदर्भगत प्रासंगिकता, आनन्द, उत्साह, स्थानीय संस्कृति, पहचान और समुदाय की भावना के प्रति संवेदनशील बनाएगी। इसके अलावा, बच्चों को बड़ा करने, पालने और शिक्षित करने में परिवारों की पारम्परिक भूमिकाओं को भी ECCE के पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क के भीतर दृढ़ता से समर्थित और एकीकृत किया जाना चाहिए।

1.2.2 पथप्रदर्शक और विचारक

भारत में शैक्षणिक चिन्तन के क्षेत्र में कई प्रसिद्ध हस्तियों ने योगदान दिया है। शिक्षा को लेकर उनकी अधिकांश चिन्ताएँ सिर्फ़ तात्कालिक नहीं थीं बल्कि वे नैतिक जीवन और राष्ट्र निर्माण के सवालों से जुड़ी थीं।

नीचे दी गई सिनोप्सिस शिक्षा को लेकर कुछ प्रमुख विचारों का एक संक्षिप्त परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है। यह किसी भी तरह से एक विस्तृत सूची नहीं है।

क) सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले

सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले हाशियाकृत लोगों के लिए सामाजिक न्याय के प्रबल प्रस्तावक थे। जब लड़कियों और कमज़ोर समुदायों के बच्चों के लिए स्कूलों की स्थापना की बात तक नहीं होती थी, तब उन्होंने ऐसे स्कूलों की स्थापना का कार्य किया।

ज्योतिबा फुले ने प्राथमिक शिक्षा के विस्तार और सुदृढ़ीकरण के लिए तर्क दिया। उन्होंने कहा कि स्कूल की पाठ्यचर्या सभी बच्चों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन की जाए और ख़ासतौर से यह ध्यान रखा जाए कि वंचित बच्चे सीख सकें। देश में लड़कियों की शिक्षा के अग्रदूत के रूप में, सावित्रीबाई फुले ने यह सुनिश्चित किया कि लड़कियों को गणित और विज्ञान पढ़ाया जाए, यह लड़कों के लिए कई स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम से बिल्कुल अलग था।

इन दोनों के अनुसार, एक बड़े सामाजिक एजेंडा के सन्दर्भ में, समाज में बदलाव लाने के लिए शिक्षा का कार्य हमेशा ही विचारणीय होगा।

ख) रवीन्द्रनाथ टैगोर

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा को लेकर विचारों में व्यक्तित्व के सामंजस्य, सन्तुलन और समग्र विकास पर ज़ोर है। टैगोर के शैक्षिक दर्शन का मूल था, प्रकृति और जीवन से सीखना। टैगोर के अनुसार, किसी भी सार्थक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का मूल उद्देश्य रचनात्मकता, स्वतंत्रता, आनन्द और देश की सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना था। टैगोर के प्राकृतिक परिवेश में सीखने पर दिए विचारों में, फ़ील्ड ट्रिप तथा प्रकृति की सैर और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर ज़ोर था। इन विचारों ने, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल और विभिन्न जीवन कौशलों पर ज़ोर को बढ़ावा दिया।

ग) स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द ने शरीर, मन और आत्मा की समग्र तैयारी पर ज़ोर दिया।

वे पूछते हैं : क्या हमें सिर्फ़ अनुभवजन्य दुनिया को जानने की ज़रूरत है? क्या हम बस यही हैं? क्या सिर्फ़ मानव अस्तित्व के भौतिक पहलुओं में सुधार करने की कोषिश करना ही सब कुछ है?

उनके लिए, मानव अस्तित्व और मानवीय सम्भावनाओं का मूल आत्मा (स्व) और आत्मज्ञान में निहित है। आत्मज्ञान पर उनका इतना ज़ोर देने के कारण महत्त्वपूर्ण हैं। पहला, हम जो हैं, उसका सारतत्व आत्म है इसलिए आत्मज्ञान की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता; दूसरा, हम सभी इंसानों के पास आत्म (सेल्फ़) होता है और इसलिए व्यक्ति और दुनिया/वस्तु दोनों सार्वभौमिक हैं (and thus both of the subject and object are universal); और तीसरा, यदि आत्म, मानव अस्तित्व का सारतत्व है, तब इसका ज्ञान मानव की सम्पूर्णता के लिए एक शर्त की तरह होगा।

इस महत्त्वपूर्ण अन्तर्दृष्टि पर आधारित शिक्षा का आदर्श, हमारे सारतत्व की अभिव्यक्ति , पूर्णता के बीज बोने और सभ्यतागत आदर्शों की पुनः परिभाषा के लिए नींव रखने की ओर मार्ग प्रशस्त करेगी। इसलिए, उनका कहना है कि शिक्षा मनुष्य में पहले से ही छिपी हुई सच्ची पूर्णता की अभिव्यक्ति है।

घ) महात्मा गांधी

महात्मा गांधी ने शिक्षा को सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त अन्याय, हिंसा और असमानता के प्रति राष्ट्र की अन्तरात्मा को जगाने के साधन के रूप में देखा। गांधी ने आसपास के वातावरण, जिसमें मातृभाषा और काम शामिल था, को समाज के परिवर्तनकारी विज़न में बच्चे के समाजीकरण के लिए एक संसाधन के रूप में उपयोग करने की सिफ़ारिश की। उन्होंने एक ऐसे भारत का

सपना देखा जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दुनिया, जो हमेशा से ही राष्ट्रों के बीच, समाज के भीतर और मानवता एवं प्रकृति के बीच संघर्षों से जानी जाती है, के पुनर्गठन के लिए दूसरों के साथ काम करते हुए अपनी प्रतिभा और क्षमताओं की खोजबीन करे, उसे समझे। उन्होंने छह साल से कम उम्र के बच्चों के लिए प्री-बेसिक एजुकेशन नामक एक पाठ्यक्रम तैयार किया। इसमें सीखना बच्चों के विकास और रुचि पर आधारित था। इसमें तीन Hs - हार्ट, हैंड और हेड पर ज़ोर दिया गया था। गांधी के शिक्षा विचार में केन्द्रीय बातें थीं - समुदाय अपने बच्चों के प्रति ज़िम्मेदार हो, हार्ट, हैंड, हेड के लिए शिक्षा, स्थानीय अनुभव, और स्थानीय संदर्ं व्यक्ति शिक्षक हों।

ङ) श्री अरबिन्दो

श्री अरबिन्दो के शिक्षण का केन्द्रीय विचार समेकित शिक्षा था। बच्चे का विकास न केवल संज्ञानात्मक होता है, बल्कि यह शारीरिक, प्राणिक (the vital), मानसिक, मनोवैज्ञानिक (the psychic) और आध्यात्मिक भी होता है।

शिक्षा पारम्परिक और आधुनिक विचारों का एकीकरण है। यह सार्वभौमिक चरित्र की होनी चाहिए। उनके अनुसार, सभी बच्चों में कुछ-न-कुछ दिव्य होता है और कुछ ऐसा होता है जो उनके बारे में अनूठा है। शिक्षक को सभी सम्भावनाओं को देखने और बच्चों को स्वयं को खोजने और उनकी वास्तविक क्षमता को प्राप्त करने की दिशा में मार्गदर्शन देने में सक्षम होना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षक, '... उस ज्ञान का आह्वान नहीं करता जो भीतर है; वह केवल उसे दिखाता है कि यह कहाँ है और कैसे साधना से यह ऊपर सतह तक उठ सकता है।' केवल मुक्त (free) और रुचि से प्रेरित शिक्षा ही बच्चे की आत्मा का पोषण कर सकते हैं।

अरबिन्दो का विश्वास था कि बच्चों के आस-पास का वातावरण, उनके परिचित अनुभव और उनकी मातृभाषा ही सीखने और सिखाने का आधार होनी चाहिए और कोई भी नया ज्ञान बच्चे के उस सन्दर्भ से जुड़ना चाहिए जिसका बच्चा पहले से एक हिस्सा है। अरबिन्दो के अनुसार बच्चा दुनिया के बारे में सीखने के लिए, अपनी सभी पाँच इन्द्रियों का और दिमाग़, जिसे कि छठी इंद्रिय कह सकते हैं, का उपयोग करता है। इन प्रक्रियाओं के माध्यम से बच्चा चेतना (consciousness) का बोध विकसित करना शुरू कर देता है जो आध्यात्मिक और नैतिक विकास से सम्बन्धित है। केवल एक रचनात्मक और मुक्त अधिगम वातावरण ही इस विकास को सुनिश्चित कर सकता है।

1950 के दशक में स्थापित श्री अरबिन्दो आश्रम के स्कूल ने 'मुक्त प्रगति' (Free Progress) के सिद्धान्त पर काम किया, जहाँ स्कूली शिक्षा की कई क्रान्तिकारी अवधारणाओं को लेकर प्रयोग किए गए थे, और ऐसा सम्भवतः भारत में पहली बार हुआ था, और इस शिक्षा में शामिल था स्व-गति से सीखना और मूल्यांकन, व्यावहारिक शिक्षा (hands-on education) पर अधिक ज़ोर, और पाठ्यपुस्तकों की अनुपस्थिति।

च) जिद्दू कृष्णमूर्ति

जिद्दू कृष्णमूर्ति ने अक्सर कहा कि शिक्षा का उद्देश्य आज़ादी, प्रेम, 'अच्छाई का खिलना' और समाज का पूर्ण परिवर्तन है।

उनके लेखन और व्याख्यानों में एक सतत विषय आज़ादी था और कृष्णमूर्ति के लिए आज़ादी का चरित्र आन्तरिक अधिक था, न कि राजनीतिक। मानस और आत्मा की गहरी आज़ादी, आन्तरिक मुक्ति जो उन्होंने महसूस की, वह शिक्षा का साधन और साध्य दोनों थीं। शिक्षा परम्परा के रूप में संचित अपने विशाल ज्ञान से, कंडीशनिंग से मुक्ति थी। कृष्णमूर्ति ने महसूस किया कि न केवल एक व्यक्ति की प्रकृति और गहरे पहलुओं को उजागर किया जाना चाहिए, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अनूठी वृत्ति या योग्यता होती है जिसे खोजने की आवश्यकता थी; वे वास्तव में जो करना पसन्द करते हैं, उसे ढूँढ़ना और उसके लिए

बार-बार प्रयत्न करना, और इसके अलावा कुछ करना सबसे ख़राब प्रकार की वंचना थी। ख़ासकर अगर ऐसी वंचना आर्थिक या व्यावसायिक सफलता या फिर ऐसी अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए थी।

कृष्णमूर्ति के लिए, शिक्षा का आशय सम्पूर्ण व्यक्ति (व्यक्ति के सभी भागों) को शिक्षित करना था, व्यक्ति को समग्र रूप में शिक्षित करना था (भागों के संयोजन के रूप में नहीं), और व्यक्ति को उस सम्पूर्णता में (समाज, मानवता, प्रकृति के हिस्से के रूप में) शिक्षित करना था, जिससे उस व्यक्ति को अलग करना अर्थपूर्ण नहीं है।

निष्कर्ष : फाउंडेशनल स्टेज के लिए इन सभी विचारों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष निहितार्थ हैं। स्वामी विवेकानन्द और श्री अरबिन्दो का समग्र शिक्षा पर ध्यान, रवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रकृति पर ज़ोर, महात्मा गांधी के तीन एच, आज़ादी पर जिद्दू कृष्णमूर्ति के विचार के साथ-साथ ज्योतिबा और सावित्रीबाई के लिए सामाजिक न्याय का महत्त्व - ये सभी विचार उस शिक्षा के बारे में बात करते हैं जिससे छोटे बच्चों को फ़ायदा होगा।

1.2.3 भारत में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का क्रमिक विकास

पिछले कई दशकों में ECCE का काफ़ी विकास हुआ है। हालाँकि प्रारम्भिक बचपन का भारत में हमेशा एक विशेष सांस्कृतिक और सामाजिक स्थान रहा है, पर पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा की रूपरेखा और नीतियों में इस पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया गया है।

परम्परागत रूप से, प्रारम्भिक शिक्षा परिवार आधारित थी और बच्चों को मूल्य और सामाजिक कौशल सिखाने पर केन्द्रित थी। सामाजिक-सांस्कृतिक और जनसांख्यिकीय परिवेश में बदलाव के साथ-साथ, भारत में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं, जो अक्सर अनौपचारिक होती थीं, से अब अधिक औपचारिक और संस्था-आधारित सेटिंग में होने लगी हैं।

आधुनिक भारत में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा की शुरुआत करने वालों में गिजुभाई बधेका और ताराबाई मोदक का नाम अग्रणी है। वे आधुनिक शिक्षा में, उन पहले भारतीयों में से थे जिन्होंने छोटे बच्चों की शिक्षा और देखभाल के लिए बाल केन्द्रित दृष्टिकोण की संकल्पना बनाई। उनका विचार था कि शिक्षा बच्चे की मातृभाषा में होनी चाहिए और बच्चे के सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण से जुड़ी होनी चाहिए और समुदाय को भी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए। चूँकि भाषा आत्म-अभिव्यक्ति का सच्चा वाहन है, इसलिए बच्चे अपने विचारों को मातृभाषा या स्थानीय भाषा में स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकते हैं। सामाजिक-भावनात्मक अधिगम और भाषा सिखाने के लिए गिजुभाई ने कहानी-आधारित पाठ्यचर्या पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया। प्रारम्भिक शिक्षा की अग्रणी मारिया मोंटेसरी के विचारों को सन्दर्भित करते हुए, उन्होंने कहा, 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा एक महान राष्ट्र के निर्माण की दिशा में पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण क़दम है'; जबकि ताराबाई मोदक ने समुदाय आधारित प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रमों के औपचारिक आयोजन की वकालत की।

यद्यपि प्रारम्भिक शिक्षा विचारक फ्रेडरिक फ्रोबेल के विचारों पर आधारित किंडरगार्टन के मॉडल 19वीं शताब्दी के अन्त में अंग्रेज़ी मिशनरियों द्वारा कुछ शहरों में स्थापित किए गए थे। पहला स्वदेशी प्री-स्कूल 1916 में गिजुभाई बधेका द्वारा स्थापित किया गया था। ताराबाई मोदक ने 1925 में नूतन बालशिक्षण संघ की स्थापना की। ताराबाई मोदक द्वारा कोसबाड में स्थापित, विकासवाड़ी केन्द्र बाद में देश में सामुदायिक ECCE कार्यक्रमों के विकास के लिए एक प्रेरणादायक सेटिंग बन गया।

पूर्व-बुनियादी (प्री-बेसिक) और बुनियादी शिक्षा के सन्दर्भ में महात्मा गांधी के उभरते विचारों और 1939 में मोंटेसरी की भारत यात्रा के साथ, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के व्यवस्थित ढाँचे की नींव को और मज़बूती मिली।

1.2.3.1 स्वतंत्र भारत में प्रारम्भिक शिक्षा (Early Education)

हमारा संविधान बच्चों के कल्याण और विकास को सम्बोधित करने वाले कई मौलिक अधिकार और निर्देश प्रदान करता है।

1953 में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा समिति ने प्राथमिक विद्यालय की सेटिंग के भीतर ही प्री-स्कूल स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया। केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की एक योजना के तहत, कई संगठनों ने ग्रामीण क्षेत्रों में 'बालवाड़ी' की स्थापना का समर्थन किया ताकि वे ऐसी सेवाएँ प्रदान कर सकें जो परिवारों और समुदायों के लिए एकीकृत शिक्षा, स्वास्थ्य और देखभाल प्रदान करती हैं। 1963-64 में, बाल देखभाल समिति द्वारा कई प्रावधानों की सिफ़ारिश की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा भारतीय सन्दर्भ में प्रासंगिक हो।

कोठारी आयोग (1964) ने देश में स्कूल पूर्व केन्द्रों की स्थापना की सिफ़ारिश की। शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति और राष्ट्रीय बाल विकास बोर्ड (National Children's Board) की स्थापना के साथ, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर फ़ोकस एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में रखा गया था जो आगे की स्कूली शिक्षा में योगदान देता है।

1.2.3.2 समेकित बाल विकास योजना

देश में समेकित बाल विकास योजना (Integrated Child Development Scheme - ICDS) 1975 में, 33 प्रायोगिक ब्लॉक में शुरू की गई। इस कार्यक्रम में यह परिलक्षित हुआ कि फ़ोकस अब कल्याण आधारित सेवाओं पर न होकर विकास आधारित सेवाओं पर है और इसमें बच्चों को एक राष्ट्रीय संसाधन की तरह देखा जा रहा है।

कई वर्षों से, आईसीडीएस, दुनियाभर में ECCE सेवाओं के लिए सबसे बड़ा और सबसे व्यापक कार्यक्रम है। आईसीडीएस के तहत आने वाली आँगनवाड़ियाँ, देश भर के दूर-दराज़ के इलाकों में, छह साल से कम उम्र के बच्चों को, और साथ ही माताओं व किशोरों को स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण सेवाएँ प्रदान करती हैं। आईसीडीएस के तहत छह सेवाएँ प्रदान की जाती हैं: पूरक पोषण, प्री-स्कूली शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच और रेफरल सेवाएँ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, ने ECCE को मानव संसाधन विकास के लिए काफ़ी महत्त्वपूर्ण माना। इस नीति के अनुसार, ECCE को प्राथमिक शिक्षा के लिए फीडर और कामकाजी महिलाओं के लिए एक मददगार व्यवस्था के रूप में कार्य करना चाहिए। पहले की तुलना में अधिक वित्तीय आवंटन और बच्चों के लिए एकीकृत और खेल-आधारित शिक्षा पर फ़ोकस देने के साथ, इस नीति ने प्रारम्भिक शिक्षा क्षेत्र में विकास को गति दी। विभिन्न कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण और समर्थन की ज़रूरतों को समझने और स्थापित (establish) करने के लिए, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) और राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान (National Institute of Public Cooperation and Child Development, NIPCCD) जैसे सरकारी निकायों ने देश भर में इन कार्यक्रमों की पहुँच और प्रभावशीलता को तय करने के लिए कई शोध परियोजनाएँ शुरू कीं। शिक्षकों को सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए एनआईपीसीसीडी और राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (National Council for Teacher Education, NCTE) द्वारा, मददगार व्यवस्थाएँ भी बनाई गईं।

पिछले कुछ वर्षों में, इन प्रयासों से ECCE में महत्त्वपूर्ण सुधार हुए हैं। हालाँकि, इसके तहत दी जाने वाली सेवाओं के क्रियान्वयन और पर्यवेक्षण में काफ़ी रिक्तताएँ (gaps) रहीं है, इनमें नीतियों और कार्यक्रमों द्वारा निर्धारित मानकों और लक्ष्यों से काफ़ी समझौता (compromised) किया गया है।

1.2.3.3 पिछले दो दशक

वर्ष 2006 में, ECCE, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (Ministry of Woman and Child Development, MWCD) के काम के दायरे में आया। MWCD के तहत, राष्ट्रीय प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की नीति (2013) तैयार की गई थी, यह शुरुआती वर्षों के बच्चों के लिए पहली और एकमात्र नीति बन गई थी। इसमें '6 साल से कम उम्र के सभी बच्चों के इष्टतम विकास और सक्रिय सीखने की क्षमता के लिए समावेशी, न्यायसंगत और प्रासंगिक अवसरों को बढ़ावा देने' की दृष्टि थी।

इसके बाद वर्ष, 2014 में MWCD द्वारा, एक राष्ट्रीय प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा में सुधार के लिए महत्त्वपूर्ण प्रतिबद्धताएँ थीं। इसने सभी छोटे बच्चों की गुणवत्तापूर्ण देखभाल, उनकी शिक्षा और इन तक उनकी सार्वभौमिक पहुँच हो, इस पर देश की प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ किया है।

2019 में, NCERT ने तीन साल की स्कूल-पूर्व शिक्षा के लिए, पाठ्यचर्या और दिशानिर्देश भी विकसित किए।

हालिया सबसे परिवर्तनकारी NEP 2020 रही है, जो एक बहुत ही स्पष्ट लक्ष्य को व्यक्त करती है - वर्ष 2025 तक, 3-8 वर्ष की उम्र के हर बच्चे तक मुफ़्त, सुरक्षित, उच्च गुणवत्तापूर्ण, विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त, प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा की पहुँच हो।

1.2.4 मौजूदा स्थिति

क) अपार सम्भावनाएँ, फिर भी अधूरी

वर्तमान समय में, भारत में अधिगम का संकट है, जबकि बच्चे प्राथमिक विद्यालय में नामांकित हैं, तब भी वे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसे बुनियादी कौशल प्राप्त करने में असफल हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चों के कक्षा 1 में प्रवेश करने से पहले ही ऐसा कुछ हो रहा है जो इस संकट का प्रमुख स्रोत है।

6+ वर्ष के कई बच्चे, ECCE के बहुत ही सीमित अनुभव के साथ ग्रेड 1 में प्रवेश कर रहे हैं। साथ-ही-साथ, उपयुक्त प्री-स्कूल के विकल्पों की कमी के कारण, 6 वर्ष की आयु से छोटे, बहुत से बच्चे कक्षा-1 में दाखिला ले रहे हैं; ये अक्सर वे बच्चे होते हैं जो प्रारम्भिक वर्षों में तो स्कूल में सबसे पीछे रहते ही हैं लेकिन उसके बाद भी पीछे ही रहते हैं।

जो कमियाँ बच्चे अनुभव कर रहे हैं उनमें अन्तर विशेष रूप से सुविधा सम्पन्न और वंचित समूहों के बीच हैं। इसका कारण यह है कि अधिक सुविधा सम्पन्न परिवारों के बच्चों के पास रोल मॉडल, प्रिंट सामग्री और जागरूकता, स्कूल की भाषा में धाराप्रवाहिता, और घर पर सशक्त सीखने के माहौल के साथ-साथ बेहतर पोषण, स्वास्थ्य देखभाल, और प्री-स्कूली शिक्षा तक पहुँच भी निश्चित है। सभी बच्चों को सार्वभौमिक गुणवत्ता वाली ECCE प्रदान करने से यह सम्भावनाएँ बनती हैं कि, सभी छोटे बच्चों तक इसकी पहुँच होगी और ऐसी उच्च गुणवत्ता वाली ECCE से मिलने वाले सारे लाभ बच्चों को मिल पाएंगे।

ख) विविध संस्थागत सेटिंग्स

मौजूदा समय में, प्रारम्भिक बाल्यावस्था की अधिकांश शिक्षा आँगनवाड़ियों और निजी प्री-स्कूलों में दी जाती है, इन निजी संस्थाओं में ग़ैर सरकारी संगठनों और अन्य संगठनों द्वारा संचालित प्री-स्कूलों का अनुपात बहुत ही कम है। जहाँ मदद के ढाँचे उपलब्ध हैं, वहाँ आईसीडीएस के तत्वावधान में प्री-स्कूली शिक्षा की आँगनवाड़ी प्रणाली ने भारत के कई हिस्सों में बड़ी सफलता के साथ काम किया है; ख़ासकर माताओं और शिशुओं के लिए स्वास्थ्य देखभाल के सम्बन्ध में। आँगनवाड़ियों ने वास्तव में अभिभावकों की मदद करने और समुदायों को बनाने में सहायता की है; उन्होंने ज़रूरी पोषण व स्वास्थ्य जागरूकता,

टीकाकरण, बुनियादी स्वास्थ्य जाँच, रेफ़रल, और स्थानीय सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों से जुड़ाव बनाने के लिए काम किया है। इस प्रकार करोड़ों बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए, अतएव और कहीं अधिक उत्पादक जीवन के लिए बुनियाद रखी है।

हालाँकि, कुछ आवश्यक संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, खेल और दिन भर की देखभाल (डे-केयर) उपलब्ध कराते हुए, अधिकांश आँगनवाड़ियाँ ECCE के शैक्षिक पहलुओं पर अपेक्षाकृत कमज़ोर रही हैं। वर्तमान में, आँगनवाड़ियों में शिक्षा उपलब्ध कराने और बुनियादी ढाँचे की काफ़ी कमी है; परिणामस्वरूप, उनमें 2-4-वर्ष की आयु सीमा के बच्चे अधिक होते हैं और शैक्षिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण उम्र 4-6-वर्ष की आयु के बच्चे कम; उनके पास ऐसे शिक्षक जो ख़ासतौर पर प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में प्रशिक्षित हों, उनकी भी कमी है।

i. 11.7 लाख सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में से 9.3 लाख स्कूलों में प्राथमिक वर्ग और 1.9 लाख में पूर्व-प्राथमिक वर्ग हैं। 2.7 लाख स्कूलों में, आँगनवाड़ी वर्ग, स्कूल परिसर में ही है।[1]

ii. वे आँगनवाडियाँ जो स्कूल परिसर में ही स्थित हैं, उनके मामले में, 4-6 वर्ष की उम्र के बच्चों को प्री-स्कूली बच्चे माना जाता है; और पूर्व-प्राथमिक वर्गों में आमतौर पर दो साल की शिक्षा शामिल होती है।

निजी क्षेत्र में चल रहे ECCE संस्थानों (प्ले स्कूल / प्री-स्कूल) का पूरी तरह से सही डेटा उपलब्ध नहीं है – हालाँकि वास्तविक किस्सों (anecdotal) और अवलोकन संबंधी प्रमाणों से ऐसे संस्थानों के बहुत संख्या में प्रसारित होने का पता चलता है। इनमें कुछ ऐसे है जहाँ काफ़ी संसाधन हैं और कुछ ऐसे हैं जहाँ संसाधनों की कमी है। निजी और अन्य प्री-स्कूल, बड़े पैमाने पर स्कूल के अधोमुखी विस्तार के रूप में संचालित रहे हैं। यद्यपि, कुछ संस्थान बच्चों के लिए बेहतर बुनियादी ढाँचा (infrastructure) और सीखने के संसाधन प्रदान करते हैं, पर ज़्यादातर मुख्य रूप से औपचारिक शिक्षण और रटने पर फ़ोकस करते हैं, और इनमें छात्र-शिक्षक अनुपात अधिक होता है व विकासात्मक रूप से उपयुक्त खेल-आधारित और गतिविधि-आधारित शिक्षण के अवसर भी सीमित होते हैं। इनमें से अधिकांश संस्थानों में काम कर रहे शिक्षक प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में प्रशिक्षित भी नहीं हैं। स्वास्थ्य और पोषण के पहलुओं पर आमतौर पर वे बहुत सीमित जानकारी रखते हैं और 4 साल से कम उम्र के बच्चों की पूरी देखभाल भी नहीं कर पाते।

भारत में, ऐसे बच्चों का अनुपात बहुत अधिक है जो सार्वजनिक या निजी प्री-स्कूली शिक्षा पूरी करते हैं, पर स्कूल में शामिल होने के लिए आवश्यक स्कूल तैयारी, क्षमताएँ उनके पास नहीं होती हैं। इस प्रकार, अधिकांश के लिए नहीं भी तो, कई मौजूदा प्रारम्भिक सीखने के कार्यक्रमों के लिए, पहुँच की समस्याओं के अलावा, गुणवत्ता सम्बन्धी कमियाँ जैसे कि विकासात्मक दृष्टि से अनुपयुक्त पाठ्यक्रम, योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, और कम उपयुक्त शिक्षण विधियाँ आदि प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

6-8 वर्ष की आयु के बच्चे स्कूल में होते हैं। इस उम्र के दौरान आने वाली चुनौतियाँ - शैक्षणिक, पाठ्यचर्या, ढाँचागत, और बहुत कुछ - भारत की शैक्षिक चुनौतियों की प्रमुख जड़ों में से हैं। इन सभी मामलों को NEP 2020 में सीधे तौर पर सम्बोधित किया गया है।

ग) ग़ैर-नियामक (unregulated) निजी प्री-स्कूल

राष्ट्रीय ECCE नीति (2013) स्पष्ट रूप से कहती है कि 'बच्चों के लिए उपलब्ध ECCE की गुणवत्ता को मानकीकृत करने के लिए, ECCE के लिए बुनियादी गुणवत्ता मानक और विशेष निर्देश निर्धारित किए जाएंगे जो सार्वजनिक, निजी और ग़ैर-सरकारी सेवा प्रदाताओं पर लागू होंगे। यह अनुशंसा करती है कि सभी सेवा प्रदाताओं के लिए ECCE को लेकर एक नियामक रूपरेखा राष्ट्रीय ECCE परिषद द्वारा विकसित की जाना चाहिए, जिसे 2016 तक लागू किया जाना चाहिए।'[2]

हालाँकि, निजी प्री-स्कूल अभी भी काफ़ी हद तक अनियमित हैं। यह भी हो सकता है कि बहुत से स्कूलों का गुणवत्तापूर्ण ECCE में निवेश करने का इरादा या साधन न हो। कम-से-कम, वे बच्चों को कुछ घण्टों रहने के लिए सुरक्षित जगह देने का काम तो करते हैं।

घ) प्रवेश और नामांकन

आईसीडीएस योजना की उल्लेखनीय पहुँच (यह दुनिया का एक सबसे बड़ा कार्यक्रम है) और अन्य प्री-स्कूलों के होने के बावजूद, कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं, विशेष रूप से प्राथमिक विद्यालय की तुलना में कम नामांकन और उपस्थिति। यही समस्या, स्कूल में ग्रेड 1 में 5 साल के बच्चों के प्रवेश को लेकर भी दिखाई देती है।

पिछले दो दशकों में पहुँच और नामांकन पर महत्त्वपूर्ण ध्यान दिया गया है। हालाँकि प्राथमिक विद्यालय में पहुँच और नामांकन में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है, लेकिन ECCE कार्यक्रमों में नामांकन अभी भी कम है।

i. पहुँच के मामले में आईसीडीएस योजना का समग्र कवरेज अच्छा रहा है, यहाँ तक कि दूरस्थ स्थानों में स्थापित आँगनवाड़ियाँ भी काम कर रहीं हैं। वर्ष 2022 में, 13,99,661 स्वीकृत आँगनवाड़ियों में से 13,91,004 आँगनवाड़ियाँ काम कर रही थीं।[3]

ii. लेकिन, व्यापक उपलब्धता के बावजूद, नामांकन कम रहता है। 2020-21 के दौरान ग्रेड 1 में 19,344,199 भर्ती हुए, और इनमें से प्री-स्कूल का अनुभव केवल 50.9% के पास था। इनमें से 24.7% विद्यार्थी, स्कूल में ही स्थित प्री-स्कूल से थे, जबकि 7.9% विद्यार्थियों के प्री-स्कूल व प्राथमिक स्कूल अलग थे और 18.3% का अनुभव आँगनवाड़ी/ECCE केन्द्र का था।[4]

iii. 2020-21 में प्राथमिक विद्यालय में 103.3 के जीईआर और 92.7 के एनईआर के साथ, नामांकन उत्कृष्ट रहा।[4]

iv. 2019-20 में, शहरी प्री-स्कूल में बच्चों की उपस्थिति 44% और ग्रामीण क्षेत्रों में 39% रिपोर्ट की गई थी। और कुल मिलाकर, 2-4 वर्ष की आयु के 40% बच्चे प्री-स्कूल शिक्षा से जुड़े थे, इसमें सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों (Economically Disadvantaged Groups, SEDGs) के बच्चों की सबसे कम उपस्थिति थी। हालाँकि, 6-10 वर्ष की आयु के बच्चों में 95% स्कूल जाते हैं।[5]

v. देश के 21 राज्यों में 5 वर्ष के बच्चे कक्षा 1 में प्रवेश लेते हैं।[6]

ङ) मानव संसाधन

हालाँकि, आँगनवाड़ियों का स्टाफ पूरा नहीं है, फिर भी यह उच्च स्तर पर है। निजी संस्थानों का डेटा उपलब्ध नहीं है। ECCE के लिए प्रासंगिक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की पेशकश करने वाले संस्थानों की संख्या भी कम और अपर्याप्त है।

i. आँगनवाड़ी में स्वीकृत पदों की संख्या 13,99,696 है, जिसमें रिक्त पद मात्र 5% ही हैं। आँगनवाड़ी सहायिकाओं के स्वीकृत पदों में से 7% रिक्त हैं।[7]

ii. स्कूल-पूर्व शिक्षा के लिए शिक्षक तैयार करने वाले कार्यक्रमों की पेशकश करने वाले शिक्षक शिक्षा संस्थानों की संख्या बेहद कम है। निजी क्षेत्र में केवल 1% शिक्षक शिक्षा संस्थान (जिसमें देश में 92% शिक्षक शिक्षा संस्थान शामिल हैं) स्कूल-पूर्व शिक्षकों के लिए कार्यक्रम पेश करते हैं। उत्तर-पूर्वी राज्यों में से किसी में भी स्कूल-पूर्व शिक्षा के लिए शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम नहीं हैं।[8]

च) पोषण

अच्छा पोषण ECCE का एक अभिन्न अंग है। हालाँकि, पिछले कुछ वर्षों में, भारत में बच्चों के प्रमुख पोषण संकेतकों पर प्रगति हुई है, लेकिन तब भी काफ़ी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

i. भारत में, पाँच वर्ष से कम आयु के 36 प्रतिशत बच्चे ठीक से नहीं बढ़े/अविकसित (stunted) हैं (अर्थात उनकी उम्र के हिसाब से वे बहुत ही छोटे लगते हैं)। यह दीर्घकालिक अल्पपोषण का संकेत है। पाँच साल से कम उम्र के 19% बच्चे काफ़ी कमज़ोर हैं (wasted) (अर्थात उनकी लम्बाई के अनुपात में बहुत ही पतले), जो कि तीव्र कुपोषण का संकेत है, जबकि पाँच साल से कम उम्र के 32 प्रतिशत बच्चे कम वज़न के हैं।[5] इसका रोज़ की ज़िन्दगी और दीर्घावधि दोनों में ही बच्चों के समग्र विकास पर प्रभाव पड़ता है।

ii. 2015-16 के बाद से ही बच्चों के ठीक से नहीं बढ़ने/ अविकसित होने (stunting) और कम वज़न होने का प्रचलन कम हुआ है। 2015-16 में अविकसित बच्चों का प्रतिशत 38 था जो 2019-21 में से घटकर 36 प्रतिशत हो गया। इसी समयावधि में, कमज़ोरी (wasting) की व्यापकता 2015-16 में 21 प्रतिशत थी जो 2019-21 में घटकर 19 प्रतिशत हो गई है। हालाँकि, राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में व्यापक भिन्नताएँ हैं, कुछ राज्यों में लगभग 40% या अधिक बच्चे अभी भी विकास में पीछे हैं।[5]

छ)सीखने के प्रतिफल

बहुत से ECCE संस्थानों में शैक्षिक प्रतिफलों पर फ़ोकस कम रहा है, और प्रतिफलों की उपलब्धि अपर्याप्त रही है। उपलब्धि की ये कमियाँ स्कूल के बाद के वर्षों में बढ़ती रहती हैं।

i. आँगनवाड़ियों में शिक्षा के घटक पर ध्यान कई कारणों से अपर्याप्त रहा है। जैसे उपलब्ध समय, शिक्षक की क्षमता। पढ़ने से पहले की गतिविधियाँ, लिखने से पहले की गतिविधियाँ और संख्या-पूर्व अवधारणाओं से सम्बन्धित गतिविधियाँ आमतौर पर आँगनवाड़ियों में बहुत कम होती हैं।

ii. कई बच्चे अपनी उम्र के अनुसार सीखने के स्तर को प्रदर्शित करने में असमर्थ हैं; यह समस्या तब भी बनी रहती है, जब बच्चे प्राथमिक विद्यालय में जाते हैं।[9]

iii. NAS 2021, कक्षा 3 में सीखने के स्तर में गिरावट और सभी कक्षाओं में सीखने की कमी के लगातार बढ़ने (accumulation) को दर्शाता है। प्राथमिक कक्षाओं में भाषा और गणित में औसत अंक उच्च प्राथमिक और माध्यमिक ग्रेड की तुलना में काफ़ी कम हो गए हैं।[9]

ज) आगे की राह

NEP 2020 भारत में ECCE की चुनौतियों को स्पष्ट रूप से बताती है - 'करोड़ों छोटे बच्चों, विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण ECCE उपलब्ध नहीं है', यह नीति मज़बूत निवेश के साथ इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक स्पष्ट प्रतिबद्धता दर्शाती है, और इस तरह गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था विकास, देखभाल, और शिक्षा का सार्वभौमिक प्रावधान 'जितनी जल्दी हो सके, प्रदान करने की बात करती है, अधिक-से-अधिक 2030 से पहले ही' (NEP 2020 1.1)।

देश में ECCE परिदृश्य को बदलने के लिए NEP 2020 के बहुआयामी दृष्टिकोण के मद्देनज़र, यह NCF सबसे महत्त्वपूर्ण है। हालाँकि बुनियादी ढाँचे और कुछ अन्य मामलों में निवेश में कुछ समय लग सकता है, लेकिन, पाठ्यचर्या और शैक्षणिक बदलाव समानान्तर रूप से व तेज़ी से किए जा सकते हैं। इस NCF का उद्देश्य संस्थानों में ECCE के अभ्यास में ऐसे बदलावों को सम्भव बनाना है, और अन्य सुधार भी साथ-साथ में होते रहें।

1.2.5 दुनियाभर में इस अवस्था के लिए शिक्षण-अधिगम को आकार देने वाले अन्य विचार

रूसो, फ्रोबेल, ड्यूई और मोंटेसरी जैसे विचारक पूरी दुनिया में, बाल्यावस्था में शिक्षा को लेकर किए जाने वाले काम (movement) में अग्रणी थे।

ड्यूई ने इस बात पर ज़ोर दिया कि, रोज़मर्रा के अनुभव सीखने के बेहतरीन अवसर प्रदान करते हैं, उनका यह भी कहना था कि बच्चे की अपनी प्रवृत्तियाँ, गतिविधियाँ और रुचियाँ शिक्षा का प्रारम्भिक बिन्दु होना चाहिए। इसका निहितार्थ यह है कि बच्चा 'जिस वक़्त जिस जगह पर है' (here and now) उससे यह निर्धारित होता है कि बच्चों को किसमें जोड़ा/ मशगूल (engage) किया जाना चाहिए। इसलिए, महत्त्वपूर्ण शुरुआती बिन्दुओं के रूप में, शिक्षकों को बच्चे के निकटतम सामाजिक वातावरण और रुचि को देखते हुए, प्रकरणों (Topics) का चयन करना चाहिए। फ्रोबेल का मानना था कि क्रिया और प्रत्यक्ष अवलोकन बच्चों को शिक्षित करने का सबसे अच्छा तरीक़ा है। इसका निहितार्थ है एक सतर्क (और जानकार) शिक्षक, जो बच्चों के साथ खेल और अन्य गतिविधियों में मशगूल रहे, यह प्रभावी शिक्षण-अधिगम के लिए एक महत्त्वपूर्ण शर्त है।

हाल के दिनों में, विकासात्मक मनोविज्ञान और बाल विकास के विद्वानों जैसे पियाज़े, ब्रूनर, वायगोत्स्की, यूरी ब्रोंफेनब्रेनर और गार्डनर आदि ने अपने शोध के आधार पर यह ज़ोर दिया है कि खेल और गतिविधियाँ बच्चों के अधिगम के सहज तरीक़े हैं और यह कि बच्चों का कई सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों में रहते हुए सीखना, उनके अधिगम और विकास को प्रभावित करता है।

पियाज़े ने इस बात पर ज़ोर दिया कि बच्चे अपने अनुभवों को आत्मसात करके और फिर उन्हें अपनी समझ में समायोजित करके अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं और यह कि बच्चे अपनी अनुभूतियों और अनुभवों को समझने के लिए लगातार नई जानकारी का समायोजन और उपयोग करते हैं।

वायगोत्स्की ने बच्चों को सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों में सक्रिय रूप से रमते/ मशगूल पाया, और यह भी कि सीखने और विकास की प्रक्रिया में बच्चों व उनसे अधिक अनुभवी अन्य लोगों के बीच एक सक्रिय अन्तःक्रिया होती है। इसका निहितार्थ यह है कि बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय कक्षा-कक्षों में छोटे समूहों में गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जहाँ वे बच्चे जो कुछ ज़्यादा समझ रखते हैं वे अपने साथी बच्चों को सीखने में मदद करते हैं।

जेरोम ब्रूनर ने प्रस्तावित किया कि बच्चे प्राप्त सूचना व ज्ञान को उनकी स्मृति में तीन अलग-अलग लेकिन परस्पर जुड़े तरीक़ों में निरूपित करें और ये तरीक़े हैं - क्रिया आधारित (action based), छवि आधारित (image based) और भाषा/प्रतीक (language/symbol based) आधारित। 'सर्पीलाकार पाठ्यचर्या (spiral curriculum) की अवधारणा के ज़रिए यह कैसे सम्भव हो सकता है इसकी व्याख्या भी उन्होंने दी, इसमें जानकारी को व्यवस्थित (structured) किया जाना शामिल था ताकि जटिल विचारों को पहले सरल स्तर पर पढ़ाया जा सके। जहाँ बच्चे ठोस अनुभवों के माध्यम से अधिक सीखते हैं, और फिर बाद में अधिक जटिल स्तरों पर इन विचारों को पुनः देखा जाए। (इसलिए सर्पीलाकार की उपमा का प्रयोग)। इसलिए, प्रकरण (Topics) धीरे-धीरे बढ़ती कठिनाई के स्तर को देखते हुए पढ़ाए जाएंगे। इसका निहितार्थ यह है कि कक्षा में निरूपण के विभिन्न तरीक़ों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए - ठोस, चित्र-आधारित और भाषा या प्रतीक आधारित। शुरुआती वर्षों की पाठ्यचर्या (Curricula) में, बच्चों के एक ही समूह के साथ पूरे तीन साल की अवधि में एक ही थीम या टॉपिक को दोहराने का आधार यही है।

इन विचारों ने पाठ्यचर्या की विषयवस्तु निर्माण में, संवेदी और व्यावहारिक गतिविधियों को जगह देने में मदद की। भारतीय विचारक भी छोटे बच्चों और गतिविधियों के दौरान सीखने-सिखाने की अलग-अलग सामग्री का प्रयोग करने में उनकी दिलचस्पियों से सम्बन्धित अपने ख़ुद के अवलोकनों द्वारा निर्देशित थे। खोज (exploration) और खेल, कला, लय, तुकबन्दी, शारीरिक हलचल और बच्चे की सक्रिय भागीदारी आदि के महत्त्व से जुड़ी इस अन्तर्दृष्टि ने कक्षा में इन तत्वों को शामिल करने के लिए रास्ता बनाया।

खण्ड 1.3
NEP 2020 का विज़न

बॉक्स 1.3 क

यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय Ethos (लोकाचार/लोकनीति/मूल्यों) पर आधारित ऐसी शिक्षा व्यवस्था के लिए दृष्टि देती है जो सभी को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके भारत को एक न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान समाज में सतत रूप से रूपांतरित करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी, और इस तरह भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाएगी।

नीति में यह परिकल्पना की गई है कि हमारे संस्थानों की पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों में मौलिक कर्तव्यों और संवैधानिक मूल्यों के प्रति गहरे सम्मान की भावना विकसित करें, अपने देश के साथ जुड़ाव, और बदलती दुनिया में उनकी अपनी भूमिका और ज़िम्मेदारियों के प्रति सचेत जागरूकता विकसित करें।

नीति का विज़न शिक्षार्थियों के बीच न केवल विचार में, बल्कि आत्मा, बुद्धि और कार्यों में भी भारतीय होने का गहरा गर्व पैदा करना है, साथ ही ऐसे ज्ञान, कौशलों, मूल्यों और स्वभाव को विकसित करना है जो मानवाधिकारों, सतत विकास एवं रहन-सहन और वैश्विक कल्याण के लिए ज़िम्मेदार प्रतिबद्धता को आधार/सम्बल दे, ताकि वे एक सच्चे वैश्विक नागरिक बनें।

1.3.1 NEP 2020 के समस्त मार्गदर्शक सिद्धान्त

NEP 2020 कहती है कि शिक्षा का लक्ष्य अच्छे इन्सान का विकास करना है, जो विवेकशील, तर्कसंगत विचार और कर्म करने में सक्षम हो, जिसमें करुणा और समानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, साथ ही ठोस नैतिक आधार और मूल्य हों। इसका लक्ष्य हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित न्यायसंगत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण के लिए संलग्न, उत्पादक और योगदान करने वाले नागरिकों को तैयार करना है।

एक अच्छा शैक्षणिक संस्थान वह है जहाँ हर विद्यार्थी का स्वागत होता है और देखभाल की जाती है, जहाँ एक सुरक्षित और फूर्तिदायक (stimulating) सीखने का माहौल मौजूद है, जहाँ सीखने के ढेर सारे अनुभव उपलब्ध होते हैं, और जहाँ सभी के सीखने के लिए अनुकूल भौतिक बुनियादी ढाँचा और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध हैं। हर शैक्षणिक संस्थान का यह लक्ष्य होना चाहिए कि उनका संस्थान यह सभी विद्यार्थियों को उपलब्ध करा पाए। हालाँकि, इसी के साथ-साथ, सभी शैक्षणिक संस्थानों में और शिक्षा के सभी चरणों में निर्बाध एकीकरण और समन्वय भी होना चाहिए।

NEP 2020 के मुख्य मार्गदर्शक सिद्धान्त हैं :

क) अकादमिक और ग़ैर-आकादमिक दोनों ही क्षेत्रों में प्रत्येक विद्यार्थी के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए, शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों को भी इसके प्रति संवेदनशील बनाना कि वे प्रत्येक विद्यार्थी की अद्वितीय क्षमताओं का संज्ञान लें, उन्हें अलग-अलग पहचान पाएँ और बढ़ावा दें।

ख) सर्वोच्च प्राथमिकता इस बात की है कि कक्षा 3 तक सभी विद्यार्थी बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान हासिल कर लें।

ग) लचीलापन, ताकि विद्यार्थियों के पास अपने सीखने के रास्ते और कार्यक्रमों को चुनने की योग्यता हो, और इस तरह वे अपनी प्रतिभा और रुचि के अनुसार जीवन में अपना रास्ता ख़ुद चुनें।

घ) कला और विज्ञान, पाठ्यचर्या-संबंधी और पाठ्येतर गतिविधियाँ, व्यावसायिक और अकादमिक धाराएँ एक-दूसरे से बिलकुल अलग-अलग न हों, ताकि सीखने के विभिन्न क्षेत्रों के बीच नुकसानदायक पदानुक्रम (hierarchies) व जो लम्बी दीवार है उसे हटाया जा सके।

ङ) एक बहुविषयी दुनिया में समस्त ज्ञान की एकात्मकता (unity) और अखंडता (integrity) सुनिश्चित करने के लिए, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल सभी में बहु-विषयक और समग्र शिक्षा हो।

च) अवधारणात्मक समझ पर ज़ोर हो न कि रटने और परीक्षा के लिए सीखने पर।

छ) तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को सुनिश्चित करने के लिए अवधारणात्मक समझ, समस्या-समाधान, सृजनात्मकता और समालोचनात्मक चिन्तन (critical thinking)।

ज) आचार नीति (ethics) और मानवीय एवं संवैधानिक मूल्य जैसे समानुभूति, दूसरों का सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक सम्पत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, स्वतंत्रता, ज़िम्मेदारी, बहुलवाद, समानता और न्याय।

झ) शिक्षण और सीखने में बहुभाषावाद और भाषा की ताक़त को बढ़ावा देना।

ञ) जीवन कौशल जैसे कि सम्प्रेषण, सहयोग, समूह में काम और लचीलापन (resilience)।

ट) सीखने के लिए नियमित रचनात्मक आकलन (formative assessment) पर फ़ोकस न कि योगात्मक आकलन (summative assessment) जो कि आज की कोचिंग संस्कृति को बढ़ावा देता है।

ठ) शिक्षण और अधिगम में तकनीकी का अधिकाधिक उपयोग, भाषागत अवरोधों को हटाना, दिव्यांग विद्यार्थियों तक पहुँच बढ़ाना और शैक्षणिक योजना व प्रबन्धन।

ड) विविधता का सम्मान और सभी पाठ्यचर्याओं, शिक्षणशास्त्र एवं नीतियों में स्थानीय सन्दर्भ का आदर, और हमेशा यह ध्यान में रखना कि शिक्षा एक समवर्ती (concurrent) विषय है।

ढ) यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी विद्यार्थी शिक्षा व्यवस्था में कामयाब हो सकें, सभी शैक्षणिक निर्णयों की आधारशिला के रूप में पूर्ण समता और समावेशन।

ण) बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा, और स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या में तालमेल।

त) सीखने की प्रक्रिया के केन्द्र में शिक्षक और संकाय सदस्य (faculty) - उनकी भर्ती, निरन्तर पेशेवर विकास, सकारात्मक कार्य वातावरण और सेवा की शर्तें।

थ) ऑडिट और सार्वजनिक प्रकटीकरण के माध्यम से शैक्षणिक ढाँचे की ईमानदारी (integrity), पारदर्शिता और संसाधन दक्षता सुनिश्चित करने के लिए 'सरल किन्तु कसी हुई नियामक रूपरेखा', साथ-ही-साथ स्वायत्तता, सुशासन और सशक्तिकरण के माध्यम से नवाचार और लीक से हटकर (आउट-ऑफ-द-बॉक्स) विचारों को प्रोत्साहित करना।

द) उत्कृष्ट शिक्षा और विकास के लिए, अति आवश्यक उत्कृष्ट शोध।

ध) शैक्षिक विशेषज्ञों द्वारा नियमित आकलन और सतत अनुसंधान के आधार पर प्रगति की सतत समीक्षा।

न) भारतीय बुनियाद एवं गौरव, और इसकी समृद्ध, विविध, प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणाली एवं परम्पराएँ।

ऩ) शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है; अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच को प्रत्येक बच्चे का मूल अधिकार माना जाना चाहिए।

1.3.2 NEP 2020 में हुए प्रतिमान परिवर्तन जो NCF के मार्गदर्शक हैं

NEP 2020 में स्कूली शिक्षा के सन्दर्भ में तीन मुख्य प्रतिमान परिवर्तन हुए हैं जो NCF के मार्गदर्शक हैं।

क) एक अधिक बहु-विषयक और समग्र शिक्षा की ओर बढ़ना (Transitioning)

i. लक्ष्य अच्छे इन्सानों का विकास करना है। ऐसे इन्सान जो ठोस नैतिक और भारतीय आधार लेते हुए, करुणा और मानवीयता तथा साहस और रचनात्मक कल्पनाशक्ति के साथ स्वतंत्र रूप से विवेकशील, तर्कसंगत विचार और कर्म कर सकें।

ii. बच्चे की सभी क्षमताओं – बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, नैतिक, और भावनात्मक के समग्र विकास के लिए – पाठ्यचर्या में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, भाषाओं, खेलकूद, और व्यावसायिक (vocational) शिक्षा पर बहुत ज़ोर हो।

iii. ‘कला’ और ‘विज्ञान’ में, ‘अकादमिक’ और ‘व्यावसायिक’ पढ़ाई में और ‘पाठ्यचर्या-संबंधी’ और ‘पाठ्येत्तर’ गतिविधियों में कड़ा विभाजन न हो।

iv. विद्यार्थियों के पास कला, मानविकी, विज्ञान, खेल और व्यावसायिक सभी क्षेत्रों में विषयों का अध्ययन करने के लिए विकल्प होंगे और चयन करने की ज़्यादा आज़ादी होगी।

v. आवश्यक ज्ञान और कौशल जो सभी विद्यार्थियों को सीखना चाहिए, उनमें शामिल है – वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सौन्दर्यशास्त्र और कला, मौखिक और लिखित सम्प्रेषण, नीतिगत तर्क, टिकाऊ रहन-सहन, भारतीय ज्ञान प्रणाली, डिजिटल साक्षरता और कम्प्यूटेशनल सोच, देश के बारे में ज्ञान, करंट अफ़ेयर्स और दुनिया के समक्ष उपस्थित महत्त्वपूर्ण मुद्दे।

ख) रटने की बजाय समालोचनात्मक और विश्लेषणात्मक चिंतन पर ज़ोर की ओर बढ़ना

i. विद्यार्थी विश्लेषणात्मक रूप से सोचने की क्षमता पैदा करें, चर्चाओं में भाग लें, बोलने, लिखने और 21वीं सदी के अन्य कौशल में कुशल बनें और यह सीखें कि उन्हें सीखना कैसे है?

ii. प्रमुख अवधारणाओं, गहरे अनुभवात्मक अधिगम, विश्लेषण और मनन (reflection), मूल्य और जीवन कौशल सीखने पर ज़ोर हो।

iii. हमारे स्कूली ढाँचे में मौजूद आकलन की प्रणाली जिसमें मुख्यतः बिना सोचे-समझे याद करने के कौशल को जाँचा जाता है इसे बदलना चाहिए। आकलन रचनात्मक हो, सीखने और विकास को बढ़ावा दे और उच्च स्तरीय कौशलों को जाँचे।

ग) एक नई पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय संरचना की ओर बढ़ना

i. अधिगमकर्ता के विकास की अलग-अलग अवस्थाओं और उनकी इच्छा आदि ज़रूरतों के प्रति अधिक तत्परता से प्रतिक्रिया देने के लिए, पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोण बच्चे की विकासात्मक अवस्थाओं के अनुरूप होना चाहिए। इसलिए, यह चार चरणों 5 + 3 + 3 + 4 की डिज़ाइन द्वारा निर्देशित किया जाएगा।

1) फाउंडेशनल स्टेज : लचीलापन, बहुस्तरीय, खेल-आधारित अधिगम

2) प्रिपरेटरी स्टेज : कुछ औपचारिक अन्तःक्रिया आधारित कक्षा के साथ-साथ खोज और गतिविधि आधारित अधिगम। ताकि पढ़ने, लिखने, बोलने, शारीरिक शिक्षा, कला, भाषाओं, विज्ञान और गणित आदि सीखने के लिए एक ठोस बुनियाद तैयार हो सके।

3) मिडिल स्टेज : यहाँ शिक्षणशास्त्रीय और पाठ्यचर्या की शैली वैसी ही होगी जैसी कि प्रिपरेटरी स्टेज में है, लेकिन यहाँ और विभिन्न विषयों से परिचय और उनकी ज़्यादा अमूर्त अवधारणाओं को सीखना और उन पर चर्चा कर पाना भी शामिल होगा।

4) सेकेंडरी स्टेज : चार साल तक विषय का गहराई से और बहुविषयक अध्ययन, विश्लेषणात्मक चिंतन पर फ़ोकस, जीवन की आकांक्षाओं पर ध्यान और विद्यार्थियों के लिए विषयों के विकल्प और चुनाव में लचीलापन।

1.3.3 NEP 2020 – प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा के विशिष्ट लक्ष्य

क) प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी हासिल किया जाना चाहिए। (NEP 2020, अनुच्छेद 1.1)

ख) सभी बच्चों द्वारा दिए गए क्षेत्रों में, इष्टतम प्रतिफलों को हासिल करना :

i. शारीरिक और गत्यात्मक विकास

ii. संज्ञानात्मक विकास

iii. सामाजिक–भावनात्मक–नैतिक विकास

iv. सांस्कृतिक / कलात्मक विकास

v. आपसी संवाद और शुरुआती भाषा, साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (NEP 2020, अनुच्छेद 1.2)

ग) संस्थाओं द्वारा लचीले, बहुआयामी, बहुस्तरीय, खेल आधारित, गतिविधि आधारित और जाँच-आधारित शिक्षा जिसमें, भाषाएँ, संख्याएँ, गिनना, रंग, आकार, इनडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या-समाधान, चित्रकला, पेंटिंग और अन्य दृश्य कलाएँ, दस्तकारी, नाटक, कठपुतली, संगीत और शारीरिक हलचल (movement) आदि को शामिल किया जाए। यानी इन सभी का संस्थानीकरण हो और इनके साथ सामाजिक क्षमताओं, संवेदनशीलता, अच्छा व्यवहार, शिष्टता, आचार नीति (ethics), व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में काम करना और आपसी सहयोग पर भी फ़ोकस हो। (NEP 2020, अनुच्छेद 1.2) NEP 2020 कहती है कि फाउंडेशनल स्टेज 3 वर्ष से 8 वर्ष तक का है यानी, पाँच वर्ष की स्कूल शिक्षा, जिसमें स्कूल-पूर्व शिक्षा से लेकर कक्षा 2 तक की शिक्षा शामिल है। और इसलिए 6 वर्ष के बच्चे कक्षा 1 में हों।

1.3.4 NEP 2020 के सन्दर्भ में फाउंडेशनल स्टेज के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त

क) हर एक बच्चा सीखने का सामर्थ्य रखता है, चाहे उसके जन्म या पृष्ठभूमि की परिस्थितियाँ कैसी भी रही हों।

ख) हर बच्चा अलग है और वह अपनी ही गति से बढ़ता है, सीखता है और विकसित होता है।

i. बच्चे नैसर्गिक शोधकर्ता होते हैं उनके पास ज़बरदस्त अवलोकन कौशल होते हैं। वे ख़ुद अपने सीखने के अनुभवों के निर्माणकर्ता होते हैं और वे अपनी भावनाओं और विचारों को अलग-अलग तरीकों से अभिव्यक्त करते हैं।

ii. बच्चे सामाजिक प्राणी हैं; वे अवलोकन, अनुकरण और सहयोग के माध्यम से सीखते हैं। बच्चे ठोस अनुभवों, अपनी इन्द्रियों का उपयोग करते हुए और अपने वातावरण पर क्रिया करते हुए सीखते हैं।

iii. बच्चों के अनुभवों और सीखने के तरीक़ों को स्वीकार (acknowledged) और शामिल किया जाना चाहिए। बच्चे सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब उनका सम्मान किया जाता है, उन्हें महत्त्व दिया जाता है और सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह से शामिल किया जाता है।

iv. खेल और गतिविधियाँ बच्चों के सीखने और विकास के प्रमुख तरीक़े हैं, बच्चों को अपने वातावरण को अनुभव करने, उसकी पड़ताल करने और उसके साथ प्रयोग करने के अवसर देने चाहिए।

v. बच्चों को विकासात्मक और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त तथा समस्या सुलझाने और अवधारणात्मक समझ विकसित करने वाली सामग्री, गतिविधियों और वातावरण से ज़रूर जुड़ना (engage) चाहिए।

vi. विषयवस्तु बच्चों के अनुभवों से निचोड़ी गई हो। विषयवस्तु की नवीनता या उसकी चुनौतियाँ बच्चों के परिचित अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए।

vii. विषयवस्तु बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए और यह फंतासी, कहानी कहने, कला, संगीत और खेल के लिए कई अवसर प्रदान करे।

viii. विषयवस्तु में लिंग, जाति, वर्ग और विकलांगता जैसे मुद्दों में समता पर ज़ोर दिया जाना चाहिए।

ix. शिक्षक बच्चों के सीखने में सुगमकर्ता एवं मध्यस्थ की भूमिका निभाएँ। खुले प्रश्न पूछकर, खोज करने के मौके देकर सम्बलन प्रदान करें।

x. परिवार और समुदाय दोनों ही इस प्रक्रिया में कई तरीक़ों से भागीदार हैं।

xi. देखभाल (care) सीखने के केन्द्र में है। इस उम्र के बच्चे परिचित वयस्कों को सहज तौर पर देखभालकर्ता के रूप में देखते हैं। शिक्षक बच्चों की ज़रूरतों और उनके मूड के प्रति संवेदनशील हों और ज़िम्मेदार भी। कक्षा की गतिविधियों में भी सीखने के भावनात्मक पहलू पर ज़ोर हो (उदाहरण के लिए – कहानी कहने और कला के ज़रिए)।

बॉक्स 1.3 ख

फाउंडेशनल स्टेज एक एकल पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय चरण है जिसमें 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पाँच साल का लचीला, बहुस्तरीय, खेल और गतिविधि-आधारित शिक्षण शामिल है।

NEP 2020 इन प्रारम्भिक वर्षों को विकास और सीखने की दृष्टि से काफ़ी अहम मानती है।

इन वर्षों के दौरान शिक्षा में बुनियादी क्षमताओं और कौशल विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। इनमें संज्ञानात्मक, भाषा सम्बन्धी और सामाजिक-भावनात्मक कौशल शामिल हैं। इन सभी के विकास के लिए प्रारम्भिक वर्ष सबसे संवेदनशील अवधि का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे बच्चों के अकादमिक पढ़ने और लिखने एवं संख्यात्मकता सीखने के लिए आधार तैयार करते हैं और बच्चे जैसे-जैसे परिपक्व होते जाते हैं वे साथ ही आजीवन सीखने की बुनियाद भी प्रदान करते हैं।

1.3.5 NEP की प्राथमिकताओं पर शुरू प्रमुख नई पहल

क) NIPUN भारत

2021 में शुरू किया गया, NIPUN भारत (NIPUN; National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy) (समझ के साथ पढ़ने और संख्या ज्ञान में प्रवीणता के लिए राष्ट्रीय पहल) NEP 2020 द्वारा निर्देशित है। यह देश में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN) के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय मिशन है। NIPUN भारत का लक्ष्य 2026-27 तक देश के सभी बच्चों द्वारा कक्षा 3 तक FLN को प्राप्त करना है।

महामारी के दौरान स्कूल बन्द होने की वजह से हुई सीखने की क्षति के कारण बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN) हासिल करने की चुनौतियाँ अधिक गहरी और व्यापक हो गई हैं। NIPUN भारत पहल में इस हेतु रणनीतिक क्रियान्वयन पर तो फ़ोकस किया ही गया है साथ-ही-साथ NEP 2020 के अध्याय 2 में उल्लिखित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए महत्त्वपूर्ण ज़रूरी ढाँचों, भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों पर ध्यान केन्द्रित करता है। इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान केन्द्रित करने में इसने एक उत्कृष्ट काम किया है, और पूरे देश में इस पर काम शुरू हो गया है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य को करने के लिए पूरी तरह से सक्रिय रहना चाहिए।

NIPUN भारत के वे तत्व जो अपनी प्रकृति में पाठ्यचर्या से सम्बद्ध है, जैसे पाठ्यचर्या के लक्ष्य, और क्षमताएँ वे सभी NCF से जुड़ेंगे।

ख) विद्या प्रवेश

NEP 2020 सभी बच्चों के लिए FLN के लक्ष्यों को प्राप्त करने पर ज़ोर देती है, विद्या प्रवेश का आधार FLN पर दिया गया यह ज़ोर ही है। नीति इस बात पर चिन्ता व्यक्त करती है कि चूँकि हम अभी तक हर बच्चे को ECCE नहीं उपलब्ध करवा पाए हैं, (सार्वभौमिक पहुँच नहीं) इसलिए बच्चों का एक बड़ा हिस्सा कक्षा 1 के पहले कुछ हफ़्तों के भीतर ही पिछड़ जाता है। सीखने में आई इस कमी को दूर करने में मदद करने के लिए, तीन महीने का, खेल-आधारित स्कूल तैयारी मॉड्यूल, एक अन्तरिम उपाय के रूप में प्रस्तावित किया गया है।

विद्या प्रवेश कक्षा 1 में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों के लिए NCERT द्वारा विकसित किया गया है। इसका ट्रांजेक्शन तीन महीनों तक किया जाएगा, इसमें बच्चों को स्कूल के माहौल से परिचित कराने और अपने आप का ध्यान रखने से सम्बन्धित अनुभव प्रदान करने के लिए पूरे दिन के चार घण्टे होंगे। विद्या प्रवेश नीतिगत मूल्यों और सांस्कृतिक विविधता को सीखने और भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण के साथ बातचीत भी सम्भव बनाएगा। इन पहलुओं के अलावा, विद्या प्रवेश को गणित, भाषा और साक्षरता की बुनियाद निर्मित करने के लिए डिज़ाइन किया जाएगा, और इसमें NIPUN भारत में निर्धारित सीखने के प्रतिफलों का भी ध्यान रखा जाएगा।

ग) बालवाटिका

NEP 2020 कहती है कि '5 वर्ष की आयु से कम उम्र का प्रत्येक बच्चा एक "प्रिपरेटरी कक्षा" या "बालवाटिका" (जो कि कक्षा 1 से पहले है) में जाएगा, जिसमें एक योग्य ECCE शिक्षक होगा' (NEP 2020 पैरा 1.6)।

बालवाटिका कार्यक्रम, कक्षा-1 से पहले एक साल के कार्यक्रम के रूप में परिकल्पित किया गया है, इसका उद्देश्य खेल आधारित अप्रोच के ज़रिये बच्चों को संज्ञानात्मक और भाषाई दक्षताओं में तैयार करना है। ये दक्षताएँ, पढ़ना, लिखना सीखने और संख्या समझ विकसित करने के लिए पूर्व-शर्त हैं। NCERT ने बालवाटिका के साथ-साथ प्री-स्कूल के तीन वर्षों के लिए भी दिशानिर्देश और प्रक्रियाएँ विकसित की हैं।

निष्कर्ष: इस NCF का उद्देश्य, NEP 2020 के लक्ष्यों के मद्देनज़र, फाउंडेशनल स्टेज के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करना है। इस पाठ्यचर्या को तैयार करने में, ECCE के क्षेत्र में हुए व्यापक विश्वव्यापी शोध, भारत की समृद्ध ECCE परम्पराओं, और हाल ही में शुरू की गई पहलों जैसे NIPUN भारत और विद्या प्रदेश आदि को भी ध्यान में रखा जाएगा, ताकि भारत के सभी बच्चों के लिए बाल्यावस्था देखभाल और सीखने का पारिस्थितिकी तंत्र दुनिया में सबसे आगे हो।

खण्ड 1.4
फाउंडेशनल स्टेज में बच्चे सीखते कैसे हैं

बच्चे नैसर्गिक अधिगमकर्ता होते हैं। वे सक्रिय होते हैं, सीखने के लिए उत्सुक होते हैं, और नई चीजों के सन्दर्भ में दिलचस्पी से जवाब देते हैं। उनमें जिज्ञासा की एक सहज (innate) भावना होती है– वे दुनिया को समझने की कोषिश में, अचम्भित होते हैं, प्रश्न करते हैं, पड़ताल करते हैं, कोषिश करते हैं और खोज करते रहते हैं। अपनी जिज्ञासा पर काम करते हुए, वे ज़्यादा-से-ज़्यादा खोजना और सीखना जारी रखते हैं।

बच्चे खेल के माध्यम से - गतिविधि और ख़ुद करके बेहतर सीखते हैं। उन्हें दौड़ना, कूदना, घुटनों के बल या लेटकर खिसकना और सन्तुलन करना पसन्द आता है, कुछ बातों को दोहराना उन्हें आनन्द देता है, वे लय के प्रति तत्काल व सहज प्रतिक्रिया देते हैं, वे बात करते हैं, वे पूछते हैं, और वे चिन्तन (reason) करते हैं, और उनसे पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हैं। वे सोच-समझकर किसी व्यक्ति और चीज़ को जोड़-तोड़ (manipulation) करके, पड़ताल और प्रयोग करते हुए प्रत्यक्ष अनुभवों (first-hand experience) से सीखते हैं।

सामग्री, विचारों, सोच, भावनाओं के साथ हँसी-खेल (playfulness) बच्चों की सृजनात्मकता, लचीली सोच, और समस्या सुलझाने की योग्यताओं को विकसित करने में मदद करता है और उनकी एकाग्रता, ध्यान केन्द्रित करने और किसी चीज़ को हासिल करने के लिए बार-बार कोषिश करने की क्षमता को बढ़ाता है। खेल के ज़रिए, बच्चे अपनी सोच, शब्दावली, कल्पना, बोलने और सुनने के कौशल बेहतर करते हैं, चाहे इनमें वे वास्तविक परिस्थितियों का पुनर्निर्माण कर रहे हों या काल्पनिक दुनिया बना रहे हों।

इसलिए, इस चरण में सीखना एक सक्रिय और संवादात्मक (interactive) प्रक्रिया है जिसमें बच्चे खेल के तथा अन्य बच्चों व अधिक अनुभवी लोगों के साथ बातचीत के ज़रिए सीखते हैं। बच्चे अपने सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों में सक्रिय रूप से मशगूल रहते हैं, और वे अपने संवेदन (perception) और अनुभवों को समझने के लिए लगातार नई जानकारी को समायोजित और उपयोग करते हैं।

बच्चों का खेलना और बिना किसी हिचक के मज़े से काम करना (playfulness) इन दोनों को दूसरों के साथ सक्रिय भागीदारी के अनुभव देते हुए पोषित और मज़बूत किया जा सकता है। साथ ही प्राकृतिक व वास्तविक दुनिया की ऐसी सामग्री जो सीखने, कल्पना करने, रचनात्मकता, नवाचार तथा विविध और अनूठे तरीक़ों से समस्या समाधान की क्षमता को उदीप्त करती है और बेहतर भी करती है वह भी इन्हें पोषित और मज़बूत करती है।

यह महत्त्वपूर्ण है कि इस चरण में बच्चों की शिक्षा उनके आस-पास के लोगों के साथ उनके सम्बन्धों को भी पोषित करे। ये रिश्ते बच्चों को सुरक्षित महसूस करने, अधिक आशावादी, जिज्ञासु बनने और बातचीत कर पाने में मदद करते हैं।

1.4.1 खेल की अहमियत

खेलना बच्चों के लिए कुछ काम करने जैसा है। खेल की प्रकृति ही कुछ ऐसी है कि छोटे बच्चे इसे करना और इसमें सक्रिय रूप से संलग्न होना पसन्द करते हैं। हम कह सकते हैं कि खेलना और सीखना दो-तरफा पारस्परिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया है। खेल बच्चों को सक्रिय रहने, व्यस्त रहने और अन्य वयस्कों और बच्चों के साथ सामाजिक अन्तःक्रिया में जुड़ने के मौके देते हुए सीखने को सम्भव करता है, इस प्रकार यह सीखने के लिए ज़रूरी सभी शर्तों को पूरा करता है।

जब हम खेल में व्यस्त बच्चों का अवलोकन करते हैं तो हम यह पाते हैं :

क) चयन कर सकते हैं: जब बच्चे खेलते हैं तब वे अपने लक्ष्यों को चुन सकते हैं उनके बारे में निर्णय ले सकते हैं। (मसलन, मुझे इस पहेली को पूरा करना है, इन ब्लॉक से टावर बनाना है, और गुड़िया के घर में चाय बनानी है) यह चयन, उन्हें सक्रिय और व्यस्त रखता है।

ख) विस्मय: यह उन्हें सोचने और फ़ोकस करने में समर्थ करता है। (मसलन; यह गुब्बारा बड़ा होता जा रहा है, पतंग आसमान में कितनी दूर तक चली गई है, यह रुमाल कहाँ चला गया- क्या यह जादू है?)

ग) मज़ा: बच्चे अपने आप में मज़ा करते हैं, खेलने को लेकर उमंग होती है, और जो वे करते हैं उसके प्रति प्यार भी होता है। यह एक अर्थपूर्ण सामाजिक अन्तः क्रिया को बढ़ावा देता है और सीखते रहने की इच्छा को बढ़ाता है। सक्रिय खेल की इस प्रक्रिया में, बच्चे सीखते रहते हैं- दुनिया की समझ बनाना सीखना, समस्याओं को हल करना सीखना, ख़ुद के बारे में सीखना, दूसरों के बारे में सीखना, गणित और भाषा सीखना।

इस प्रकार से खेल बच्चों के सीखने और विकास के केन्द्र में हैं। कक्षा में खेल के ज़रिए सीखना बच्चों को कई प्रकार के अवसर उपलब्ध कराता है, विकास के सभी क्षेत्रों और पाठ्यचर्या के सभी उद्देश्यों पर सक्रिय ध्यान दिया जा सकता है। चयन, विस्मय और मज़ा बच्चों के खेल के मुख्य पहलू हैं और इन तीनों पहलुओं को ध्यान में रखेंगे तो हमारी कक्षाएँ बेहतर करेंगी।

खेलते वक़्त बच्चे काफ़ी सक्रिय होते हैं : वे दुनिया को समझने की कोषिश में चीजों को व्यवस्थित करते हैं, योजना बनाते हैं, सोच समझकर चीज़ों को नियंत्रित (manipulate) करते हैं, समझौता/मोलभाव (negotiate) करते हैं, और पड़ताल, खोज करते हैं। उदाहरण के लिए, खेलते वक़्त, बच्चे :

- योजना बनाते हैं और उसका अनुसरण करते हैं : मैं अपने घर और परिवार का चित्र बनाना चाहता हूँ; यह कैसा दिखेगा, और इस तस्वीर में मैं किस-किस को शामिल करूँ?
- गलती करके सीखना, कल्पना और समस्या हल करने के कौशल का उपयोग : मेरा टावर गिरता रहता है; शायद मुझे नीचे आधार में और ब्लॉक्स रखने चाहिए?
- वास्तविक ज़िन्दगी में, मात्रा, विज्ञान और गति की अवधारणाओं को लागू करते हैं: इस रेत में, मैं एक सुरंग खोदना चाहता हूँ : शायद मुझे रेत को गीला करना पड़े।
- तार्किक और विश्लेषणात्मक तरीक़े से सोचते हुए काम करना : तस्वीरों वाली पहेली को हल करते हुए, शायद किनारे वाले टुकड़ों को पहले लगाना ठीक रहेगा।
- दोस्तों के साथ बातचीत, उनके साथ अन्तःक्रिया और अपने मतों में विभेद को लेकर समझौता : अभी मैं डॉक्टर वाली भूमिका अदा करूँगा, अगली बार तुम यह कर सकते हो?

- काम पूरा हो जाने पर संतुष्ट महसूस करना : यह रेत का घरोंदा मैंने अपने दोस्त के साथ बनाया।
- सृजनात्मक बनना : जब मैं लाल और नीले रंग को मिलाता हूँ, यह बैंगनी हो जाता है; अगर मैं हरे और नीले रंग को मिलाऊँ तो क्या होगा?

1.4.2 खेल के ज़रिए सीखना

यह NCF 'खेल' के महत्त्व को रेखांकित करता है। यह कहता है कि पाठ्यचर्या को व्यवस्थित करने, शिक्षणशास्त्र, समय और विषयवस्तु को व्यवस्थित करने में और बच्चे के सम्पूर्ण अनुभव के लिए जो अवधारणात्मक, प्रक्रियात्मक और कक्षा में काम करने की अप्रोच ली जाए उन सभी में खेल मुख्य है।

ECCE के सन्दर्भ में **'खेल'** शब्द में वे सभी गतिविधियाँ शामिल हैं जो बच्चे के लिए मज़ेदार और उसे व्यस्त रखने वाली हैं। और यह शारीरिक खेल, अन्तःक्रिया, बातचीत, प्रश्न और उत्तर सत्र, कहानी सुनाना, ज़ोर से पढ़ना और साझा पठन, पहेलियों, तुकबन्दी, या खेल, खिलौने, दृश्य कला और संगीत से जुड़ी अन्य मनोरंजक गतिविधियों के रूप में हो सकती हैं।

खेल बच्चों को सक्रिय और प्रेरणादायक सीखने के अवसर प्रदान करता है, और इसे विभिन्न तरीक़ों से व्यवस्थित किया जा सकता है :

क) मुक्त या स्वतंत्र खेल (Free Play)

i. बच्चे ही चयन करते हैं कि वे क्या खेलना पसन्द करेंगे, कैसे खेलना पसन्द करेंगे, और कितनी देर तक खेलना पसन्द करेंगे। यह पूरी तरह से बच्चों के द्वारा शुरू किया जाता है और वे स्वयं ही इसे निर्देशित भी करते हैं उदाहरण के लिए, पहेलियों को हल करना, अपने साथियों के साथ रोल प्ले, उनके साथ किताब पढ़ना।

ii. शिक्षक की भूमिका अप्रत्यक्ष होती है उदाहरण के लिए मुक्त खेल के लिए माहौल तैयार करना, खेल खेलते बच्चों का अवलोकन करना, और जब ज़रूरत हो तब उनकी मदद करना।

iii. मुक्त खेल बच्चों को सामाजिक और आत्म नियमन के कौशल विकसित करने में मददगार होता है। उदाहरण के लिए, नेतृत्व करना और अनुसरण करना, असहमतियों को सुलझाना, दूसरों के प्रति संवेदनशील होना, भावनाओं को सम्भालना (managing) और सामग्री को साझा करना।

iv. हालाँकि, बच्चे सब कुछ मुक्त खेल के ज़रिए नहीं सीख सकते। वास्तव में, अक्सर उन्हें ख़ास तरह की सलाह की ज़रूरत पड़ती है तब भी जब वे ख़ुद से खोजबीन कर रहें हों।

ख) मार्गदर्शित खेल (Guided play)

i. बच्चे गतिविधि का नेतृत्व करते हैं, लेकिन वयस्क सक्रिय रूप से खेल गतिविधि को सुगम (facilitate) करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि बच्चे मिट्टी से खेलना चाहते हैं, तो शिक्षक बच्चों का मिट्टी का उपयोग करने, मिट्टी को रोल करने, आकार बनाने के बारे में मार्गदर्शन करते हैं। शिक्षक इस अभ्यास में एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ जुड़ते हैं जैसे कि बच्चों के सूक्ष्म मोटर कौशल (fine motor skill) के विकास और कल्पना के विकास के लिए।

ii. विकास के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित कौशलों को बेहतर करने के लिए मार्गदर्शित खेल को सबसे प्रभावी माना जाता है, क्योंकि यह बच्चों और शिक्षकों दोनों के मिलकर सीखने के लिए, शिक्षक को चर्चा में शामिल होने और बच्चों से उनके खेल के बारे में प्रश्न पूछने के अवसर देता है। उदाहरण के लिए, उद्गामी (emergent) साक्षरता कौशल के विकास के लिए, शिक्षक एक शब्दावली गतिविधि करवाता है, जैसे किसी कहानी से तुकबन्दी वाले शब्द ढूँढ़ना और उनके बारे में बात करना और शब्दावली का सक्रिय रूप से उपयोग करने के लिए नए खेलों को करवाना।

iii. बाल्यावस्था में मार्गदर्शित खेल को प्रभावी माना जाता है क्योंकि यह बाल-लक्षित सीखने को फ़ोकस करता है, जिसमें शिक्षक द्वारा सौम्य और सक्रिय सम्बलन (scaffolding) भी किया जाता है ताकि सीखने के विशिष्ट उद्देश्यों को पाया जा सके।

ग) संरचित / निर्देशित खेल (Structured / Directed Play)

i. यह शिक्षक द्वारा निर्देशित होते हैं, इनमें सोच-समझकर बनाई गई गतिविधियाँ होती हैं जो मज़ेदार और playful होती हैं, लेकिन उनके कुछ ख़ास नियम और दिशानिर्देश भी होते हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षक बच्चों को एक कहानी बनाने के लिए कह सकते हैं जिसमें एक वाकये पर हर बच्चे को एक वाक्य कहते हुए कहानी बनानी है, और तब इस कहानी को लिखा जा सकता है, या फिर बच्चे ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने (read-aloud) के एक सत्र के बाद कहानी के कार्डों को क्रम में जमा सकते हैं।

ii. फाउंडेशनल स्टेज में ख़ास दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों पर फ़ोकस करने की दृष्टि से संरचित खेल काफ़ी महत्त्वपूर्ण हैं। शिक्षक ऐसे खेलों और गतिविधियों जिनमें कुछ नियम होते हैं, उनके ज़रिए, सीखने के लिए मज़ेदार अनुभवों की योजना बनाते हैं। इनमें शामिल हो सकते हैं कहानी कहना, कविताओं का उपयोग, निर्देशित बातचीत, भाषा और गणित के खेल और निर्देशित सैर। इस प्रकार के खेल की सीमाएँ कठोर होती हैं, और यह शिक्षक द्वारा सीखने के क्रम को ध्यान में रखते हुए निर्धारित की जाती हैं। खेल के नियमों का अनुसरण करना होता है आदि।

खेल आधारित अधिगम को, शिक्षण की ऐसी अप्रोच कहा जाता है जिसमें वयस्कों के कुछ मार्गदर्शन और सम्बलन देने वाले सीखने के उद्देश्यों के साथ-साथ हँसी-खेल और बाल-लक्षित तत्व शामिल हैं।

खेल आधारित अधिगम का यह अबाध क्रम, खेल में शिक्षकों की भूमिका के उन विभिन्न स्तरों को रेखांकित करता है जो एक बाल केन्द्रित और मज़ेदार वातावरण में बच्चों के सीखने में सहायक हो सकते हैं। इस अबाध क्रम में बाल निर्देशित और शिक्षक निर्देशित दोनों ही तरह की गतिविधियाँ शामिल हैं। फाउंडेशनल स्टेज, जिसमें कक्षा 1 और 2 दोनों शामिल हैं, में बच्चों को हर वर्ष सभी तरह के खेल खेलने के बराबर अवसर मिलने चाहिए।

तालिका 1.4 क

	मुक्त खेल (Free Play)	मार्गदर्शित खेल (Guided Play)	संरचित खेल (Structured Play)
भूमिका	बच्चा नेतृत्वकर्ता बच्चे द्वारा निर्देशित	बच्चा नेतृत्वकर्ता शिक्षक मददगार की भूमिका में	शिक्षक नेतृत्वकर्ता बच्चों की सक्रिय भागीदारी
बच्चे क्या करते हैं?	खेल के सभी पहलू को लेकर बच्चे निर्णय लेते हैं – क्या खेलना है?, कैसे खेलना है? कितनी देर तक खेलना है, किसके साथ खेलना है?	बच्चे योजना बनाते हैं और ख़ुद ही खेल खेलते हैं, वैसे ही जैसे कि वे मुक्त खेल में करते हैं।	बच्चे ध्यानपूर्वक सुनते हैं, नियमों का अनुसरण करते हैं और शिक्षक द्वारा सोची गई गतिविधियों और खेलों में भागीदारी करते हैं।
शिक्षक क्या करते हैं?	शिक्षक कक्षा में एक मज़ेदार खेल का माहौल बनाते हैं, बच्चों को ध्यान पूर्वक देखते हैं और जब बच्चे मदद के लिए कहते हैं तो उनकी सहायता करते हैं।	शिक्षक मदद करते हैं और सक्रिय रूप से खेल को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं। बच्चे जो अलग-अलग टास्क कर रहें हैं उनमें शिक्षक उनको मार्गदर्शन देते हैं, उनसे प्रश्न पूछते हैं, बच्चों के साथ खेलते हैं ताकि वे सीखने के ख़ास प्रतिफलों को हासिल कर सकें।	शिक्षक सीखने के क्रम में आने वाली दक्षताओं (competencies) को बढ़ाने के लिए विशेष नियमों को ध्यान में रखते हुए सोच-समझकर गतिविधियों और खेलों की योजना बनाते हैं। भाषा और गणित के खेल, प्रकृति के साथ सैर, गीत कविताएँ आदि सभी रोज़ किए जाते हैं।

विभिन्न प्रकार के खेलों के कुछ विशेष उदाहरण नीचे दिए गए हैं :

तालिका 1.4 ब

#	खेल का प्रकार	उदाहरण
1	नाट्य खेल/ फन्तासी खेल (Fantasy Play)	कहानी को नाट्यरूप देने के लिए, घोड़े को दर्शाने के लिए एक छोटी छड़ी का उपयोग करें। परिवार के सदस्यों, शिक्षकों और डॉक्टर जैसे एक्ट करें, अपने पसन्दीदा चरित्र का नाट्य रूपान्तर करें जैसे झांसी की रानी, छोटा भीम, शक्तिमान, रानी चेन्नमा
2	खोजबीन खेल (Exploratory play)	जोड़ो, तोड़ो, फिर जोड़ो – वस्तुओं के भाग को तितर-बितर करके उन्हें फिर से जोड़ना (उदाहरण के लिए, घड़ी, टॉयलेट फ्लश, तीन पहिये वाली साइकिल) उपकरणों के साथ प्रयोग (उदाहरण : चुम्बक, प्रिज़्म, आवर्धक लेंस (magnifying glass). विभिन्न दालों को मिलाना और फिर अलग छाँटना रेत और पानी के खेल
3	पर्यावरण/छोटी दुनिया के खेल	लघु जानवरों, फर्नीचर, किचन सेट, डॉक्टर सेट आदि का उपयोग करते हुए वास्तविक दुनिया को फिर से बनाना और इसके साथ जुड़ना। प्रकृति की सैर- पेड़ों, पौधों, कीड़ों, पक्षियों, जानवरों, ध्वनियों, रंगों की पहचान करना ।
4	शारीरिक खेल	संगीत, शारीरिक हलचल, नाटक, आउटडोर प्ले, सन्तुलन, खेल के जरिये शरीर की पड़ताल
5	नियमों के साथ खेल	हॉप स्कॉच (कित-कित, Stapu, लंगड़ी), Tag, साँप-सीढ़ी, चौपड़, लट्टू, बुगुरी, कंचे, Kokla Chapaki, Pitthu, Pallanguzhi.

1.4.3 बच्चों को खेल में मशगूल करना

किसी भी तरह के खेल आयोजित किए जा सकते हैं – मुक्त खेल, निर्देशित या संरचित - और बच्चे इनमें मशगूल हो पाएँ यह कई तरीक़ों से सम्भव और सुगम किया जा सकता है (उदाहरण के लिए, गतिविधियाँ, उपकरण, कलाकृतियाँ)। ऐसे कुछ प्रमुख तरीक़े नीचे बताए गए हैं।

क) खेल के ज़रिए सीखना – कला, दस्तकारी, संगीत, गति

कलाओं के ज़रिये बच्चे अपने आप को बेहिचक होकर अभिव्यक्त करते हैं, कल्पना करते हैं और रचना भी करते हैं। कलाओं का खुलापन और उनका आनन्दित कर देने वाला गुण, स्व-अभिव्यक्ति, सहज ज्ञान (intuition), चिन्तन (reasoning), कल्पना, और सम्प्रेषण को प्रोत्साहित करता है। बच्चों को चित्र बनाने, रंग करने, छापने, कोलाज बनाने, ब्लॉक का उपयोग करते हुए संरचनाएँ बनाने के अवसर देने चाहिए और इस सन्दर्भ में आए उनके विचारों को सहयोग देना चाहिए। बच्चों को हलचल करना, नाचना, खोजबीन तथा अपने शरीर के साथ तरह-तरह के करतब करना और वाद्य यंत्र बजाना अच्छा लगता है।

ख) खेल के ज़रिए सीखना - बातचीत, कविताएँ, कहानियाँ

बातचीत, कहानियों और कविताओं के माध्यम से सीखने में बच्चों को मज़ा आता है। इससे उन्हें अपनी स्वाभाविक जिज्ञासा का निर्माण करने, गहरे वैचारिक कौशल और मूल्यों को विकसित करने में मदद मिलती है, ख़ासकर जब उन्हें मनन करने, पूर्वानुमान लगाने, प्रश्न करने और परिकल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। प्रासंगिक प्रश्न पूछना या पहेलियाँ पूछना भी बच्चों के सीखने का सम्बलन करता है, उन्हें समझ के एक नए स्तर पर चुनौती देता है।

बच्चे जो कहते हैं उसे ध्यान से सुनना, उनके प्रश्नों का अर्थपूर्ण उत्तर देना, उनकी रुचि जगाने के लिए उनसे प्रासंगिक प्रश्न पूछना और उन्हें सोचने के लिए सहजता से ठेलना (push) भी बच्चों को सीखने में मदद करता है।

बातचीत, कविताओं और कहानियों में बच्चों को शामिल करना भी उनके साथ रिश्तों को बेहतर करने का एक शानदार तरीक़ा है।

ग) खेल के ज़रिए सीखना – सामग्री और खिलौने

खिलौनों के साथ खेलना एक ऐसी चीज़ है जिसका बच्चे आनन्द लेते हैं और उससे सीखते हैं। खिलौने कोई भी मूर्त वस्तु हो सकते हैं जिन्हें बच्चे जोड़-तोड़ सकते हैं और जिनके साथ बच्चे ख़ुद ही सोचते हुए और ख़ुद से मज़ेदार और अर्थपूर्ण गतिविधियाँ कर सकते हैं। बहुत से अनुभव और प्रमाण हैं जो यह दर्शाते हैं कि सीखने के लिए बच्चों को महँगे या विशेष खिलौनों की आवश्यकता नहीं होती है। खिलौनों के उपयोग से छोटे बच्चों के गत्यात्मक कौशल, आँख और हाथ के समन्वय, थानिक समझ, संज्ञानात्मक लचीलापन, भाषा कौशल, रचनात्मक और विविध सोच की क्षमता, सामाजिक क्षमता और इंजीनियरिंग कौशल की क्षमता बेहतर होती है।

घ) खेल के ज़रिए सीखना – आस-पास के वातावरण का उपयोग

बच्चे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु होते हैं और उन्हें अपने आस-पास की दुनिया की खोजबीन करने, प्रयोग करने, हेरफेर (manipulate) करने, कुछ रचना करने और सीखने के अवसरों की आवश्यकता होती है। बच्चे अपनी इन्द्रियों के ज़रिए पर्यावरण की खोजबीन करते हैं, वे अपने पर्यावरण का अवलोकन करते हैं, जो कुछ भी देखते हैं उसे छूते हैं, पकड़ते हैं, सम्भालते हैं, ध्वनियों, संगीत और ताल को सुनते और प्रतिक्रिया करते हैं, और कुछ नया/असामान्य सी ध्वनि सुनने को मिलती है तो उत्साहित भी होते हैं।

जैसे-जैसे बच्चे अपने प्रत्यक्ष (first hand) अनुभवों के ज़रिए लोगों की, वस्तुओं की और वास्तविक ज़िन्दगी की परिस्थितियों की समझ निर्मित करते हैं उनकी सोच विकसित होती है। बच्चे अपने स्वयं के अनुभवों, सन्दर्भों और योग्यताओं के आधार पर अपने स्वयं के विचारों, रुचियों और विश्वासों को कक्षा में लाते हैं।

जब शिक्षक और परिवार बच्चों को अपने आस-पास की दुनिया की खोजबीन करने, प्रयोग करने और खोजने, तुलना करने, प्रश्न पूछने, करीबी अवलोकन करने, सोचने और अपने अवलोकन और पूर्वानुमानों (prediction) के बारे में बात करने के अवसर प्रदान करते हैं, तब बच्चों की, उनकी जिज्ञासाओं को पूरा करने और अधिक खोजबीन करने की दिशा में मदद की जा रही होती है। घर और स्कूल में प्रत्यक्ष (first hand) अनुभवों के माध्यम से दुनिया की खोज करने के लिए बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा को बनाए रखना सीखने की बुनियाद बनता है।

ङ) आउटडोर खेल के ज़रिए सीखना

प्रारम्भिक वर्षों में बच्चे एक ही जगह पर लम्बे समय तक नहीं बैठे रह सकते। वे इधर-उधर जाने की इच्छा रखते हैं। बाहर खेलना उन्हें प्राकृतिक वातावरण की खोजबीन करने, अपनी शारीरिक सीमाओं का परीक्षण करने, ख़ुद को व्यक्त करने और आत्मविश्वास बनाने का मौका उपलब्ध कराता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात, यह कि ऐसा करना उनके समग्र गत्यात्मक कौशल, शारीरिक फिटनेस और सन्तुलन बनाने में मदद करता है।

बच्चे जगह का, दौड़ने, कूदने और चढ़ने और एक-दूसरे से साथ धक्का-मुक्की करने की आज़ादी का पूरा मज़ा लेते हैं। बाहर खेलना कई बच्चों के लिए आराम करने और शान्त होने जैसा है। और यह बहुत मज़ेदार है!

निष्कर्ष: इस स्तर पर बच्चे खेल के माध्यम से सीखते हैं जिसमें गतिविधियों की एक विस्तृत शृंखला और प्रोत्साहित करने वाले अनुभव शामिल होते हैं। इन सभी गतिविधियों और अनुभवों को इस तरह से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है कि वे सीखने में मशगूल होने के साथ-साथ, भावनात्मक और मानसिक रूप से प्रेरित भी होते रहें।

खेल के इस व्यापक विचार के तहत, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बच्चे भी अवलोकन करके, चीज़ों को ख़ुद करके, सुनकर, पढ़कर, बोलकर, लिखकर, सोचकर और अभ्यास करके सीखते हैं। वे नई अवधारणाओं को सीखते हैं, उनकी व्याख्या करते हैं, और इस नए ज्ञान को अपने मौजूदा ज्ञान से जोड़ते हैं। स्पष्ट (explicit) और व्यवस्थित शिक्षण, कुछ अभ्यास और अनुप्रयोग आवश्यक हैं, ख़ासकर जब बच्चे पढ़ना-लिखना (literacy) और गणित की शुरुआत करते हैं। हालाँकि, यह सब, बच्चों के सकारात्मक जुड़ाव की बुनियादी ज़रूरत से सम्बद्ध होना चाहिए साथ ही इसमें मज़ा और खेल के तत्व शामिल हों।

यह कक्षा में कैसे होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए, अध्याय-4 देखें।

खण्ड 1.5
फाउंडेशनल स्टेज के लिए स्कूलिंग का सन्दर्भ

बच्चों के सीखने और शिक्षा में, परिवार, साथी, समुदाय, पर्यावरण के अन्य पहलू और शिक्षा व्यवस्था जिसमें शिक्षक भी सम्मिलित हैं यह सभी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हालाँकि, यह एहसास होना महत्त्वपूर्ण है कि इन पाँचों में से प्रत्येक की भूमिका का चरित्र, विशेषताएँ और इनका सापेक्ष प्रभाव बच्चों के बढ़ने के साथ-साथ बदलता जाता है। उदाहरण के लिए, शैशवावस्था में माँ और निकटतम परिवार की भूमिका की केन्द्रीयता स्पष्ट है। बचपन के बाद की अवस्था में साथियों का प्रभाव बढ़ता है और युवा वयस्कों में और भी अधिक बढ़ जाता है।

ECCE 2020 का 5+3+3+4 पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय ढाँचा, 3 से 18 वर्ष तक के लिए है, और यह ऊपर वर्णित पाँच प्रभावी कारकों और सीखने एवं शिक्षा के स्रोतों की भूमिका में होने वाले परिवर्तनों के प्रति सजग है। ख़ासतौर पर, फाउंडेशनल स्टेज के लिए यह NCF, 3-8 वर्ष की उम्र की उपयुक्त ज़रूरतों को बताता है, उदाहरण के लिए इस चरण में शिक्षा का आधार देखभाल होना चाहिए।

1.5.1 परिवार और समुदाय की महत्ता

भारत में अधिकांश बच्चे अपने परिवार के सदस्यों और बाहर के लोगों से घिरे होते हैं। जबकि माता-पिता बच्चे के बड़े होने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अक्सर एक बड़े परिवार में बच्चों के पालन-पोषण का साझा अनुभव होता है जिसमें दादा-दादी, पड़ोसियों और करीबी समुदाय के अन्य लोग शामिल होते हैं।

इस अवधि में परिवार में वे सम्बन्ध ख़ासतौर पर ज़्यादा प्रभावी होते हैं जो पर्याप्त पोषण, सामाजिक जुड़ाव, और भावनात्मक बल सुनिश्चित कर पाते हैं। मज़बूत, देखभाल करने वाले और जवाबदेह परिवार बच्चों के स्वस्थ विकास और सकारात्मक सीखने में योगदान देते हैं। उदाहरण के लिए यह सुनिश्चित करना कि बच्चे सही प्रकार का खाना खाएँ, बच्चे से उनकी मातृभाषा में बात करना ताकि उनकी शब्दावली बेहतर हो, उनको अच्छे मूल्यों और स्थानीय इतिहास की पारम्परिक कहानियाँ सुनाना।

प्रारम्भिक अवस्था में बच्चे का परिवार के साथ सम्बन्ध और कार्य, बच्चे के विकास के सबसे शक्तिशाली भविष्यवक्ताओं में से एक है। परिवार बच्चों के सबसे पहले शिक्षक होते हैं, प्रारम्भिक वर्षों में, अभिभावक और बच्चे के बीच सम्बन्ध और अन्तःक्रिया बच्चों के सीखने और विकास को गहराई से प्रभावित करती है।

आरम्भिक वर्षों में, स्कूली और कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं को इस अहम कारक का ध्यान रखना चाहिए। बच्चे के विकास और उसके सीखने में, स्कूल, परिवार और समुदाय भागीदार हैं।

1.5.2 स्थानीय और भारतीय सन्दर्भ की केन्द्रीयता

अधिकांश बच्चे अपने परिवारों और समुदाय की कहानियों, गीतों, खेलों, भोजन, अनुष्ठानों और त्योहारों के साथ बड़े होते हैं। साथ-ही-साथ वे बड़े होते हैं उन स्थानीय तरीक़ों के साथ जो उनके परिवार और समुदाय के दैनिक जीवन के अभिन्न अंग हैं। जैसे कपड़े पहनने या काम करने या यात्रा करने और रहने के स्थानीय ढंग।

जबकि शिक्षण और सीखने के समसामयिक विचार पाठ्यचर्या का हिस्सा होने चाहिए, यह अहम है कि बच्चों, उनके परिवारों और उनके समुदायों के विविध अनुभवों को कक्षा में जगह मिले। स्थानीय कहानियाँ, गीत, भोजन, कपड़े, कला, संगीत और नृत्य स्कूल में बच्चों के सीखने के अनुभवों का एक अभिन्न अंग होने चाहिए।

फाउंडेशनल स्टेज में, पाठ्यचर्या सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए बने और इसमें शामिल विषयवस्तु और शिक्षणशास्त्र, बच्चों के जीवन के परिचित अनुभवों, यानी वह सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भ जिसमें बच्चा बढ़ रहा है, से जुड़े हों। यह बच्चों के साथ गहरे सम्बन्ध बनाने में और शिक्षक व बच्चे दोनों ही कि पाठ्यचर्या में ओनरशिप को भी विकसित करता है।

पूरी पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र भारतीय और स्थानीय सन्दर्भ व लोकाचार से मज़बूती से जुड़ी हो – संस्कृति, परम्परा, विरासत, रीति-रिवाज, भाषा, दर्शन, भूगोल, प्राचीन और समसामयिक ज्ञान, सामाजिक और वैज्ञानिक ज़रूरत, सीखने के देशज और पारम्परिक तरीक़ों के लिहाज़ से- ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षा बच्चों के लिए सम्बद्ध (relatable), प्रासंगिक, दिलचस्प और प्रभावी हो। कहानियों, कलाओं, खेलों, उदाहरणों, समस्याओं के मूल में भारतीय और स्थानीय सन्दर्भ हों। जब सीखने के मूल में यह होगा तो विचार, अमूर्तता और रचनात्मकता वास्तव में सबसे अच्छी तरह से विकसित होगी।

ख़ासतौर पर, सभी भाषाओं को कक्षा में जगह दी जाए, और उनकी सराहना की जाए, फाउंडेशनल स्टेज में बच्चों को अपने घर की भाषा में अभिव्यक्त करने, अन्तःक्रिया करने और उसके ज़रिए सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। घरेलू भाषा और अन्य भाषाओं का उपयोग करते हुए विभिन्न सन्दर्भों में सुनने और बोलने के अवसर (घरेलू या परिचित भाषा को एक सम्बलन की तरह मानते हुए) बच्चों को मौखिक अभिव्यक्ति सीखने में बहुत मदद करते हैं। बच्चों में मज़बूत भाषाई, संज्ञानात्मक व सामाजिक-भावनात्मक कौशल विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि उन्हें अपने विचारों, अहसासों के बारे में चिन्तन करने, उनको सोच-समझकर शिक्षक के साथ-साथ अभिभावक और अपने साथियों के समक्ष व्यक्त कर पाने के लिए पर्याप्त समय और अवसर दिए जाएँ। कहानियाँ, कविताएँ, तुकबन्दी, गीत, खेल, नाटक, विशेष रूप से जो स्थानीय और भारतीय सन्दर्भ के हैं, भाषा सीखने को मज़ेदार, रोमांचक, प्रासंगिक, प्रभावी और साथ-ही-साथ सांस्कृतिक रूप से संतोषप्रद बनाते हैं।

कक्षा में बहुभाषावाद और भाषा प्रवीणता तथा साक्षरता विकसित करते हुए भी घरेलू भाषा के उचित और निरन्तर उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए अधिक विस्तृत तर्क और रणनीतियों के लिए, कृपया अध्याय 3, अध्याय 4 और खण्ड 4.5 देखें।

1.5.3 संस्थागत विविधता – ज़मीनी हक़ीक़त

संस्थागत सेटिंग्स, माता-पिता, परिवारों और समुदाय के साथ घनिष्ठ साझेदारी करते हुए बच्चों के समग्र विकास के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण को संभव बनाती हैं। वे पारम्परिक ज्ञान, अनुसंधान-आधारित ज्ञान, व्यावहारिक अनुभव और स्थानीय सन्दर्भ को एक साथ लाते हैं ताकि बच्चों के आजीवन सीखने के लिए मज़बूत जड़ों को पोषित करने हेतु सीखने के अवसरों को डिज़ाइन और कार्यान्वित किया जा सके।

वर्तमान में, फाउंडेशनल स्टेज में बच्चे अलग-अलग प्रकार के संस्थागत माहौल में सीखते हैं।

क) 3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चे आँगनवाड़ी, बालवाटिका, प्री-स्कूल या फिर एक ऐसे प्री-स्कूल में हो सकते हैं जो किसी बड़े स्कूल का हिस्सा हो और जिसमें कक्षा 1 और 2 हों।

ख) 6 से 8 वर्ष की उम्र के बच्चे (कक्षा 1 और 2) ऐसे स्कूल में हो सकते हैं जिनमें केवल कक्षा 1 से आगे की कक्षाएँ हों या ऐसे स्कूल में जिसमें प्री-स्कूल से आगे की कक्षाएँ हों।

इनमें से हर एक माहौल में मिलने वाली आधारभूत संरचना और सीखने के संसाधन अलग-अलग होंगे। इन सभी संस्थागत माहौल में मिलने वाले शिक्षक भी अलग होंगे। उनकी भर्ती भी अलग-अलग प्रक्रियाओं से हुई होगी; उनकी योग्यताएँ अलग होंगी और उनके सेवारत पेशेवर विकास की प्रक्रिया भी अलग होगी। कुछ सेटिंग्स में, उनकी ज़िम्मेदारियाँ भी अलग-अलग होंगी।

जबकि फाउंडेशनल स्टेज की सम्पूर्ण पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र का निर्माण सभी पाँच वर्षों, जो तीन साल से शुरू होकर आठ साल तक हैं, के लिए निरन्तरता में किया जाना चाहिए, और पाठ्यचर्या डिज़ाइन की बारीकियों के बारे में सोचते समय विभिन्न संस्थागत संरचनाओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

इस प्रकार, इस NCF को फाउंडेशनल स्टेज के लिए सभी संस्थागत सेटिंग्स में लागू करने का उद्देश्य है।

अध्याय 2
लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल

यह अध्याय NCF के फाउंडेशनल स्टेज के लिए अधिगम के मानकों का वर्णन और चर्चा करता है। अधिगम के ये मानक NEP 2020 द्वारा परिकल्पित शिक्षा के लक्ष्य से लिए गए हैं।

खण्ड 2.1 लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को परिभाषित करता है, जिन्हें एक साथ अधिगम के मानकों के रूप में सन्दर्भित किया जाता है। उद्देश्यों, दक्षताओं और प्रतिफलों के बीच स्पष्टता और अन्तर सभी हितधारकों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं और यह खण्ड उस स्पष्टता को प्रदान करने का प्रयास करता है।

खण्ड 2.2 लक्ष्य से सीखने के प्रतिफलों तक व्युत्पत्ति (derivation) की प्रक्रियाओं और इन प्रक्रियाओं में विभिन्न हितधारकों की भूमिका का वर्णन करता है।

खण्ड 2.3 पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को स्पष्ट करता है, खण्ड 2.4 प्रत्येक पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के लिए दक्षताओं की रूपरेखा तैयार करता है, और खण्ड 2.5 फाउंडेशनल स्टेज के इनमें से कुछ दक्षताओं के लिए सीखने के प्रतिफलों के कुछ उदाहरण देता है।

सभी दक्षताओं के लिए उदाहरणात्मक सीखने के प्रतिफलों का एक पूरा सेट अनुलग्नक 1 में देखा जा सकता है।

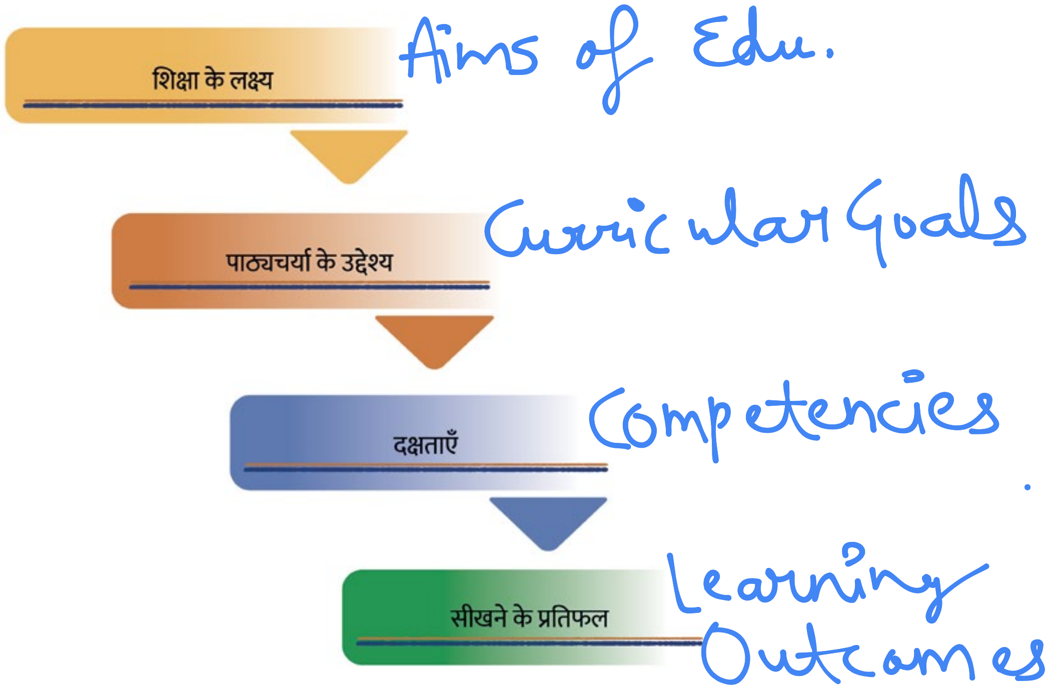

खण्ड 2.1
परिभाषाएँ

यह खण्ड इस अध्याय में प्रयुक्त कुछ प्रमुख शब्दों को परिभाषित करता है।

क) शिक्षा के लक्ष्य: लक्ष्य शैक्षिक विज़न के विवरण हैं जो शैक्षिक प्रणालियों के सभी सुविचारित प्रयासों को व्यापक दिशा देते हैं - पाठ्यचर्या विकास, संस्थागत व्यवस्थाएँ, फंडिंग और वित्त पोषण, लोगों की क्षमता आदि। शिक्षा के लक्ष्य आमतौर पर शिक्षा नीति दस्तावेज़ों में व्यक्त किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, NEP 2020 बताती है कि "शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य अच्छे इन्सान का विकास करना है, जो विवेकशील, तर्कसंगत विचार और कर्म करने में सक्षम हो, जिसमें करुणा और समानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, साथ ही ठोस नैतिक आधार और मूल्य हों। इसका लक्ष्य हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित न्यायसंगत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण के लिए संलग्न, उत्पादक और योगदान करने वाले नागरिकों को तैयार करना है।'

ख) पाठ्यचर्या के उद्देश्य: पाठ्यचर्या के उद्देश्य ऐसे वक्तव्य हैं जो पाठ्यचर्या विकास और कार्यान्वयन को दिशा देते हैं। वे लक्ष्यों से प्राप्त होते हैं और शिक्षा में किसी एक चरण के लिए विशिष्ट होते हैं (उदाहरण के लिए, फाउंडेशनल स्टेज)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा जो सभी पाठ्यचर्या के विकास का मार्गदर्शन करती है, पाठ्यचर्या के उद्देश्य बताती है। उदाहरण के लिए, इस NCF में "बच्चे दो भाषाओं में दिन-प्रतिदिन की बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं" फाउंडेशनल स्टेज के लिए एक पाठ्यचर्या का उद्देश्य है।

ग) दक्षताएँ: दक्षताएँ सीखने की वे उपलब्धियाँ हैं जो दिखाई देती हैं और जिनका व्यवस्थित रूप से आकलन किया जा सकता है। ये दक्षताएँ पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से प्राप्त हुई हैं और इन्हें एक चरण के अन्त तक प्राप्त होने की उम्मीद होती है। दक्षताओं को पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं में व्यक्त किया जाता है। हालाँकि, पाठ्यचर्या विकसित करने वाले उन विशिष्ट सन्दर्भों को संबोधित करने के लिए दक्षताओं को अनुकूलित और संशोधित कर सकते हैं जिसके लिए पाठ्यचर्या विकसित की जा रही है। इस NCF में उपरोक्त पाठ्यचर्या के उद्देश्य के लिए तय की गई कुछ दक्षताओं के उदाहरण निम्नलिखित हैं - "धाराप्रवाह बातचीत करता है और एक सार्थक बातचीत कर सकता है" और "एक जटिल कार्य के लिए मौखिक निर्देशों को समझता है और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देता है।"

घ) सीखने के प्रतिफल: दक्षताएँ एक निश्चित अवधि में प्राप्त की जाती हैं। इसलिए, सीखने की उपलब्धियों के अन्तरिम चिह्नों की आवश्यकता होती है ताकि शिक्षक सीखने का निरीक्षण और उसे ट्रैक कर सकें और लगातार शिक्षार्थियों की ज़रूरतों पर प्रतिक्रिया कर सकें। ये अन्तरिम चिह्न सीखने के प्रतिफल हैं। इस प्रकार, सीखने के प्रतिफल सीखने के छोटे मील के पत्थर हैं और आमतौर पर एक ऐसे क्रम में प्रगति करते हैं जिससे एक दक्षता प्राप्त होती है। सीखने के प्रतिफल विशिष्ट दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों को अपनी विषयवस्तु, शिक्षण प्रक्रिया और आकलन की योजना बनाने में सक्षम बनाते हैं। पाठ्यचर्या विकसित करने वालों और शिक्षकों को दक्षताओं के साथ सम्बन्ध बनाए रखते हुए, सीखने के प्रतिफलों को उनके कक्षा सन्दर्भों के लिए उपयुक्त रूप में परिभाषित करने की स्वायत्तता होनी चाहिए। निम्नलिखित तालिका फाउंडेशनल स्टेज में दक्षता "धाराप्रवाह बातचीत करता है और एक सार्थक बातचीत कर सकता है" के लिए तय किए गए सीखने के प्रतिफलों का एक उदाहरण है:

तालिका 2.1 क

दक्षता : धाराप्रवाह बातचीत करती है और एक सार्थक बातचीत कर सकती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	ध्यान से सुनती है और आस-पास के परिचित लोगों के साथ छोटी बातचीत (short conversation) करती है	स्कूल की विभिन्न जगहों पर साथियों और शिक्षकों के साथ दैनिक जीवन में बातचीत की पहल करती है	घटनाओं, कहानियों या उनकी ज़रूरतों के आधार पर बातचीत में शामिल होती है और सवाल पूछती है	बातचीत में शामिल होती है, बोलने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार करती है, और दूसरों को बोलने देती है	कई बार हुई बातचीत के सूत्र को बनाए रखती है
2	छोटे अर्थपूर्ण वाक्यों के माध्यम से अपनी आवश्यकताओं और भावनाओं को व्यक्त करती है	सरल वाक्यों में दैनिक अनुभवों का वर्णन करती है और क्या/कब/ कैसे/ किस आदि शब्दों का उपयोग करते हुए, सरल प्रश्न पूछती है	विस्तृत विवरणों में दैनिक अनुभवों का वर्णन करती है और 'क्यों' शब्द का उपयोग करते हुए प्रश्न पूछती है	ग़ैर-काल्पनिक विषयवस्तु के साथ जुड़ती है, उसे ज़ोर से पढ़ती या कक्षा में चर्चा करती है, अपने स्वयं के अनुभवों से ज्ञान को जोड़ने में सक्षम है, और इसके बारे में बात करती है	किसी विषय पर चर्चा में शामिल होती है और प्रश्नों को उठाती है और उनका उत्तर देती है

Aim of Edu
↓
Curriculum

खण्ड 2.2
लक्ष्य से सीखने के प्रतिफलों तक

यह NCF स्पष्ट अधो-प्रवाह (flow-down) के महत्त्व पर ज़ोर देता है, जो शिक्षा के लक्ष्यों से पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से दक्षताओं से सीखने के प्रतिफलों तक होना चाहिए। उच्च स्तर पर उद्देश्यों की पूर्ण प्राप्ति सुनिश्चित करते हुए प्रत्येक समूह (set) को निकटतम उच्च स्तर से निकलना चाहिए।

यह शिक्षा के व्यवहार में उपयोग करने योग्य बनाने के लिए अपेक्षाकृत अमूर्त और समेकित धारणाओं को और अधिक ठोस घटकों में 'तोड़ने और परिवर्तित' करने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को अन्य विचारों सहित जिन्हें इस अधो-प्रवाह (flow-down) में शामिल किया जाना चाहिए, उन्हें इस अध्याय में वर्णित किया गया है। शिक्षा के लक्ष्यों से लेकर सीखने के प्रतिफलों तक एक सख़्त अधो-प्रवाह (flow-down) से उत्पन्न होने वाली केवल ऐसी सुसंगतता, व्याप्तता और सम्बद्धता है, जो हम शिक्षा से चाहते हैं उसे प्राप्त करने के लिए पाठ्यक्रम, विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाओं, संस्थागत संस्कृति और बहुत कुछ है जिन्हें संरेखित कर सकते हैं।

यह केवल इसलिए है क्योंकि शिक्षक और संस्थानों के रोज़मर्रा के जीवन में, बहुत विशिष्ट, अवलोकन योग्य और अल्पकालिक सीखने के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास किए जाते हैं (या किए जा सकते हैं) जिन्हें सीखने के प्रतिफलों के रूप में चिह्नित किया जाता है; और जो वर्णित 'अधो-प्रवाह' (flow-down) की प्रक्रिया से उत्पन्न होने पर, दक्षताओं की प्राप्ति की दिशा में शैक्षिक प्रयासों के पथ (Trajectory) का मार्गदर्शन करते हैं, जो बदले में पाठ्यचर्या के उद्देश्यों में जमा (accumulate) होते हैं, और जो एक साथ शिक्षा के प्रासंगिक लक्ष्यों को पूरा करेंगे।

NEP 2020 ने शिक्षा के लक्ष्यों को स्पष्ट किया है। इस NCF ने अन्य प्रासंगिक विचारों के साथ NEP के लक्ष्यों से पाठ्यचर्या के उद्देश्य तैयार किए हैं। दक्षताओं को इन पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से और उन दक्षताओं से सीखने के प्रतिफलों को लिया गया है।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि खण्ड 2.4 में दक्षताएँ और खण्ड 2.5 और अनुलग्नक 1 में सीखने के प्रतिफलों के उदाहरण हैं।

पाठ्यचर्या विकासकर्ताओं को NCF में दक्षताओं के समूह पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए तथा जहाँ और यदि आवश्यक हो, तो प्रासंगिक परिवर्तन करने के बाद इनका उपयोग करना चाहिए। सन्दर्भों (और समय) में दक्षताओं की सापेक्ष स्थिरता और क्रॉस-कटिंग प्रासंगिकता को देखते हुए, NCF में व्यक्त दक्षताओं में बदलाव की आवश्यकताएँ कम हो सकती हैं; हालाँकि, इस मामले के निर्णयों पर पाठ्यचर्या विकासकर्ताओं द्वारा सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए।

सीखने के प्रतिफल कहीं अधिक प्रासंगिक हैं और इसलिए, पाठ्यचर्या या पाठ्यक्रम को विकसित करने के लिए, समुचित ध्यान देने और संदर्भीकरण की आवश्यकता होगी। विकासकर्ता NCF में व्यक्त समूहों (sets) का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन यह उचित विचार करने के बाद किया जाना चाहिए, और ज्यादा प्रासंगिक समूहों (sets) का उपयोग करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए।

इस प्रकार, राज्यों और उनके संबंधित संस्थानों, और पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम के विकास के लिए ज़िम्मेदार अन्य संस्थानों को अपने उपयोग के लिए अधिगम के मानकों के पूर्ण समूह (full set) पर पहुँचने के लिए इस तरह के अधो-प्रवाह का एक कठोर अभ्यास करने की आवश्यकता होगी।

2.2.1 लक्ष्य से पाठ्यचर्या के उद्देश्यों तक

NEP 2020 द्वारा परिकल्पित शिक्षा के लक्ष्य और विज़न, फाउंडेशनल स्टेज के लिए अपेक्षित शैक्षिक उपलब्धियों को दिशा देते हैं। NEP 2020 के निम्न तीन विशिष्ट स्रोत NCF के फाउंडेशनल स्टेज के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए हैं :

क) शिक्षा के व्यापक लक्ष्य, जैसा कि स्पष्ट किया गया है

ख) विकास के कार्यक्षेत्र (domains), जो कि अन्वेषण की भारतीय परम्परा और आधुनिक विज्ञान दोनों में कल्पित हैं

ग) बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर फ़ोकस

NEP 2020 ने शिक्षा के लक्ष्य स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किए हैं, और यह इस NCF के अध्याय 1 के खण्ड 1.3 में उद्धृत किए गए हैं। शिक्षा के ये लक्ष्य स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के सभी चरणों के लिए लागू होते हैं और फाउंडेशनल स्टेज को दिशा और फ़ोकस देते हैं। वे इस चरण के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए पहले महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

फाउंडेशनल स्टेज 3 से 8 साल की उम्र के बच्चों के लिए है। भारत और अन्य संस्कृतियों में विकास के विभिन्न क्षेत्रों में अन्वेषण यानी पूछताछ की एक लम्बी परम्परा रही है जो छोटे बच्चों में देखी गई है, जो प्राकृतिक और वांछनीय है।

तैत्तिरीय उपनिषद में पंचकोष का वर्णन मानव के विकास के विभिन्न कार्यक्षेत्रों (Domains) की प्रारम्भिक अभिव्यक्तियों में से एक है। ये वर्णन विकासात्मक जीवविज्ञान, मनोविज्ञान और संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान के माध्यम से उभरी अधिक आधुनिक समझ के साथ-साथ प्रासंगिक बने हुए हैं।

शारीरिक विकास, या अन्नमय कोष और प्राणमय कोष को एक साथ समझा जाता है, इसमें सभी संवेदी अनुभवों के सक्रिय जुड़ाव के माध्यम से शारीरिक जागरूकता और सन्निहित सीखना शामिल है।

भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास या मनोमय कोष में हमारी भावनाओं के प्रति जागरूक होना और इन्हें कुशलता से नियंत्रित करना शामिल है। इस प्रकार सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास का कार्यक्षेत्र (Domain) भारतीय परम्पराओं और वर्तमान शोध दोनों से विकास के एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरता है।

मानव अनुभव के संज्ञानात्मक और जागरूकता संबंधी पहलुओं के साथ सार्थक रूप से जुड़ने के लिए बुद्धि के विकास, या विज्ञानमय कोष पर ज़ोर दिया जाता है। संज्ञानात्मक विकास का क्षेत्र विकास के इस पहलू को समा लेता है।

आनन्दमय कोष, या उत्कर्ष या ज्ञानातीत/इंद्रियातीत अवस्था (transcendence) की अनुभूति, कला और संस्कृति के माध्यम से इस आयु वर्ग के लिए संबोधित किया जाता है। इस प्रकार, सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र को शामिल करना, शैक्षिक अनुभव को समग्र और पूर्ण बनाता है।

NEP 2020 ने 'सीखने के लिए तत्काल और आवश्यक शर्त' के रूप में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर ज़ोर दिया है। भाषा और साक्षरता विकास के कार्यक्षेत्र के माध्यम से बुनियादी साक्षरता पर और संज्ञानात्मक विकास के कार्यक्षेत्र के माध्यम से बुनियादी संख्या ज्ञान पर विशेष ध्यान देकर इस ज़ोर को समझा गया है।

अन्त में, फाउंडेशनल स्टेज को औपचारिक स्कूली शिक्षा की नींव स्थापित करने के रूप में भी देखा जाता है। सीखने की सकारात्मक आदतों का विकास जो औपचारिक स्कूली वातावरण के लिए अधिक उपयुक्त है, इस चरण के लिए एक और महत्त्वपूर्ण पाठ्यचर्या का उद्देश्य बन जाता है।

इस प्रकार, NEP 2020 के विज़न एवं विवरण और विकास के कार्यक्षेत्रों पर समान ध्यान देकर फाउंडेशनल स्टेज के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्य प्राप्त किए गए हैं।

2.2.2 पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से दक्षताओं तक

फाउंडेशनल स्टेज के लिए दक्षताओं की सूची पर पहुँचने के चार मुख्य स्रोत हैं :

क) पाठ्यचर्या के उद्देश्य

ख) फाउंडेशनल स्टेज के लिए उपयुक्त वर्तमान शोध साहित्य

ग) देश के विभिन्न शैक्षिक प्रयासों का अनुभव

घ) हमारा सन्दर्भ, जिसमें संसाधन उपलब्धता, समय उपलब्धता, संस्थागत और शिक्षक क्षमताएँ शामिल हैं

स्कूली शिक्षा में सभी हितधारकों को उन दक्षताओं की स्पष्ट दृश्यता (visibility) होनी चाहिए जिन्हें हासिल करना अपेक्षित है। फाउंडेशनल स्टेज में प्रत्येक बच्चे के लिए इन दक्षताओं की प्राप्ति की प्रगति पर नज़र रखने से स्कूल प्रणाली को यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि सभी बच्चों को NCF के पाठ्यचर्या उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए सीखने के उपयुक्त अवसर प्राप्त हों।

2.2.3 दक्षताओं से सीखने के प्रतिफलों तक

सीखने के प्रतिफल दक्षताओं की प्राप्ति की दिशा में सीखने की उपलब्धि के अन्तरिम मार्कर/चिह्नक हैं। उन्हें सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भों की बारीकियों, उपलब्ध सामग्री और संसाधनों और कक्षा की आकस्मिकताओं के आधार पर परिभाषित किया गया है। हमारी शिक्षा प्रणाली के सन्दर्भ की व्यापक समझ के आधार पर, इस NCF में **सीखने के** प्रतिफलों का एक समूह उदाहरण के तौर पर परिभाषित किया गया है।

इन सीखने के प्रतिफलों को शिक्षकों और स्कूल के प्रतिनिधियों के लिए योग्य बनाने वाले दिशानिर्देशों के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि उन पर बाध्यकारी रूप में। उन्हें अपने सन्दर्भों के आधार पर सीखने के प्रतिफलों की फिर से कल्पना करने की स्वायत्तता है।

खण्ड 2.3
पाठ्यचर्या के उद्देश्य

इस खण्ड में फाउंडेशनल स्टेज के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को रेखांकित किया गया है। **इन पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की समय-समय पर समीक्षा की जानी चाहिए, जिन्हें NCF के कार्यान्वयन के अनुभव तथा राष्ट्रीय आकांक्षाओं में विकास और परिवर्तन द्वारा जाना जा सकता है।**

पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को CG 1, CG 2 और इसी तरह से क्रमांकित किया गया है।

कार्यक्षेत्र	पाठ्यचर्या के उद्देश्य	
शारीरिक विकास	CG-1	बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं
	CG-2	बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं
	CG-3	बच्चे एक फिट और लचीले शरीर का विकास करते हैं
सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास	CG-4	बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अर्थात अपनी भावनाओं को समझने व प्रबंधन करने, और सामाजिक मानदण्डों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।
	CG-5	बच्चे उत्पादक कार्य और 'सेवा' के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं
	CG-6	बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं
संज्ञानात्मक विकास	CG-7	बच्चे अवलोकन और तार्किक चिंतन के ज़रिए दुनिया को समझते हैं
	CG-8	बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं
भाषा और साक्षरता विकास	CG-9	बच्चे दो भाषाओं में रोज़मर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं
	CG-10	बच्चे भाषा 1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं
	CG-11	बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं
सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास	CG-12	बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीक़े से अभिव्यक्त करते हैं

विकास के कार्यक्षेत्रों पर आधारित उपरोक्त पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के अलावा, सीखने की सकारात्मक आदत विकसित करना, फाउंडेशनल स्टेज के लिए एक और प्रासंगिक उद्देश्य है।

CG-13 बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं

बॉक्स 2.3 क

Ethics, Value, Dispositions

नैतिकता, मूल्य और स्वभाव

विद्यार्थियों को चरित्र निर्माण, अच्छे इन्सान के रूप में विकसित होने, उत्पादक और खुशहाल जीवन जीने और समाज में सकारात्मक योगदान देने में मदद करने के लिए स्कूल के शुरुआती वर्षों में और बाद के वर्षों के पाठ्यक्रम में 'नीतिशास्त्र' के घटक को शामिल करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रकार, बुनियादी नैतिक तर्क (basic ethical reasoning) को पूरे स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को कम उम्र में 'जो सही है उसे करने' के महत्त्व के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और नैतिक निर्णय लेने के लिए एक तार्किक ढाँचा दिया जाना चाहिए। जैसे 'क्या इससे किसी को चोट पहुँचेगी? क्या ऐसा करना अच्छी बात है?' ये ऐसे प्रश्न हैं जिन्हें बच्चों को रोज़ाना कक्षा की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में निर्णय लेने से पहले ख़ुद से पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षा के बाद के चरणों में, इस ढाँचे को व्यापक विषयों (जैसे, सहिष्णुता, अहिंसा, ईमानदारी, समानता, समानुभूति) के साथ विस्तारित किया जाएगा ताकि बच्चों को अपने जीवन के संचालन में नैतिक मूल्यों को अपनाने, कई परिप्रेक्ष्यों से नैतिक मुद्दे के बारे में दृष्टिकोण या तर्क बनाने में और सभी दैनिक गतिविधियों में आचारगत और नैतिक व्यवहारों का उपयोग करने में सक्षम बनाया जा सके।

पाठ्यक्रम में आचारगत और नैतिक जागरूकता और तर्क को शामिल करने को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीक़ों से बढ़ावा दिया जा सकता है। प्रत्यक्ष विधि में, आचारगत और नैतिक जागरूकता और तर्क को सम्बोधित करने के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन की गई कक्षा की गतिविधियाँ, चर्चाएँ और पाठ हो सकते हैं। अप्रत्यक्ष पद्धति में, भाषाओं और साहित्य की सामग्री में विशेष रूप से आचारगत और नैतिक सिद्धान्तों और देशभक्ति, बलिदान, अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, शान्ति, न्यायपरायणता/सदाचार (righteous conduct), क्षमा, सहिष्णुता, समानुभूति, सहायकता, शिष्टाचार, स्वच्छता, समानता और बन्धुत्व जैसे मूल्यों को संबोधित करने के उद्देश्य से चर्चा शामिल हो सकती है।

बुनियादी नैतिक तर्क के परिणाम के रूप में, सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, सत्य, निष्काम कर्म, ईमानदारी से कड़ी मेहनत, महिलाओं का सम्मान, बड़ों का सम्मान, सभी लोगों का और उनकी अन्तर्निहित क्षमताओं का सम्मान चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि से हों, और पर्यावरण का सम्मान जैसे पारम्परिक भारतीय मूल्यों को रोपित किया जाएगा। वैज्ञानिक रूप से कहा जाए तो ये गुण समाज और व्यक्ति दोनों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

सभी स्तरों पर शिक्षा की प्रक्रिया और सामग्री का उद्देश्य सभी विद्यार्थियों के बीच संवैधानिक मूल्यों और उनके अभ्यास के लिए क्षमताओं को विकसित करना होगा। यह लक्ष्य पाठ्यचर्या के साथ-साथ प्रत्येक स्कूल की समग्र संस्कृति और पर्यावरण को प्रभावित करेगा। इनमें से कुछ संवैधानिक मूल्य हैं : लोकतांत्रिक दृष्टिकोण और स्वाधीनता और स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता; समानता, न्याय और निष्पक्षता; विविधता, बहुलता और समावेशन को अपनाना; मानवता और भाईचारे की भावना; सामाजिक ज़िम्मेदारी और सेवा की भावना; सत्यनिष्ठा और ईमानदारी की नैतिकता; वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कसंगत और सार्वजनिक संवाद के प्रति प्रतिबद्धता; शान्ति; संवैधानिक साधनों के माध्यम से सामाजिक कार्य; राष्ट्र की एकता और अखण्डता, और एक राष्ट्र के रूप में निरन्तर सुधार करने की भावना के साथ भारत से सच्चा जुड़ाव (rootedness) और गौरव।

बड़ी संख्या में वैज्ञानिक रूप से कठोर cross-sectional और longitudinal अध्ययनों के ज़रिए हाल के शोध से पता चलता है कि स्कूलों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL) की शुरुआत संज्ञानात्मक और भावनात्मक लचीलापन में सुधार ला सकती है और रचनात्मक सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा मिल सकता है। सामाजिक-भावनात्मक अधिगम को रोपित करने वाली गतिविधियों के उदाहरणों में टीमों या समूहों में कार्य करना, अलग-अलग उम्र के लोगों में खेलों का आयोजन, अभिनयात्मक गतिविधियाँ (role playing) और विवाद समाधान, दयालुता की कहानियों पर चर्चा करना, और चिन्तनशील लेखन, बोलना और कला शामिल हैं। सामाजिक-भावनात्मक कौशल में स्पष्ट प्रशिक्षण ध्यान में उत्कृष्टता और भावनात्मक और संज्ञानात्मक विनियमन सुनिश्चित करता है जो न केवल भलाई, दूसरों के प्रति समानुभूति और कम तनाव के लिए आवश्यक है, बल्कि शैक्षणिक सफलता में भी वृद्धि करता है।

साहित्य और भारत के लोगों के प्रेरक उदाहरणों को पूरे पाठ्यक्रम के दौरान प्रासंगिकता के तहत शामिल किया जाना चाहिए। भारत में लोगों और कहानियों का एक लम्बा इतिहास और परम्परा है जो हमें ऊपर बताए गए कई मूल मूल्यों और सामाजिक-भावनात्मक कौशलों के बारे में ख़ूबसूरती से सिखाती हैं। बच्चों को पंचतंत्र, जातक, हितोपदेश की मूल कहानियों और भारतीय परम्परा की अन्य मज़ेदार दन्तकथाओं और प्रेरक कहानियों को पढ़ने और उनसे सीखने का अवसर दिया जाना चाहिए। भारतीय संविधान और समानता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व के मूल्य जिन्हें संविधान अपनाता है, पर चर्चा कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया का एक हिस्सा होना चाहिए। इतिहास के महान भारतीय नायकों के जीवन की कहानियाँ भी बच्चों में बुनियादी मूल्यों को प्रेरित करने और उनका परिचय देने का एक शानदार तरीक़ा है।

NCF के फाउंडेशनल स्टेज के लिए, नैतिकता, मूल्यों और स्वभाव की सीखने की अपेक्षाओं को विषयवस्तु के चयन, शैक्षणिक पद्धतियों और आकलन टूल्स के ज़रिए कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं के हिस्से के रूप में शामिल किया गया है। बेशक़, ऐसी दक्षताएँ हैं जो ख़ुद को मूल्यों के साथ जोड़ लेती हैं, जैसे, 'ज़रूरत पड़ने पर दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति दया और मदद का भाव दिखाना' एक ऐसी दक्षता है जो करुणा के मूल्य का प्रतीक है। बच्चे जिस विकासात्मक अवस्था में हैं, उसे देखते हुए, यह अच्छी तरह से समझा जाता है कि बच्चे इन विचारों और उनके व्यवहारों को सबसे अच्छी तरह सीखते हैं जब यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग होता है।

खण्ड 2.4
दक्षताएँ

इस खण्ड में प्रत्येक पाठ्यचर्या के उद्देश्य की दक्षताओं को परिभाषित किया गया है। इन दक्षताओं को पाठ्यक्रम विकासकर्ताओं के लिए दिशानिर्देशों के रूप में देखा जाना चाहिए और इन्हें निर्देशात्मक नहीं माना जाना चाहिए।

दक्षताओं को C 1.1, C 1.2, आदि के रूप में क्रमांकित किया गया है।

2.4.1 कार्यक्षेत्र: शारीरिक विकास

CG-1 बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं	C-1.1	पौष्टिक भोजन में रुचि व इसकी समझ दिखाती है तथा भोजन बर्बाद नहीं करती है
	C-1.2	अपनी देखभाल और स्वच्छता का बुनियादी व्यवहार करती है
	C-1.3	स्कूल/कक्षा-कक्ष को स्वच्छ और व्यवस्थित रखती है
	C-1.4	सामग्रियों और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का व्यवहार करती है
	C-1.5	गतियों (चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना) में सुरक्षा संबंधी सावधानी प्रदर्शित करती है और समुचित तरीके से ये कार्य करती है
	C-1.6	असुरक्षित स्थितियों को समझती है और मदद मांगती है
CG-2 बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं	C-2.1	आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अन्तर करती है
	C-2.2	प्रतीकों और निरूपणों के लिए दृश्य स्मृति विकसित करती है
	C-2.3	ध्वनियों में उसके पिच, वॉल्यूम से और ध्वनि पैटर्न्स में पिच, वॉल्यूम और टेम्पो से अंतर करती है
	C-2.4	विभिन्न गन्धों और स्वादों के बीच अन्तर करती है
	C-2.5	स्पर्श की अनुभूतियों में विभेद की क्षमता विकसित करती है
	C-2.6	अनुभवों की समग्र जागरूकता प्राप्त करने के लिए संवेदी अनुभूतियों को एकीकृत करना शुरू करती है
CG-3 बच्चे एक फिट और लचीले शरीर का विकास करते हैं	C-3.1	विभिन्न गतिविधियों में संवेदी अनुभूतियों और शरीर संचालन के बीच समन्वय प्रदर्शित करती है
	C-3.2	विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में सन्तुलन, समन्वय और लचीलापन दिखाती है
	C-3.3	हाथों और उंगलियों से काम करने में सटीकता और नियंत्रण दिखाती है
	C-3.4	ढोने, चलने और दौड़ने में ताकत तथा सहनशक्ति प्रदर्शित करती है

2.4.2 कार्यक्षेत्र : सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास

CG-4 बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अर्थात अपनी भावनाओं को समझने व प्रबंधन करने, और सामाजिक मानदण्डों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।	C-4.1 परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगती है C-4.2 अलग-अलग भावनाओं को पहचानती है और उनका उपयुक्त तरीक़े से नियमन करने के लिए सुविचारित प्रयास करती है C-4.3 अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करती है C-4.4 दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करती है C-4.5 कक्षा और विद्यालय में सामाजिक नियमों को समझती है और उन पर सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देती है C-4.6 दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति ज़रूरत के वक़्त दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करती है C-4.7 दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक ज़रूरतों को समझती है और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देती है
CG-5 बच्चे उत्पादक कार्य और 'सेवा' के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं	C-5.1 दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करती है
CG-6 बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं	C-6.1 सभी सजीवों के प्रति परवाह और उनसे जुड़ने में खुशी दिखाती है

2.4.3 कार्यक्षेत्र : संज्ञानात्मक विकास

CG-7 बच्चे अवलोकन और तार्किक चिंतन के ज़रिए दुनिया को समझते हैं	C-7.1 वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के सम्बन्धों को देखती-समझती है C-7.2 प्रकृति में कार्य-कारण सम्बन्धों को सरल परिकल्पनाएँ बनाकर देखती व समझती है और परिकल्पनाओं को समझाने के लिए अपने अवलोकनों का इस्तेमाल करती है C-7.3 दैनिक जीवन की परिस्थितियों में और सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों व तकनीकी का इस्तेमाल करती है

CG-8 बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं	C-8.1 चीज़ों को एक से अधिक गुणों के आधार पर समूहों और उप-समूहों में छाँटती है C-8.2 अपने परिवेश, आकृतियों, और संख्याओं में सरल पैटर्न्स को पहचानती और उनका विस्तार करती है C-8.3 सीधी और उल्टी गिनती से, और 10-10 एवं 20-20 के समूहों में 99 तक गिन पाती है C-8.4 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करती है C-8.5 दाशमिक स्थानीय मान प्रणाली की समझ के साथ 99 तक की मात्राओं को दर्शाने के लिए संख्याओं को पहचानती और उनका उपयोग करती है C-8.6 संयोजन (composition) और वियोजन (decomposition) की लचीली रणनीतियों का उपयोग करके आसानी से 2 अंकों की संख्याओं का जोड़ और घटाव करती है C-8.7 गुणा को बार-बार जोड़ और भाग को बराबर बँटवारे के रूप में जानती-समझती है C-8.8 बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानती, बनाती और वर्गीकृत करती है, और किसी स्थान (space) में वस्तुओं के सापेक्ष सम्बन्ध (relative relation) को समझती व समझाती है C-8.9 अपने आस-पास के वातावरण में वस्तुओं की लम्बाई, वज़न और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करती है C-8.10 मिनटों, घण्टों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करती है C-8.11 100 रुपये तक की मुद्रा का उपयोग करके सरल लेन-देन करती है C-8.12 मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त शब्दावली विकसित करती है C-8.13 मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करती है और हल करती है

2.4.4 कार्यक्षेत्र: भाषा और साक्षरता विकास

CG-9 बच्चे दो भाषाओं में रोज़मर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं	C-9.1 सरल गीतों, तुकबन्दियों और कविताओं को सुनती-सराहती है C-9.2 ख़ुद सरल गीत और कविताएँ बनाती है C-9.3 धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकती है C-9.4 किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझती है और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देती है C-9.5 सुनाई गई/बोल कर पढ़ी गई कहानियों को समझती है, पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहती हैं, को पहचानती है C-9.6 स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ छोटी कहानियाँ सुनाती है C-9.7 प्रभावी ढंग से रोज़मर्रा की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानती है, उनका इस्तेमाल करती है और मौजूदा शब्दावली का इस्तेमाल करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाती है
CG-10 बच्चे भाषा 1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं	C-10.1 L1 में ध्वनि जागरूकता विकसित करती है और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाती है और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) में विभाजित करती है C-10.2 किताब का बुनियादी ढाँचा/प्रारूप, छपे हुए शब्द और उनकी छपायी की दिशा के आईडिया को समझती है, और मूलभूत विराम चिह्नों को पहचानती है C-10.3 लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानती है और इस ज्ञान का इस्तेमाल शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करती है C-10.4 कहानियों और गद्यांशों को (L1 में) सटीकता और प्रवाह के साथ, उचित विरामों और आवाज़ में उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ती है C-10.5 छोटी कहानियाँ पढ़ती है और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, खुद से ही उनका अर्थ समझती है (L1) C-10.6 छोटी कविताएँ पढ़ती है और शब्दों व कल्पना के चुनाव के लिए कविता की सराहना करना शुरू करती है (L1) C-10.7 लघु समाचारों, निर्देशों, व्यंजन विधियों और प्रचार सामग्री को पढ़ती-समझती है (L1) C-10.8 अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखती है (L1) C-10.9 विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाती है (L1)
CG-11 बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं	C-11.1 ध्वनि जागरूकता विकसित करती है और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाती है और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) में विभाजित करती है C-11.2 लिपि की वर्णमाला के बार-बार दिखने वाले अक्षरों को पहचानती है और इस ज्ञान का इस्तेमाल सरल शब्दों और वाक्यों को पढ़ने-लिखने के लिए करती है

2.4.5 कार्यक्षेत्र: सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास

CG-12 बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीक़े से अभिव्यक्त करते हैं	C-12.1	विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करती है और उनसे खेलती है
	C-12.2	संगीत, रोल-प्ले, नृत्य और गतिविधियाँ निर्मित करने के लिए अपनी आवाज़, शरीर, स्थानों और तरह-तरह की चीज़ों की खोज करती हैं, उनसे खेलती हैं
	C-12.3	कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नए तरीकों की खोज करती है और कल्पनाशीलता के साथ कार्य करती है
	C-12.4	कला में सहयोगात्मक ढंग से कार्य करती है
	C-12.5	कला, स्थानीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों की रचना और अनुभव करते हुए विभिन्न तरह की प्रतिक्रियाएँ संप्रेषित करती है और इनकी सराहना करती है

2.4.5.1 सीखने की सकारात्मक आदतें

CG-13 बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं	C-13.1	ध्यान व सुविचारित कर्म: विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, योजना बनाने, ध्यान केन्द्रित करने तथा गतिविधियाँ निर्देशित करने के कौशल हासिल करती है
	C-13.2	स्मृति और मानसिक लचीलापन : समुचित कार्यकारी स्मृति, मानसिक लचीलापन (समुचित तरीके से ध्यान बनाए रखने या बदलने के लिए) और आत्म-नियंत्रण (आवेगी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रतिरोध के लिए) विकसित करती है जो संरचित वातावरण में सीखने में उसकी मदद करेगा
	C-13.3	अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण: वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करती है, आश्चर्य करती है और विभिन्न इंद्रियों का इस्तेमाल करते हुए अन्वेषण करती है, वस्तुओं के साथ छेड़-छाड़ करती है, सवाल पूछती है
	C-13.4	कक्षा के नियम : प्रतिनिधित्व (agency) और समझ के साथ नियमों को अपनाती और उनका पालन करती है

खण्ड 2.5

उदाहरणात्मक सीखने के प्रतिफल

इस खण्ड में, प्रत्येक कार्यक्षेत्र की एक दक्षता को आगे जाकर सीखने के प्रतिफलों में विस्तारित किया गया है। यह मार्गदर्शन करने के लिए एक नमूना है कि फाउंडेशनल स्टेज के लिए सीखने के प्रतिफलों को कैसे व्यक्त किया जा सकता है।

क) कार्यक्षेत्र: शारीरिक विकास

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 2): बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं

1) दक्षता (C 2.1): आकार, रंग और उनकी छटाओं के बीच अन्तर करती है

तालिका 2.5 क

	A	B	C	D	E
	C-2.1: आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अन्तर करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• अपने परिवेश में प्राथमिक रंगों (लाल, नीला, पीला) और अन्य सामान्य रंगों (काले, सफ़ेद, भूरे) में अन्तर करती है और उनके नाम बताती है।	• प्राथमिक रंगों और द्वितीयक रंगों के प्रकारों (यानी, हल्का नीला, गहरा नीला, हल्का हरा, गहरा हरा) के बीच अन्तर करती है।	• दो रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाने का प्रयास करती है (मसलन नीला और पीला मिलाने पर हरा बनता है, या लाल और सफ़ेद मिलाने पर गुलाबी बनता है)	• दो रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाती है।	• कला रूपों, रेखांकनों, सजावट और प्रदर्शन में प्रयोग करती है और रंगों का इस्तेमाल करती है।
2	• रंग के आधार पर चीज़ों के समूह बनाती है (मसलन सभी लाल चीज़ें एक साथ)	• आयाम- लम्बाई, चौड़ाई व ऊँचाई के आधार पर चीज़ों के समूह बनाती है (मसलन सभी लम्बी चीज़ें एक साथ)	• रंगों और आकृतियों की दृश्य विशेषताओं के संयोजन के आधार पर चीज़ों के समूह बनाती है (सारे लाल त्रिभुज एक साथ, सभी बड़ी हरी पत्तियाँ एक साथ)	• पैटर्न बनाती है, पहेलियाँ सुलझाती है, विभिन्न आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स की पहचान करते हुए और उनका समूह बनाते हुए खेलती है।	

ख) कार्यक्षेत्र : सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 5): बच्चे उत्पादक कार्य और 'सेवा' के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं

1) दक्षता (C 5.1): स्कूल और/या घर पर आयु-उपयुक्त काम करती है

तालिका 2.5 ब

	A	B	C	D	E
	C-5.1 : दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• उपयोग के बाद सामग्रियों और खिलौनों को उनके उचित स्थानों पर वापस रखती है	• शिक्षक की मदद करती है और कक्षा को व्यवस्थित करती है	• खाने के बाद ख़ुद की प्लेट या टिफ़िन साफ़ करती है • घर और/या स्कूल में उपयुक्त काम करती है (मसलन सही जगह खिलौने रखना, पौधों को पानी देना)	• स्थानीय पेड़ों का अंकुरण करती है और उनकी देखभाल करती है	• TLM बनाने में शिक्षक की मदद करती है • रसोई में सफ़ाई और काटने के काम में मदद करती है

ग) कार्यक्षेत्र : संज्ञानात्मक विकास

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 8): बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं

1) दक्षता (C 8.4): 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करती है

तालिका 2.5 ग

	A	B	C	D	E
	C-8.4 : 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• परिचित प्रसंगों/घटनाओं/वस्तुओं को क्रम से व्यवस्थित करती है (जैसे, दिनचर्या, कहानी, आकृतियाँ, 2 से 3 आकार	• वस्तुओं को 3 स्तरों तक के आकार के आधार पर व्यवस्थित करती है और इन स्तरों को मौखिक रूप से बताती है (बड़ा - छोटा - उससे छोटा; लम्बा - छोटा - उससे छोटा; ऊँचा - नीचा- उससे नीचा)	• आकार/लम्बाई / वज़न के आधार पर 5 वस्तुओं तक को बढ़ते या घटते क्रम में व्यवस्थित करती है	• वस्तुओं के विभिन्न गुणों (मसलन आकार/लम्बाई/वज़न/रंग) के आधार पर वस्तुओं के एक ही समूह को अलग-अलग क्रम में व्यवस्थित करती है	• संख्याओं के दिए गए समूह से उन्हें आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करती है

घ) कार्यक्षेत्र : भाषा और साक्षरता विकास

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 10): बच्चे भाषा 1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं

1) दक्षता (C 10.5): कहानियाँ पढ़ता है और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है इस की पहचान करके, स्वयं ही उनके अर्थ को समझती है

तालिका 2.5 घ

C-10.5 : छोटी कहानियाँ पढ़ती है और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, खुद से ही उनका अर्थ समझती है (L1)

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• "बोल कर पढ़े गए" को सुनती है और शिक्षक द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब देती है	• शिक्षक के साथ "साझा पठन" में भाग लेती है और पाठ के बारे में चर्चा करती है	• शिक्षक के साथ "निर्देशित / मार्गदर्शित पठन" में भाग लेती है और पाठ के बारे में चर्चा करती है	• समान पाठ्य और दृश्य सामग्री वाली पुस्तकों का "स्वतंत्र पठन" शुरू करती है	• दृश्य सामग्री की तुलना में अधिक पाठ्य सामग्री वाली पुस्तकों का "स्वतंत्र पठन" शुरू करती है
2	• चित्र पुस्तकें पढ़ती है और वस्तुओं तथा क्रियाओं की पहचान करती है	• चित्र पुस्तकें पढ़ती है, पात्रों और कथानक की पहचान करती है और कहानी को छोटे-छोटे क्रमों में बताती है	• छोटे सरल texts वाली पुस्तकों को बोलकर पढ़ती है, सटीक अनुक्रम और विस्तार के साथ कहानी का अनुमान लगाने और उसे फ़िर से कहने के लिए दृश्य संकेतों और टेक्स्ट का इस्तेमाल करती है	• कहानी की अपरिचित किताबें पढ़ना शुरू करती है और शिक्षक के मार्गदर्शन से उन्हें समझती है • कथानक और पात्रों की पहचान करती है	• पात्रों, कथानकों, अनुक्रमों और लेखक के दृष्टिकोण को पढ़ती और पहचानती है

ङ) कार्यक्षेत्र : सौन्दर्य और सांस्कृतिक विकास

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 12): बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीक़े से अभिव्यक्त करते हैं

1) दक्षता (C 12.1): विभिन्न आकारों में द्वि-आयामी और त्रि-आयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए विभिन्न चीज़ों और उपकरणों को ढूँढ़ता और उसके साथ खेलती है

तालिका 2.5 ङ

C-12.1 : विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करती है और उनसे खेलती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• ज़रूरी कला सामग्रियों, उपकरणों और औज़ारों को पकड़ती है	• कला सामग्रियों, औजारों और उपकरणों (मसलन डंडे, बीज, कंकड़, पत्थर, चाक, धागे, पेंसिलें, कूँचियाँ, क्रेयॉन्स, पाउडर, कैंचियाँ) का इस्तेमाल करते हुए विभिन्न प्रकार की पकड़ों का पता लगाती है		• गाढ़े और हल्के अंकनों/चिह्नों/रेखाओं को बनाने के लिए दबाव में बदलाव करने में सक्षम होती है	
2	• दृश्य कलाकृतियों में चिह्न, रेखाएँ, गोंजा-गांजी करते हुए बड़े और छोटे आकार को तथा अन्य द्विआयामी और त्रिआयामी आकृतियों को समझती है		• साथियों, सुगमकर्ताओं और स्थानीय समुदाय के सहयोग से बड़े पैमाने के काम (मसलन फ़र्श पर रंगोली, भित्ति चित्र, मूर्ति) बनाती है	• उपलब्ध जगह या सामग्री के आधार पर ख़ुद के काम को बड़े और छोटे आकारों में मापने में सक्षम होती है (मसलन मिट्टी की एक छोटी गुड़िया, या काग़ज़ की एक बड़ी गुड़िया बनाना)	
3	• सामग्रियों (मसलन मिट्टी और पानी, रेत और पानी, आटा और पानी, पेंट और पानी) को मिलाकर आकृतियाँ और ठप्पे बनाती है	• मिट्टी या आटे जैसी सामग्री को बेलकर और थपथपाकर त्रि-आयामी आकृतियाँ बनाती है	• अपनी व्यवस्था के लिहाज़ से अलग-अलग गाढ़ेपन, रंग और गठन की सामग्रियों को मिलाकर कोलाज बनाती है • विभिन्न प्रकार की प्राप्त सामग्रियों और वस्तुओं को मिलाकर त्रि-आयामी व्यवस्था/संयोजन बनाती है		
4	• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके ठप्पे (imprints) बनाती है		• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके सरल पैटर्न बनाती है	• सामग्रियों को विभिन्न आकारों, आकृतियों, बनावटों और रंगों के लिहाज़ से मिलाकर और व्यवस्थित करके पैटर्न बनाती है	• किसी सामग्री के साथ जोड़-तोड़ करके तरह-तरह के गठन बनाती है (मसलन मिट्टी, कपड़ा, काग़ज़, रबड़, लकड़ी)

च) कार्यक्षेत्र : सीखने की सकारात्मक आदतें

i. पाठ्यचर्या का उद्देश्य (CG 13): बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं

1) दक्षता (C 13.4): कक्षा-कक्ष के मानदण्ड: प्रतिनिधित्व (agency) और समझ के साथ मानदण्डों को अपनाना और उनका पालन करना

तालिका 2.5 च

C-13.4: कक्षा के नियम : प्रतिनिधित्व (agency) और समझ के साथ नियमों को अपनाती और उनका पालन करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• कक्षा नियमों के प्रति वयस्कों के व्यवहार का अवलोकन करती है और उनका अनुसरण करती है	• शिक्षक के संकेतों के साथ कक्षा नियमों का अनुसरण करती है	• कक्षा नियमों का पालन करती है और इसमें दूसरों की मदद करती है • शिक्षकों की मदद से 'स्वयं करें' (Do-it-yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/ पोस्टर बनाती है और उनका अनुसरण करती है	• कक्षा नियमों पर चर्चा में भाग लेती है और नियमों के अनुरूप व्यवहार करती है • 'स्वयं करें' (Do-it-yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाती है और उनका अनुसरण करती है	• कक्षा नियम स्थापित करने में भाग लेती है और उनके अनुसार व्यवहार करती है • 'स्वयं करें' (Do-it-yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाती है, उन्हें दर्शाती है; ज़िम्मेदारी से उनका अनुसरण करती है

सीखने के प्रतिफलों का अधिक व्याख्यात्मक विस्तृत सेट अनुलग्नक 1 में है।

जैसा कि इस अध्याय की शुरुआत में खण्ड 2.2 में उल्लेख किया गया है, सीखने के परिणाम जो अन्ततः उपयोग किए जाने हैं, उन्हें प्रासंगिक पाठ्यचर्या विकासकर्ताओं और संस्थानों द्वारा सावधानीपूर्वक विकसित किया जाना चाहिए जिसमें SCERT, NCERT और अन्य संस्थान शामिल होंगे।

अध्याय 3
भाषा शिक्षा और साक्षरता के प्रति दृष्टिकोण

भाषा सीखने के मामले पर NEP 2020 की संस्तुतियाँ, भाषा अर्जित करने सम्बन्धी नवीनतम शोधों पर आधारित थीं। NEP 2020 का अनुसरण करते हुए भाषा शिक्षा पर NCF के व्यापक लक्ष्य के पीछे यह दृष्टि है कि बच्चे भाषा इस तरीक़े से सीखें, जिससे उनके सीखने को (सभी डोमेन और क्षेत्रों में), उनकी सम्प्रेषण क्षमता को (मौखिक और लिखित दोनों), तथा उनके सामाजिक-भावनात्मक कौशल को उनके जीवन के शुरुआती वर्षों और उनके पूरे जीवन में भी अधिकतम बढ़ाया जा सके।

खण्ड 3.1
सिद्धान्त

भाषा शिक्षा के बारे में, NEP 2020 पर आधारित, NCF के दृष्टिकोण के पीछे मुख्य सिद्धान्त निम्नांकित हैं :

क) बच्चे 0 से 8 वर्ष की उम्र के बीच मौखिक भाषा बहुत तेज़ी से सीखते हैं।

सब जानते हैं कि बच्चे, मौखिक भाषा को शुरुआत के 8 वर्षों में बहुत तेज़ी से सीखते हैं। इन वर्षों के दौरान भाषा अर्जित करने के लिहाज़ से संवेदनशील दौर आते हैं, जिन्हें खोना नहीं चाहिए। शुरुआती वर्षों में भाषा सीखने में देरी के कारण, बाद में बच्चों को नई भाषा अर्जित करने में बहुत मुश्किल आती है (यह असम्भव तो नहीं, पर बेहद कठिन हो जाता है)।

ख) बहुभाषिकता के संज्ञानात्मक और सामाजिक/सांस्कृतिक दोनों लाभ हैं।

शोध स्पष्टत: दर्शाते हैं कि मौखिक रूप में कई भाषाओं के सम्पर्क से महत्त्वपूर्ण संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक उत्प्रेरण मिलता है, जो बच्चों के विकास के लिए बहुत फ़ायदेमन्द है। बच्चे शुरुआती वर्षों में कई मौखिक भाषाएँ सीखने में सक्षम होते हैं। वे आसानी से भाषाओं के बीच अन्तर कर पाते हैं और यह भी तय कर पाते हैं कि किससे किस भाषा में बात करनी है।

अगर बच्चों के इर्द-गिर्द भाषा के प्रयोग का अर्थवान और सोद्देश्य, समृद्ध-सहज माहौल हो तो वे सबसे अच्छी तरह से बहुभाषा कौशल सीख पाते हैं। छोटे बच्चे औपचारिक शिक्षा के जरिए भाषा सीखने में बहुत सक्षम नहीं होते। पाठ्यचर्या बनाने वालों, शिक्षक-प्रशिक्षकों और शिक्षकों को यह महत्त्वपूर्ण अन्तर ध्यान में रखना चाहिए ताकि वे फाउंडेशनल स्टेज पर छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त शुरुआती भाषा शिक्षण अनुभव का ख़ाका तैयार कर सकें और उसे बच्चों को उपलब्ध करा सकें।

भारत में बहुभाषिकता व्यापक है और ज़्यादातर बच्चे अपने जीवन के शुरुआती वर्षों से ही एक से ज़्यादा भाषाओं के सम्पर्क में होते हैं। हमारे बहुभाषी विश्व और देश में, शुरुआती दिनों से ही बहुभाषिक होना जीवन में विभिन्न समुदायों के बीच हमारे सम्प्रेषण को आसान बना देता है।

इसलिए NCF के एक मुख्य भाग का लक्ष्य है कि एकदम शुरुआत से से ही बच्चे में उनके विकास के अनुरूप बेहतरीन मौखिक बहुभाषिक कौशलों की नींव मज़बूत की जाए।

ग) छोटे बच्चे स्वाभाविक रूप से मौखिक भाषा सीख जाते हैं पर लिखित भाषा उतनी स्वाभाविक नहीं होती इसलिए पढ़ने और लिखने की अवधारणा को ज़रूर ही सिखाया जाना चाहिए।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, शुरुआत से ही बच्चों को कई मौखिक भाषाओं से गहराई से जोड़ना NCF का एक मुख्य पहलू है। हालाँकि पढ़ने और लिखने की अवधारणा, जिसमें phonemes (ध्वनि की छोटी इकाइयाँ) और graphemes (लिखित व्यवस्था की सबसे छोटी इकाइयाँ) की अवधारणा और उनका आपसी सम्बन्ध शामिल है, को पहले केवल एक भाषा के जरिए पढ़ाया जाना चाहिए। आदर्श रूप में यह भाषा, अगर सम्भव हो तो, घर की भाषा होनी चाहिए।

एक बार जब बच्चे में पढ़ने और लिखने की अवधारणा और बुनियादी साक्षरता कौशल विकसित हो जाए, तब आगे उसका

परिचय लिपियों से कराया जाना चाहिए जिन्हें वह अधिक आसानी से सीख सकेगा। हालाँकि शुरुआती वर्षों में एक से ज़्यादा लिपियों के साथ दृश्यात्मक परिचय को लाभकारी माना जाता है, पर साक्षरता के शुरुआती कौशल सिखाना, पहले एक भाषा के जरिए करना ज़्यादा बेहतर होगा।

साक्षरता के बुनियादी कौशल में डिकोडिंग शामिल है, मसलन अनजाने शब्दों के उच्चारण के लिए फोनिम का सम्बद्ध ग्राफ़िम (स्वर, व्यंजन, और उनके संयोजन) से जुड़ाव । पढ़ना और लिखना पहले एक परिचित भाषा में सिखाया जाना चाहिए, ऐसी भाषा में जिसे बच्चा समझता और ठीक से बोलता हो। शुरुआती साक्षरता कौशल, एक मज़बूत मौखिक भाषा कौशल के आधार पर बेहतर और जल्दी विकसित होते हैं।

घ) छोटे बच्चे जटिल अवधारणाओं को सबसे जल्दी और गहराई से अपने घर की भाषा/ मातृभाषा/परिचित भाषा में सीखते और समझते हैं।

शोध के प्रमाण इस बात को पुख़्ता करते हैं कि फाउंडेशनल स्टेज और उसके बाद बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षण देना महत्त्वपूर्ण है। इसके निम्नांकित कारण हैं :

i. बच्चे प्री-स्कूल या स्कूल में 3 साल की उम्र के बाद दाखिला लेते हैं। इस समय तक वे अपने घर की भाषा में पर्याप्त क्षमता अर्जित कर लेते हैं जिससे कि वे सुनने, समझने, दूसरे के साथ सहानुभूति व्यक्त करने, बोलने, अपने विचारों व भावनाओं को अभिव्यक्त करने और दूसरों के साथ अर्थपूर्ण तरीक़े से बात करने में सक्षम हो जाते हैं। इस 3 वर्षों में 'भाषा अर्जित करने' के साथ बच्चे स्वतःस्फूर्त तरीक़े से दूसरे बुनियादी कौशल, ख़ासकर सम्प्रेषण, सूचनाओं को समझने, सामाजिक अन्तःक्रिया सीखते हैं। साथ ही वे रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिन्तन, साक्षरता और संख्या ज्ञान के आधारभूत कौशल और अवधारणाएँ भी सीखते हैं। बच्चे इन बुनियादी कौशलों को साथ लेकर प्री-स्कूल या स्कूल पहुँचते हैं। अगर बच्चे को उसके फाउंडेशनल स्टेज पर और बाद में भी अन्य विषय घर की भाषा या मातृभाषा में पढ़ाए जाएँ तो ये कौशल मूलभूत नींव का काम करते हैं, जिनके आधार पर बच्चे की संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक क्षमता को और निखारा जा सकता है । इसलिए घर की भाषा, सभी तरह के सीखने में सहायता करती है। साथ ही यह भाषा घर पर तथा पहले सीखे गए के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में बच्चे को सक्षम बनाती है।

ii. दूसरी तरफ़ अगर बच्चे को नई या अपरिचित भाषा में पढ़ाया जाए तो बच्चे जिन 3-4 वर्षों का अनुभव लेकर स्कूल आते हैं, उसे पूरी तरह भुला देना होगा। बच्चे द्वारा अर्जित बुनियादी अनुभव, कौशल और सीखने को नकारते हुए शुरू से ही नई भाषा पढ़ाने का मतलब सीखने की पूरी प्रक्रिया को उलट देना होगा। भारत समेत पूरी दुनिया में इस बात के जबरदस्त सबूत मिलते हैं कि जो बच्चे मातृभाषा, घर की भाषा या परिचित भाषा में सीखते हैं, वे विज्ञान और गणित जैसे विषयों में भी अपने उन सहपाठियों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जिन्हें अपरिचित भाषा में पढ़ाया गया।

iii. शोध स्पष्टत: दिखाते हैं कि बच्चे अगर साथ-साथ या बाद में दूसरी भाषा भी सीख रहे हों, तब भी उनके द्वारा घर की भाषा में सीखे गए किसी कौशल या अवधारणा को फिर से नहीं पढ़ाना पड़ता।

iv. मातृभाषा या घर की भाषा बच्चे के लिए सिर्फ़ सम्प्रेषण का माध्यम भर नहीं है, इसका गहरा सम्बन्ध बच्चे की निजी, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान से होता है। शिक्षण के माध्यम (medium of instruction) के रूप में नई भाषा को लादकर, इस समृद्ध अनुभव को नकारना न तो बच्चों के लिए उचित है और न ही शुरुआती वर्षों में उनकी शिक्षा के लिए वांछनीय। क्योंकि इसी समय बच्चों में आत्मविश्वास के विकास, सकारात्मक स्वाभिमान, क्षमता और स्वायत्तता का बोध आदि बेहद ज़रूरी उद्देश्यों के लिए शिक्षकों को काम करने की ज़रूरत होती है।

v. अध्ययन दिखाते हैं कि छोटे बच्चों के सीखने के लिए सकारात्मक तथा सहयोगी रिश्ते और संवेदनात्मक रूप से

सुरक्षित माहौल बेहद ज़रूरी है, जिसे परिचित भाषा को शिक्षण की भाषा बनाते हुए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

vi. छोटे बच्चे सुनने, बोलने और दूसरों से बातचीत के ज़रिए भाषा सीखते हैं। सिर्फ़ एक परिचित भाषा (जिसे वे अच्छी तरह समझते हों और बोलते हों) ही स्वाभाविक बातचीत का परिवेश बना सकती है जो बच्चों के समग्र विकास के लिए ज़रूरी है। इसलिए फाउंडेशनल स्टेज के दौरान बातचीत की भाषा बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा/ परिचित भाषा होनी चाहिए।

vii. NEP 2020 ने रटने की बजाय अन्तःक्रियात्मक रूप से सीखने, रचनात्मकता और खोज पर ज़ोर देने के प्रतिमान परिवर्तन को चिह्नित किया है। इसके मुताबिक फाउंडेशनल स्टेज के दौरान अपरिचित भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाने को हतोत्साहित करना होगा।

बच्चे के घर की भाषा का सम्मान, घर की भाषा में बातचीत और सीखने के लिए बच्चे को प्रोत्साहित करना और अधिकतम सम्भव स्तर पर बच्चे की घर की भाषा में शिक्षण, NCF का एक और केन्द्रीय पहलू है। शुरुआती वर्षों में द्वि-भाषिक या बहुभाषिक भाषा दृष्टिकोण - जिसमें बच्चे की घर की भाषा मुख्य हो - बच्चे को भाषाओं के बीच सफल आवाजाही (do efficient code switching across languages) में सक्षम बनाता है।

ङ) भाषा सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति के महत्त्वपूर्ण आयाम निर्मित करती है, जो कि बच्चे में विकसित की जाने वाली मुख्य क्षमताओं में से एक है।

सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति में सक्षमता बच्चे में पहचान और अपनापन का एक बोध देती है, साथ ही दूसरी संस्कृतियों और पहचानों के लिए सराहना का बोध भी देती है। पिछले दशक में किए गए अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययनों ने दिखाया है कि बच्चों में सांस्कृतिक जागरूकता/अभिव्यक्ति और सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान, उन्हें बेहतर सामाजिक व्यवहार, आत्मसम्मान, आत्मविकास तथा सहिष्णुता व दूसरी संस्कृतियों की सराहना की तरफ़ आगे ले जाती है।

अपने सांस्कृतिक इतिहास, भाषाओं, कलाओं और परम्पराओं के दृढ़ बोध के जरिए बच्चे एक सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान विकसित कर सकते हैं। साथ ही उनमें इसके जरिए सम्प्रेषण और रचनात्मकता जैसी सम्बद्ध क्षमताओं का भी विकास होता है। इसलिए सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति, समाज तथा व्यक्ति, दोनों की बेहतरी के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

इस कारण से भी अपने मौखिक व लिखित साहित्य और परम्पराओं के साथ घर की भाषाएँ, स्थानीय भाषाएँ और अन्य भारतीय भाषाएँ बच्चे के सम्पूर्ण समग्र विकास और भले के लिए, उनके सीखने के अनुभव का महत्त्वपूर्ण पहलू बन जाती हैं।

खण्ड 3.2
फाउंडेशनल स्टेज में भाषा शिक्षा और साक्षरता पर NCF का दृष्टिकोण

NEP 2020 द्वारा रेखांकित भाषा शिक्षा के सिद्धान्तों और उद्देश्यों से सामंजस्य बिठाते हुए फाउंडेशनल स्टेज में भाषा शिक्षण को लेकर NCF का दृष्टिकोण निम्नवत है :

क) चूँकि बच्चा अपने घर की भाषा में अवधारणाएँ ज़्यादा तेज़ी और गहराई से सीखता है, इसलिए फाउंडेशनल स्टेज में शिक्षण की प्राथमिक भाषा बच्चे के घर की भाषा/मातृभाषा/ परिचित भाषा ही होनी चाहिए (इसे आगे L1 कहा गया है)।

सरकारी और निजी, दोनों तरह के स्कूलों का यही दृष्टिकोण होना चाहिए।

हर बच्चा फाउंडेशनल स्टेज की शुरुआत से ही अपनी L1 का पूरा इस्तेमाल कर रहा है, इसे सुनिश्चित कराने के लिए ऐसे शिक्षक (मसलन स्थानीय समुदाय से) ज़रूरी हैं जो न सिर्फ़ उस भाषा की बल्कि स्थानीय संस्कृति और परम्पराओं की भी समझ रखते हों। किसी दूसरे चरण से ज़्यादा, फाउंडेशनल स्टेज के शिक्षक को बच्चे की L1 में प्रवीण होना चाहिए।

बच्चे की शैक्षिक प्रक्रिया में अभिभावकों को भी जोड़ा जाना चाहिए। इससे बच्चों के लिए स्कूली प्रक्रिया अधिक रोचक और सुरक्षित बन सकती है। इसके जरिए घर और स्कूल के करीबी संबंध को प्रोत्साहित व संभव किया जा सकता है जो कि बच्चे के सर्वांगीण विकास और सीखने में बहुत महत्त्वपूर्ण है।

3 से 8 वर्ष की उम्र वाले बच्चों का ज़्यादातर सीखना खेलने, सुनने और बोलने के दौरान होता है। यह सब अनिवार्य रूप से बच्चे की L1 में होना चाहिए।

बच्चे की L1 को फाउंडेशनल स्टेज पर अन्त:क्रिया और शिक्षण के लिए प्राथमिक भाषा बनाने के लिए इन भाषाओं में अच्छे बाल-साहित्य का प्रकाशन और विकास ज़रूरी है। ख़ासकर उन भाषाओं में यह और भी ज़रूरी है जिनमें ऐसे साहित्य की कमी है। उन भाषाओं के लिए जो अभी शिक्षण के माध्यम के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं, और उन अन्य भाषाओं के लिए भी जो आगे शिक्षण की भाषा बनेंगी, या उन सभी भाषाओं के लिए जिनका फाउंडेशनल स्टेज पर शिक्षण और सीखने में विस्तृत व औपचारिक इस्तेमाल होता है, में अच्छे बाल-साहित्य के प्रकाशन और विकास को राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में लिया जाना चाहिए। कई राज्य सरकारें और ग़ैर-सरकारी संगठन भी घर की भाषाओं में बच्चों के लिए सामग्री के विकास और प्रकाशन में लगे हुए हैं जिनमें बड़ी संख्या में कहानियों की किताबें, कविता पोस्टर और बड़ी किताबें शामिल हैं।

हालाँकि शिक्षण के लिए भाषा के रूप में L1 सबसे बेहतर विकल्प है पर संगत भाषा में दक्ष शिक्षक उपलब्ध न होने जैसे विभिन्न कारणों से यह आमतौर पर सम्भव नहीं होता है। जगह-जगह बिखरे हुए समुदायों और सुदूर इलाक़ों समेत कई परिस्थितियों में ऐसा दिखता है।

ऐसे हालात में, जिस भाषा में शिक्षा दी जानी है, बच्चे को उस तक पहुँचाने के लिए L1 को सहयोगी भाषा के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया में ध्यान रखना होगा कि बच्चा अपना पुराना सीखा हुआ खो न दे। इसके लिए शिक्षकों को बच्चे की भाषा से परिचय बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन और सहयोग दिया जाना चाहिए।

बच्चे के शिक्षण की भाषा होने जा रही नई भाषा तक बच्चे को, बिना पुराना सीखा हुआ खोए, ले जाने में मददगार अतिरिक्त उपाय खोजना भी सम्भव है। कोई ऐसा होना चाहिए जो लगातार इन भाषाओं के बीच सम्बन्ध बनाने में उनकी लगातार मदद करे। उदाहरण के लिए बारी-बारी से कोई एक अभिभावक रोज स्कूल आए, समुदाय के युवाओं को शिक्षकों के सहयोग में लगाया जाए, पंचायतें स्कूल के बाद होने वाले कार्यक्रम के रूप में खेल आधारित गतिविधियों के लिए सामुदायिक केन्द्र संगठित करें। किसी समुदाय के लिए इनमें से क्या सबसे अच्छा होगा होगा, इस आधार पर इन विकल्पों में से किसी को चुना जा सकता है। एकदम अलग भाषा पृष्ठभूमि से आए शिक्षक भी भाषाओं के बीच संक्रमण को सहज बनाने व पुल बनाने के लिए बच्चे की भाषा के आधारभूत शब्दज्ञान और सम्प्रेषण क्षमता को हासिल करने का लक्ष्य ले सकते हैं।

ऐसी सभी कक्षाओं में, जहाँ शिक्षक बच्चे की भाषा में संतोषजनक दक्षता रखे हों, शिक्षण और सीखने के लिए औपचारिक रूप से बच्चे की L1 का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

जहाँ कहीं भी बच्चे की L1 आधिकारिक रूप से अन्य विषयों को पढ़ाने के लिए नहीं इस्तेमाल की जा रही हो, वहाँ भी इन L1 भाषाओं का इस्तेमाल औपचारिक ढंग से कम-से-कम मौखिक रूप से किया जाना चाहिए। इनका इस्तेमाल पढ़ने, लिखने और दूसरे विषयों को पढ़ाने में इस्तेमाल हो रही भाषा से जोड़ने के लिए किया जाना चाहिए। इससे सुनिश्चित किया जा सकेगा कि कक्षा में शिक्षक और बच्चे, दोनों सोचने, तर्क करने, समझ के उच्च चरण पर जाने, अभिव्यक्ति और सम्प्रेषण में हमेशा L1 का इस्तेमाल कर रहे हैं।

आख़िरी बात कि किसी बच्चे को अपने घर की भाषा में बोलने के लिए कभी भी, किसी भी हालत में हतोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए, उसे इस बात के लिए कतई शर्मिन्दा नहीं किया जाना चाहिए। इसके उलट, शिक्षकों, सहपाठियों, अभिभावकों और स्कूल पदाधिकारियों द्वारा घर की भाषा के इस्तेमाल को विचार और व्यवहार में (अधिकतम संभव स्तर पर) हमेशा प्रोत्साहन, प्रशंसा और सराहना मिलनी चाहिए।

जहाँ तक सम्भव हो, शिक्षकों को बच्चों को उनकी L1 में प्रतिक्रिया देने और बातचीत करने की अनुमति देनी चाहिए और इसे प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें बच्चे की L1 में सरल कहानियाँ सुनानी चाहिए और कठिन शब्दों व अवधारणाओं को L1 में ही समझाना चाहिए। भाषाओं को अलग-अलग समयों में बन्द विषयों के रूप में न तो पढ़ाया जाना चाहिए, न सीखा जाना चाहिए। भाषाओं का मिश्रण हो सकता है और बच्चे को अपनी L1 को आधार बनाते हुए नई अवधारणाएँ व भाषाएँ सीखने का अवसर मिल सकता है।

ख) शुरुआती उम्र से ही बच्चे का कई मौखिक भाषाओं (जिन्हें नीचे L2 और L3 कहा गया है) से गहरा सम्पर्क होना चाहिए। बच्चे के सामने नियमित रूप से कम-से-कम दो या अच्छा हो कि तीन भाषाएँ रहें, इसके लिए स्कूलों को शिक्षकों और अभिभावकों की उपस्थिति सुनिश्चित करना होगा।

उम्र के शुरुआती 6 से 8 सालों में बच्चों का सम्पर्क अगर नई भाषाओं से कराया जाए तो वे इन भाषाओं को, ख़ासकर अर्थपूर्ण सन्दर्भों में मौखिक सम्प्रेषण को, तेज़ी से सीखने में सक्षम होते हैं। इसलिए शुरुआती कक्षाओं में द्विभाषिक या बहुभाषिक दृष्टि अपनाते हुए L1 का शिक्षण की मुख्य भाषा के रूप में इस्तेमाल बच्चों को भाषाओं के बीच सफल आवाजाही में सक्षम बनाता है।

मौखिक रूप में कई भाषाओं तक पहुँच बच्चे को महत्त्वपूर्ण संज्ञानात्मक उत्प्रेरण भी प्रदान कर सकती है, जो कि सामाजिक-भावनात्मक कौशलों के साथ रचनात्मकता के विकास और आलोचनात्मक चिन्तन की क्षमताओं के विकास के लिए लाभकारी है क्योंकि शिक्षकों, अभिभावकों, सहपाठियों और अन्य द्वारा इस्तेमाल की गई ध्वनियाँ और इशारे बच्चे के दिमाग़ में शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों में बदल जाते हैं।

अगर एक अपरिचित भाषा औपचारिक पढ़ाई के लिए लिए इस्तेमाल की जा रही हो, तब बच्चे के सन्दर्भों, अनुभवों और उसके दिल के क़रीबी विषयों का इस्तेमाल मौखिक भाषा और साक्षरता के विकास के लिए बेहद ज़रूरी है। गीत, कविताएँ, खेल, नाटक, सम्पूर्ण शारीरिक प्रतिक्रिया (टीपीआर) और अन्य रचनात्मक अन्त:क्रियाएँ - मसलन अनुभवों, जगहों और पसन्दीदा चीज़ों/खिलौनों का विवरण (और उन पर बातचीत) - सौन्दर्यात्मक व रचनात्मक बोध विकसित करते भाषा शिक्षण को ज़्यादा रोचक और इसलिए ज़्यादा प्रभावी बना देती हैं।

फाउंडेशनल स्टेज पर इस्तेमाल की जा सकने वाली कुछ कार्यनीतियाँ ये रहीं : बच्चे की L1 और L2/L3 का संतुलित व युक्तिपूर्ण इस्तेमाल जो कि हर समय बच्चे की भाषा दक्षता के विकास से संगति में हो; L2/L3 के लिए, बातचीत व अन्य मौखिक भाषा विकास गतिविधियों का स्वाभाविक माहौल मुहैया कराना; शिक्षण व सीखने में बच्चे की संस्कृति और उसके सन्दर्भगत ज्ञान के इस्तेमाल सहित L1 और L2/L3 के मिश्रित इस्तेमाल की स्वीकृति और प्रोत्साहन; पढ़ना और लिखना सिखाने में बच्चे की L1 की मदद लेना। बच्चे की L1 में उच्च गुणवत्ता वाली शैक्षिक सामग्री उत्पादित करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।

छोटे बच्चों के लिए उनकी L2 या L3 में धाराप्रवाह ढंग से बोलने का कौशल हासिल करने के लिए एक स्वाभाविक, सम्प्रेषण केन्द्रित पद्धति अपनाई जाने की ज़रूरत होती है जो उनकी L1 पर आधारित हो। इसके लिए कुछ कार्यनीतियाँ निम्नवत हैं : गतिविधि गीतों, धुनों, रोचक खेलों, वाक्यांशों व सरल वाक्यों में छोटी बातचीत (असली वस्तुओं या तस्वीरों के आधार पर) का इस्तेमाल, बहुभाषिक पद्धति अपनाना, जिसमें बच्चे की L1 में परिचित कहानियाँ पहले शिक्षक द्वारा कई बार सुनाई जाएँ, और फिर उन्हें L2 या L3 में सुनाया जा सकता है, लक्षित शब्दों और संरचनाओं का इस्तेमाल, कहानियों का इस्तेमाल और उन्हें वाक्य विन्यास के दोहराव के साथ बोल कर पढ़ना।

फाउंडेशनल स्टेज के ख़त्म होते-होते कम-से-कम दो भाषाओं में बच्चों को मज़बूत मौखिक भाषा कौशल, जिसमें (जिसमें सुनने का बोध, समुचित शब्द भण्डार और मौखिक अभिव्यक्ति शामिल है) विकसित करना चाहिए। ये मौखिक कौशल, फाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक, कम-से-कम एक भाषा (और लिपि) में स्वतंत्र रूप से पढ़ना और लिखना सीखने का महत्वपूर्ण पहलू निर्मित करते हैं।

ग) पढ़ने और लिखने की अवधारणा को शुरुआत में R1 भाषा के जरिए विकसित किया जाना चाहिए, जहाँ तक सम्भव हो, यह भाषा बच्चे की घर की भाषा L1 को होना चाहिए। (R1 वह भाषा है जिसमें बच्चा सबसे पहले पढ़ने और लिखने की अवधारणा सीखता है, R2 इसी तरह की दूसरी और R3 इसी तरह की तीसरी भाषा है, आदि-आदि।)

पढ़ने और लिखने की अवधारणा (मसलन उद्गामी साक्षरता, समझकर पढ़ना और लेखन अभिव्यक्ति) को मौखिक भाषा के विकास; अर्थ निर्माण (जिसमें चित्रों व अन्य प्रतीक-व्यवस्थाओं जैसे इशारे, चेहरे के भाव, कला, संगीत, नृत्य, नाटक व खेल का मतलब समझना और व्याख्या करना शामिल है), और छपी हुई सामग्री के ज़रिए विकसित किया जाता है।

इसलिए फाउंडेशनल स्टेज पर मौखिक भाषा कौशलों के शुरुआती विकास पर ज़ोर के साथ, शुरुआत में ही ख़ासकर R1 (अच्छा हो कि वह भाषा L1 हो, पर कुछ स्थितियों में वह L2 भी हो सकती है, जैसा कि ऊपर बिन्दु अ में बताया गया है) में पर्याप्त छपी हुई सामग्री से भी बच्चे का सम्पर्क कराया जाना चाहिए। शुरुआत में यह छपी हुई सामग्री चित्र/कहानी की किताब होनी चाहिए। R1 या R2 की वर्णमाला के अक्षर, हर भाषा के सरल शब्द और वाक्यांश, जिनके साथ चित्र, आकृतियाँ और संख्याएँ भी हों, को बच्चों की आँख के अनुरूप ऊँचाई पर पर स्कूल की दीवारों पर प्रदर्शित किया जाना चाहिए। कुछ मामलों में R1 और R2, दोनों में अक्षर समान हो सकते हैं, पर कुछ में वे भिन्न हो सकते हैं।

क्योंकि पढ़ना और लिखना उस तरह स्वाभाविक रूप से नहीं आता जैसे मौखिक भाषा आती है, इसलिए अर्थपूर्ण सन्दर्भों के ज़रिए बच्चों की पर्याप्त मदद की जानी चाहिए। बच्चे पहले लिखे हुए शब्दों वाली चित्र पुस्तकों (लिखित शब्दों के दृश्य-प्रदर्शन के लिए) से गुजरते हैं, फिर बोलकर पढ़ने वाली पुस्तकों (जिन्हें बोलकर इसलिए पढ़ा जाता है ताकि बच्चे phonemes और graphemes के बीच सम्बन्ध बना सकें) से। फिर वे साझा रूप से पढ़ते हैं, फिर निर्देशित रूप से पढ़ने तक पहुँचते हैं। आखिर में वे पहले सरल और फिर बाद में जटिल कहानियों और पाठों (मसलन कक्षा की किताबों) के अपेक्षाकृत ज़्यादा स्वतंत्र पाठ की ओर बढ़ते हैं। बच्चों की अधिकतम रुचि के लिए चित्र और कहानी वाली पुस्तकों को रोचक, रंगीन, दिलचस्प होना चाहिए। उन्हें ऐसा होना चाहिए जिससे बच्चे अपने को जोड़ सकें, उनकी जड़ें स्थानीय और भारतीय सन्दर्भ में होनी चाहिए।

फोनिक्स/ डिकोडिंग के शिक्षण को खेलों और बातचीत के ज़रिए ज़्यादा रोचक बनाया जा सकता है (मसलन तुम और कौन-से शब्द जानते हो जिनमें 'ब' ध्वनि का इस्तेमाल होता है, अपने होठों से 'ब' के अलावा और कौन-सी ध्वनि निकाल सकते हो, कौन-सा शब्द आगे और पीछे से एक जैसा है)।

लिखने के प्रति दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि यह अभिव्यक्ति का एक रूप है, कोई चुनौती नहीं। बच्चे का पहला क़दम चित्र बनाना होता है, फिर वह अपने चित्र का नाम लिखता है (शुरुआत में वह स्व-वर्तनी (inventive spelling) का इस्तेमाल कर सकता है, जो अर्थपूर्ण साक्षरता में एक महत्त्वपूर्ण क़दम है), फिर उसे यह बोध होता है कि कई शब्दों (वाक्यांशों) के जरिये वह ज़्यादा अभिव्यक्त कर सकता है, और आख़िर में वह पूरे वाक्यों की ओर बढ़ता है। इसलिए अभ्यास पुस्तिकाओं, कुछ लिखने की ज़रूरत वाले खेलों और लिखने के अन्य निर्देशित रूपों के ज़रिए बच्चों को अभ्यास कराया जाना चाहिए।

कक्षा-1 और 2 में, जब बच्चे पढ़ना और लिखना सीख रहे हों, अर्थ-केन्द्रित और कौशल-केन्द्रित, दोनों तरह की गतिविधियों की ज़रूरत होती है। शिक्षकों को निजी कौशलों (मसलन डिकोडिंग, प्रवाह, वर्तनी, सही तरीक़े से लिखना आदि) और समूची भाषा के अर्थपूर्ण इस्तेमाल के लिए पढ़ने, लिखने व मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों का अवसर उपलब्ध कराने के बीच बेहतर सन्तुलन स्थापित करने की ज़रूरत है।

स्कूल में ऐसी कार्यपुस्तिकाएँ (workbooks) होनी चाहिए जो बच्चों को पढ़ने और लिखने के नियमित अभ्यास का अवसर दें। इनमें दिए कार्यपत्रक (worksheets) graded भी होने चाहिए।

घ. एक बार जब बच्चे की R1 में पढ़ने और लिखने की अवधारणा विकसित हो जाए, तब अतिरिक्त लिपियों से उन्हें धीरे-धीरे परिचित कराया जाना चाहिए। लक्ष्य यह होना चाहिए कि 8 वर्ष की उम्र (कक्षा-3) तक वे R1 में स्वतंत्र रूप से पढ़ और लिख सकें।

सीखने को बढ़ाने के लिए प्रचुर मात्रा में कविताओं, गानों, साहित्य, नाटक, खेलों और दूसरी रचनात्मक अन्त:क्रियाओं के साथ R2 और R3 में भी पढ़ने और लिखने को लेकर यही पद्धति होनी होना चाहिए - बोलकर पढ़ने से शुरू करना, खेल, फिर फोनिम-ग्राफ़िम के सम्बन्धों को समझने के लिए गतिविधियाँ, साझा रूप से पढ़ना, फिर निर्देशित पठन, फिर लिखने के अभ्यास। यह अभ्यास बच्चों को अन्ततः स्वतंत्र लेखन तक ले जाएगा।

चूँकि पढ़ने और लिखने की अवधारणा R1 के जरिए सीखी जा चुकी है, इसलिए R2 और R3 के लिए नई लिपि सीखना अवधारणात्मक रूप से ज़्यादा आसान होगा।

अगर L1, R1, R2 व R3 से अलग है तो R1, R2 और R3 की संवादात्मक भाषा कक्षाएँ L1 की मदद से चलती रहेंगी, जैसा कि ऊपर बताया गया है। सभी भाषाओं में बच्चे की बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता में प्रगति के साथ ही फाउंडेशनल स्टेज और उसके बाद भी उद्देश्य यह होना चाहिए कि शिक्षण उच्चस्तरीय चिन्तन वाले प्रश्नों पर केन्द्रित हो।

बॉक्स 3.2क

फाउंडेशनल स्टेज में भाषा से सम्बन्धित मुख्य विचारों का सारांश

अधिकतम सम्भव रूप से फाउंडेशनल स्टेज पर शिक्षण की भाषा, घर की भाषा (L1) होनी चाहिए। जहाँ यह सम्भव न हो, शिक्षण और सीखने की गतिविधियों में बच्चे के L1 के औपचारिक इस्तेमाल की मदद के लिए और L1 व स्कूल की भाषा के बीच पुल बनाने के लिए क़दम उठाए जाने चाहिए।

बच्चों को कई मौखिक भाषाओं से, जितनी जल्दी हो सके, गहन सम्पर्क कराया जाना चाहिए और इसे अन्त:क्रियात्मक गतिविधियों (मसलन बातचीत, टीपीआर, कविता, गानों, नाटक, अनुभव वर्णन) के जरिए बढ़ाया जाना चाहिए। उद्देश्य यह हो कि बच्चा कक्षा-3 तक दो भाषाओं में मौखिक भाषा दक्षता (भले ही समान स्तर की नहीं) हासिल कर ले।

शुरुआत से ही मौखिक भाषा विकास से सम्पर्क, अर्थ निर्माण गतिविधियों और छपी हुई सामग्री के जरिए पढ़ने और लिखने की अवधारणा प्रारम्भ में R1 के ज़रिए विकसित की जाती है, जो अधिकतम सम्भव रूप में L1 होती है। phonemes और graphemes को और उनके बीच के सम्बन्ध (डिकोडिंग) को समझना, खेलों और अन्त:क्रिया वाले अभ्यासों के ज़रिए किया जाएगा।

- *R1 में पढ़ने का कौशल पहले चित्र और कहानी पुस्तकों, फिर बोलकर पढ़ी जाने वाली पुस्तकों, फिर साझा रूप से पढ़ने, फिर निर्देशित रूप से पढ़ने और फिर कक्षा पाठ्यपुस्तकों के जरिए अधिक स्वतंत्र पठन के द्वारा विकसित किया जाएगा। साथ ही कविता, गाने, साहित्य, नाटक, खेल जैसी अन्त:क्रियात्मक गतिविधियों के जरिए सीखने को बढ़ाया जाएगा। जहाँ R1, L1 नहीं होगी, वहाँ L1 के साथ अधिकतम सम्भव सहयोग किया जाएगा।*
- *चित्रकारी, नाम लेखन, स्व-वर्तनी (inventive spelling), कार्यपुस्तिका लेखन, लिखने की ज़रूरत वाले खेलों के जरिए R1 में लेखन कौशल विकसित किया जाएगा जो आगे चलकर शब्दों व वाक्यांशों के ज़्यादा स्वतंत्र लेखन से होते हुए पूरे अर्थपूर्ण व रचनात्मक सन्दर्भों वाले पूरे वाक्यों तक जाएगा।*

बाद में R2 और R3 में पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित करने की भी यही पद्धति रहेगी। उद्देश्य यह होगा कि कक्षा-3 तक बच्चे साक्षरता कौशल हासिल कर लें।

नोट : इस अध्याय में हमने अवधारणात्मक रूप से स्कूल में बच्चे द्वारा पढ़ने और लिखने के लिए सीखी गई भाषा (R1 और R2) तथा बच्चा जिन भाषाओं से मौखिक रूप से परिचित होता है (L1, L2), के बीच अन्तर किया है।

चूँकि L1 और L2 को आमतौर पर स्कूलों में सीखने की भाषा समझा जाता है, हमने बाकी दस्तावेज़ में L1 और L2 को R1 और R2 के पर्याय के रूप में इस्तेमाल किया है।

अध्याय 4
शिक्षणशास्त्र

एक सकुशल, सुरक्षित, आरामदायक और ख़ुशहाल कक्षा का वातावरण बच्चों को फाउंडेशनल स्टेज पर बेहतर सीखने एवं अधिक हासिल करने में मदद कर सकता है। इस चरण में अनुभव, प्रयोग और अन्वेषण के पर्याप्त अवसरों के साथ देखभाल व जवाबदेही शिक्षणशास्त्र की पहचान है।

खण्ड 4.1 फाउंडेशनल स्टेज के लिए शिक्षणशास्त्र के सिद्धान्तों की रूपरेखा तैयार करता है, जिसके आधार पर शेष अध्याय को स्पष्ट किया गया है। योजना बनाना अच्छे शिक्षण की ओर पहला क़दम है, जिसे खण्ड 4.2 में बताया गया है। जब बच्चों के साथ शिक्षक का रिश्ता अच्छे से विकसित होता है, तब बच्चे फलते-फूलते हैं - इस स्थिति को किस तरह हासिल किया जा सकता है, इस पर खण्ड 4.3 में ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस उम्र के बच्चे खेल के माध्यम से सीखते हैं - खण्ड 4.4 में खेल के माध्यम से सीखने के विभिन्न तरीक़ों का विवरण दिया गया है। खण्ड 4.5 साक्षरता और संख्या ज्ञान के शिक्षण पर केन्द्रित है। सम्पूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया एक सकारात्मक कक्षा संस्कृति से निर्मित होती है, जिसे खण्ड 4.6 में बताया गया है। खण्ड 4.7 कक्षा के वातावरण को स्पर्श करता है, जो इस तरह के शिक्षणशास्त्र को आधार प्रदान कर सकता है।

खण्ड 4.1
शिक्षणशास्त्र के सिद्धान्त

फाउंडेशनल स्टेज के लिए उपयुक्त कक्षा-कक्ष में शिक्षण रणनीतियों से जुड़े सभी निर्णयों में शिक्षणशास्त्र के सिद्धान्त काम आते हैं। **नीचे दिए गए सिद्धान्त कक्षा-कक्ष नियोजन और निर्देशों के लिए समझ देते हैं:**

क) इस स्तर पर विकास और सीखने के लिए एक सुरक्षित और उत्साहवर्द्धक वातावरण मूल आधार होता है।

i. गतिविधियाँ आनन्ददायक होती हैं और बच्चे को सभी इन्द्रियों के उपयोग के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

ii. कक्षाएँ विविधता और चुनौती प्रदान करती हैं।

iii. शैक्षणिक विकल्प चुनते वक़्त शारीरिक और भावनात्मक सुरक्षा सर्वोपरि है।

iv. कक्षा-कक्ष स्वच्छ, हँसमुख, हवादार, और अच्छी तरह से प्रकाशित शिक्षण स्थान हैं।

ख) इस स्तर पर सीखने और विकास के लिए खेल केन्द्रीय होता है।

i. खेल मुक्त (free), मार्गदर्शित या संरचित हो सकता है।

ii. बातचीत, कहानियाँ, संगीत, गतिविधि, कला, शिल्प और खिलौने खेल का हिस्सा हैं, और बच्चों को खेल में शामिल करने के तरीक़े। अन्य तरीक़ों को निर्मित किया जा सकता है।

iii. मैदानी खेलों को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता है।

ग) शिक्षक और बच्चे के बीच स्वस्थ सम्बन्धों को बढ़ावा देना सीखने-सिखाने का आधार है।

i. बच्चों की बात ध्यान से सुनना और पूरी तरह से 'उनके साथ रहना' महत्त्वपूर्ण है।

घ) इस चरण में शारीरिक विकास बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

i. कक्षा की गतिविधियाँ फाइन मोटर कौशल को बेहतर करती हैं और शारीरिक गति को बढ़ावा देती हैं।

ii. यह सामाजिक-भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास में भी मदद करता है।

ङ) हर एक बच्चा अपनी गति से सीखता है और सीखने की ज़रूरतों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाता है।

i. एक ही स्थिति पर अलग-अलग बच्चे अलग-अलग प्रतिक्रिया देते हैं।

ii. एक ही बच्चा, अलग-अलग समय पर, समान स्थितियों के लिए अलग-अलग प्रतिक्रिया दे सकता है।

iii. सभी बच्चों को कक्षा में इस तरह से भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाते हैं जो हर एक बच्चे के लिए सबसे बेहतर हों।

च) फाउंडेशनल स्टेज में बच्चे अपने घर की भाषा में सबसे अधिक सहज होते हैं और सबसे अच्छा सीखते हैं।

i. शिक्षण और आपसी संवाद की भाषा (the language of instruction and transaction) बच्चे की घरेलू भाषा/मातृभाषा/परिचित भाषा है।

ii. कक्षा में घर की भाषा के इस्तेमाल को प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाता है।

iii. जब घर की भाषा स्कूल की भाषा से अलग होती है, और बच्चे को स्कूल की भाषा की तरफ़ आगे बढ़ाया जाता है, तब यह परिवर्तनसौम्य ढंग से होता है और इसे घर की भाषा का सम्बलन (scaffolded) दिया जाता है।

iv. जितना सम्भव हो सके बच्चों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और जिस भी भाषा में वे बोलते हैं उसके लिए उन्हें कभी आँका या डाँटा नहीं जाता है।

छ) कक्षा में सीखने के अनुभव बच्चों के जीवन और उनके सन्दर्भों से गहराई से जुड़े हुए हैं।

i. स्थानीय कहानियों, गीत, बालगीत, खेल, शिल्प, सामग्री का व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता है।

ii. कक्षा में बच्चों की घरेलू भाषा के इस्तेमाल का स्वागत है और सच पूछा जाए तो इसे प्रोत्साहित किया जाता है।

ज) सीखने के अनुभव बच्चों की पहले की समझ के आधार पर तैयार किए जाते हैं।

i. इस सिद्धान्त के आधार पर योजना सरल से जटिल विचारों और अवधारणाओं की ओर बढ़ती है।

ii. घरेलू भाषा का उपयोग करने से यह आसान हो जाता है।

झ) कक्षा प्रक्रिया विकास के सभी क्षेत्रों को सम्बोधित करती है।

i. शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास, संज्ञानात्मक, सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास से सम्बन्धित गतिविधियों के बीच सन्तुलन बनाए रखा जाता है।

खण्ड 4.2
शिक्षण के लिए योजना

शिक्षण सोच-समझकर किया गया कार्य है जो बच्चों के सीखने के मक़सद से किया जाता है। इस सोच-समझकर किए गए कार्य को अच्छी तरह से नियोजित करना ज़रूरी है। अच्छे शिक्षण के लिए योजना बनाना महत्त्वपूर्ण है।

योजना में दक्षताओं व प्राप्त किए जाने वाले प्रतिफलों के अनुसार कक्षा कार्यों का निर्माण एवं उसकी व्यवस्था, पालन की जाने वाली पेडागॉजी, उपयोग किए जाने वाले संसाधन और किए जाने वाले आकलन शामिल हैं। योजना में बच्चों के लिए सहायक गतिविधियाँ, गृहकार्य, और जो पढ़ाया जा रहा है उससे सम्बन्धित सामग्री को कक्षा में प्रदर्शित करना भी शामिल है।

योजना पूरे शैक्षणिक वर्ष, टर्म, सप्ताह, दिन और एक पाठ के लिए बनाई जाती है। राज्य/ज़िला/विद्यालय की वार्षिक और टर्म कीयोजनाओं में अलग-अलग ज़िम्मेदारियाँ हो सकती हैं। इसलिए शिक्षकों को सप्ताह, दिन और पाठ के लिए योजना बनानी चाहिए।

4.2.1 शिक्षण योजना के घटक

बेहतरीन योजना के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों की समझ की आवश्यकता होती है, साथ ही जिन बच्चों के लिए योजना बनाई जा रही है, उनके पूर्व-ज्ञान और उपलब्ध सीखने-सिखाने की सामग्री और उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु को ध्यान में रखना ज़रूरी होता है।

शिक्षण योजना के प्रमुख घटक हैं :

क) दक्षता, सीखने के प्रतिफल और लक्षित पाठ उद्देश्य।

ख) उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक-निर्देशित, शिक्षक-मार्गदर्शित और/या बच्चों द्वारा संचालित गतिविधियाँ।

ग) गतिविधियों की अवधि और क्रम।

घ) गतिविधियों में उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु और सामग्री।

ङ) कक्षा की व्यवस्था जैसे बैठने, प्रदर्शित करने, सामग्री की व्यवस्था।

च) जिन बच्चों को अतिरिक्त मदद की ज़रूरत है, उनके लिए ख़ास रणनीतियों की आवश्यकता।

छ) आकलन के तरीक़े।

बॉक्स 4.2 क

पाँच चरणों वाली सीखने की प्रक्रिया - 'पंचादि'- उस क्रम को तैयार करने के लिए एक अच्छा मार्गदर्शक है, जिसे एक शिक्षक शिक्षण के लिए योजना बनाने में अपना सकता है:

चित्र-4.2-क : पंचादि, पाँच चरणों वाली सीखने की प्रक्रिया

- **अदिति (परिचय) :** बच्चे के पूर्व-ज्ञान से जोड़कर एक नई अवधारणा/ टॉपिक का परिचय देना पहला चरण है। बच्चे सवाल पूछकर, खोजबीन करके और विचारों व सामग्री के साथ प्रयोग करके शिक्षक की मदद से नए टॉपिक के बारे में आवश्यक जानकारी इकट्ठा करते हैं।
- **बोध (अवधारणात्मक समझ) :** दूसरे चरण में बच्चे खेल, पूछताछ, प्रयोग, चर्चा या पढ़ने के माध्यम से मूल अवधारणाओं को समझने की कोशिश करते हैं। शिक्षक प्रक्रिया को देखता है और बच्चों का मार्गदर्शन करता है। शिक्षण योजना में बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली अवधारणाओं की सूची होती है।
- **अभ्यास :** तीसरा चरण कई दिलचस्प गतिविधियों के माध्यम से समझ और कौशल को मज़बूत करने के लिए अभ्यास के बारे में है। अवधारणात्मक समझ और दक्षताओं की प्राप्ति को सुदृढ़ करने के लिए शिक्षक समूह कार्य या छोटी परियोजनाओं (projects) का आयोजन कर सकते हैं।
- **प्रयोग (अनुप्रयोग) :** चौथा चरण बच्चे के दैनिक जीवन में अर्जित समझ को लागू करने के बारे में है। यह विभिन्न गतिविधियों और छोटी परियोजनाओं के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।
- **प्रसार (विस्तार) :** पाँचवाँ चरण दोस्तों के साथ बातचीत के माध्यम से अर्जित समझ को अभिव्यक्त करने के बारे में है। एक-दूसरे को नई कहानियाँ सुनाना, नए गाने गाना, साथ में नई किताबें पढ़ना और एक-दूसरे के साथ नए खेल खेलना। सीखे गए प्रत्येक नए टॉपिक के लिए, हमारे मस्तिष्क में एक तंत्रिका मार्ग का निर्माण होता है। ज्ञान बाँटने से हमारा ज्ञान मज़बूत होता है। यदि हम सीखे हुए को नहीं सिखाते हैं तो तंत्रिका मार्ग अधूरा है। शिक्षण सीखने को स्पष्ट और दीर्घकालिक बनाता है।

4.2.2 योजना के लिए अन्य महत्त्वपूर्ण विचार

क) विविधतापूर्ण या अलग-अलग शिक्षण के लिए योजना

एक शिक्षक अपनी कक्षा की योजना इस तरह से कैसे बना सकता है जो अलग-अलग रुचियों और क्षमताओं वाले बच्चों को अर्थपूर्ण ढंग से जोड़े और बेहतर अधिगम को प्रोत्साहित करे?

इसके बारे में सोचने का एक तरीक़ा अलग-अलग शिक्षण (differentiated instruction) है, यानी बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया को तैयार करना। अलग-अलग बच्चों के लिए सामग्री, सीखने के तरीक़े, सामग्री और आकलन अलग-अलग हो सकते हैं।

किसी एक बच्चे के लिए ऐसा करना अक्सर मुश्किल होता है, ख़ासकर एक बड़ी कक्षा में। उस स्थिति में, शिक्षक समान आवश्यकताओं वाले बच्चों के छोटे समूहों की पहचान कर सकता है और उन्हें एक समूह के रूप में अलग-अलग तरीक़े से सम्बोधित कर सकता है।

इसके लिए योजना बनाने से पहले शिक्षक के लिए ज़रूरी है कि वह बच्चों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करे और उनके बारे में ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी जुटाए (जैसे वे एक-दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं, वे किसी ख़ास खेल को ही क्यों चुनते हैं, वे आपस में किस तरह की बातचीत करते हैं, वे सामग्री के साथ कैसे काम करते हैं, वे मौखिक भाषा का उपयोग कैसे करते हैं और लिखित शब्द पर उनकी प्रतिक्रिया क्या होती है)।

योजना के लिए कुछ सम्भावनाएँ:

i. यदि शिक्षिका ब्लॉकों के साथ खेलने पर एक सत्र की योजना बना रही है, तो वह अलग-अलग बच्चों के लिए अलग-अलग काम करने की योजना बना सकती है। कुछ बच्चे मीनारों का निर्माण करते हैं, और शिक्षिका उनसे पूछ सकती है कि वे एक मीनार क्यों बना रहे हैं, उन्होंने कितने ब्लॉकों का उपयोग किया है, उन्होंने किन रंगों का उपयोग किया है और क्यों। कुछ बच्चों को एक ही रंग या एक ही आकार के ब्लॉकों की पहचान करने और विभिन्न आकारों और रंगों के ब्लॉकों की तुलना करने के लिए कहा जा सकता है। अन्य बच्चों को कुछ बनाने के लिए ब्लॉक का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है जैसे बिस्तर, घर, या खेलने के लिए व्यक्तिगत रूप से उनकी ज़रूरत की चीज़ें, जैसे मोबाइल फ़ोन या कार।

ii. अगर शिक्षक बच्चों को बग़ीचे में पौधे या कक्षा में ही गमले में लगे पौधे दिखाने की योजना बनाते हैं, तो कुछ बच्चों को पौधों के बीच आकार, बनावट, गंध और रंग का अन्तर बताने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। अन्य बच्चों को पौधों को छूने और उनके अंगों के नाम बताने के लिए कहा जा सकता है। दूसरे कुछ बच्चों को पौधे के चित्र बनाने के लिए कहा जा सकता है। जो बच्चे पढ़ सकते हैं वे चित्र तैयार होने के बाद अन्य बच्चों को उचित रूप से लेबल लगाने में मदद कर सकते हैं।

iii. तितलियों के बारे में एक सत्र की योजना बनाते समय, शिक्षक बच्चों के एक समूह के लिए तितलियों पर एक कहानी की किताब, दूसरे के लिए एक छोटी ऑडियो - विज़ुअल क्लिप, तीसरे समूह के लिए एक दिलचस्प तितली पहेली और चौथे के लिए एक तितली मॉडल का उपयोग कर सकते हैं।

iv. जो बच्चे पढ़ने के विभिन्न स्तरों पर हैं, उनके लिए शिक्षक विभिन्न texts या पठन सामग्री का उपयोग करने की योजना बना सकते हैं।

v. शिक्षक विभिन्न स्तरों की वर्कशीट का उपयोग करने की योजना बना सकता है, सरल वर्कशीट से शुरू करके और कक्षा में बच्चों के विभिन्न समूह क्या करने में सक्षम हैं, इसके अनुसार अधिक जटिल वर्कशीट बनाई जा सकती हैं।

ख) सम्बलन और ज़िम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति (Scaffolding and Gradual Release of Responsibility)

अनुभवी बच्चों या वयस्कों से व्यवस्थित मदद मिलने पर बच्चे आसानी से नया ज्ञान सीख सकते हैं। नया ज्ञान सीखना एक चुनौती होनी चाहिए, लेकिन चुनौती बच्चों की पहुँच के भीतर होनी चाहिए - कुछ ऐसा जो उनके मौजूदा ज्ञान से सम्बन्धित हो और एक अनुभवी व्यक्ति के सहयोग से किया जा सके।

इसलिए बच्चों को सीखने के लिए व्यवस्थित सम्बलन (Scaffolding) की ज़रूरत होती है। सम्बलन का मतलब शिक्षण के दौरान मदद, संरचना और मार्गदर्शन देना है। यह सम्बलन 'ज़िम्मेदारियों से क्रमिक मुक्ति' 'Gradual Release of Responsibility' (GRR) को ध्यान में रखकर प्रदान किया जा सकता है, इसमें शिक्षक पहले मॉडल या विचारों या कौशलों की व्याख्या करते हैं; उसके बाद बच्चे और शिक्षक उन्हीं विचारों और कौशलों पर एक साथ काम करते हैं जहाँ शिक्षक मार्गदर्शित (guided) सहयोग प्रदान करता है; और अन्त में, बच्चे व्यक्तिगत रूप से और स्वतंत्र रूप से अभ्यास करते हैं।[10]

गतिविधियों की योजना बनाई जा सकती है और उसे ज़िम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति का पालन करने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है।

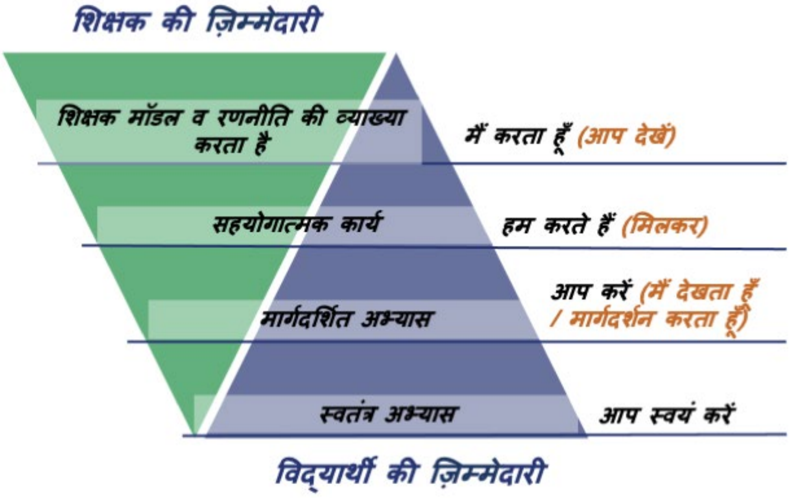

चित्र 4.2 क: ज़िम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति

ज़िम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति की प्रक्रिया:

i. पहला चरण : मैं करूँगा - शिक्षक मुख्य विचारों या कौशलों का प्रदर्शन/ व्याख्या/ मॉडल करता है।

ii. दूसरा चरण : हम करते हैं - शिक्षक और बच्चे विचारों या कौशलोंपर एक साथ काम करते हैं।

iii. तीसरा चरण : आप कीजिए - बच्चे स्वतंत्र रूप से विचारों या कौशलों पर अभ्यास या काम करते हैं।

साक्षरता और संख्या ज्ञान सीखने के लिए यह तरीक़ा अच्छी तरह से काम करता है, लेकिन यह भी याद रखना ज़रूरी है कि साक्षरता या संख्या ज्ञान का हर कौशल इस तरह से नहीं सीखा जा सकता है। उनकी कक्षा में कौन-सा तरीक़ा सबसे बेहतरीन ढंग से काम कर सकता है, इसका निर्णय लेकर शिक्षक इसे अपनी शिक्षण योजना में शामिल कर सकते हैं।

ग) गृहकार्य (Homework)

जब हम 'गृहकार्य' शब्द कहते हैं, तो हमारे दिमाग़ में तुरन्त एक बच्चे की तस्वीर आती है जो घण्टों एक कापी पर पन्ने-दर-पन्ने लिखे जा रहा है।

फाउंडेशनल स्टेज पर बच्चों के लिए, बिलकुल यही है जो नहीं होना चाहिए!

गृहकार्य मज़ेदार हो सकता है और एक अलग तरह की दिलचस्प चुनौती प्रदान करता है - यह स्कूल को बच्चे के घर से जोड़ने में भी मदद कर सकता है। बच्चे घर पर क्या कर सकते हैं, इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं :

i. अपने दादा-दादी से उनके नाम और उनके माता-पिता के नाम पूछें - इसके बारे में स्कूल में बात करें।

ii. अपने घर या अपने पड़ोसी के घर के बाहर बनाई गई रंगोली को देखें - इसे स्कूल में बनाने का प्रयास करें।

iii. अपने माता या पिता या चाची या पड़ोसी की मदद करें - स्कूल में इसके बारे में बात करें।

iv. अपने घर के आस-पास चारों ओर देखें और फूलों के विभिन्न रंगों को देखें - स्कूल में इसके बारे में बात करें।

v. कक्षा पुस्तकालय से एक कहानी की किताब उधार लें, घर पर उसके साथ समय बिताएँ, चित्रों को देखें, शब्दों को पढ़ने की कोशिश करें और कहानी को समझने की कोशिश करें।

शिक्षक इसके लिए योजना तभी बना सकता है जब बच्चे स्कूल में अच्छी तरह से रच-बस गए हों और एक सुविधाजनक दिनचर्या में आ गए हों। ऐसा करते समय, शिक्षक को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे इन कार्यों को ख़ुद कर सकें और माता-पिता या अन्य लोगों को उनके लिए कुछ करने की ज़रूरत नहीं है।

योजना पर दृष्टान्तों के लिए कृपया अनुलग्नक 2 देखें।

खण्ड 4.3
शिक्षकों और बच्चों के बीच सकारात्मक सम्बन्ध निर्माण करना

जब हम अपनी कक्षाओं में जाते हैं, तो हम क्या देखते हैं? ये आँखें फैलाए बैठे बच्चे कौन हैं?

वे बुद्धिमान हैं, देखने में तेज़ हैं और अपने आस-पास की हर चीज़ में रुचि रखते हैं। वे लगातार सवाल पूछते हैं। कभी-कभी वे चुपचाप किसी चीज़ का लम्बे समय तक अवलोकन कर सकते हैं। तो कई बार वे कुछ ही मिनटों में रुचि खो देते हैं। कभी-कभी उन्हें कूद-फांद करने और घूमने की ज़रूरत होती है। तो कभी वे ख़ामोशी से कहानी का आनन्द लेते हैं। कभी-कभी रोते-बिलखते हुए घर जाने की ज़िद करते हैं। साथ ही, वे दिलासा और ख़ुशामद पसन्द करते हैं, और रुकने को लेकर आश्वस्त होने के लिए तैयार रहते हैं! वे जिज्ञासु और विचारशील, प्रफुल्लित और दृढ़ निश्चयी, स्नेही और साहसी, मज़ाकिया और निडर हो सकते हैं।

इस अवस्था में अपने घर से दूर इतना लम्बा वक़्त बिताने का बच्चों का यह पहला अनुभव हो सकता है। बच्चों को कोमलता, पोषण और प्यार की ज़रूरत होती है। उनके साथ काम करना, उनके साथ रहना, उनकी देखभाल करने का अर्थ है उन सभी अलग-अलग व्यक्तित्वों का आनन्द लेना!

एक शिक्षक को प्यार और देखभाल करने वाला, स्नेही, सच्चा, धैर्यवान, शान्त, समझदार और समानुभूति से युक्त होना चाहिए; साथ ही हमें अपने बच्चों को बिना जल्दबाज़ी किए समय और ध्यान देने की ज़रूरत है।

बच्चों को एक-दूसरे से जुड़ा हुआ महसूस होना चाहिए, वे भरोसा कर सकें, नई चीज़ों को सीखने में बेझिझक कोशिश कर सकें, इन सबसे वे बेहतर सीखने का प्रयास करते रहें।

4.3.1 शिक्षक किस तरह बच्चों के साथ सकारात्मक सम्बन्ध निर्माण कर सकते हैं

एक शिक्षक के रूप में हमारा काम यह सुनिश्चित करना है कि स्कूल में बच्चे रचे-बसें और स्कूल में अपने समय का आनन्द लें। शिक्षक और बच्चे के बीच एक सुरक्षित, सकारात्मक सम्बन्ध भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास दोनों को समृद्ध करने वाला होता है।

ऐसे सकारात्मक सम्बन्ध बनाने के कुछ महत्त्वपूर्ण तरीक़े हैं:

क) प्रत्येक बच्चे को व्यक्तिगत रूप से जानना: उनका घर-परिवार, उनकी रुचियाँ, वे चीज़ें जो वे स्कूल के बाहर करते हैं, उनके पालतू जानवर, उनके पसन्दीदा लोग। यह प्रत्येक बच्चे को समझने और उनमें से प्रत्येक के लिए सीखने के अनुभवों की योजना बनाने में मदद करते हैं।

ख) बच्चों को सुनना: उनकी कहानियाँ, घर पर होने वाली घटनाएँ, उनके बारे में उनकी राय, किसी भी चीज़ पर उनकी राय और रुचियों पर उनके विचार। यह देखभाल और सम्मान के भाव को प्रकट करता है, विश्वास बनाता है, बच्चों को सोचने और संवाद करने और आत्मविश्वास हासिल करने में मदद मिलती है।

ग) **बच्चों का अवलोकन करना:** बच्चों के साथ लगातार बातचीत करते हुए सप्रयास अवलोकन करना। इससे यह पता लगाने में मदद मिलती है कि प्रत्येक बच्चा विभिन्न स्थितियों के बारे में कैसे सोचता है, क्या तर्क करता है और क्या प्रतिक्रिया करता है, जो शिक्षण और सीखने की योजना बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

घ) **बच्चों की सहज प्रतिक्रियाओं को प्रोत्साहित करना:** शब्द, कार्य, छोटी-छोटी समस्याओं को सुलझाना, घटना का विश्लेषण करना। यह बच्चों की स्वाभाविक रूप से रचनात्मक और साधन सम्पन्न प्रतिभा को सार्थक रूप से सक्षम बनाने में मदद करता है।

ङ) **बच्चों की भावनाओं और मनोदशाओं को पहचानना और उन पर प्रतिक्रिया देना:** बातचीत, संगीत, कहानी सुनाने, कला, एक साथ खेलने के माध्यम से। यह बच्चों को बेहतर तरीक़े से व्यवस्थित करने, बेहतर सीखने, अपनी भावनाओं को धीरे-धीरे संचालित करने और दूसरों की भावनाओं को समझने और प्रतिक्रिया करने में मदद करता है।

च) **नियमित रूप से उनके घरों का दौरा करना:** बच्चों और उनके घर के माहौल को समझने और विश्वास और सकारात्मक सम्बन्ध बनाने के लिए यह महत्त्वपूर्ण है।

4.3.2 शिक्षक बच्चों को बेहतर तरीक़े से सीखने में कैसे मदद कर सकते हैं

शुरुआती कक्षाओं का उद्देश्य गतिविधियों और खेल के माध्यम से बच्चों के सीखने और विकास को बढ़ावा देना होता है। इसके ज़रिए बच्चों की मदद करने में शिक्षक कई तरह से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण तरीक़े हैं :

क) **सुनना:** शिक्षकों को दुनिया के बारे में छोटे बच्चों की बातचीत, पूछताछ, प्रश्नों और सिद्धान्तों को ध्यान से सुनना और उनमें भाग लेना आवश्यक है। जैसे अगर कोई बच्चा कहता है, 'एक मकड़ी की कई आँखें होती हैं,' तो शिक्षक को इसे दोहराने और ज़ोर देकर फ़िर से कहना ज़रूरी होता कि 'हाँ, तुम सही हो, एक मकड़ी की कई आँखें होती हैं - आपको यह कैसे पता चला?' इससे बच्चे को यह पता चलता है कि उसकी बात सुनी जा रही है और साथ ही यह टॉपिक को आगे बढ़ाने में मदद कर रहा है। शिक्षक आगे उन्हें कीड़ों पर एक किताब देखने के लिए मार्गदर्शन कर सकते हैं, तथ्य साझा कर सकते हैं, या एक वीडियो दिखा सकते हैं जो उनकी जिज्ञासा और सीखने का विस्तार करें।

ख) **मॉडलिंग:** अवलोकन और अनुकरण बच्चों के सीखने के तरीकों में से एक है। नई अवधारणाओं और कौशलों को सिखाने के लिए शिक्षकों को बच्चों के लिए विभिन्न व्यवहारों को सचेत रूप से मॉडल के रूप में प्रदर्शित करने की आवश्यकता है। जैसे संख्या-पूर्व कार्य में एक-से-एक की संगति सिखाने के लिए शिक्षक पाँच सिक्के और पाँच पत्थर लेकर यह दर्शा सकते हैं कि कैसे हर एक सिक्के की एक पत्थर के साथ संगति बन रही है और बच्चों को संबंधित संख्या बता सकते हैं। वह बता सकता है कि एक पत्थर - एक सिक्का, दो पत्थर - दो सिक्के और आगे इसी तरह गिनती और इशारा करते जाएँ, जिसे बच्चे देखेंगे और दोहराएंगे। इसी तरह की मॉडलिंग गीत, अभिनय, मिट्टी के काम, शब्द उच्चारण जैसे सभी तरह के व्यवहारों में की जा सकती है। इसलिए शिक्षकों को बच्चों की उपस्थिति में वे जो कह रहे हैं और कर रहे हैं, उसके प्रति सतर्क रहना चाहिए।

ग) **समस्याएँ सुलझाना:** बच्चे जिज्ञासु होते हैं, लगातार आज़माने और ग़लतियाँ करने में लगे रहते हैं, और नई चीज़ों की खोज करते हैं। जब बच्चे ब्लॉक, कार्डबोर्ड या रेत से खेलते हैं, तो वे साधारण समस्याओं को हल करने की कोशिश कर रहे होते हैं। रेत का एक अच्छा मॉडल बनाने के लिए रेत में कितना पानी मिलाना चाहिए? कार्डबोर्ड को इस तरह कैसे चिपकाएँ कि

वह एक कर्व बना सके, या खुला ना रहे? ब्लॉक या डोमिनोज़ कैसे रखें ताकि टावर या डोमिनोज़ अनुक्रम टूट न जाए? शिक्षक इस तरह के सवालों से बच्चों के सोचने-समझने के लिए सम्बलन प्रदान करता है (जैसे क्या आप इससे अलग कुछ सोच सकते हैं?) या फ़िर शारीरिक मदद कर सकते हैं (जैसे जब बच्चा गोंद लगा रहा हो तब कार्डबोर्ड को थामना) या फिर पहेली सुलझाते वक़्त सुझाव देना (जैसे लाल टुकड़ा पहले रखने से शायद आसानी होगी)। इस तरह से सम्बलन या सहायता प्रदान करने से बच्चा अपने दम पर सोचने और समाधान ढूँढ़ने की कोशिश करता है, जिससे उसे सोचने-समझने में मदद मिलती है।

घ) **प्रश्न पूछना:** बच्चे अपने विचारों को मौखिक रूप से बोलते हुए सोचते हैं। शिक्षक के सवाल उन्हें जवाब देते वक़्त किसी ख़ास विषय के बारे में गहराई से सोचने में मदद करेंगे। इससे भाषा के विकास में भी आधार मिलता है। उदाहरण के लिए, 'आपने बड़े ब्लॉक को सबसे नीचे क्यों रखा?' पूछने से बच्चों को उनके द्वारा किए गए चुनाव के पीछे के कारण को मौखिक रूप से बताने में मदद मिलेगी। शिक्षक के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे अपनी खेल गतिविधियों में क्या कर रहे हैं, इस पर ध्यान दें और आवश्यक सवाल पूछें।

ङ) **सोचने को प्रेरित करना (Provoking):** बच्चों के जानने, सोचने और करने के तरीक़ों को चुनौती देने से आस-पास की दुनिया के बारे में उनकी समझ गहरी होती है। बच्चे अपने आस-पास जो देखते और सुनते हैं, उसके आधार पर बनी-बनाई धारणाओं को अपनाते हैं। शिक्षक को सवाल करने, सोचने के लिए प्रेरित करने और वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए सक्रिय होना ज़रूरी है, उदाहरण के लिए, एक ऐसी कहानी चुनना जो बस चालक या पायलट के रूप में महिलाओं या विकलांग बच्चे की क्षमताओं के बारे में बात करती हो।

च) **शोध करना:** शिक्षकों को बच्चों को यह सीखने के लिए उपकरण और कौशल प्रदान करने की आवश्यकता है कि किसी विषय में उनकी जाँच-पड़ताल / पूछताछ को कैसे समझा जाए - कहाँ देखना है, किससे पूछना है, सवालों को हल करने और कुछ समझ हासिल करने के लिए क्या उपयोग करना है। बच्चों को बेहतर ढंग से समझने, उनके सवालों का जवाब देने और बच्चों के सीखने को बढ़ाने के लिए नई गतिविधियों को विकसित करने और संचालित करने के लिए शिक्षकों को ख़ुद शोध करना आवश्यक है।

छ) **बच्चों को स्वतंत्र बनाना:** अच्छी तरह से योजना बनाने से शिक्षकों को बच्चों को स्वतंत्र बनाने के लिए सक्रिय क़दम उठाने में मदद मिलती है। पहले, उनके साथ मिलकर काम करें, फिर उन्हें एक नए कौशल या एक नई समझ में आत्मविश्वासपूर्ण बनाने के लिए धीरे-धीरे सहयोग को कम करते जाएँ।

4.3.3 शिक्षकों, परिवारों और समुदाय के बीच सम्बन्ध

परिवार बच्चों का पहला शिक्षक होता है। इसलिए, बच्चों को उनके सीखने और विकास में सहयोग करना स्कूलों और परिवारों की साझा ज़िम्मेदारी होती है।

बच्चे के सीखने और विकास में परिवार भागीदार होते हैं। परिवारों के लिए यह समझना और उसे सहयोगदेना महत्त्वपूर्ण है कि स्कूल में क्या होता है और साथ ही शिक्षक के लिए घर पर बच्चे की स्थिति को समझना महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षक और घर के बीच लगातार संवाद (Communication) होते रहना चाहिए: इस काम को परिवार नियमित रूप से स्कूल आकर या शिक्षक नियमित रूप से बच्चे के घर जाकर कर सकते हैं।

बच्चे को बेहतर ढंग से समझने के लिए शिक्षकों और परिवार को मिलकर काम करना चाहिए और साथ में बच्चों के लिए अधिक सकारात्मक अनुभव का निर्माण करना चाहिए। जब परिवार सवाल पूछते हैं और अपने मन की शंकाओं को अभिव्यक्त करते हैं, तो वे स्कूली प्रक्रियाओं के बारे में अधिक जानने लगते हैं। जब शिक्षक बच्चे के घर के माहौल को समझते हैं, तो वे बच्चे के लिए बेहतर सीखने के अनुभवों की योजना बनाने में सक्षम होते हैं। साझा करने और एक साथ काम करने से, शिक्षक और परिवार सभी क्षेत्रों में बच्चे के विकास के लिए आधार प्रदान करते हैं। इस तरह की भागीदारी से परिवारों को घर पर भी अच्छी प्रक्रियाओं के माध्यम से स्कूल में होने वाली शिक्षा को सहयोग करने में मदद मिलती है। परिवार बच्चे की प्रगति और ज़रूरत के क्षेत्रों का आकलन करने में भी योगदान दे सकते हैं। वे इस प्रक्रिया के माध्यम से अपनी ख़ुद की पालन-पोषण क्षमताओं में और अधिक आत्मविश्वास हासिल करेंगे।

परिवार और स्थानीय समुदाय के सदस्यों को स्कूल के कामकाज में भी कई तरीक़ों से शामिल किया जा सकता है। जैसे अपने ज्ञान और अनुभवों को साझा करना, विशेष दिवसों की योजना बनाना और एक साथ मनाना, बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त मंच, विशिष्ट परिस्थितियों जैसे कि स्कूल में सरल संसाधनों की आवश्यकताओं पर प्रतिक्रिया देना।

स्कूलों, परिवारों और समुदाय के बीच सम्बन्धों के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया अध्याय 10, खण्ड 10.4 देखें।

खण्ड 4.4
खेलों के ज़रिए सीखना - बातचीत, कहानियाँ, खिलौने, संगीत, कला और शिल्प

छोटे बच्चों के लिए कक्षाएँ स्पंदनशील और जीवन से भरपूर होती हैं। बच्चे कई तरीक़ों से सीखने का आनन्द लेते हैं - बात करना, सुनना, खिलौनों से खेलना, सामग्री को काम में लेना, पेंटिंग और ड्रॉइंग, गायन, नृत्य, दौड़ना और कूदना। शिक्षक के रूप में हम अपने बच्चों के साथ काम करने के लिए इन सभी तरीक़ों का उपयोग करते हैं।

4.4.1 बातचीत (Conversations)

बच्चे भाषा के माध्यम से आपस में और दूसरों से बात करते हैं। शब्दों के ज़रिए ही वे अपनी समझ को बनाते और उस पर पकड़ बनाना शुरू करते हैं। सीखने के लिए स्पष्ट भाषा और साफ़ तौर पर उसे समझने और इस्तेमाल करने की क्षमता बेहद ज़रूरी है।

बच्चों में आस-पास के लोगों और चीज़ों से जुड़ने की क्षमता के लिए बातचीत ज़रूरी होती है। कक्षा में बच्चों के साथ निरन्तर बातचीत विश्वासपूर्ण सम्बन्ध बनाने में मदद करती है।

कक्षा में बातचीत दो प्रकार की हो सकती है:

क) खुली (Free) बातचीत: खुली बातचीत के दौरान शिक्षक कुछ बच्चों को इकट्ठा करते हैं और उन्हें दिन भर में हुई दिलचस्प चीज़ों या स्कूल आते वक़्त देखी किसी घटना के बारे में बात करने के लिए कहते हैं। शिक्षक का कार्य बच्चों से आसान सवाल पूछना है जो उन्हें अपने अनुभवों के बारे में बात करने में मदद करेंगे।

ख) नियोजित (Structured) बातचीत: नियोजित बातचीत शिक्षकों द्वारा नियोजित और व्यवस्थित की जाती है। यह आमतौर पर सुबह के समय बच्चों को एक साथ इकट्ठा करने और एक टॉपिक पर बात करने और सोचने के लिए होती है। टॉपिक अक्सर बच्चों के दैनिक जीवन की घटनाओं और उनकीभावनाओं के बारे में होते हैं।

जब सभी बच्चे शिक्षक के साथ एक घेरे में बैठकर बात करते हैं, तो इस तरह की बातचीत के समय को सर्कल टाइम कहा जाता है। बच्चे एक घेरे में बैठकर आनन्द लेते हैं और एक साथ होने की भावना प्राप्त करते हैं। शिक्षक इस अवधि के दौरान हर बच्चे को देख सकते हैं। हर दिन सर्कल टाइम का एक सेशन करना अच्छा होता है।

जब कोई विशिष्ट टॉपिक चुना जाता है, तो एक फ़ोकस होता है जो बच्चों की भाषा, जानकारी और उस टॉपिक की समझ को बढ़ाने में मदद करता है।

असली चीज़ों का इस्तेमाल करके किसी ख़ास टॉपिक (जैसे सब्जियाँ) के बारे में बातचीत की जा सकती है। सब्जियों के बारे में बात करते वक़्त असली सब्जियों का इस्तेमाल किया जा सकता है ताकि बच्चे उन्हें देख सकें, उन्हें महसूस कर सकें, उनके आकार, रंग, बनावट के बारे में बात कर सकें और उनका स्वाद भी ले सकें। शिक्षक आगे की व्याख्या करने के लिए चित्र कार्ड का भी उपयोग कर सकते हैं और यहाँ तक कि सब्जियों के इर्द-गिर्द कहानी भी बना सकते हैं।

एक और सम्भावना यह है कि शिक्षक इस समय छोटे-छोटे प्रयोग प्रदर्शित करें। जैसे गोले के बीच में पानी का कटोरा रखना और छोटी वस्तुओं को यह देखने के लिए रखना कि क्या डूबता है और क्या तैरता है। इससे बच्चों को इस बारे में बात करने में मदद मिलेगी कि ऐसा क्यों होगा और वे वस्तुओं के गुणों की परिकल्पना कर पाएंगे।

यहाँ हाँ और ना में जवाब वाले सवाल बहुत उपयोगी नहीं हैं। ऐसे सवाल उपयोगी होंगे जो बच्चों को बोलने के लिए प्रेरित करते हैं, जिनमें अधिक शब्दों और वाक्यों का उपयोग करके कुछ वर्णन करना होता है। ग़लत जवाब देने पर बच्चों को कभी भी डाँटना नहीं चाहिए। सभी बच्चों को बिना किसी भेदभाव के भाग लेने और ख़ुद को व्यक्त करने के समान अवसर मिलने चाहिए।

शिक्षक की आवाज़ 4.4 क

सर्कल टाइम के दौरान नियोजित बातचीत

मैं टाइगर रिज़र्व के बफ़र ज़ोन में स्थित एक स्कूल में पढ़ाती हूँ। मेरी कक्षा में 3-6 वर्ष के लगभग 9 बच्चे नियमित रूप से आते हैं। सर्कल टाइम के लिए, मैं आमतौर पर दिलचस्प विषय चुनती हूँ, जैसे जानवर। चूँकि, मेरे गाँव में ज़्यादातर परिवारों के पास पशुधन है, इसलिए ये सभी बच्चे ख़ासकर कुत्तों, चूहों, बकरियों, सूअरों, मेढकों, मछलियों और बत्तखों जैसे जानवरों के आस-पास रहने के आदी हैं। जंगल में हाथी, भालू या बाघ की आवाज़ें सुनना और कभी-कभी देखा भी जाना कोई असामान्य बात नहीं है। मैं फ़्लैश कार्ड जैसी आवश्यक सामग्री तैयार करती हूँ या पिछले दिन उन्होंने जो देखा या सुना है उससे सम्बन्धित वीडियो को शॉर्टलिस्ट करती हूँ। उस दिन सबसे पहले मैं उन्हें एक घेरे में ऐसे बैठने के लिए कहती हूँ, जिससे हम सब एक-दूसरे को देख सकें।

चित्र 4.4 क: जानवरों के फ़्लैश कार्ड

फिर बात करने के लिए मैं एक-एक करके फ़्लैशकार्ड उठाती हूँ। जैसे इस बार हमने बाघ का फ़्लैशकार्ड उठाया और उसके बारे में इन बिन्दुओं के बारे में बात करना शुरू किया - क्या आप जानते हैं यह कौन-सा जानवर है? क्या तुमने कभी यह देखा है? यह जानवर कैसी आवाज़ें निकालता है? यह क्या खाता है? यह कहाँ रहता है? वग़ैरह, वग़ैरह। मैं सभी बच्चों को प्रतिक्रिया देने और सभी प्रतिक्रियाओं की बिना किसी निर्णय (judgements) के सराहना करने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ। इसके पीछे विचार यह है कि बच्चों को जितना ज़्यादा हो सके उतनी ज़्यादा बातें करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। कई बार मैं इनमें से कुछ बच्चों को एक-एक कार्ड देती हूँ और उनसे उसके अनुसार भूमिका निभाने के लिए कहती हूँ। एक बाघ बनता है, दूसरा बकरी बनता है और हम सभी जानवरों की आवाज़ों से शोर मचाने लगते हैं! यह मज़ेदार भी होता है! मैं सुनिश्चित करती हूँ कि सर्कल टाइम ख़त्म होने तक बच्चे कई तरह के जानवरों के नामों, उनकी आवाज़ों, उनके चलने, खाने, दिखने को जान-पहचान सकें।

अगले दिन की बातचीत के लिए मैं कुछ ऐसे जानवर चुनूंगी जो हमारे आस-पास नहीं पाए जाते हैं, जैसे ऊँट। अब हम इस पर चर्चा करेंगे कि ऊँट हमारे आप-पास क्यों नहीं रहता है।

बॉक्स 4.2 क

दिखाओ और बताओ (Show and Tell) सत्र

'दिखाओ और बताओ' की अवधारणा को भारत और दुनिया भर में सार्वजनिक रूप से बोलने और सुनने के कौशल को विकसित करने तथा शुरुआती वर्षों में बच्चों के बीच मेलजोल और बातचीत को बढ़ावा देने में एक बड़ी सफ़लता मिली है। फाउंडेशनल स्टेज में सभी बच्चों को (अपने शिक्षकों के साथ) सप्ताह में कम-से-कम एक बार एक मनोरंजक 'दिखाओ और बताओ' सत्र में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

इसमें बच्चे और शिक्षक अपने पसन्दीदा खिलौने, खेल, पारिवारिक फोटो, फूल, किताबें, मूल कहानियाँ और निजी क़िस्से (जैसे परिवार के सदस्यों, दोस्तों, त्योहारों, अनुभवों, छुट्टियों, उस सप्ताह के पसन्दीदा पाठ, पसन्दीदा विषय) में शामिल करना और उनके बारे में कक्षा के सामने कुछ मिनटों तक बोलना। ये 'दिखाओ और बताओ' सत्र शुरू में बच्चों की घर की भाषाओं में होंगे, लेकिन अन्ततः इसमें अन्य भाषाएँ भी शामिल होंगी जो बच्चे सीख रहे हैं।

सत्र को अधिक मज़ेदार और संवादात्मक बनाने के लिए बच्चे और शिक्षक भी प्रत्येक प्रस्तुति के दौरान या आख़िर में सवाल पूछेंगे और टिप्पणी देंगे। उदाहरण स्थापित करने के लिए शिक्षक अपनी प्रस्तुतियों के साथ आगे बढ़ सकते हैं। बच्चों के साथ सही मायने में जुड़ने और बच्चों को एक-दूसरे के साथ जोड़ने के लिए, चर्चा को प्रोत्साहित करते हुए, उन्हें पूरे समय भाग लेना चाहिए।

4.4.2 कहानी सुनाना (Storytelling)

कहानियाँ बच्चों के लिए दुनिया को जानने की खिड़की होती हैं। वे आकर्षक, सुन्दर, करामाती होती हैं!! कहानियाँ सुनने में बहुत मज़ा आता है और ख़ासकर छोटे बच्चे उन्हें सुनना पसन्द करते हैं। भावनाओं के साथ, इशारों और सच्चे भावों के साथ सुनाई गई कहानियाँ जादुई होती हैं और आपकी सांसें रोक देती हैं। हर शब्द अपने आप में एक अनुभव बन जाता है।

कहानियाँ विशेष रूप से सामाजिक सम्बन्धों, नैतिक चुनावों, भावनाओं को समझने व अनुभव करने और जीवन कौशल के प्रति जागरूकता के बारे में सीखने के लिए एक अच्छा माध्यम हैं। कहानियों को सुनते समय, बच्चे नए शब्द सीखते हैं जिससे उनकी शब्दावली का विस्तार होता है और साथ ही वाक्य संरचना एवं समस्या सुलझाने के कौशल भी सीखते हैं। जो बच्चे बहुत ज़्यादा वक़्त तक ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते हैं वे भी कहानी में तल्लीन होकर ज़्यादा वक़्त तक ध्यान केन्द्रित करने लगते हैं। सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक कहानियों के ज़रिए हम बच्चों को उनकी संस्कृति, सामाजिक मानदण्डों से परिचित करा सकते हैं और उनके परिवेश के बारे में जागरूकता पैदा कर सकते हैं।

बॉक्स 4.4 ख

बहादुर और साहसी कनकलता बरुआ

कनकलता बरुआ का जन्म असम के बरंगाबाड़ी में कई साल पहले हुआ था। वह अपने गाँव की अन्य सभी लड़कियों की तरह खेलती-खिलखिलाती और अपने भाइयों और बहनों की देखभाल करते हुए बड़ी हुई।

लेकिन वह बहुत-बहुत ख़ास थी। वह जानती थी कि उसके परिवार को उसकी ज़रूरत है लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ी हुई, उसने महसूस किया कि उसके देश को उसकी और भी ज़्यादा ज़रूरत है।

वह चारों ओर से परेशानियों से घिरी हुई थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि उस समय भारत पर अंग्रेज़ों का शासन था। उसके गाँव में पुलिस इंस्पेक्टर ने कभी किसी को भारत का झण्डा फ़हराने की इजाज़त नहीं दी। उसने बहादुरी से ऐसा करने की कोशिश की, और उन्होंने उसे गोली मार दी।

यह एक बेहद दुःखद दिन था लेकिन वह एक ऐसी हीरो बन गईं जिसने अपने देश के लिए लड़ाई लड़ी। हमें उन पर गर्व है।

अब उनके नाम पर एक स्कूल, एक बहुत बड़ा जहाज़ और उनकी दो मूर्तियाँ हैं। उनकी तस्वीर और नाम छपी हुई एक डाक टिकट भी है, जिसका हम सभी अपने पत्र भेजने के लिए उपयोग करते हैं!

छोटे बच्चे एक ही कहानी को बार-बार सुनना पसन्द करते हैं। वक़्त के साथ-साथ वे उसके कथ्य का बेहतर अर्थ निकालते हैं और कोशिश करने पर इसे याद भी रखते हैं। एक ही कहानी को अलग-अलग रूपों में बार-बार सुनने से उन्हें कहानी के पात्रों, घटनाओं और विचारों के साथ बेहतर ढंग से जुड़ने में मदद मिलती है और कल्पना और शब्दावली का निश्चित रूप से विकास होता है।

मौखिक रूप से कहानियाँ सुनाते समय शिक्षक को कहानी अच्छी तरह से जाननी चाहिए। कहानियों को आवाज़ के उतार-चढ़ावों और भावों के साथ सुनाया जाना चाहिए। एक अच्छी तरह से सुनाई गई कहानी बच्चों को कहानी में आगे आने वाली घटनाओं की कल्पना करने और उनमें भाग लेने में मदद कर सकती है।

कहानियाँ सुनाने के लिए किताबों का भी इस्तेमाल किया जाना चाहिए। किताब को छूने, पन्ने पलटने, चित्रों को देखने, उंगली फेरने का आनन्द लेने के लिए बच्चे को अक्षरों को 'पढ़ना' आना ज़रूरी नहीं है, इसलिए उन्हें इसके लिए हर वक़्त प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

किताबों में दिए गए चित्र विषयवस्तु को आधार प्रदान करते हैं और बच्चों की रुचि को बनाए रखते हैं। जब बच्चे अपने शिक्षक को किताबों से कहानियाँ पढ़ते हुए देखते हैं, तो वे प्रिंट और किताबों की अहमियत को समझने लगते हैंऔर पढ़ने को एक कौशल के रूप में महत्त्व देने लगते हैं। शिक्षक अपनी उंगली से शब्दों की ओर इशारा करते हुए किताबों से कहानियाँ पढ़ सकते हैं, इस प्रकार बच्चों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करते हैं कि प्रत्येक बोले गए शब्द का एक रूप होता है। ऊँची आवाज़ में कहानियाँ पढ़ने से बच्चों को यह समझने में भी मदद मिलती है कि औपचारिक लिखित भाषा बोली जाने वाली भाषा से थोड़ी अलग होती है। किताबें चित्रों वाली, चित्र या बिनाचित्र वाली कहानियों की, या फ़िर कई भाषाओं में कहानी की किताबें हो सकती हैं।

कहानियों को सुनाने के लिए रेडीमेड कठपुतलियों या फिर बच्चों के साथ मिलकर शिक्षक द्वारा तैयार की गई कठपुतलियों का इस्तेमाल किया जा सकता है। साथ ही छड़ी वाली कठपुतली, दस्ताने वाली कठपुतली, उंगली वाली कठपुतली, बॉक्स की कठपुतली, पेपर बैग वाली कठपुतली या जुर्राब से बनी कठपुतली का उपयोग किया जा सकता है। बच्चों को साधारण कठपुतली बनाने में शामिल किया जा सकता है। Marionettes या स्ट्रिंग कठपुतली आकर्षक हैं, लेकिन इसके लिए शिक्षक को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है।

कहानियाँ सुनाने के लिए चित्र बनाए या मुद्रित किए गए फ़्लैश कार्डस् का इस्तेमाल किया जा सकता है। वे एक किताब से बड़े और पकड़ने में आसान होने चाहिए। फ़्लैश कार्ड बच्चों को सही क्रम में व्यवस्थित करने के लिए दिए जाने वाले अनुक्रम कार्ड के रूप में कार्य करते हैं। इनके अलावा, कहानी चार्ट, पोस्टर और कहानी कहने की अन्य सामग्री बाज़ार में उपलब्ध हैं या बनाए जा सकते हैं।

बच्चे और शिक्षक कहानियों को नाटक में प्रस्तुत कर सकते हैं, उसमें अभिनय कर सकते हैं और संवाद बोल सकते हैं और इस तरह कहानी का अनुभव कर सकते हैं। बच्चों को टेलीविज़न या लैपटॉप पर कहानियाँ दिखाई जा सकती हैं। वे कहानियों के ऑडियो टेप भी सुन सकते हैं।

कहानियों को सुनने के अलावा, बच्चों को कहानियाँ सुनाने का भी अवसर मिलना चाहिए। बच्चे पहले सुनी हुई कहानी सुना सकते हैं या फिर अपने द्वारा बनाई गई कहानी भी सुना सकते हैं। शिक्षक कहानी सुनाना शुरू कर सकता है और बच्चों से उसे पूरा करने के लिए कह सकता है।

बच्चों के लिए योग्य कहानी का चुनाव करना नाज़ुक काम होता है। कहानियाँ उम्र-उपयुक्त, परिचित भाषा में और बच्चों के लिए रुचिकर होनी चाहिए। कहानियों को कक्षा में जो कुछ भी पढ़ाया जा रहा है, जैसे गिनना या आकृतियों या रंगों से जोड़ा जा सकता है। कहानियों का उपयोग महत्त्वपूर्ण सीखने के उद्देश्यों जैसे दूसरों के प्रति संवेदनशीलता और अच्छे काम करने की आदतों को सुदृढ़ करने के लिए भी किया जा सकता है। प्रासंगिकता और संबद्धताको बढ़ाने के लिए उन्हें जितना सम्भव हो सके स्थानीय या भारतीय संदर्भों पर आधारित होना चाहिए।

दरअसल, भारत में लोगों और कहानियों का एक लम्बा इतिहास और परम्परा है जो हमें कई बुनियादी मूल्यों और रिश्तों के महत्त्व के बारे में ख़ूबसूरती से सिखाती हैं। बच्चों को पंचतंत्र, जातक, हितोपदेश की मूल कहानियों और भारतीय परम्परा से अन्य मज़ेदार दन्तकथाओं और प्रेरक कहानियों को सुनने, पढ़ने और सीखने का अवसर मिलना चाहिए।

कहानी सुनाने के बाद, शिक्षक को यह पता लगाना चाहिए कि बच्चों ने कहानी की विषयवस्तु को समझा है या नहीं। शिक्षक क्या, किससे, क्यों, कहाँ, कैसे और क्या हो अगर के सवाल पूछ सकता है। जैसे-जैसे बच्चे थोड़े बड़े होते हैं, शिक्षक चर्चा कर सकते हैं कि एक चरित्र ने किसी ख़ास तरीक़े से ही क्यों व्यवहार किया, इसका परिणाम क्या हुआ, और साथ ही सही और ग़लत कामों के बारे में बात कर सकते हैं। एक अन्य फॉलो-अप गतिविधि ड्रॉइंगहो सकती है। बच्चे कहानी में एक दृश्य या पात्र बना सकते हैं। रोल प्ले और नाटकीय रूपांतरण अन्य फॉलो-अप गतिविधियाँ हो सकती हैं।

4.4.3 खिलौने आधारित शिक्षा (Toy-Based Learning)

यह खेल-आधारित शिक्षणशास्त्र का एक ज़रूरी हिस्सा है। छोटे बच्चे प्रत्यक्ष अनुभवों और वास्तविक वस्तुओं पर काम करने से सीखते हैं। वे कोशिश करते हैं, खोजबीन करते हैं और सीखते हैं। खिलौनों और उसमें जोड़-तोड़ के साथ खेलते हुए कक्षा के वातावरण में अन्वेषण की इस भावना को विकसित करना चाहिए। हर बच्चे के आस-पास कई स्थानीय खिलौने उपलब्ध होते हैं। इनका उपयोग शिक्षण और सीखने के महत्त्वपूर्ण संसाधनों के रूप में किया जाना चाहिए।

खिलौना चाहे सरल हो या जटिल, इसमें बच्चे को सीखने के लिए एक सबक़ होता है। जब एक बच्चा एक खिलौना हाथ में लेता है एवं उसमें बदलाव करता है, तो वह अपने मोटर कौशल का अभ्यास कर रहा है और अपने हाथ-आँख के समन्वय को मज़बूत कर रहा है। जिन खिलौनों से खेलने के लिए बच्चों को धक्का देना, खींचना, पकड़ना, चुटकी बजाना, मुड़ना या कुछ करने के लिए अपने हाथों और शरीर का उपयोग करना पड़ता है, वे बच्चों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब कोई बच्चा ब्लॉकों का एक टॉवर बनाता है और अन्ततः उसे ज़मीन पर गिरते हुए देखता है, तो वह अवधारणाओं को सीखता है और उन्हें गिरने से रोकने के लिए समाधान के बारे में सोचता है। एक पहेली एक बच्चे को पैटर्न का पता लगाने में मदद करती है। जब बच्चे ब्लॉक, गुड़िया, जानवरों के खिलौने, गेंद, मिनी-कार या बनावटी खिलौनों का उपयोग करते हैं, तो वे अपने दिमाग़ में कहानियाँ बनाना और परिदृश्य को जीना शुरू कर देते हैं। बोर्ड गेम बच्चों को सरल नियमों का पालन करना और भाषा और गणित की समझ को बढ़ाना सिखाते हैं।

पहेलियाँ कारण और प्रभाव, रणनीतिक सोच और समस्या समाधान के साथ प्रयोग को प्रोत्साहित करती हैं। मिट्टी, मोतियों, कोलाज सामग्री, पेंट, धोए जा सकने वाले इंकपैड और मुहरें, मार्करों और कैंची जैसी शिल्प सामग्री का इस्तेमाल रचनात्मक अभिव्यक्ति और सौन्दर्य जागरूकता को बढ़ावा देता है। चीज़ें कैसे फिट होती हैं और एक साथ काम करती हैं यह बच्चों को जटिल निर्माण सेट और सहायक उपकरणों के प्रयोग करने से पता चल सकता है। इससे उनके मोटर कौशल को बढ़ावा भी मिलता है और साथ ही रचनात्मकता की अभिव्यक्ति भी होती है। फिटनेस और मज़ेदार सामग्री जैसे गेंदें, बीनबैग्स और कूदने कीरस्सियाँ बच्चों को आत्मविश्वास हासिल करने, व्यायाम करने, तनाव मुक्त करने, दूसरों के साथ मौज़-मस्ती करने और सूक्ष्म एवं स्थूल मोटर कौशल विकसित करने में मदद करती हैं।

खिलौने आसानी से उपलब्ध वस्तुओं जैसे कपड़े, बोतलें, कार्डबोर्ड बॉक्स, धागा, तवा, चूड़ियाँ, पाइप क्लीनर और पाइनकोन से भी बनाए जा सकते हैं।

परम्परागत रूप से प्रयुक्त खिलौनों के कुछ उदाहरण हैं :

क) रिंग सेट पहेली: यह लकड़ी से बनी क्रमबद्ध रिंग्स का एक सेट होता है। कर्नाटक के चन्नपटना में निर्मित, इसका उपयोग क्रमबद्धता सीखने के लिए किया जा सकता है और यह सूक्ष्म मोटर और स्थूलमोटर कौशल, रंग और आकार की समझ के विकास में भी मदद करता है।

ख) ढिंगली (कपास की गुड़िया): ढिंगली गुजरात के पारम्परिक खिलौनों की गुड़िया में से एक है। यह कपास से बनी होती है और लाल, नीले, हरे, पीले जैसे विभिन्न आकर्षक रंगों में कढ़ाई वाले कपड़ों से सजाई जाती है। ये गुड़िया छोटे व बड़े आकार में उपलब्ध हैं। उनका उपयोग नाटकीय प्रस्तुतियों के लिए किया जा सकता है।

ग) रसोई (किचन सेट): भारत के कई हिस्सों में रसोई के बर्तनों के सेट का इस्तेमाल खिलौनों के रूप में किया जाता है। यह लकड़ी से बने होते हैं और आकर्षक और मनमोहक बनाने के लिए उनकी रंगाई-पुताई की जाती है।

खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के लिए NCERT की हैंडबुक एक बेहतरीन मार्गदर्शिका है।

4.4.4 गीत और तुकबंदियाँ (Songs and Rhymes)

बच्चों को गीत और तुकबंदियाँ गाना और संगीत पर नृत्य करना पसन्द होता है। गीत भी भाषा सीखने का एक अद्भुत माध्यम हैं।

गीतों को चुना जा सकता है, ताकि वे उस अवधारणा को आधार दे सकें जिन्हें बच्चों द्वारा सीखे जाने की ज़रूरत है। जैसे, 'Five little monkeys, jumping on the bed, one fell off and hurt his head, mama called the doctor and the doctor said, no more monkeys, jumping on the bed.'

इस गाने का इस्तेमाल जानवरों व उनकी हरकतों को समझाने, सावधान रहने, चोट लगने, डॉक्टर के काम और गिनती के बारे में जानने-सीखने के लिए किया जा सकता है। इस गीत को गाने और इस पर एक्टिंग करने में भी बहुत मज़ा आता है!

बच्चे गीतों के माध्यम से विभिन्न अवधारणाओं को समझते हैं और उनकी शब्दावली का भी विस्तार होता है। गीतों के साथ होने वाली शारीरिक हलचलें स्थूल व सूक्ष्म मोटर गतियों को बढ़ाती हैं और शरीर की गति व हावभाव बच्चों को अवधारणाएँ समझने में मदद करते हैं। गीत बच्चों के बीच बातचीत को बढ़ावा देते हैं और सहयोग की भावना ओर ले जाते हैं।

स्थानीय सन्दर्भों से युक्त ख़ास गीत और तुकबंदियाँ (जैसे, मलयालम में पंचरकुंजू, बंगला में घूम परानी माशी पिशी, हिन्दी में मछली जल की रानी है, कन्नड़ में आने बंता), शब्दावली, कल्पना और अभिव्यक्ति को बढ़ाने का एक और अच्छा तरीक़ा है। विभिन्न भाषाओं के गीत बच्चों को अनुमान लगाने, भाषा में समान और भिन्न शब्दों के बीच सम्बन्ध बनाने की क्षमता प्रदान करते हैं। भारत में हममें से अधिकांश बहुभाषी हैं, और यह महत्त्वपूर्ण है कि गीत और तुकबंदियाँ बच्चों की बहुभाषी बने रहने की क्षमता को बढ़ावा देती हैं।

शिक्षक दो या तीन स्थानीय भाषाओं में कुछ तुकबंदियाँ या गीतों का चयन कर सकता है, उनका अभ्यास कर सकता है और बच्चों के साथ गा सकता है। दादा-दादी, माता-पिता और समुदाय के सदस्य इसके लिए अद्भुत स्रोत हो सकते हैं। शिक्षक उन गीतों को चुन सकते हैं जिनमें तुकबन्दी वाले शब्द हों, जिनमें कुछ पंक्तियाँ हों और जो स्थानीय समुदाय में लोकप्रिय और ज्ञात हों। गाने हास्यप्रद भी हो सकते हैं - बच्चों को मज़ेदार गाने पसन्द आते हैं।

बॉक्स 4.4 ख

संगीत की समझ विकसित करने के लिए समूह के साथ मिलकर गाना उपयोगी और मज़ेदार गतिविधि हो सकती है। शिक्षक 'सा रे ग म प ध नि सा' सरगम गाते हैं, फिर समूह को दोहराने के लिए कहते हैं। एक बार जब बच्चे इस सरगम को सही क्रम में गाने में माहिर हो जाते हैं, तो शिक्षक कहते हैं 'क्या आप इसे उल्टे क्रम में गा सकते हैं? सा नि ध प म ग रे सा।' एक बार जब बच्चे इसमें महारत हासिल कर लेते हैं, तो समूह गायन (और व्यक्तिगत गायन) के साथ और अधिक जटिल अभ्यास किए जा सकते हैं: 'सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सा', सा नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा' (तिकड़ी), इसके बाद चौकड़ी 'सा रे ग म, रे ग म प,...'। तब शिक्षक बच्चों को 'सा रे ग ग ग ग ग ग ग ग ग रे ग म' गाने के लिए कह सकते हैं और उनसे पूछ सकते हैं कि क्या वे धुन को पहचानते हैं!

इसी तरह, लय विकसित करने के लिए समूहों में ताली बजाने के अभ्यास का उपयोग किया जा सकता है। हाथ के संगीत वाद्ययंत्र भी इन सामूहिक और व्यक्तिगत गतिविधियों को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं,क्योंकि बच्चे स्वर-माधुर्य/राग और लय/ताल दोनों को explore करते हैं।

बॉक्स 4.4 ग

बच्चों के साथ तुकबंदियाँ कैसे कराएँ

तुकबंदी और उसके साथ किए जाने वाले अभिनय या क्रियाओं से परिचित हों। तुकबंदी को एक चार्ट पेपर पर बड़े अक्षरों में लिखकर उसके साथ कोने में इससे जुड़े चित्र भी चिपकाएँ और इन्हें बच्चों की नज़र की ऊँचाई पर प्रदर्शित करें। बच्चों को तुकबंदी देखने दें।

नोट : सभी तुकबंदियों को कम-से-कम 3 से 4 बार गाया जाना चाहिए।

तुकबंदी का परिचय दें और उन्हें समझाएँ कि यह किस बारे में है।

जब बच्चे सुन रहे होते हैं, तब लय, अभिनय और स्वर के साथ पूरी तुकबंदी को गाएँ।

बच्चों से कहें कि हर एक पंक्ति को आपके बाद दोहराएँ और चित्र दिखाकर प्रत्येक पंक्ति का अर्थ समझाएँ।

शब्दों को अभिव्यक्त करने वाली क्रियाएँ करें और बच्चों को अनुसरण करने के लिए कहें।

अब बच्चे आपके साथ अभिनय करते हुए गाएंगे।

बच्चों को समूहों में या व्यक्तिगत रूप से गाने के लिए प्रोत्साहित करें।

4.4.5 संगीत और शारीरिक हलचल (Music and Movement)

संगीत आनंददायी होता है। बच्चे अपनी दादी-नानी की लोरी और गुनगुनाना सुनते हुए बड़े होते हैं। हमारे आस-पास संगीत के बहुत सारे स्रोत हैं - किसान खेत में गाते हैं, मधुमक्खियों की भिनभिनाहट, कोयल की कूक या खिड़की पर बारिश की गड़गड़ाहट।

मस्तिष्क के विकास और सिनैप्टिक कनेक्शन के निर्माण के लिए संगीत भी एक प्रभावशाली उद्दीपन है। अत: लय का पालन करना और सरल वाद्य यंत्र बजाने और गायन को प्रोत्साहित करना चाहिए। टिन के डिब्बे या खंजरी (तम्बूरा) या मंजीरे (झाँझ) पर बजने वाली ताली या ताल के साथ शरीर की हरकतें हो सकती हैं।

गीत का इस्तेमाल करने के कई तरीक़े हैं। शिक्षक पहले गीत गाकर बच्चों को दोहराने के लिए कह सकते हैं। यह अभिनय, इशारों और शारीरिक गतिविधियों के साथ किया जा सकता है। बच्चे समूह, जोड़ियों में या अकेले में भी गीत गा सकते हैं। शिक्षक एक लोकप्रिय गीत की धुन गा सकता है और बच्चों को इसे पहचानने के लिए कहकर एक छोटा-सा खेल भी खेल सकते हैं। बच्चे विभिन्न गीतों की धुन बिना शब्दों के गुनगुना सकते हैं। शिक्षक और बच्चे अलग-अलग धुनों में सीखे गए गीतों को गा सकते हैं। बच्चों को सरल गीत बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

संगीत और शारीरिक हलचल की गतिविधियों को कई अलग-अलग तरीक़ों से किया जा सकता है। बच्चे चुपचाप वाद्य संगीत सुन सकते हैं या लय में स्वतंत्र रूप से नृत्य कर सकते हैं या लय के साथ शरीर की हरकत कर सकते हैं। बच्चे उपलब्ध सामग्री जैसे ढोल के रूप में बर्तन, रिबन पर छोटी-छोटी घण्टियाँ लगाकर और घुंघरू बनाकर साधारण वाद्य यंत्र भी बना सकते हैं। वे तम्बूरा, मंजीरा, लेझिम बजा सकते हैं और एक साथ ताली बजा सकते हैं, और इस तरह वे एक ऑर्केस्ट्रा बना सकते हैं। बच्चे रिबन, पत्तों वाली छोटी शाखाओं या दुपट्टे जैसे props का उपयोग करके भी नृत्य कर सकते हैं।

बच्चे संगीत वाद्ययंत्रों की आवाज़ से स्वाभाविक रूप से आकर्षित होते हैं और ड्रम, घण्टियाँ, ताल की छड़ें और तम्बूरा बजाने का आनन्द लेते हैं। बच्चों को शरीर की ताल और संगीत वाद्ययंत्रों के माध्यम से और शारीरिक हलचल और संगीत के खेल खेलकर संगीत बनाने में शामिल किया जा सकता है। बच्चों को ध्वनियों का अन्वेषण और संगीत बनाने के प्रत्यक्ष अनुभव के लिए घर पर बने हुए या स्थानीय स्तर पर उपलब्ध या फिर खरीदकर संगीत उपकरणों की range उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

शिक्षक कक्षाओं में बच्चों को सुनने व प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न प्रकार के संगीत, नृत्य, ध्वनि स्रोत, बालगीत, मंत्र और विभिन्न मनोदशाओं, सन्दर्भों और भाषाओं के गीत शामिल कर सकते हैं। नृत्य, गायन, बालगीत, लोक गीत, एक्शन गीत और फिंगर प्ले बच्चों को संगीत की अवधारणाओं को सीखने के अवसर प्रदान करते हैं।

शिक्षक की आवाज़ 4.4 ख

अभिनय गीत : When you are happy and you know it!

मैं सभी बच्चों से अनुरोध करता हूँ कि वे खड़े हो जाएँ और मेरी तरह अलग-अलग लय में ताली बजाएँ। फिर मैं उनसे पूछता हूँ, “क्या आप हमें दिखा सकते हैं कि और कौन-से तरीक़े हैं, जिनसे आप अपने शरीर को हिला सकते हैं और आवाज़ें निकाल सकते हैं?” कुछ अपनी उंगलियाँ फँसा लेते हैं, अपने पैरों पर धीरे से मारते हैं, वग़ैरह। मैं उनसे यह भी पूछता हूँ कि, “जब आप ख़ुश होते हैं तो आप क्या करते हैं?” कोई कहता है कि वे ख़ुशी से ताली बजाते हैं और कुछ कहते हैं कि वे ख़ुशी से चिल्लाते हैं।

फिर मैं उनसे कहता हूँ, “आइए हम इन सभी आवाज़ों को मिलाकर एक गीत बनाएँ।” मैं पहले गाता हूँ और जब भी मैं आवाज़ निकालता हूँ तो उन्हें मेरे साथ जुड़ने के लिए कहता हूँ।

When you are happy and you know it, clap your hands!

When you are happy and you know it, clap your hands!

When you are happy and you know it and you really want to show it,

clap your hands!

When you are happy and you know it, stamp your feet!

When you are happy and you know it, stamp your feet!

When you are happy and you know it and you really want to show it,

stamp your feet!

When you are happy and you know it, say hurray!

When you are happy and you know it, say hurray!

When you are happy and you know it and you really want to show it,

say hurray!

इस तरह के अभिनय गीत मेरे बच्चों को व्यस्त रखने में कभी असफ़ल नहीं होते और वे ख़ूब मस्ती करते हैं।

(चित्र स्रोत : सिक्किम कक्षा 1 की पाठ्यपुस्तक)

4.4.6 कला और शिल्प (Art and Craft)

बच्चों को रंगों के साथ खेलने और अपनी रुचि का कुछ बनाने में मज़ा आता है। कला और शिल्प बच्चों को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक और माध्यम प्रदान करते हैं।

क) चित्रकारी (ड्रॉइंग): इसके लिए काग़ज़, क्रेयॉन, स्केच पेन, रंगीन या काली पेंसिल या चारकोल का इस्तेमाल किया जा सकता है। बच्चे स्लेट, ब्लैकबोर्ड या फ़र्श पर भी चित्र बना सकते हैं। ब्लैकबोर्ड और फ़र्श का लाभ यह है कि इसमें बच्चों को बड़े चित्र बनाने के लिए ज़्यादा जगह मिल जाती है। काग़ज़ भी विभिन्न आकार और रंग का हो सकता है। सफ़ेद काग़ज़ और विभिन्न रंगों के क्रेयॉन के बजाय, यदि बच्चों को काला काग़ज़ और पीले या सफ़ेद क्रेयॉन दिए जाते हैं, तो जो चित्र निकलते हैं वे अलग और अनोखे होते हैं। छोटे बच्चे जो पहली बार क्रेयॉन पकड़ना सीखते हैं, वे लिखना शुरू करते हैं और धीरे-धीरे मनमुताबिक आकार बनाते हुए आगे बढ़ते हैं, और आख़िर में वे ख़ास आकार और डिज़ाइन बनाने में सक्षम होते हैं। चित्रकला अभिव्यक्ति के साथ-साथ सूक्ष्म मोटर समन्वय के लिए एक मूल्यवान गतिविधि है।

चित्र 4.4 ख: चित्रकारी

ख) रंगाई (पेंटिंग): काग़ज़, फ़र्श या कपड़े पर गीले रंग के इस्तेमाल से पेंटिंग बनाने के प्रयास किए जा सकते हैं। बच्चे बाज़ार में उपलब्ध कूची (ब्रश) का उपयोग कर सकते हैं, या शिक्षक लकड़ी और कपड़े या कपास से ब्रश बना सकते हैं। गीले रंग से अलग-अलग तरह से रंगाई की जा सकती है : अंगूठे की छपाई, हथेली की छपाई, सब्जी के कचरे के साथ छपाई, बोतल के ढक्कन, ब्लॉक, सब्जियाँ (जैसे आलू या भिण्डी) जैसी अन्य सामग्री के साथ छपाई। बच्चे थ्रेड प्रिंटिंग, फिंगर प्रिंटिंग के साथ-साथ फिंगर पेंटिंग का भी आनन्द लेते हैं।

चित्र 4.4 ग: पेंटिंग

ग) **चिपकाना:** काग़ज़ या कपड़े पर चिपकाने के लिए गोंद या इसी तरह की चीज़ों का इस्तेमाल शामिल है। शिक्षक या बच्चे एक आकृति बना सकते हैं जिस पर बच्चे माचिस या रंगीन काग़ज़ चिपकाते हैं या यह चिपकाने की स्वतंत्र गतिविधि हो सकती है। शिक्षक या बच्चे एक आकृति बना सकते हैं जिस पर बच्चे माचिस की तीलियाँ या रंगीन काग़ज़ चिपकाते हैं या यह एक स्वतंत्र चिपकाने की गतिविधि हो सकती है। विभिन्न सामग्रियों जैसे रेत, पेंसिल की छीलन, लकड़ी का बुरादा, सूखी मिट्टी, रंगीन या अख़बार के प्रिंट वाले काग़ज़ को भी चिपकाया जा सकता है। अलग-अलग चीज़ों का इस्तेमाल करके एक कोलाज भी बनाया जा सकता है। इसके लिए आसानी से उपलब्ध गोंद के साथ-साथ शिक्षक द्वारा बनाए गए गोंद का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

चित्र 4.4 घ: चिपकाना

घ) बर्तन बनाने वाली या गीली मिट्टी में थोड़ा-सा गोंद मिलाकर इसका इस्तेमाल मिट्टी की ढलाई (clay moulding) के लिए किया जा सकता है। खाद्य रंग मिलाकर या बिना रंग मिला गूँथा गया आटा भी शिक्षक द्वारा उपलब्ध कराया जा सकता है। बच्चों के खेलने के लिए इस तरह का आटा बाज़ार में उपलब्ध है। बच्चों को इस माध्यम से विभिन्न आकृतियों व वस्तुओं को बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। गतिविधि के विस्तार के रूप में, बच्चों द्वारा बनाई गई मिट्टी की वस्तुओं को बाद में सुखाया और पेंटकिया जा सकता है।

चित्र 4.4 ङ: मिट्टी की ढलाई

ङ) बच्चे विभिन्न आकारों और मोटाई के काग़ज़ों को फाड़कर शुरू करते हुए कैंची से काटते हुए आगे बढ़ सकते हैं। 4+ और 5+ साल के बच्चों को काग़ज़ काटने के लिए और बाद में कटे हुए आकार और डिज़ाइन बनाने के लिए भौंथरी कैंची दी जा सकती है। कटे और फटे टुकड़ों का उपयोग चिपकाने की गतिविधियों के लिए किया जा सकता है।

च) बच्चों को पेपर फोल्ड करने का कौशल सिखाया जा सकता है, इसे दबाकर पेपर फोल्ड मॉडल बनाया जा सकता है। वे काग़ज़ को आधा मोड़कर शुरू कर सकते हैं और बाद में कई तरह के फोल्ड सिखाए जा सकते हैं। यह सूक्ष्म मोटर समन्वय और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है।

छ) बच्चे काटने व चिपकाने के कौशल का इस्तेमाल खाली गत्ते के बक्से, रेत, मिट्टी आदि से वाहन, जानवर, भवन जैसी चीज़ों का निर्माण करने के लिए कर सकते हैं।

4.4.6.1 कला और शिल्प कार्य के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें

ये सभी ओपन एंडेड गतिविधियाँ होनी चाहिए। शिक्षक की तरफ़ से न्यूनतम दिशानिर्देश देना बेहतर होगा। बच्चों को अपने बारे में और अलग तरह से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

अगर कोई बच्चा एक पेड़ बनाना चाहता है, तो सबसे अच्छा है कि शिक्षक पेड़ बनाकर उस बच्चे को नक़ल करने के लिए न कहे। इसके बजाए वह सवाल पूछ सकती है (जैसे पेड़ कैसा दिखता है - ऊँचा या छोटा, उसके तने की आकृति कैसी होती है, शाखाएँ कैसे फैली हुई होती हैं, क्या कई शाखाएँ होती हैं या केवल दो या तीन होती हैं, पत्तों की आकृति और रंग कैसा होता है) और इस तरह बच्चों को अपना देखा हुआ पेड़ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। बेशक, शिक्षक विचारों में योगदान दे सकती है और चीज़ों को करने के बेहतर तरीक़े सुझा सकती है (जैसे कटिंग और पेपर फोल्डिंग)।

छोटे बच्चों का कला और शिल्प बनाने की प्रक्रिया में शामिल होना उससे निकलने वाले उत्पाद से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

क) **बेहिचक कलात्मक अभिव्यक्ति:** बच्चों को अपनी कल्पना के साथ ही शिक्षक द्वारा दिशानिर्देशित अभ्यासों के माध्यम से दृश्य व्यवस्था, कलाकृतियाँ, धुन, गीत, अभिनय, नाटकीय खेल, नृत्य और रचनात्मक कलाकृतियों के निर्माण की अनुमति दी जानी चाहिए। **कलात्मक अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में 'सही' और 'गलत', 'अच्छा' और 'बुरा' की धारणाओं से बचना चाहिए। इसके बजाय विभिन्न दृष्टिकोणों, अनुभवों, अभिव्यक्ति और कल्पना को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, और शाबाशी दी जानी चाहिए।**

ख) **सामग्रियों, माध्यमों और उपकरणों की खोज:** विभिन्न प्रकार की सामग्रियों की खोज कर अपनी जिज्ञासा को विकसित करना और उनका उपयोग करते हुए कला उपकरण व माध्यम के रूप में कई तरीक़ों से उपयोग करने की सम्भावना का विस्तार करना बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण है। **ब्रश का उपयोग दृश्य कला में उपकरण के रूप में किया जा सकता है, लेकिन संगीत वाद्ययंत्र, या नाट्य सामग्री के रूप में उपयोग किए जाने की सम्भावना भी हो सकती है। बच्चों को पारम्परिक रूप से स्वीकृत विधियों के अलावा, कला के प्रत्येक क्षेत्र में भी उपकरणों और सामग्रियों के उपयोग की अपनी विधियों और तकनीकों की खोज करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।**

ग) **अवलोकन: बच्चों को न सिर्फ़ अपने आप-पास की दुनिया को अपने नज़रिए से देखना ज़रूरी है, बल्कि ख़ुद के विचारों, संवेदनाओं, भावनाओं, अभिव्यक्ति, कामों और पूरे व्यवहार का सूक्ष्म अवलोकनकर्ता बनने की भी ज़रूरत है।** बच्चों को कला के मूल तत्वों से परिचित कराने से उन्हें बहु-संवेदी उद्दीपनों को व्यवस्थित करने और समझने तथा उनकी सौन्दर्य सम्बन्धी संवेदनाओं को विकसित करने के लिए कई रूपरेखाएँ मिलती हैं। ध्वनि, रंग या गति के तत्वों पर आधारित सरल अभ्यासों को भावनाओं, विचारों और कार्यों के साथ जोड़ने के लिए बच्चों के दैनिक सन्दर्भों पर लागू किया जा सकता है।

घ) **बातचीत और संवाद:** शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कला कक्षा वातावरण हमेशा समावेशी हो। शिक्षक को बच्चों के मौखिक और गैर-मौखिक सम्प्रेषण पर गहन ध्यान देना चाहिए, उनकी दृश्य और प्रदर्शन कलाकृति की सराहना करनी चाहिए, और ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए जो प्रत्येक बच्चे से व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के योग्य हों।

ङ) **सौन्दर्य सम्बन्धी प्रशंसा:** कला वर्ग में नियमित रूप से बातचीत और चर्चा शामिल होनी चाहिए जिसमें हम व्यक्तिगत रूप से क्या पसन्द करते हैं, सामूहिक रूप से क्या सराहा जाता है और सौन्दर्य की दृष्टि से क्या अत्यन्त आवश्यक है शामिल हो। ये बातचीत कक्षा में किए गए व्यावहारिक कार्य व सौन्दर्य सम्बन्धी अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए जिसे बच्चे अपने दैनिक जीवन से जोड़ सकते हैं (जैसे रंग, कपड़े, भोजन, नृत्य, त्योहारों, प्रदर्शनों में उनकी प्राथमिकताएँ)। इस बातचीत में शिक्षक की भूमिका सहभागी की और गैर-निर्णयात्मक होनी चाहिए। कला वर्ग के दौरान चर्चाओं के लिए 8 से 10 मिनट से अधिक समय नहीं लगना चाहिए।

कक्षा 1 और 2 के लिए कला और शिल्प के समय-ब्लॉक (blocks of time) की योजना बनाना उपयोगी हो सकता है। चूँकि कला को विभिन्न प्रकार की सामग्रियों की खोज के लिए समय और अवसरों की आवश्यकता होती है, इसलिए उनकी तैयारी, व्यवस्था, वितरण और सफ़ाई के लिए, कला बनाने पर केन्द्रित एक घण्टे के ब्लॉक को वैकल्पिक दिनों (ब्लॉक 2) पर तय किया जा सकता है। प्रदर्शन, प्रस्तुति, बातचीत और प्रशंसा से सम्बन्धित कला प्रक्रियाओं को हर दिन 20 मिनट के छोटे समय के ब्लॉक में व्यवस्थित किया जा सकता है (ब्लॉक 1)।

तालिका 4.4 क

ब्लॉक्स	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	संगीत का अभ्यास	नाटक का अभ्यास	नृत्य / शारीरिक हलचलों का अभ्यास	संगीत का अभ्यास	नाटक का अभ्यास	नृत्य / शारीरिक हलचलों का अभ्यास
2	कलाकृति बनाना और उसकी सराहना करना	-	कलाकृति बनाना और उसकी सराहना करना		कलाकृति बनाना और उसकी सराहना करना	

4.4.7 इनडोर खेल (Indoor Games)

जिस तरह शरीर को फिट और स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करना ज़रूरी है, उसी तरह दिमाग़ का व्यायाम भी ज़रूरी है। रणनीतिक खेल, तर्क व शब्द पहेलियाँ और मनोरंजक गणित बच्चों को गणित के बारे में उत्साहित करने और तार्किक कौशल विकसित करने के सबसे अच्छे तरीक़े हैं, जो उनके पूरे स्कूल के वर्षों के साथ-साथ असल में पूरे जीवन के दौरान बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

जिग्सॉ पहेलियाँ, ब्लॉक के साथ खेलना और भूलभुलैया को हल करना एक बच्चे के कल्पनात्मक तर्क को विकसित करने में मदद करते हैं; रणनीति के खेल (जैसे टिक-टैक-टो, और शतरंज जैसे गहरे खेल तक ले जाना) रणनीतिक सोच और समस्या-समाधान कौशल विकसित करते हैं।

खेल खेलना (जैसे चौपड़, साँप-सीढ़ी, लूडो) मज़ेदार होता है, यह गिनती, रणनीति, सहयोग, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, साथियों के साथ सम्बन्ध बनाना भी सिखाता है।

बॉक्स 4.4 घ

कंकड़ों वाला सरल अंकगणितीय खेल

कुछ खेलों में न्यूनतम सामग्री की आवश्यकता होती है, लेकिन ऐसे खेल अक्सर सबसे मज़ेदार, लत लगाने वाले और शिक्षाप्रद हो सकते हैं। नीचे दिए गए '10 कंकड़ खेल' को कई स्तरों पर अपनाया जा सकता है। यह सबसे कम उम्र के बच्चों द्वारा खेला जा सकता है, फिर भी गहरी गणितीय अवधारणाओं के कारण इसे बार-बार फिर से खेला जा सकता है और इसे आगे बढ़ाया जा सकता है।

10 कंकड़ों के ढेर से शुरू करें (कंकड़ों की जगह 10 सिक्के, पत्थर या मोती या कुछ और इस्तेमाल किया जा सकता है)। दो खिलाड़ी बारी-बारी से ढेर से एक या दो कंकड़ निकालते हैं। ढेर में आखिरी कंकड़ निकालने वाला खिलाड़ी जीत जाता है!

इस खेल को दो खिलाड़ियों के साथ कई बार खेला जा सकता है, जिसमें खेल शुरू करने वाला पहला खिलाड़ी बारी-बारी से बदल सकता है। बच्चे इस खेल को तब तक बार-बार खेल सकते हैं जब तक कि वे जीतने के लिए अलग-अलग रणनीतियाँ न चुनना शुरू कर दें। कुछ खेलों के बाद, शिक्षक एक बच्चे से पूछ सकता है, "क्या आप पहले खिलाड़ी या दूसरे खिलाड़ी बनना पसन्द करते हैं? क्यों?" जब बच्चा रणनीति के बारे में सोचना शुरू करता है तो यह मज़ेदार खेल अंकगणितीय तर्क सिखाता है।

खेल में विविधता भी लाई जा सकती है, जैसे 10 या 21 चीज़ें और जहाँ खिलाड़ी को अपनी हर बारी में 1, 2, या 3 चीज़ लेने की अनुमति हो।

एक बार जब बच्चे गिनना और छोटी संख्याएँ जोड़ना सीख लेते हैं, तो खेल खेलने के लिए किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं होती है। पहला खिलाड़ी संख्या 1 या 2 कहकर शुरू करता है; फिर दूसरा खिलाड़ी पहले खिलाड़ी की संख्या में 1 या 2 जोड़ता है और वह संख्या कहता है; फिर पहला खिलाड़ी कहे गए अन्तिम संख्या में 1 या 2 जोड़ता है और उस संख्या को कहता है। वे एक के बाद एक चुनते हैं और जो खिलाड़ी पहले "10" कहता है वह जीत जाता है। शिक्षक बच्चों से पूछ सकता है, "यह खेल 10 कंकड़ के खेल के समान क्यों है?" यह अभ्यास बच्चों को संख्या नामों और वस्तुओं की मात्रा के बीच संगति की अवधारणा के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है।

पहेलियाँ और चुटकुले ऐसे प्रश्न या कथन हैं जिन्हें जानबूझकर इस तरह से तैयार किया जाता है ताकि उत्तर या अर्थ को समझने के लिए लीक से हटकर (आउट-ऑफ-द-बॉक्स) सोचने की आवश्यकता हो, उन्हें आमतौर पर खेल के रूप में भी पेश किया जाता है। पहेलियों और चुटकुलों को संज्ञानात्मक रूप से लाभकारी माना जाता है, क्योंकि वे बच्चों और वयस्कों को समान रूप से सोचने के मानक तरीक़ों से बाहर निकालने में मदद करते हैं, इस प्रकार रचनात्मकता और नवीनता को प्रोत्साहित करते हैं।

बॉक्स 4.4 ङ

एक प्रसिद्ध संगीत पहेली

तीतर के दो आगे तीतर

तीतर के दो पीछे तीतर

आगे तीतर पीछे तीतर

बोलो कितने तीतर

पहले इसे कक्षा में सामूहिक रूप से गाया जा सकता है, फिर पहेली के उत्तर पर चर्चा की जा सकती है - एक तीतर के सामने दो तीतर होते हैं; एक तीतर के पीछे दो तीतर होते हैं; तीतर के आगे और पीछे तीतर है; मुझे बताओ कितने तीतर!

शब्द और तर्क पहेली निगमनात्मक तर्क सिखाने का एक और मज़ेदार तरीक़ा है। सरल पहेलियाँ जैसे कि ऊपर दिए गए बॉक्स में बच्चों के तार्किक व रचनात्मक चिंतन के कौशल को मनोरंजक तरीक़े से विकसित करने में मदद करते हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं, पहेलियाँ अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं और अंकगणित व अन्य तत्वों को शामिल किया जा सकता है। अंकगणित पहेलियाँ और खेल संख्याओं के साथ सहजता विकसित करने और मात्रात्मक तर्क विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

मज़ेदार अभ्यास, खेल और पहेलियों के ज़रिए बच्चों को व्यस्त रखने के साथ-साथ मानसिक क्षमता व रचनात्मकता को विकसित करने के लिए सीखने को मनोरंजक बनाना सुनिश्चित किया जाता है। पहेलियाँ और समस्या-समाधान जैसी गतिविधियाँ, जिनमें स्थानिक तर्क, वर्डप्ले, रणनीति, तर्क और अंकगणित शामिल हैं; चिंतन, तार्किक निगमन, गणितीय तर्क और रचनात्मकता के लिए लगाव विकसित करने के लिए फाउंडेशनल स्टेज में कक्षा का हिस्सा होना चाहिए। भारत के लिए प्रासंगिक उदाहरणों, जिनमें भारत की पहेलियों और समस्या-समाधान की समृद्ध स्थानीय और राष्ट्रीय परम्पराएँ आती हैं, उन्हें भी व्यापक रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

4.4.8 बाहरी मैदानी खेल (Outdoor Games)

चलना, दौड़ना, कूदना, पीछा करना, लात मारना और गेंद फेंकना, पानी या रेत या कीचड़ में खेलना, पोखर में कूदना, सुरंगों से रेंगना, गिरे हुए पेड़ों पर चढ़ना या छोटे पेड़ों पर चढ़ना बच्चों को स्थूल मोटर कौशल विकसित करने में मदद करता है। प्रकृति की सैर पर जाना और उनके द्वारा सुनी जाने वाली विभिन्न ध्वनियों का नामकरण, पक्षियों या कीड़ों या पौधों की तलाश करना और उनका नामकरण करना भी एक अलग तरह की बाहरी गतिविधि का हिस्सा है।

खेलने के उपकरण बनाने के लिए पुराने टायरों का रचनात्मक उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक ईंटों का उपयोग बच्चों को खुद को सन्तुलित करने और चलने के लिए कर सकते हैं, बड़ी गेंदें, रिंग्स, हूला-हूप और रस्सी-कूद जैसी खेल सामग्री प्रदान कर सकते हैं। बाँस जैसी स्थानीय सामग्री का इस्तेमाल खेल की संरचना बनाने के लिए किया जा सकता है। नियंत्रित ऊँचाई का एक छोटा पेड़ बाहरी खेल का एक बड़ा स्रोत हो सकता है।

छोटे बच्चे बिना किसी नियम या सरल नियमों के साथ समूह में खेल सकते हैं (जैसे, पकड़म पकड़ाई, फेंकना और पकड़ना, गेंद को छेद में फेंकना)। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वे सरल नियमों का पालन करते हुए समूह खेलों का आनन्द लेते हैं (जैसे, पिठ्ठू, गिट्टे, जंजीर, आँखमिचौली, statue, लुक-अप और लुक-डाउन)।

शिक्षक की आवाज़ 4.4 ग

जंगल में आग लगी ! भागो बच्चों भागो!

यह बहुत पुराना और लोकप्रिय खेल है। मैं सभी बच्चों को एक घेरे में मेरे चारों ओर धीमे-धीमे घूमने के लिए कहकर शुरू करती हूँ, तब मैं गाती हूँ "जंगल में आग लगी, भागो बच्चों भागो!" ऐसा कई बार कहने के बाद, मैं अचानक कोई संख्या कहती हूँ, जैसे "नम्बर 3"। 3 के समूह बनाने के लिए सभी बच्चों को तुरन्त रुकना चाहिए और सर्कल से टूटना चाहिए। कम-से-कम समय में उन्हें रुक जाना चाहिए, निर्देशों का पालन करना चाहिए, यह समझना चाहिए कि किस समूह में 3 हैं या किसमें अभी कुछ लोगों की ज़रूरत है और उस हिसाब से किसी समूह को छोड़ना या उसमें जुड़ना चाहिए।

अंजलि शेखावत द्वारा चित्रित)

इसके लिए स्थिति (समूह में प्रतिभागियों की बदली हुई संख्या) और लचीलेपन (हर बार समूह में अलग-अलग बच्चों को ढूँढ़ना) के अनुकूल ढलने की आवश्यकता होती है। यह सकारात्मक सीखने की आदतों को विकसित करने का एक मज़ेदार तरीक़ा है जैसे कि निर्देशों को याद रखने के लिए विभिन्न रणनीतियों को लागू करना, बच्चों का चौकस और धैर्यवान होना।

बाहर खेलते समय सुरक्षा का ध्यान रखना ज़रूरी है। बच्चे जब खेल रहे हैं तब शिक्षक को उन पर नज़र रखनी चाहिए और सुनिश्चित करना होगा कि चोट न लगे।

अगर बाहर कोई सुरक्षित स्थान नहीं है, तो बच्चे भीतर ही शारीरिक खेल खेल सकते हैं जो स्थूल मोटर विकास को बढ़ावा देते हैं, लेकिन इसे दूसरे विकल्प के रूप में रखे जाने का सुझाव दिया जाता है। इस उम्र में बच्चों को विकसित होने और अच्छी तरह से बढ़ने में मदद करने के लिए धूप में रहने की ज़रूरत है।

बॉक्स 4.4 च

जापानियों के पास शिनरिन-योकू नामक एक प्रथा है। जापानी में शिनरिन का अर्थ है 'जंगल' और योकू का अर्थ है 'स्नान'। तो शिनरिन-योकू का शाब्दिक अर्थ वन स्नान है। यह दृष्टि, श्रवण, स्वाद, गंध और स्पर्श की इन्द्रियों के माध्यम से प्रकृति से जुड़ने का एक साधन है।

बच्चों को प्रकृति में और उसके साथ समय बिताने में सक्षम बनाने के लिए इस गतिविधि को आयोजित किया जा सकता है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र जंगल या तालाबों या जंगलों या खेतों तक पहुँच सुनिश्चित कर देंगे; शहरी क्षेत्रों में स्कूल के बग़ीचे या स्थानीय पार्क या झीलें, बेहतरीन विकल्प हो सकते हैं।

4.4.9 प्रकृति में और उसके साथ समय बिताना

मछली के बारे में कोई किताब पढ़ने या कहानी सुनने की बजाए उसे सामने से देखकर समझना आसान होता है। और इसमें बड़ा मज़ा भी आता है!

शिक्षक की आवाज़ 4.4 घ

कुछ बच्चों के घर में बग़ीचे हैं। जब हमने पौधों पर चर्चा की, तो अन्य बच्चों की दिलचस्पी बढ़ गई और उन्होंने पौधे कैसे बढ़ते हैं, उन्हें क्या चाहिए और हमें कैसे पता चलेगा कि उन्हें कब खाना चाहिए जैसे कई सवाल पूछे।

इसलिए, मैंने स्कूल के छोटे से खुले क्षेत्र के एक हिस्से को सब्जी के बग़ीचे के रूप में उपयोग करने का फ़ैसला किया। कुछ बच्चे घर से बीज ले लाए और मैंने उनकी मदद से उन्हें बो दिया। बच्चों ने बग़ीचे की देखभाल और ध्यान रखने की ज़िम्मेदारी ली। हमने टमाटर और कद्दू की 'फसलों' की कटाई की और बच्चों के बीच उपज को उनके परिवारों के साथ साझा करने के लिए घर ले जाने के लिए वितरित किया।

इसके बाद, हमने कुछ धनिया और पुदीना उगाने की कोशिश की। मैं कुछ गमले में लगे फूलों के पौधे लेकर आया। फिर से बच्चों ने 'बग़ीचे' की देखभाल की!

जैसे-जैसे बच्चों की पौधों में अधिकाधिक रुचि विकसित होने लगी, हमने अपने स्कूल के पास के बग़ीचों और हरित क्षेत्रों को देखने का फैसला किया। हमने प्रकृति की कई सारी सैर की। बच्चे और मैं सड़क के किनारे की दरारों में फूलों और खरपतवारों, तितलियों के साथ-साथ कीड़े, मधुमक्खियों, चींटियों और मकड़ियों को 'खोज' करते हुए कई बार आश्चर्यचकित हुए।

मेरा मक़सद बच्चों को उनके आस-पास की प्रकृति का अवलोकन, अन्वेषण, प्रश्न और सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करना था। मेरी इच्छा उनमें प्राकृतिक दुनिया के साथ एक आत्मीयता विकसित करने की थी, जो उन्हें बड़े होने पर अच्छी स्थिति में रखे।

वहाँ बहुत सारी उज्ज्वल, सुन्दर और दिलचस्प चीज़ें हैं जो एक बच्चे में कौतूहलनिर्मित करती हैं, उसकी जिज्ञासा को प्रोत्साहित करती हैं। स्थानीय जंगल या छोटे जंगल या स्थानीय पार्क की यात्रा और आस-पास के सभी पक्षियों को देखकर एक बच्चा अचम्भित हो जाएगा।

पेड़-पौधों, पक्षियों और जानवरों के साथ समय बिताना या चारों ओर घिरी प्रकृति में सिर्फ़ शान्त रहना पर्यावरण के लिए जीवन शैली यानी Lifestyle for Environment (LiFE) का आधार विकसित कर सकता है|

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में कहा गया है कि चाहे वह व्यक्तिगत मानव शरीर हो या विशाल ब्रह्मांडीय शरीर, वे अनिवार्य रूप से पंचतत्वों या पंचभूतों - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बने हैं। उदाहरण के तौर पर : अष्टांग आयुर्वेद के आठ वर्गों में से एक, बाला चिकित्सा कहता है कि पंचभूत हमारे शरीर के विभिन्न हिस्सों में प्रकट होते हैं। इसलिए इस अवस्था में जल, वायु और पृथ्वी के साथ प्रत्यक्ष अनुभव का परिचय देना महत्त्वपूर्ण है ताकि बच्चे तत्वों के साथ इस गहरे सम्बन्ध का अनुभव कर सकें।

शिक्षक की आवाज़ 4.4 ङ

जब मैं बच्चों को बाहर बग़ीचे में ले जाती हूँ, जब मैं उनके पास रहती हूँ जब वे कक्षा के बाहर खेल रहे होते हैं, या उनके माता-पिता द्वारा उन्हें लेने के लिए आने की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, तब मैं उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर आश्चर्य करती हूँ।

एक दिन शिरीन ने सड़क के किनारे पड़े निर्माण कार्य से बचे एक छोटी-सी चट्टान की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'उस चट्टान के नीचे क्या है?'

सुषमा ने स्कूल प्रार्थना के दौरान पक्षियों के एक छोटे झुण्ड को स्कूल में उतरते देखकर पूछा, 'वे पक्षी ज़मीन से क्या उठा रहे हैं?'

हरप्रीत का ध्यान पक्षियों की ओर गया, और उसने कहा, 'पक्षी इतने सारे रंगों से क्यों बने हैं?'

मैंने देखा कि डोमा एक दीवार के पास बैठकर किसी चीज़ को करीब से देख रही है। यह चींटियों की एक पंक्ति थी जो दीवार में एक दरार में जा रही थी। जब मैंने जानना चाहा तो उसने पूछा 'वे कहाँ जा रहे हैं? वे अपना रास्ता कैसे खोजेंगे?'

अक्सर मुझे पक्के तौर पर पता नहीं होता कि उनके सवालों से कैसे निपटा जाए। हालाँकि, मैं चाहती हूँ कि बच्चे इस तरह के सवाल पूछते रहें, क्योंकि मैं समझती हूँ कि वे बच्चों को प्रकृति और उसकी सारी सुन्दरता के लिए सम्मान और प्रशंसा विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

मैं इस बात को भी समझती हूँ कि प्रकृति के साथ उनका जुड़ाव सुनिश्चित करने के लिए मुझे वही जिज्ञासा और उत्साह प्रदर्शित करना चाहिए।

मैं सबसे ज़रूरी बात इसे समझती हूँ कि उनके सवालों के लिए मेरा जवाब, 'मैं उत्तर के बारे में निश्चित नहीं हूँ, लेकिन हम मिल-जुलकर कोशिश करते हैं और पता लगाते हैं' होना चाहिए।

4.4.10 क्षेत्र अध्ययन यात्राएँ (Field Trips)

स्थानीय सब्जी बाज़ार नई और ध्वनियों से भरी एक रोमांचक जगह हो सकती है! दवाख़ाना, बस अड्डा, डाकघर और पुलिस स्टेशन बच्चों को एक अपरिचित लेकिन दिलचस्प दुनिया से परिचित करा सकते हैं, उन्हें कई नई चीज़ें सिखा सकते हैं। **सीखने की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में छोटी, स्थानीय क्षेत्र अध्ययन यात्राएँ कक्षा में बच्चों द्वारा प्राप्त ज्ञान को पुख़्ता करती हैं और उन्हें ज़्यादा सवाल और उन पहले से ज्ञात चीज़ों के साथ सम्बन्ध बनाने के लिए प्रेरित करती हैं। इन अनुभवों के माध्यम से बच्चे ख़ुद का प्रबंधन करना और दूसरों के साथ रहना सीखते हैं।**

शिक्षक की आवाज़ 4.4 च

प्रकृति में टहलते हुए गणित सीखना!

मैं अक्सर अपनी पूरी क्लास को 'नेचर वॉक' के लिए नज़दीकी पार्क में ले जाता हूँ। मैं आमतौर पर बच्चों से अपनी आँखें बन्द करने और सभी आवाज़ों को सुनने के लिए कहता हूँ और देखता हूँ कि क्या वे उनका नाम ले सकते हैं। ऐसे कई सम्भावित तरीक़े हैं जिनसे मैं बच्चों को यहाँ जोड़ सकता हूँ। उदाहरणार्थ, हम उनमें बड़ी पाँच चीज़ें खोजने की कोशिश करते हैं (जैसे पेड़, झूले, कार, गेट, फव्वारा) और फ़िर ऐसी पाँच चीज़ें खोजने की कोशिश करते हैं, जो उनसे छोटी हों (जैसे कंकड़, पत्ते, लाठी, कीड़े, तितली)। जैसे-जैसे हम घूमते हैं, मैं बच्चों से इन चीज़ों के नाम और वे कैसे दिखते हैं आदि को याद रखने के लिए कहता हूँ, ताकि जब हम कक्षा में वापस जाएँ, तो हम इसे अपनी वर्कशीट में भर सकें।

मुझे लगता है यह कक्षा में बैठने की एकरसता को तोड़ने तथा सीखने को और अधिक मज़ेदार बनाने के साथ ही आकार जैसे विभिन्न गुणों के अनुसार अपने आस-पास की वस्तुओं को छाँटनेव तुलना करने जैसी महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं से जोड़ने की एक बहुत ही उपयोगी गतिविधि है।

वस्तुएँ हैं :	
मुझसे छोटी	**मुझसे बड़ी**

खण्ड 4.5
साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए रणनीतियाँ

विशेष रूप से कक्षा 1 व 2 के लिए साक्षरता और संख्या ज्ञान को संरचित रूप से सीखने का एक महत्त्वपूर्ण घटक जोड़ा जाएगा। यह सुनिश्चित करना ज़रूरी है कि 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पाठ्यक्रम की योजना इस तरह से बनाई जानी चाहिए जो उस विशेष उम्र के बच्चों की क्षमताओं का निर्माण करें। और कक्षा 1 से पाठ्यक्रम के नीचे की ओर विस्तार के बजाय औपचारिक शिक्षा की ओर ले जाए।

4.5.1 भाषा और साक्षरता शिक्षण

वर्तमान में, आरम्भिक भाषा की कक्षाओं में मुख्य रूप से वर्णमाला एवं मात्राएँ पढ़ाने, शिक्षक या बच्चों द्वारा पढ़े जा रहे पाठ की choral पुनरावृत्ति व नकल या हस्तलेखन अभ्यास पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अर्थ-उन्मुख कार्य पर बहुत कम ज़ोर दिया जाता है और बच्चों को पाठक और लेखक के रूप में विकसित करने के लिए कुछ ही अवसर प्रदान किए जाते हैं।

आरम्भिक वर्षों में भाषा और साक्षरता के शिक्षण से बच्चों को पाठक और लेखक के रूप में ख़ुद को तलाशने के पर्याप्त अवसर प्रदान करने चाहिए, साथ ही 'निम्न-क्रम' कौशल (जैसे, ध्वनि जागरूकता, डिकोडिंग, अक्षरों और शब्दों को सही ढंग से लिखना) और अर्थ-केंद्रित ' उच्चस्तरीय' कौशल (जैसे, मौखिक भाषा का विकास, पुस्तकों से जुड़ाव, ड्रॉइंगऔर मौलिक लेखन) सीखने का सन्तुलन प्रदान करना चाहिए।

4.5.1.1 उद्गामी साक्षरता (Emergent Literacy)

उद्गामी साक्षरता को उन कौशलों, ज्ञान और अभिवृत्तियों के रूप में परिभाषित किया जाता है जिन्हें बच्चे पारम्परिक या धाराप्रवाह पाठक और लेखक बनने से पहले पढ़ने और लिखने को लेकर विकसित करते हैं। प्रिंट और पढ़ने-लिखने के पर्याप्त अवसरों के साथ बच्चे बहुत कम उम्र से पढ़ना और लिखना सीखना शुरू कर सकते हैं, इससे पहले भी, जब वे पारम्परिक रूप से (अक्षरों और शब्दों का उपयोग करके) डिकोड करने और लिखने में सक्षम होते हैं।

उद्गामी साक्षरता चरण छोटे बच्चों के लिए पढ़ना और लिखना सीखने की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। उद्गामी साक्षरता में शुरुआतीपढ़ना और लिखना दोनों शामिल हैं :

क) **शुरुआती पठन कौशल** में प्रिंट जागरूकता तथा प्रिंट अवधारणाओं को सीखना, पढ़ने का अभिनय करना और शब्दों को चित्रों के रूप में पढ़ना (logographic रीडिंग) शामिल हैं। प्रिंट के बारे में अवधारणा इस बारे में जागरूकता है कि प्रिंट कैसे काम करता है : वह प्रिंट अर्थ बताता है, उसका उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है और लिखित ग्रन्थों व पुस्तकों में उसकी अलग-अलग विशेषताएँ, रूप और परम्पराएँ होती हैं।

ख) **शुरुआती लेखन कौशल** में कुछ व्यक्त करने के लिए ड्रॉइंग और अस्पष्ट घसीटकर लिखना या गोंजा-गांजी / गोदा-गोदी (scribbling) शामिल है। बच्चे अपने आप को लेखन में अभिव्यक्त करते हैं और इसके बाद जो उन्होंने लिखा है उसके बारे में बात करते हैं। छोटे बच्चों का लेखन उनकी बात, अनुभव, ड्रॉइंग, पढ़ने और नाटक-खेल से सम्बन्धित होता है। बाद के चरणों में, बच्चे धीरे-धीरे ध्वनि और प्रतीकों के बीच के सम्बन्ध को समझने और पारम्परिक वर्तनी और लेखन की ओर बढ़ने से पहले अक्षर जैसी आकृतियों का उपयोग करते हैं और अपनी वर्तनी (जैसे kat for cat, बिन्दु के लिए बनद) बना लेते हैं।

बच्चे घर और बाहर प्रिंट के सम्पर्क के माध्यम से शुरुआती पढ़ने और लिखने के कौशल हासिल करते हैं (जैसे लेबल को पहचानना, उन्हें पढ़कर सुनाई जाने वाली कहानी की किताबें देखना, लोगों को लिखते या चित्र बनाते हुए देखना)। बहुत से बच्चे प्रिंट के सम्पर्क में नहीं आ पाते हैं और प्रिंट के बारे में कम जागरूकता के साथ स्कूल में दाखिला ले सकते हैं। उन्हें स्कूल में प्रिंट-समृद्ध वातावरण के ज़रिए और पुस्तकों के साथ जुड़ाव के माध्यम से प्रिंट को समझने की पहल कराने की आवश्यकता है। अक्षर पढ़ना और लिखना सिखाने से पहले बच्चों को यह समझने की ज़रूरत है कि साक्षरता उनके लिए कैसे उपयोगी है।

4.5.1.2 उद्गामी साक्षरता के लिए सहयोगी रणनीतियाँ

उद्गामी साक्षरता के लिए सहयोगी कुछ रणनीतियों में शामिल हैं:

क) बच्चों को किताबों के साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना और ‘पढ़ने का नाटक’ (देखो और बोलो), शिक्षक द्वारा पढ़कर सुनाई जा रही सचित्र कहानी की किताबें ज़ोर से पढ़ना शामिल है।

ख) बच्चों को खुद को व्यक्त करने के लिए फ़र्श पर, अपनी तख़्ती या नोटबुक पर चित्र बनाने और लिखने या scribbling के लिए प्रोत्साहित करना (उदाहरण के लिए, कहानी सुनाने के सत्र के बाद)।

ग) प्रिंट संसाधनों (उदाहरण के लिए, बड़ी किताबें, चित्र पुस्तकें, कहानी पोस्टर, कविता पोस्टर, बच्चों की पत्रिकाएँ) के इस्तेमाल से कक्षा में प्रिंट-समृद्ध वातावरण बनाना या बच्चों की पहुँच के भीतर कक्षा में रखना और प्रदर्शित करना।

घ) कक्षा में ‘रीडिंग कॉर्नर’ और ‘राइटिंग कॉर्नर’ स्थापित करना।

4.5.1.3 आरम्भिक भाषा और साक्षरता के घटक

प्रारम्भिक वर्षों में आरम्भिक भाषा और साक्षरता के विकास के लिए कौशलों, ज्ञान और अभिवृत्तियों की एक विस्तृत रेंज विकसित करने की आवश्यकता होती है। कुशलतापूर्वक पढ़ने और लिखने के लिए बच्चे को बोले गए शब्दों में विभिन्न ध्वनियों को अलग करने, अक्षर-ध्वनि सम्बन्धों को पहचानने, ध्वनियों को मिलाकर शब्द बनाने, शब्दावली विकसित करने, जो लिखा गया है उसे समझने और पढ़ने का प्रवाह विकसित करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए साक्षरता के शिक्षण की आवश्यकता होती है जिसमें कई प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं जो समझ, शब्दावली, प्रवाह, शब्द पहचान, अक्षर ज्ञान और ध्वनि जागरूकता का निर्माण करती हैं।

आरम्भिक भाषा और साक्षरता के घटकों में शामिल हैं :

क) **उद्गामी साक्षरता कौशल:** प्रिंट के बारे में जागरूकता विकसित करना, पढ़ने का नाटक करना (चित्र पढ़ना), logographic पढ़ना (शब्दों को चित्रों के रूप में पढ़ना), कुछ का प्रस्तुत करने और व्यक्त करने के लिए ड्रॉइंग और scribbling करना। प्रिंट संबंधी अवधारणाओं में शामिल हैं:

i. मुद्रित शब्द बोली जाने वाली भाषा के शब्दों के प्रतीक होते हैं। येबोली जाने वाली ध्वनियाँ मौखिक और लिखित भाषा के बीच अन्तर्सम्बन्ध को देखने में मदद करती हैं।

ii. प्रिंट के कार्य और रूप जैसे, कहानी की किताब में, नोटिस और विज्ञापनों में, पोस्टरों में, पत्र लिखने के लिए, और दूसरों को विचार सम्प्रेषित करने के लिए।

iii. लेखन में ज़्यादातर बाएँ से दाएँ orientation (उर्दू जैसे अपवादों के साथ); साथ ही एक शब्द पहले है और उसके बाद एक खाली स्थान है; मुद्रित पाठ में अक्षर, शब्द और वाक्य हैं; विराम चिह्नों को जानना और शब्द लम्बाई में कैसे भिन्न होते हैं आदि को जानना।

iv. पुस्तक सम्बन्धी जागरूकता और पुस्तक को सम्भालने के तरीक़े।

ख) मौखिक भाषा का विकास (Oral language development): बेहतर ढंग से सुनकर समझना, मौखिक शब्दावली का विकास, और साथियों व जानकार अन्य लोगों (जैसे बड़े विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता) के साथ बातचीत और चर्चा का उपयोग सीखने के लिए करना।

ग) ध्वनि जागरूकता (Phonological awareness): ध्वनि जागरूकता भाषा की ध्वनि संरचना की समझ है, अर्थात वाक्य जिन शब्दों, शब्दांशों और ध्वनि की छोटी इकाइयों से बने होते हैं। यह ज्ञान पहले मौखिक रूप से विकसित होता है। ध्वनि जागरूकता और प्रिंट की अवधारणाएँ, डिकोडिंग सीखने के लिए दो सबसे महत्त्वपूर्ण मूलभूत कौशल हैं।

घ) डिकोडिंग (Decoding): प्रतीकों और उनकी संगत ध्वनियों के बीच के सम्बन्ध को समझने के आधार पर, लिखित शब्दों का उच्चारण करके उन्हें समझना। यह ध्वनियों को अलग-अलग अक्षरों और अक्षर संयोजनों (अक्षरों) के साथ जोड़ने और ध्वनियों को एक साथ मिलाकर पूरे शब्द का उच्चारण (या पढ़ने) और अर्थ की पहचान करने की क्षमता है (यदि शब्द ज्ञात है)।

ङ) समझ के साथ पढ़ना (Reading with comprehension): लिखित टेक्स्टसे अर्थ का निर्माण करना और इसके बारे में आलोचनात्मक/समीक्षात्मक ढंग से चिंतन करना।

च) धाराप्रवाह पढ़ना (Fluent reading): शब्दों की सटीक, स्वतःस्फूर्त पहचान और हाव-भाव के साथ पढ़ना।

छ) लेखन (Writing): तार्किक और व्यवस्थित तरीक़े से विचारों या सूचनाओं की प्रस्तुति के साथ-साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने की क्षमता।

ज) पढ़ने की इच्छा या आदत विकसित करना (Developing a desire or habit of reading): विभिन्न प्रकार की पुस्तकों और अन्य पठन सामग्री के साथ जुड़ना और साहित्य के लिए एक प्रशंसा का भाव विकसित करना।

4.5.1.4 सन्तुलित साक्षरता पद्धति (Balanced Literacy Approach)

शोध ने दिखाया है कि भाषा और साक्षरता के उपरोक्त घटकों को विकसित करने के लिए एक व्यापक और व्यवस्थित पद्धति की आवश्यकता होती है जिसे सन्तुलित साक्षरता पद्धति के रूप में जाना जाता है। सन्तुलित पद्धति शब्द पहचान कौशल विकसित करने के साथ-साथ अर्थ-निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करता है। यह डिकोडिंग कार्य को समग्र-भाषा (whole language) (वाक्यों) के उपयोग से संतुलित करता है; साथ ही मौखिक भाषा और पढ़ने और लिखने के बीच सन्तुलन करता है।

शुरूआती वर्षों में भाषा और साक्षरता का शिक्षण दो व्यापक श्रेणियों से सम्बन्धित कौशल प्राप्त कर रहे बच्चों पर केन्द्रित होना चाहिए :

क) शब्द की पहचान और शब्दों को लिखने में सटीकता (निम्न-क्रम कौशल) (Lower order skills): इनमें प्रिंट जागरूकता और ध्वनिजागरूकता (डिकोडिंग के शिक्षण से पहले मूलभूत कौशल के रूप में माना जाता है), डिकोडिंग, अक्षरों और शब्दों को सही ढंग से लिखना शामिल है।

ख) भाषा समझ और अभिव्यक्ति (उच्चस्तरीय कौशल) (Higher order skills): मौखिक भाषा विकास, शब्दावली, समझ के साथ पढ़ना (पढ़ने के लिए सक्रिय प्रतिक्रिया सहित) और मौलिक लेखन या रचना।

निम्न-क्रम और उच्चस्तरीय कौशल (lower order and higher order skills) के बीच सन्तुलन की योजना मौखिक खेलों, ध्वनि जागरूकता गतिविधियाँ, वर्ण पहचान के लिए स्पष्ट निर्देश, डिकोडिंग व शब्द-कार्य, सूक्ष्म मोटर गतिविधियाँ, पढ़कर सुनाना, साझा पठन, निर्देशित/मार्गदर्शितपठन, स्वतंत्र पठन, modelled लेखन, निर्देशित/मार्गदर्शित लेखन और स्वतंत्र लेखन जैसी विभिन्न गतिविधियों के उपयोग के माध्यम से की जाती है।

ग) मौखिक भाषा का विकास (Oral language development): इसके लिए रणनीतियों में कहानी सुनाना व चर्चा करना, चित्रों व विषयों पर बातचीत करना, बच्चों के लिए स्वतंत्र और निर्देशित बातचीत के माध्यम से बात करने और अपने अनुभव साझा करने के अवसर देना, पात्र अभिनय (role play) की गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं।

घ) डिकोडिंग निर्देश और वर्ड सॉल्विंग (Decoding instruction and word solving): यह अक्षर-ध्वनि सम्बन्ध स्थापित करने के लिए स्पष्ट निर्देशों से संबंधित है। डिकोडिंग शिक्षण को ध्वनि जागरूकता की गतिविधियों का पालन करना चाहिए, जहाँ शब्दों में ध्वनियों (शुरूआत, मध्य, अन्त की ध्वनियों) पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। अक्षरों और शब्दों को एक साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि अर्थ निकालना भाषा और साक्षरता शिक्षण के केन्द्र में रहे (क्योंकि शब्द अर्थ की मूलभूत इकाइयाँ हैं)।

भारतीय लिपियों में कई अक्षर होते हैं और इसलिए अक्षर समूहों को सावधानी से चुनने और क्रम में लगाने की आवश्यकता होती है ताकि बच्चे अपने हाल ही में प्राप्त अक्षर ज्ञान के साथ सार्थक शब्द निर्माण कर सकें। शब्दों के खंड करने और अक्षरों को मिलाने से शब्द डिकोडिंग और वर्तनी के लिए स्पष्ट निर्देश दिए जाने की ज़रूरत है। अंग्रेज़ी के मामले में phonics instruction का मतलब वर्णमाला के क्रमिक परिचय के बजाय अंग्रेज़ी में ध्वनियों को दर्शाने वाले विशिष्ट अक्षर संयोजनों पर ध्यान देना होगा।

ङ) पढ़ने की रणनीतियाँ:

i. **पढ़कर सुनाना (Read-aloud):** शिक्षक सूझ-बूझ से चुने गए बाल साहित्य (पाठ्यपुस्तक नहीं) बच्चों को पढ़कर सुनाता है। उसका इरादा बच्चों द्वारा शिक्षक के बाद दोहराने मात्र का नहीं है, बल्कि उनकी भाषा क्षमताओं और शब्दावली को विकसित करने का है। पढ़कर सुनाना बच्चों को अच्छे साहित्य से परिचित कराने और उन्हें शब्दावली, भाषा के उपयोग और अर्थ-निर्माण से परिचित होने का मौक़ा देना है। चर्चाएँ और बातचीत इस गतिविधि का एक अनिवार्य हिस्सा हैं, जहाँ बच्चे पढ़कर सुनाए जा रहे टेक्स्ट से सक्रिय रूप से जुड़ते हैं।

ii. **साझा पठन:** शिक्षक दूर से दिखाई देने वाले बड़ी छपाई वाले टेक्स्टको चुनता है और बच्चों को अपने साथ-साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। जैसे-जैसे बच्चे ऊँची आवाज़ में कहानियाँ पढ़ते हैं और साथ-साथ पढ़ने में भाग लेने लगते हैं, तब वे अपने वर्तमान स्तर से आगे बढ़ सकते हैं और पढ़ने की अपनी क्षमताओं के बारे में आत्मविश्वास हासिल कर सकते हैं।

iii. **निर्देशित/मार्गदर्शित पठन (Guided reading):** निर्देशित/मार्गदर्शितपठन में पढ़ने की ज़िम्मेदारी शिक्षक से बच्चों पर स्थानान्तरित हो जाती है। यह साझा पठन से अलग है, जहाँ शिक्षक पढ़ने में आगे होता है जबकि बच्चे कभी-कभार योगदान देते हैं। निर्देशित/मार्गदर्शित पठन में बच्चे पढ़ते हैं, जबकि शिक्षक आवश्यकतानुसार उन्हें आधार प्रदान करता है। इस प्रक्रिया में पढ़कर सुनाने और साझा पठन के दौरान शिक्षक द्वारा अपनाई गई रणनीतियों और तकनीकों का पुनर्बलन और अभ्यास किया जाता है।

iv. **स्वतंत्र पठन (Independent reading):** बच्चों को स्वतंत्र रूप से या एक साथी के साथ पढ़ने के अवसर दिए जाने चाहिए। स्वतंत्र रूप से पढ़ते समय, वे धीरे-धीरे पढ़ने की आदत विकसित करते हैं, पढ़ने और उस पर चिंतन के कार्य को महत्त्व देने लगते हैं और आनन्द के लिए किसी पुस्तक को अनुभव करने लगते हैं। इसमें बच्चों को वह पुस्तक चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए जिसे वे स्वतंत्र रूप से या अपने साथी के साथ पढ़ना चाहते हैं।

च) लेखन की रणनीतियाँ:

i. **Modelled लेखन:** जो छोटे बच्चे लिखना सीख रहे हैं उनके लिए शिक्षक को लिखने की प्रक्रिया का मॉडल बनाना होगा। यदि हम अर्थ को भाषा शिक्षण के केन्द्र में रखना चाहते हैं, तो कॉपी राइटिंग बच्चों के लिए बहुत सार्थक गतिविधि नहीं है, भले ही यह लेखन प्रवाह को विकसित करने में मदद करता हो। शिक्षक, लेखन प्रक्रिया की मॉडलिंग करके छोटे बच्चों को बोलने के साथ-साथ लेखन को एक अभिव्यक्ति की गतिविधि के रूप में देखना शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

ii. **साझा लेखन:** साझा पठन की तरह ही साझा लेखन भी एक सहयोगी प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक बच्चों को मिलकर साथ लिखने के काम में सहायता करता है। उदाहरण के लिए, वे बोर्ड पर "मैंने नाश्ते में __ खाया" वाक्य लिखकर शुरू कर सकते हैं और एक बच्चे को आकर इसे पूरा करने के लिए कह सकते हैं। चर्चा करना, बातचीत करना व लिखना साथ-साथ चलता है और शिक्षक लगातार बच्चों को लेखन प्रक्रिया में मॉडलिंग, प्रेरित एवं मार्गदर्शन कर रहे होते हैं।

iii. **निर्देशित/मार्गदर्शित लेखन:** बच्चों द्वारा मुक्त/स्वतंत्र लेखन वांछित होने पर भी वह बच्चों को केवल लेखन कार्य देने से अपने आप उभरकर नहीं आता। साझा लेखन से ज़िम्मेदारी आंशिक रूप से बच्चे पर स्थानान्तरित कर दी जाती है, जबकि शिक्षक लेखन को प्रवाहित रखने के लिए लगातार प्रतिक्रिया, सुझाव और संकेत देता है। लेखन के लिए सोद्देश्यता, क्रियाशीलता और कल्पनाशीलता के तत्वों को जोड़ने वाले उपयुक्त कार्य निर्धारण करने से छोटे बच्चों की लिखने की रुचि बनी रहती है। निर्देशित/मार्गदर्शित लेखन में बच्चों द्वारा मिलजुल कर लिखना (peer writing) और शिक्षक के फीडबैक के साथ लेखन के कई प्रारूप शामिल हो सकते हैं।

iv. **स्वतंत्र लेखन:** बच्चों को ख़ुद से लिखने का समय दिया जाना चाहिए। कहानियों, कविताओं, सन्देशों, निर्देशों तथा व्यंजनों को लिखने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने से उन्हें अपनी रचनात्मकता और कल्पना का उपयोग करने के साथ-साथ साक्षरता के व्यावहारिकपहलुओं से जुड़ने का मौका मिलता है।

फाउंडेशनल स्टेज पर सन्तुलित भाषा और साक्षरता शिक्षण का एक अन्य आयाम यह है कि मौखिक भाषा का विकास, डिकोडिंग सम्बन्धी कार्य, पढ़ने और लिखने की गतिविधियाँ एक साथ और हर दिन होनी चाहिए। इन्हें शिक्षण समय के चार ब्लॉकों के रूप में उपयोग करने के लिए एक अप्रोच आगे प्रस्तुत किया गया है।

4.5.1.5 साक्षरता शिक्षण के लिए चार-ब्लॉक पद्धति (The Four-Block Approach for Literacy Instruction)

भाषा और साक्षरता शिक्षण में चार प्रमुख घटक हैं - मौखिक भाषा, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना। जबकि चार ब्लॉकों के लिए गतिविधियों को एकीकृत तरीक़े से कार्यान्वित किया जा सकता है, साथ ही यह भी ज़रूरी है कि बच्चे नियमित रूप से हर एक ब्लॉक पर काम करने में समय व्यतीत करें।

जब बच्चे डिकोडिंग सीख रहे होते हैं, तो उन्हें कहानी की किताबों से भी जुड़े रहना चाहिए, जिसमें पढ़ी जा रही कहानी को सुनना और प्रतिक्रियादेना और पढ़े जा रहे टेक्स्ट को सुनकर प्रतिक्रिया में लिखना या चित्र बनाना आदि शामिल है। साथ ही अक्षरों व स्वरों या वर्णों व अक्षरों के शिक्षण को समूहबद्ध तरीक़े से व्यवस्थित किया जा सकता है, ताकि बच्चे कुछ प्रतीकों को सीखने के तुरन्त बाद सरल शब्दों और अर्थपूर्ण वाक्यों को पढ़ना और लिखना शुरू कर सकें, बजाय इसके कि वे सभी वर्णों और मात्राओं को एक साथ सीखने के लिए इन्तज़ार करते रहें। चार-ब्लॉक मॉडल [11] मेंशामिल हैं:

चित्र 4.5 क : चार ब्लॉकों वाला मॉडल - भाषा

कक्षा 1 और 2 के अन्त तक, उन बच्चों को अतिरिक्त सहायता के लिए समय देने की आवश्यकता होगी, जिन्होंने बुनियादी शब्द पहचान कौशल हासिल नहीं किया है। ऐसे बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षण का एक अलग अप्रोच (कृपया इस अध्याय में खण्ड 4.2 देखें) सभी चार ब्लॉकों में गतिविधियों का हिस्सा होना चाहिए।

4.5.1.6 अपरिचित भाषा सिखाने के लिए कुछ रणनीतियाँ

शिक्षक अपनी कक्षा में ऐसे बच्चों से मिल सकता है, जो सिखाई जा रही भाषा से परिचित नहीं हैं। किसी अपरिचित भाषा को पढ़ाने के शिक्षणशास्त्र को Total Physical Response (TPR) गतिविधियों, विस्तारित मौखिक व सम्प्रेषण संबंधी कार्य, शब्दावली विकास, सरल वाक्यांशों एवं वाक्यों पर नियंत्रण, बातचीत और कहानियों के रूप में उपयोग की जाने वाली रणनीतियों के साथ बेहतर ढंग से समझने की आवश्यकता है।

किसी अपरिचित भाषा को पढ़ाने की कुछ रणनीतियाँ नीचे दी गई हैं :

क) आरम्भ में ही बहुत सारी मस्ती भरी और संवादात्मक गतिविधियों के साथ मौखिक भाषा के विकास को बढ़ावा देना; जैसे टीपीआर (उदाहरण के लिए शारीरिक रूप से क्रियात्मक शब्दों का प्रदर्शन - शब्द कहते समय कूदना), विस्तारित मौखिक और सम्प्रेषण संबंधी कार्य, शब्दावली विकास, सरल वाक्यांश और आदेश के रूप में उपयोग किए जाने वाले वाक्य (जैसे दरवाजा बन्द करें, बाहर देखें) और बातचीत तथा कहानियाँ आदि।

ख) अपरिचित भाषा में बोधगम्य इनपुट प्रदान करें। इसमें भाषा को सुनने और इसे ऐसे रूप में पढ़ने के कई अवसर प्रदान करना शामिल है जो बच्चों की समझ के क्षेत्र के भीतर है, जिसे 'बोधगम्य इनपुट' भी कहा जाता है। शिक्षक द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा सरल होनी चाहिए और इशारों, चित्रों, क्रियाओं एवं बच्चों की घरेलू भाषाओं के शब्दों के उपयोग द्वारा समर्थित होनी चाहिए। बेहतर समझ के लिए बच्चों द्वारा आसानी से सम्बन्ध स्थापित करने योग्य परिचित सन्दर्भ का उपयोग करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

ग) एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण सन्दर्भ बनाएँ। इसका अर्थ है कि बच्चों को भाषा की शुद्धता और सटीकता में उलझाने के बजाय प्रभावी सम्प्रेषण के लिए एक अपरिचित भाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे अपरिचित भाषा में बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति में सुधार होगा।

घ) अपरिचित भाषा को पर्याप्त रूप से परिचित कराएँ। यह सुनने के अवसर प्रदान करके, सम्प्रेषण के लिए भाषा का उपयोग करके और पर्याप्त प्रिंट सामग्री प्रदान करके किया जा सकता है।

ङ) तनाव मुक्त और सुरक्षित वातावरण बनाएँ। एक अपरिचित भाषा के लिए जल्दी से प्रस्तुति (early production) या बोलने और सीखने के औपचारिक आकलन पर कोई ज़ोरनहीं होना चाहिए। एक सकारात्मक एवं सहायक कक्षा-कक्ष वातावरण जहाँ बच्चे प्रेरित होते हैं और उनमें उच्च आत्म-सम्मान और चिन्ता का निम्न स्तर होता है, बच्चों को बेहतर और आराम से सीखने में मदद करता है।

4.5.2 गणित शिक्षण

बच्चे कक्षा में अपने परिवेश और संस्कृति से विविध गणितीय कौशल लाते हैं, जो गणित सीखने का आधार होना चाहिए।

गणित सीखने के उद्देश्यों को उच्चतर उद्देश्यों (higher goals) में वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे कि बच्चे की विचार प्रक्रियाओं का गणितीकरण (जैसे अमूर्त चिंतन को सम्भालने की क्षमता, समस्या-समाधान, सादृश्यीकरण/मानस चित्रण, निरूपण, तर्क करना, और अन्य क्षेत्रों (domains) के साथ गणित की अवधारणाओं का सम्बन्ध बनाना) और विषयवस्तु-संबंधी उद्देश्यों (content-specific goals) (जो गणित में विभिन्न अवधारणाओं से सम्बन्धित हैं जैसे संख्याओं, आकृतियों, पैटर्न को समझना)।

जब बच्चे इसमें गणितीय रूप से कुशल हो जाते हैं तो वे विषयवस्तु-संबंधी उद्देश्यों को प्राप्त कर लेते हैं। इसलिए शुरुआती वर्षों में शिक्षण और सीखने को दो तरह के लक्ष्यों को पाने पर ज़ोर देना चाहिए - उच्चतर उद्देश्य और विषयवस्तु-संबंधी उद्देश्य, क्योंकि दोनों उद्देश्य परस्पर निर्भर और जुड़े हुए हैं।

गणितीय कौशल सिखाने में सरल से जटिल की ओर जाने वाले तरीक़े का इस्तेमाल करना चाहिए। इसका मतलब है कि शुरुआती सालों में बच्चे गणितीय शब्दावली (जैसे मिलान करना, छाँटना, जोड़े बनाना, क्रम में लगाना, पैटर्न, वर्गीकरण करना, एक-से-एक की संगति) और संख्याओं, आकृतियों, स्थान व मापों से सम्बन्धित गणितीय अवधारणाओं को सीखते हैं। बाद के समय में ये

कौशल धीरे-धीरे अधिक जटिल और उच्चतर कौशलों (जैसे मात्रा, आकृति एवं स्थान, मापन) की ओर बढ़ते हैं। गणित सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में उन गणितीय कौशलों जो समझने, हल करने, तर्क करने, संवाद करने और निर्णय लेने के लिए वास्तविक जीवन की स्थिति में गणितीय कौशलोंको लागू करने पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं, पर ज़ोर देने की आवश्यकता है।

ऐसी कई विविध गणितीय प्रक्रियाएँ हैं जो बच्चों को उच्चतर और विषयवस्तु-संबंधी दोनों उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करती हैं। ये हैं, समस्या-समाधान यानी वास्तविक और 'शुद्ध (pure)' दोनों तरह की गणितीय समस्याओं को हल करना; सम्बन्ध बनाना यानी एक अवधारणा और दूसरी अवधारणा के बीच सम्बन्ध बनाना; निरूपणयानी गणितीय अवधारणाओं और विचारों को निरूपित करने के लिए ठोस चीज़ों, दृश्य चित्रों/आरेखों का उपयोग करना; सम्प्रेषणयानी गणितीय विचारों को समझाना और सम्प्रेषित करना; और अनुमान लगाना यानी मात्रा/परिमाण निर्धारित करने और हल करने के लिए सन्निकटन (approximation) का उपयोग करना।

कक्षा में इन प्रक्रियाओं को शामिल करने से बच्चों को एक व्यापक गणितीय अनुभव प्राप्त करने तथा अवधारणात्मक समझ, प्रक्रियात्मक समझ, अनुप्रयोग, अनुकूली तर्क और गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण/रवैये के रूप में गणितीय निपुणता हासिल करने में मदद मिलती है।

4.5.2.1 गणित शिक्षण संबंधी पद्धतियाँ

कार्यों एवं कौशल की प्रकृति और संज्ञानात्मक मांग (cognitive demand) पर विचार करते हुए बच्चों को व्यापक गणितीय अनुभव देने के लिए निम्नलिखित दृष्टिकोणों को गणित सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में एकीकृत किया जा सकता है।

क) ठोस अनुभव के माध्यम से गणितीय अमूर्त विचारों (अवधारणाओं) का विकास करना (ELPS)

गणितीय अवधारणाएँ अमूर्त होती हैं जैसे संख्याओं को समझना, संक्रियाएँ करना और 2D आकृतियाँ बनाना सीखना। इसलिए बच्चों का इन अमूर्त अवधारणाओं को ठोस अनुभव के माध्यम से सीखना और धीरे-धीरे ठोस से चित्रसे अमूर्त धारणाओं की ओर बढ़ना महत्त्वपूर्ण है।
बच्चे जब ठोस अनुभव से जुड़ते हैं, तो वे गणितीय अवधारणाओं का अर्थ आसानी से समझ सकते हैं। अमूर्त गणितीय अवधारणाओं के शिक्षण के लिए निम्नलिखित अनुक्रम का पालन किया जा सकता है।

ELPS के माध्यम से संख्याओं को सीखने का एक उदाहरण :

- **E – Experience (अनुभव):** ठोस वस्तुओं के माध्यम से गणितीय अवधारणा सीखना, उदाहरण के लिए, संख्याओं को सीखने के लिए ठोस वस्तुओं को गिनना।
- **L – Spoken Language (बोली जाने वाली भाषा):** भाषा में अनुभव का वर्णन करना, जैसे, क्या गिना जा रहा है, कितनों को गिना गया है।
- **P – Pictures (चित्र):** गणितीय अवधारणाओं को चित्र रूप में प्रदर्शित करना, उदाहरण के लिए, यदि 3 गेंदों की गणना की गई है, तो इन्हें गेंद के 3 चित्रों के माध्यम से दर्शाया जा सकता है।
- **S – Written Symbols (लिखित प्रतीक):** ठोस अनुभव और चित्र के माध्यम से सीखी गई गणितीय अवधारणा को लिखित प्रतीक रूप में सामान्यीकृत किया जा सकता है। जैसे कि तीन गेंदों के लिए संख्या 3 लिखना।

ख) गणित सीखने को बच्चों के वास्तविक जीवन और पूर्व-ज्ञान से जोड़ना

गणित सीखना बच्चों के वास्तविक जीवन और उनके पूर्व-ज्ञान से सम्बन्धित होना चाहिए। वास्तविक जीवन के उदाहरण बच्चों को गणितीय अवधारणा समझने में मदद करते हैं, वास्तविक जीवन में गणितीय कौशल को लागू करने की क्षमता विकसित करते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वे गणित को सीखने योग्य और कर पाने योग्य के रूप में देखने लगते हैं। इसलिए गणितीय कौशल सिखाते समय शिक्षकों को वास्तविक जीवन के उदाहरणों का उपयोग अवधारणात्मक और समस्या-समाधान क्षमताओं के निर्माण के लिए करना चाहिए।

ग) समस्या-समाधान के साधन के रूप में गणित

समस्या-समाधान गणित सीखने का एक महत्त्वपूर्ण उच्चतर उद्देश्य है। बच्चों को जल्दी समझ में आ जाना चाहिए कि गणित को वास्तविक जीवन की गणितीय समस्या को हल करने के लिए समस्या-समाधान के साधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इसलिए सीखने को न केवल अवधारणाओं के विकास पर बल्कि समस्या-समाधान कौशलों पर भी ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। समस्या-समाधान क्षमताएँ बच्चों को कौशलोंऔर ज्ञान के अर्थ-निर्माण के साथ-साथ यह समझने का अवसर प्रदान करती हैं कि वे अपने ज्ञान या कौशलों को कहाँ लागू कर सकते हैं। बच्चों में समस्या-समाधान क्षमताओं के निर्माण में मदद करने के लिए समृद्ध गणितीय कार्यों को स्थापित करना, समस्या को समझना, रणनीतियाँ तैयार करना, हल करना और हल की जाँच करना व औचित्य देना (justification) महत्त्वपूर्ण क़दम हैं।

निम्नलिखित क़दम बच्चों में समस्या-समाधान की क्षमताओं को विकसित करने में मदद कर सकते हैं :

i. समस्या को समझना - क्या जानते हैं? क्या नहीं जानते हैं?

ii. एक रणनीति/योजना तैयार करना - क्या मुझे सम्बन्धित समस्या का पता है? इसे हल करने के लिए कौन-सी रणनीतियाँ उपयोगी हो सकती हैं?

iii. समस्या का समाधान करना - इसे हल करने के लिए मैं क्या क़दम उठा रहा हूँ? क्या मैं सही क़दम उठा रहा हूँ? क्या मैं इस बारे में बहस कर सकता हूँ कि मैंने इस समस्या को क्यों और कैसे हल किया?

iv. पीछे मुड़कर देखना/समाधान की जाँच करना - क्या मैंने सही काम किया? क्या मैंने सवाल का जवाब दिया?

v. लचीली सोच को प्रोत्साहित करना और समस्या-समाधान के लिए कई रणनीतियों का उपयोग करना।

बच्चों को समस्या-समाधान के एक से अधिक तरीक़े सीखने चाहिए। उदाहरण के लिए 8+7 को हल करने के लिए कौन-सी अलग-अलग रणनीतियाँ हो सकती हैं? कुछ बच्चे 8 के आगे 7 को गिन सकते हैं। तो कुछ बच्चे पहले 7 को 5+2 में बाँटकर फिर उससे 8 में 2 जोड़कर 10 बना सकते हैं और फिर बचे हुए 5 को 10 में जोड़कर 15 तक पहुँच सकते हैं। इसलिए सीखने-सिखाने में बच्चों की मदद करने पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए, जिससे वे समस्या-समाधान का एक नहीं, बल्कि कई तरीक़े ईजाद कर सकें। बच्चों को अपनी रणनीतियों का आविष्कार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए लेकिन इन रणनीतियों के लिए बच्चों को गणितीय अवधारणाओं और प्रक्रियाओं की एक मज़बूत समझ की आवश्यकता होती है।

घ) गणितीय चर्चा, सम्प्रेषण और तर्क का उपयोग करना।

गणित की अपनी भाषा होती है, जो कई मायनों में रोज़मर्रा की भाषा से अलग होती है। इसकी अपनी अनूठी शब्दावली, प्रतीक और संकेत प्रणालियाँ हैं जो अक्सर दैनिक जीवन में उपयोग नहीं की जाती हैं जैसे जोड़,गुणा , +, -, = ।

बच्चा गणित की कक्षा में पहली बार इनका सामना कर रहा होगा। शिक्षकों एवं बच्चों के बीच गणितीय अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, अनुप्रयोगों और तर्क के आसपास समृद्ध बातचीत होना ज़रूरी है। इस चर्चा में उस गणित पर भी ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो बच्चों को उनके वास्तविक जीवन में मिलता है और बच्चों को उनकी गणितीय सोच को समझाने, तर्क करने, औचित्य देने एवं अन्य गणितीय विचारों, साथ ही शिक्षक के स्पष्टीकरण, तर्क और औचित्य को सुनने का अवसर प्रदान करना चाहिए। इसलिए लिखित कार्यों में चुपचाप शामिल होने की बजाय कक्षा में मौखिक गणितीय चर्चा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ङ) गणित सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण/रवैया विकसित करना

कई व्यापक शोध बताते हैं कि बच्चों में कक्षा 3 से ही गणित के प्रति प्रबल नापसन्दगी और नकारात्मक मनोवृत्तियाँ विकसित हो सकती है। शुरुआती शिक्षा न केवल गणितीय दक्षताओं को विकसित करने, बल्कि एक डोमेन के रूप में गणित के साथ सकारात्मक सम्बन्ध विकसित करने के लिए बच्चों की सहायता करने पर भी केन्द्रित होनी चाहिए। गणित एक विषय के रूप में मज़बूत भावात्मक प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न कर सकता है, सिस्टम को इस बारे में जागरूकता फैलाने की ज़रूरत है, जिससे कई लोगों में इस विषय के सम्बन्ध में मौजूद नकारात्मक छवि को निकालकर आरम्भ में ही गणित की पक्की नींव का निर्माण किया जा सके। बच्चों को गणित का आनन्द लेना सीखना चाहिए।

4.5.2.2 आरम्भिक वर्षों में गणित सीखने के घटक/क्षेत्र

क) संख्या और उसके सम्बन्ध (Number and its Relations) से तात्पर्य गिनना, निरूपण संख्या अवधारणाओं (ध्वनि, प्रतीक और मात्रा) को विभिन्न सन्दर्भों, गिनना, निरूपण, और इनके आपसी संबंध में समझना है।

ख) बुनियादी गणित संक्रियाएँ (Basic Mathematical Operations) से तात्पर्य गणना की अवधारणाओं को समझना और उनका उपयोग करके समस्याओं को हल करने के लिए रणनीतियाँ विकसित करना है।

ग) आकृति एवं स्थानिक समझ (Shapes and Spatial Understanding) से तात्पर्य आकृतियों की समझ विकसित करने और आकृतियों को बनाने और वर्गीकृत करने के साथ-साथ स्थानिक बोध व समझ विकसित करने से है।

घ) पैटर्न (Patterns) से तात्पर्य संख्याओं, आकृतियों और डिज़ाइनों की आवर्ती (repeated) व्यवस्था की समझ और कुछ नियमों और संरचना के आधार पर सामान्यीकरण करने से है।

ङ) मापन (Measurement) से तात्पर्य किसी चीज़ को मापने की इकाइयों को समझना और उसका परिमाण निर्धारित करने के लिए उपयोग करना है।

च) आँकड़ों का प्रबंधन (Data Handling) से तात्पर्य आँकड़ों के संग्रह को समझना, उसे एकत्र करना और उसका विश्लेषण करना है।

4.5.2.3 गणित शिक्षण के लिए ब्लॉक्स

गणितीय रूप से कुशल बनने के लिए बच्चों को अवधारणात्मक समझ, प्रक्रियात्मक समझ, रणनीतियों की क्षमता/ अनुप्रयोग, सम्प्रेषण और तर्क और गणित के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण/ रवैया विकसित करने की ज़रूरत है।

गणितीय प्रवीणता के इन सभी पहलुओं को दैनिक कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया के लिए निम्नलिखित चार ब्लॉकों में डिज़ाइन किया जा सकता है। किसी गणितीय अप्रोच/ प्रक्रिया को कार्य की प्रकृति का आधार और इस प्रकृति पर ही आधारित होना चाहिए।

चित्र 4.5 क: चार ब्लॉकों वाला मॉडल – गणित

क) **ब्लॉक 1 - मौखिक गणित सम्बन्धी बातचीत (Oral Math talk):** कक्षा की शुरुआत में 5-10 मिनट के लिए बच्चे संख्याओं वाली कविता गा सकते हैं या गणित के बारे में अपने अनुभवों या अपने जीवन में आने वाली समस्याओं पर चर्चा कर सकते हैं। मौखिक गणना, अवधारणा, रणनीतियों और तर्क पर भी चर्चा हो सकती है। यह औपचारिक शिक्षण प्रक्रिया में जाने से पहले वार्म-अप गतिविधि के रूप में काम करता है।

ख) **ब्लॉक 2 - कौशल सिखाना (प्रवीणता के सभी पहलुओं को मिलाएँ) (Skills teaching - combining all strands):** यह गणितीय अवधारणाओं, समस्या-समाधान एवं सम्प्रेषण को ठोस अनुभव, व्यवस्थित गतिविधियों व निर्देश के माध्यम से सिखाया जाना है, जो 'ज़िम्मेदारी से क्रमिक मुक्ति' (कृपया इस अध्याय का खण्ड 4.2 देखें) अप्रोच का पालन करता है, हालाँकि हर गतिविधि या गणितीय कार्य के लिए समान क्रम होना ज़रूरी नहीं है। शिक्षक गणित के किसी कार्य को सोच सकते हैं और मार्गदर्शित सहायता प्रदान करने से पहले बच्चों को इसे स्वतंत्र रूप से हल करने दे सकते हैं। प्रत्येक बच्चे को सीखने, समझने और प्रतिक्रिया देने का अवसर मिलना चाहिए।

ग) **ब्लॉक 3 - कौशलों का अभ्यास (Skills practice):** गणितीय कौशल का अभ्यास करने के लिए बच्चों को अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, समस्या समाधान, तर्क और सम्प्रेषण पर आधारित विभिन्न प्रकार के समृद्ध गणितीय कार्य प्रदान करना। यह कार्यपुस्तिका (workbook), पाठ्यपुस्तक या शिक्षक-निर्मित टास्क सेट के माध्यम से हो सकता है।

घ) **ब्लॉक 4 - सीखने/समस्या-समाधान को मज़बूत करने के लिए गणित खेल (Math game for reinforcing learning/problem solving):** बच्चों को खेल खेलने में मज़ा आता है। कई तरह के गणितीय खेल हो सकते हैं, जो बच्चों के सीखने को कई तरह से पुख़्ता करने में मदद करते हैं। ये खेल समस्या-समाधान, अवधारणाओं के साथ-साथ तर्क पर आधारित होने चाहिए। बच्चों के सीखने के स्तर के अनुसार समूहवार खेलों की भी योजना बनाई जा सकती है।

ङ) गणित के लिए दिन में कुल सुझाया गया समय 60 मिनट है।

तालिका 4.5 क

ब्लॉक्स		उद्देश्य	प्रस्तावित रणनीतियाँ और पद्धतियाँ (approaches)	प्रस्तावित समय
ब्लॉक्स 1 और 2	मौखिक गणित सम्बन्धी बातचीत	मौखिक गणित को प्रोत्साहित करने के लिए वार्म-अप गतिविधियों के रूप में	ओपन एंडेड / बड़े समूह में चर्चा, गाना, कविता, बच्चों के वास्तविक जीवन में गणित से जुड़े अनुभव, अवधारणा, मौखिक गणना, तर्क	5-10 मिनट्स
	कौशल सिखाना (प्रवीणता के सभी पहलुओं को मिलाएँ)	संरचित शिक्षण/ गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को गणितीय कौशल प्राप्त करने में मदद करना	GRR/ ELPS/ समस्या-समाधान अप्रोच अवधारणाओं, प्रक्रियाओं, अनुप्रयोग, रणनीतियों और तर्क के निर्माण के लिए गतिविधियों का संचालन करना	20-25 मिनट्स

ब्लॉक्स 3 और 4	कौशलों का अभ्यास	कौशल अभ्यास के माध्यम से बच्चों को कौशल में महारत हासिल करने में मदद करना	कार्यपुस्तिकाओं या वर्कशीटों के माध्यम से गणित के कार्य प्रदान करना	15 मिनट्स
	सीखने को मज़बूत करने के लिए गणित का खेल	सीखने को मज़बूत करने के लिए गणित का खेल समस्या-समाधान पर ध्यान केन्द्रित करना	व्यक्तिगत, उप-समूह, समूह अभ्यास	15 मिनट्स

खण्ड 4.6
सकारात्मक कक्षा-कक्ष वातावरण बनाना

जैसे ही बच्चे स्कूल में प्रवेश करते हैं, उनकी दुनिया का विस्तार होता है, वे दोस्त बनाते हैं, परिवार से परे वयस्कों के साथ जुड़ना शुरू करते हैं, और अधिक-से-अधिक चंचल और वाचाल हो जाते हैं। वे हर चीज़ के बारे में जानना और पता लगाना चाहते हैं। बच्चों को उनके व्यवहार में मार्गदर्शन करने और मज़बूत सकारात्मक सम्बन्ध बनाने में शिक्षक की अहम भूमिका होती है।

इसलिए शिक्षकों को बच्चों की ज़रूरतों के प्रति विचार-सम्पन्न और उत्तरदायी होना चाहिए। बच्चों की देखभाल एक जटिल और महत्त्वपूर्ण काम है। यह जटिल है, क्योंकि बच्चों और उनके परिवारों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में कई भाग शामिल होते हैं।

4.6.1 कक्षा-कक्ष वातावरण

वातावरण शब्द का तात्पर्य कक्षा-कक्ष में भौतिक स्थान और 'atmosphere' या मनोवैज्ञानिक वातावरण दोनों से है। भौतिक वातावरण एक संरचना प्रदान करता है जो सुरक्षित अन्वेषण, संज्ञानात्मक विकास और चुनौती की अनुमति देता है। atmosphere या मनोवैज्ञानिक वातावरण कक्षा में होने वाले सभी सम्बन्धों और सामाजिक अन्तःक्रियाओं से बना होता है।

एक सुरक्षित, आरामदायक व ख़ुशहाल कक्षा-कक्ष का वातावरण बच्चों को बेहतर सीखने और अधिक हासिल करने में मदद कर सकता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चे को बेहतर ढंग से सीखने में मदद करने के लिए सीखने की सामग्री, सहायक उपकरण, और गतिविधियों को करने, एक साथ काम करने और खेलने के लिए जगह जैसी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ। **कक्षा-कक्ष एक समावेशी, सीखने के लिए अनुकूल वातावरण वाला होना चाहिए जो हर बच्चे को स्वतंत्रता, खुलापन, स्वीकृति, सार्थकता, अपनापन और चुनौती प्रदान करे।**

बुनियादी स्तर पर कक्षा-कक्ष का वातावरण देखभाल केन्द्रित होना चाहिए। समानुभूति और सम्मान देखभाल के केन्द्र में हैं। यह बच्चों और रिश्तों के लिए चिन्ता और ज़िम्मेदारी का मनोभाव है।

4.6.2 बच्चों के साथ कक्षा-कक्ष के मानदण्ड बनाना

बच्चों को एक कक्षा-कक्ष में एक साथ रहने के मान्य मानदण्डों से धीरे-धीरे लेकिन स्पष्ट रूप से जितना जल्दी हो सके परिचित कराया जाना चाहिए। यह उन्हें स्पष्ट दिशा और कक्षा में अच्छी तरह से सेटल होने का एक तरीक़ा सिखाता है।

बच्चों के साथ बातचीत करना और उनके साथ मानदण्डों पर सहमत होना सबसे बेहतर होता है। यह सकारात्मक कक्षा कक्षा-कक्ष संस्कृति के पोषण और निर्माण में मदद करते हुए स्वामित्व और ज़िम्मेदारी की एक बढ़ी हुई भावना की ओर जाता है। सकारात्मक वाक्यांशों के साथ मानदण्ड छोटे, स्पष्ट और समझने में आसान होने चाहिए। एक बार मानदण्डों पर सहमति हो जाने के बाद, हर एक को उदाहरणों के साथ विस्तार से समझाया जाना चाहिए।

एक पोस्टर पर प्रत्येक के लिए एक समान मानदण्डों को दृश्यों के रूप में सूचीबद्ध करना और इसे बच्चों की नज़र के स्तर पर लटका देना बच्चों को बेहतर ढंग से समझने और उनका पालन करने में मदद करेगा। मानदण्ड हो सकते हैं :

क) सुनो जब कोई दूसरा व्यक्ति बात रख रहा हो

ख) समूह में बोलने से पहले हाथ उठाएँ

ग) अपने सहपाठियों और अपने शिक्षक से सम्मानपूर्वक बात करें

घ) अपने हाथ, पैर इधर-उधर न चलाएँ और किसी भी वस्तु को अपने पास ही रखें

मानदण्डों को सकारात्मक तरीक़े से लागू किया जाना चाहिए। जब नियम तोड़े जाते हैं, तो बच्चों को दीवार पर लगे 'मानदण्डों' के पोस्टर की ओर धीरे से इशारा करें और इसके बारे में बात करें।

शिक्षक की आवाज़ 4.6 क

उपस्थिति डलिया !

5 से 6 साल के बीच के 20 बच्चों की मेरी कक्षा में हमने तय किया है कि हमारे पास सामान्य उपस्थिति अंकन प्रणाली नहीं होगी। इसके बजाय, हमने कक्षा में बच्चों के नाम पट्टिकाएँ बनाई हैं; मेरे लिए भी एक पट्टिका है और हम उन्हें एक डलिया में डालते हैं। जो लोग कक्षा में आते हैं, वे अपने नाम वाली पट्टिका उठाकर अपने अन्य सामान के बगल में अपने शेल्फ़ में रख देते हैं। वापस जाते समय हम इन पट्टियों को वापस डलिया में रख देते हैं।

4.6.3 कठिन व्यवहार का प्रबन्धन

कई कारणों से बच्चे अनुपयुक्त व्यवहार करते हैं। व्यवहार अक्सर वह भाषा है, जिसके ज़रिए से बच्चे भावनाओं और विचारों को व्यक्त करते हैं। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि वे सार्वजनिक व्यवहार मानदण्डों या व्यवहार के वैकल्पिक तरीक़ों से अनजान रह जाते हैं, और इसलिए नहीं कि वे 'बुरे' हैं या वे हमें 'परेशान करना' चाहते हैं।

कभी-कभी वे अपनी ओर ज़्यादा ध्यान आकर्षित करवाने के लिए इस तरह के व्यवहार का उपयोग करते हैं। वे क्रोधित या असहाय हो सकते हैं और इसे व्यक्त करने का कोई अन्य तरीक़ा नहीं जानते हैं। बच्चों को सुरक्षित और नियंत्रित महसूस करने की आवश्यकता है - जब वह नियंत्रण हटा लिया जाता है, तो वे इस तरह के व्यवहार के माध्यम से इसे वापस पाने की कोशिश कर सकते हैं। कभी-कभी यह व्यवहार नींद की कमी, ख़राब पोषण, स्वास्थ्य कारणों या विकासात्मक देरी या कमी, पारिवारिक शिथिलता या तनाव के कारण हो सकता है।

कक्षा को बाधित या नुकसान पहुँचाने वाले कठिन व्यवहार के कुछ उदाहरण हैं:

क) आक्रामक व्यवहार (जैसे दूसरों को चोट पहुँचाना - मारना, काटना, चुटकी बजाना, वस्तुओं को फेंकना)

ख) असामाजिक व्यवहार (जैसे अनुचित भाषा का उपयोग करना, नाम-पुकार करना, साझा करने से इनकार करना)

ग) बाधाकारी व्यवहार (जैसे सर्कल टाइम को बाधित करना, कक्षा-कक्ष में चारों ओर दौड़ना, कक्षा में चिल्लाना, वस्तुओं को गिराना, किताबें फाड़ना, खिलौने तोड़ना, दूसरों के काम को नुकसान पहुँचना)

घ) अनुचित अभिव्यक्ति (जैसे अत्यधिक रोना, चिल्लाना, मुँह फुलाना)

4.6.3.1 बच्चों को स्थिर होने में मदद करना, उनके व्यवहार को सकारात्मक रूप से मार्गदर्शन देना

बच्चों की देखभाल करने वाले प्रत्येक वयस्क की ज़िम्मेदारी है कि वह बच्चों को उचित व्यवहार के लिए मार्गदर्शन, सुधार और सामाजीकरण करें। सकारात्मक मार्गदर्शन महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि वे बच्चों के आत्म-नियंत्रण को बढ़ावा देते हैं, बच्चों को ज़िम्मेदारी सिखाते हैं और बच्चों को सुविचारित विकल्प चुनने में मदद करते हैं।

देखभाल करने वाले और सम्मानीय बुज़ुर्ग छोटे बच्चों को वैकल्पिक व्यवहारों का पता लगाने, सामाजिक कौशल विकसित करने और समस्याओं को हल करना सीखने में मदद के लिए एक सहायक वातावरण बनाते हैं। इसे मार्गदर्शन का सकारात्मक अप्रोच कहा जाता है। एक प्रभावी मार्गदर्शन अप्रोच परस्पर संवादात्मक होता है। वयस्क और बच्चे दोनों बदलना सीखते हैं, क्योंकि वे एक-दूसरे के साथ एक समान उद्देश्य को ध्यान में रखकर बातचीत करते हैं।

बच्चे के विकास को समझने से हमें बच्चों से व्यवहार/अपेक्षाओं के उचित मानकों को स्थापित करने, बेहतर विकल्पों के बारे में सोचने, साथ ही उम्र के अनुसार स्पष्टीकरण या बच्चे को समझाने के तरीक़ों में मदद मिलेगी। इससे बच्चे का स्वाभिमान और गरिमा भी बनी रहेगी।

अपमान या नीचा दिखाने वाले कार्यों के कारण बच्चे अपने शिक्षकों, माता-पिता और अन्य देखभाल करने वालों को नकारात्मक रूप से देखना शुरू कर सकते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया बाधित हो सकती है और बच्चे दूसरों के प्रति निर्दयी होना सीख सकते हैं।

हालाँकि, बिना इस बात को ध्यान में रखे कि बच्चों द्वारा किए जाने वाले काम छोटे हैं, उनकी गति धीमी है, उनकी प्रगति को स्वीकार करने से उनमें स्वस्थ विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

4.6.3.2 शिक्षक द्वारा सकारात्मक मार्गदर्शन के उदाहरण

क) बच्चों को बताएँ कि उनसे क्या उम्मीद की जाती है। नकारात्मक की बजाए, सकारात्मक कथनों में दिशा-निर्देश और सुझाव दें। उदाहरण के लिए ‘झूले के पास मत जाओ’ के बजाए ‘शुभा घास के किनारे पर चलो, ताकि आप झूले की चपेट में न आ जाओ।’

ख) बच्चे जो काम ठीक से करते हैं और शिक्षक जो बार-बार देखना चाहते हैं, उसे पुनर्बलन दें। यह सकारात्मक आधार पर सम्बन्ध बनाने में मदद करता है। जैसे ‘बहुत बढ़िया किया जैकब। आपने उन ब्लॉक्स को बनाने के लिए कड़ी मेहनत की है।’

ग) आप बच्चों से क्या करवाना चाहते हैं, इस पर ज़ोर देते हुए सीधे सुझाव दें या उन्हें याद दिलाएँ। बिना किसी झिझक या टकराव के काम पर फिर से ध्यान केन्द्रित करने में उनकी मदद करें। जैसे, ‘जल्दी करो और अपने सैंडल बांधो ताकि हम जा सकें’ की बजाय ‘नेमी मुझे पता है कि आप प्रकृति की सैर को लेकर उत्साहित हैं, ऐसा लगता है कि आपने अपनी सैंडल पहन ली है ताकि हम जा सकें।‘

घ) जब भी सम्भव हो सकारात्मक पुनर्निर्देशन का प्रयोग करें। जैसे, 'चलो, सेल्वा उन गेंदों को उछालने के लिए एक टोकरी लाते हैं। कुछ इस तरह जिससे पास में खेल रहे बच्चों को कोई भी परेशानी न हो।'

ङ) प्रोत्साहन का उचित उपयोग करें, सफ़लता प्राप्त करने में बच्चों को मदद करने पर ध्यान दें और समझें कि आप उन्हें क्या सिखाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, 'तेनजिंग, अब जब आपने दो पहेलियाँ सुलझा ली हैं, तो क्या आप तीसरी पहेली को भी सुलझा सकते हैं?'

च) अपने अनुरोध की वजह बताएँ। बच्चों को आपके अनुरोध की वजहों को सरल, सीधे-सादे शब्दों में बताएँ। बच्चे जब इन वजहों को समझते हैं तो उनमें सहयोग करने की अधिक सम्भावना बढ़ जाती है। जैसे, 'पल्लवी, कुर्सियाँ हटाइए' की बजाए 'पल्लवी, अगर आप उन कुर्सियों को हटा देती हैं, तो आपके और अब्दुल के पास नृत्य करने के लिए और ज़्यादा जगह होगी।'

शिक्षक की आवाज़ 4.6 ख

सच बताना

बुनियादी अवस्था में ज़्यादातर बच्चे स्वाभाविक रूप से ईमानदार और निष्कपट होते हैं। इसे विकसित करना और इसे हर तरह से प्रोत्साहित करना महत्त्वपूर्ण है।

कई शिक्षक सच बोलने वाले बच्चों को पहचानने और उनकी सराहना करने के सरल तरीक़े खोजते हैं और इस प्रकार इसे सही काम के रूप में पुष्ट करते हैं। यह शिक्षक और बच्चे के बीच के संबंध को मज़बूत करने में भी मदद करता है।

नीचे दो शिक्षकों की आवाज़ें दी गई हैं।

हर दिन स्कूल की शुरुआत मेरे जैसे शिक्षकों के लिए एक व्यस्त समय होता है।

आज जब मैं अपनी कक्षा के लिए मानसिक रूप से तैयार हो रहा था और अपने बच्चों को छोड़ने आए माता-पिता और बच्चों के साथ बातचीत कर रहा था, तभी मुझे एक फोन आया। दूसरी तरफ़ की आवाज़ ने कहा, 'मैं गुरप्रीत की माँ बोल रही हूँ। गुरप्रीत स्कूल में आने से इनकार कर रहा है। क्या आप कृपया उससे बात कर सकते हैं?'

मैं मान गया और गुरप्रीत से पूछा कि क्या बात है। उसने जवाब दिया, 'मेरे जूते काफ़ी ख़राब हो गए हैं। माँ मेरे लिए नए जूते ख़रीदने के लिए तैयार हो गई हैं और मैं उनके साथ ख़रीदारी ख़रीददारी करने जाना चाहता हूँ।'

मैंने इस तथ्य की सराहना की कि उसने मुझे सच बताया और कोई बनावटी कारण देने की कोशिश नहीं की। मैंने इसके बारे में कुछ पल सोचा और फ़िर उससे कहा, 'आपको नए जूते लेने चाहिए, लेकिन आप स्कूल में लम्बे ब्रेक के दौरान दुकान पर जा सकते हैं और फिर अपने नए जूते पहनकर वापस आ सकते हैं। इस तरह आपकी कोई क्लास भी मिस नहीं होगी।'

वह मान गया। जब गुरप्रीत अपने नए जूतों में कक्षा में वापस आया तो उसके चेहरे पर मुस्कान थी, जो मुझे बच्चों के साथ इस तरह के ईमानदार जुड़ाव के मूल्य के बारे में आश्वस्त करने के लिए ज़रूरी थी।

हर एक दिन के आख़िर में मैं बच्चों को उनकी छोटी-सी वर्कबुक में कार्य (task) देती हूँ। एक दिन मैंने देखा कि मुमताज़ के पास उसकी वर्कबुक में कोई टास्क नहीं था। जब मैंने पूछा कि क्या मैं उसे एक टास्क देने से चूक गई तो वह चुप रही। मैंने उसे जाने दिया। हालाँकि, यह अगले कुछ हफ़्तों तक ऐसे ही जारी रहा।

जब मैंने उससे दोबारा पूछा, तो उसने जवाब दिया, 'आप मुझे टास्क दे रही हैं। लेकिन मैं पन्नों को फाड़ रही हूँ, क्योंकि मुझे उन्हें पूरा करना मुश्किल हो रहा है। मुझे अफ़सोस है।'

मैं उसकी ईमानदारी से प्रभावित थी। मैंने उसे नहीं डाँटा। मैंने उससे कहा कि मैं वास्तव में उसकी ईमानदारी की सराहना करती हूँ और उसे सरल टास्क दूंगी और उसने उन्हें करने का वादा किया। और इसी तरह अगले कुछ हफ़्तों में यह समस्या ख़त्म हो गई।

4.6.4 अनुशासन

अनुशासन मार्गदर्शन रणनीतियों का एक हिस्सा है, जिसका उपयोग बच्चों को उनके कार्यों के लिए ज़िम्मेदार बनाने, आत्म-नियंत्रण सीखने और उचित व्यवहार करने में मदद करने के लिए वयस्क करते हैं। अनुशासन का अर्थ सज़ा देना और व्यवहार को रोकना नहीं है।

एक अच्छी मार्गदर्शन प्रक्रिया का एक प्रमुख उद्देश्य बच्चों को आत्म-अनुशासन प्राप्त करने में मदद करना है। यह तभी होता है जब वयस्क उन तरीक़ों को लेकर आगे बढ़ते हैं, जो बच्चों को ख़ुद को नियंत्रित करने की विकासशील क्षमता को आधार प्रदान करते हैं। धीरे-धीरे बच्चों को अपने कार्यों को नियंत्रित करने का अवसर देकर, वयस्क विश्वास निर्माण करते हैं।

उभरती हुई पहल के साथ छोटे बच्चों के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण क़दम है। अतिरिक्त ज़िम्मेदारी और विश्वास के साथ आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास का एक अतिरिक्त आयाम आता है। ऐसे बच्चे सक्षम और सार्थक महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, प्रकृति की सैर पर बच्चों को उस टोकरी को सम्भालने दें जिसमें आप चाहते हैं कि वे कंकड़ इकट्ठा करें। इनडोर खेल के दौरान बच्चों को अलमारियों/बक्सों से सामग्री लाने और उन्हें वापस रखने के लिए प्रोत्साहित करें। बड़े बच्चों को सभी को भोजन परोसने के लिए प्रोत्साहित करें।

आत्म-सम्मान के साथ-साथ बच्चे को वयस्कों के सीमित नियंत्रण के साथ आने वाली स्वतंत्रता का स्वाद लेना चाहिए। हर समय क्या करना है, यह बताने से बच्चे आज़ादी को सम्भालना नहीं सीखते। केवल जब उन्हें खुद को परखने और कुछ निर्णय लेने का अवसर मिलेगा, तभी वे अपनी क्षमताओं को जान पाएंगे। छोटे बच्चों को इसे वयस्कों के साथ सुरक्षित स्थानों पर सीखना चाहिए जो उन्हें उतनी ही स्वतंत्रता देते हैं, जितनी वे ज़िम्मेदारी से सम्भाल सकते हैं।

शिक्षक की आवाज़ 4.6 ग

आज जैसे ही मैं कक्षा में गया मेरा स्वागत कुछ असामान्य चीज़ों से हुआ। कक्षा के एक कोने में मोइतेई रो रही थी और सियामा उसके पास खड़ी थी। सियामा मेरी कक्षा के सबसे शरारती बच्चों में से एक है और मेरा पहला विचार यह था कि उसने मोइतेई के साथ कुछ किया है।

मैंने पूछा कि क्या हो रहा था और कई आवाज़ें सुनी, ‘ मोइतेई ने संगतेई को मारा, और वह अपने घाव की दवा लेने गई है।’

मैं हैरान था। मोइतेई और संगतेई अच्छे दोस्त थे और मोइतेई ने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया था।

मैंने मोइतेई से पूछा कि वह क्यों रो रही है लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। जल्द ही, संगतेई कक्षा में वापस आ गई - उसके माथे पर एक छोटा-सा घाव था जो पट्टी से ढका हुआ था। उसने भी कहा, ‘मोइतेई ने मुझे मारा।’

मैंने बच्चों को अपनी-अपनी जगह बैठने और यह बताने के लिए कहा कि क्या हुआ था। सबने एक जैसी बातें कही। हुआ यह था कि मोइतेई ने कक्षा में रखे TLM में से लकड़ी के मोतियों की एक डोरी ली और उसे चारों ओर घुमाया, इस दौरान वह संगतेई के सिर में लग गई। संगतेई ने घटना के विवरण की पुष्टि की।

मैंने बच्चों के साथ इस घटना पर चर्चा जारी रखी। अन्त में संगतेई सहित वे सभी इस बात पर सहमत हो गए कि मोइतई ने गलती से संगतेई को मारा था। मोइतई और संगतेई दोनों शान्त हो गए। फिर मैंने मोइतई और बाकी बच्चों की मदद करने के लिए बातचीत जारी रखी, यह समझाने के लिए कि मोतियों की डोरी के साथ खेलना ख़तरनाक था। मोतियों की डोरी एक अलग उद्देश्य के लिए है। मोइतई ने माफ़ी मांगी।

अगर मैं शुरू में ही आई राय पर ही जवाब देता तो यह ग़लत होता। यह भी ग़लत होता अगर मैं यह मान लेता कि मोइतेई ने संगतेई को मारा है।

लेकिन सभी बच्चों के लिए यह समझना ज़रूरी था कि कार्यों के परिणाम होते हैं, अभीष्ट या अलग भी। जिस तरह से मैंने इस स्थिति को सम्भाला, उससे और परिणाम से भी मैं सन्तुष्ट था।

4.6.5 शिक्षक द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा

जैसे-जैसे शिक्षक समस्या युक्त व्यवहारों को सम्भालने का अनुभव प्राप्त करते हैं, वे सही प्रकार की भाषा का उपयोग करना सीखते हैं। शिक्षकों को पता चल जाता है कि आवाज़ कितनी सख़्त हो सकती है और कौन-से शब्द सबसे अच्छा काम करेंगे और कब काम में लाए जा सकते हैं। वे चेहरे के भावों से अवगत हो जाते हैं और इस बात से भी कि एक स्पर्श या एक नज़र बच्चों को क्या महसूस करा सकती है। वे अपने शरीर का उपयोग कैसे करते हैं यह भी उनके अनुशासन के प्रति एक अलग दृष्टिकोण और मनोभावों को दर्शाता है। नए शिक्षक अनुभव के माध्यम से इन उपकरणों का उपयोग करना सीखते हैं, जो उनके और बच्चों के लिए सबसे अच्छा काम करेगा।

क) आवाज़: बच्चों से उसी तरह बात करें जैसे आप दूसरे लोगों से करते हैं। आवाज़ को नियंत्रित करना सीखें और बच्चे आपका अनुसरण करें, इसके लिए अच्छे स्पीच पैटर्न का उपयोग करें। सुनने और सामान्य स्वर में बोलने के लिए पर्याप्त क़रीब पहुँचें; बच्चे के शारीरिक स्तर तक नीचे झुकें। अक्सर, वॉल्यूम और पिच कम करना प्रभावी होता है।

ख) शब्द: जितने कम शब्द, उतना अच्छा। एक बार बोले गए सरल, स्पष्ट कथनों का अधिक प्रभाव पड़ेगा। बच्चा उभरे हुए वास्तविक मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करने में सक्षम होगा। क्या हुआ इसका एक संक्षिप्त विवरण, क्या व्यवहार स्वीकार्य है और क्या नहीं है इस पर एक या दो शब्द और सम्भावित समाधान के लिए एक सुझाव, यह सभी आवश्यक हैं।

शिक्षकों को शब्दों का चयन सावधानी से करना होगा। उन्हें बच्चे को जो अपेक्षित है ठीक वही बताना चाहिए। उदाहरण के लिए, 'किन्नरी, ब्लॉक बिल्डिंग को आनन्द के ट्रक से दूर ले जाओ, ताकि आनन्द फिर से उससे न टकराए।' यह किन्नरी को सकारात्मक, ठोस तरीक़े से बताता है कि वह अपनी ब्लॉक बिल्डिंग की सुरक्षा के लिए क्या कर सकती है। अगर उसे कहा जाता, 'किन्नरी, देखो कि तुम ब्लॉक बिल्डिंग कहाँ बना रही हो' तो उसे समझ नहीं आता कि समस्या को हल करने के लिए क्या क़दम उठाना है।

ग) शारीरिक भाषा (Body Language): छोटे बच्चों के साथ काम करते समय, शिक्षक को शरीर की ऊँचाई व स्थिति के बारे में पता होना चाहिए और बच्चे के स्तर तक आना चाहिए। बच्चे के सिर से दो या तीन फीट ऊपर या कमरे के दूसरे छोर से चिल्लाकर गर्मजोशी से देखभाल और चिन्ता करना मुश्किल है।

जिस तरह से शिक्षक अपने शरीर का उपयोग करते हैं वह घनिष्ठ सम्बन्धों और मेल-जोल को आमंत्रित या अस्वीकार करता है। एक बच्चा शिक्षकों को अधिक सुलभ पाएगा यदि वे नीचे बैठे हैं, उनके कंधे झुके हों, बजाय हाथ बाँधे हुए खड़े होने के।

विवेक का पूर्ण उपयोग शब्दों के प्रभाव को नरम कर सकता है। एक बच्चे के हाथ पर एक स्थिर पकड़ जो चोट खा रहा है, या कंधे पर एक कोमल स्पर्श, बच्चे को जताता है कि वयस्क उन्हें दूसरों से बचाने के लिए है। आँखों का सम्पर्क ज़रूरी है। शिक्षक किसी स्थिति की गम्भीरता को आँखों और चेहरे के भावों के माध्यम से सम्प्रेषित करना सीखते हैं। वे इस तरह आश्वासन, चिन्ता, उदासी और स्नेह भी दिखाते हैं। शारीरिक उपस्थिति से बच्चे को एक सन्देश देना चाहिए कि शिक्षक वहीं है, उपलब्ध है, और उसका ध्यान रख रहा है।

घ) अभिवृत्ति (Attitude): अभिवृत्ति बच्चों का मार्गदर्शन करने की अनकही भाषा का हिस्सा है। मनोवृत्ति अनुभव से उत्पन्न होती है। शिक्षक को अपने अनुशासित होने के तरीक़े की जाँच करनी होगी और इसके बारे में अपने अनुभवों और भावनाओं को स्वीकार करना होगा, विशेष रूप से उनके अपने सन्दर्भ और पृष्ठभूमि के आधार पर, बच्चे कैसे होते हैं, इस पर उनकी अपनी धारणाएँ हो सकती हैं।

4.6.6 क्या नहीं करना चाहिए

क) बच्चों को लगातार यह बताने से बचें कि वे क्या नहीं कर सकते। यदि वयस्क कई नकारात्मक शब्दों का उपयोग करते हैं, जैसे कि नहीं, इसे रोको, इसे बंद करो, या चुप रहो, तो बच्चे शिक्षक, माता-पिता या देखभाल करने वाले की नकल कर सकते हैं। बहुत अधिक 'क्या न करें' भी बच्चों में नकारात्मकता का कारण बनता है।

i. उदाहरण के लिए, 'विजय, अण्डा मत गिराओ' की बजाय, आप कह सकते हैं 'अण्डे को अपने दोनों हाथों में इस तरह ले लो, विजय, ताकि वह टूटे या आपके हाथों से गिरे नहीं।'

ii. उदाहरण के लिए, 'चित्रा, अपनी पोशाक को कीचड़ में मत लगने दो' कीबजाय आप कह सकते हैं 'अपनी पोशाक को अपनी कमर के चारों ओर इस तरह बांधो ताकि यह गन्दा न हो।'

ख) बच्चों के स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने से सावधान रहें।

i. उदाहरण के लिए, जब पवनी टेबल पर ले जाते वक़्त दूध को गिराती है, तब यह कहने की बजाय कि 'क्या आप कुछ भी सही नहीं कर सकतीं' कहें, 'यह एक कठिन काम है, हम इसे साफ़ कर देंगे और आप सावधानी से एक बार फिर कोशिश कर सकती हैं।'

ग) जब कोई बच्चा ग़लती करता है, तो ईमानदारी से प्रतिक्रिया करें और कटाक्ष करने से बचें।

घ) कोशिश करें कि बच्चे की उपेक्षा न करें, चाहे उसका व्यवहार जैसा भी हो।

ङ) किसी बच्चे की दूसरों के सामने कभी भी आलोचना न करें।

मार्गदर्शन के सबसे प्रभावी तरीक़े स्पष्ट, सुसंगत और निष्पक्ष नियम हैं, जिन्हें मानवीय तरीक़ों से लागू किया जाता है। नियम तोड़ने पर बच्चों को इसके परिणामों के बारे में पता होना चाहिए। अच्छे मार्गदर्शन की प्रक्रियाएँ बच्चे के व्यवहार के सकारात्मक पहलुओं पर ज़ोर देते हैं, न कि केवल समस्यायुक्त व्यवहार पर। अगर बच्चों को अपने कार्यों की ज़िम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और समस्या-समाधान प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाता है तो मार्गदर्शन उपायों का उनके लिए अधिक अर्थ होता है।

बॉक्स 4.6 क

नैतिक चुनाव करना सीखना और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होना सीखना

फाउंडेशनल स्टेज पर बच्चों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे अपने रोज़मर्रा के हिस्से के रूप में सही काम करना सीखें। उन्हें सभी प्राणियों और प्रकृति की देखभाल करना भी सीखना चाहिए।

हालाँकि, इस उम्र में जिस तरह से वे सीखते हैं, उसे देखते हुए यह सब उनके रोज़मर्रा के हिस्से के रूप में किया जाना चाहिए - उनकी रोज़मर्रा की बातचीत और खेल गतिविधियों के माध्यम से, उनके द्वारा सुनी-सुनाई जाने वाली कहानियाँ और किसी भी चीज़ से अधिक, उनकी क्रियाओं पर शिक्षक की प्रतिक्रियाएँ।

इस पूरे अध्याय में विशेष रूप से शिक्षक की आवाज़ में इसके उदाहरण हैं। यह वह तरीक़ा है जिससे शिक्षक सही संकेत चुनते हैं और तात्कालिक स्थिति का उपयोग करके उन सही चुनावों को सुदृढ़ और प्रोत्साहित करते हैं जिनसे बच्चे सबसे अधिक सीखते हैं।

खण्ड 4.7
वातावरण का आयोजन

4.7.1 बैठना

एक साथ बैठना सरल और स्वाभाविक तरीक़े से एक साथ रहना सीखने का एक अच्छा तरीक़ा है। एक साथ बैठना दोस्ती, सम्बन्ध बनाने और अन्य बच्चों के साथ रहने को प्रोत्साहित करता है जो 'मुझसे अलग' हो सकते हैं। एक साथ बैठना, उदाहरण के लिए, छोटे समूहों में या एक बड़े घेरे में, एक साथ सीखने, सहयोग करने और विविधता की स्वाभाविक स्वीकृति को प्रोत्साहित करता है।

फाउंडेशनल स्टेज पर कक्षा-कक्ष में बैठने की व्यवस्था लचीली होनी चाहिए और कक्षा में प्रयोग किए जा रहे शिक्षणशास्त्र को प्रतिबिम्बित करना चाहिए। कभी-कभी बच्चों को शान्त व्यक्तिगत समय की आवश्यकता होती है, कभी-कभी वे जोड़े या छोटे समूहों में काम करते हैं और कभी-कभी वे पूरे समूह के साथ मिलकर काम करते हैं।

बैठने की व्यवस्था अलग-अलग तरीक़ों से की जा सकती है, शैक्षणिक आवश्यकताओं को सुनिश्चित करते हुए बच्चों को विविधता और विकल्प दिए जा सकते हैं। **इस चरण में प्रत्येक को तय जगह पर बैठने की आवश्यकता नहीं है। असल में यह शिक्षक और बच्चों दोनों को बाधा पहुँचा सकता है।**

4.7.2 प्रदर्शित करना और प्रिंट-समृद्ध वातावरण

कक्षा में प्रदर्शित सामग्री सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बनती है। कक्षा में प्रदर्शित सामग्री अनिवार्य रूप से बच्चों द्वारा बनाए गए 'तैयार' उत्पादों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इसमें वह सामग्री भी शामिल है जिस पर अभी काम हो रहा है, जैसे कंकड़ या पौधों का संग्रह जो किसी विशेष अध्ययन के लिए उपयोग किए जा रहे हैं। सभी बच्चों का काम प्रदर्शित होना चाहिए, न कि केवल हर बार चुने गए 'सर्वश्रेष्ठ' काम।

शिक्षकों को प्रदर्शनों के आयोजन में आयु-उपयुक्त भाषा और शैली सुनिश्चित करनी चाहिए ताकि वह सभी बच्चों के लिए सुलभ और बोधगम्य हों। प्रदर्शनों को बच्चों की नज़र के स्तर पर रखना सबसे अच्छा होगा।

बच्चों को समय-समय पर अपने काम को प्रदर्शित करने और उन्हें बदलने में शामिल किया जा सकता है। तैयार और उपयोग किए गए चुनिन्दा डिस्प्ले अलग-अलग बच्चों के पोर्टफ़ोलियो में जोड़े जा सकते हैं।

इन आरम्भिक वर्षों में भाषा सीखने पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, पढ़ने और लिखने को प्रोत्साहित करने के लिए एक प्रिंट-समृद्ध वातावरण (जैसे दीवार पर शब्द, शब्द कार्ड, कक्षा में वस्तुओं पर शब्द लेबल और आसानी से सुलभ कक्षा पुस्तकालय) की उपलब्धता महत्त्वपूर्ण है।

4.7.3 कक्षा-कक्ष में जीवंत लर्निंग कॉर्नर बनाना

लर्निंग कॉर्नर रिक्त स्थान को इस तरह से व्यवस्थित करने में मदद करते हैं जो बच्चों को आकर्षित करता है, बच्चों को विचारशील बनाता है, रुचि और जिज्ञासा को बढ़ाता है। वे स्वतंत्र और सहयोगी खेल के अवसरों के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए लचीलापन और स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। वे सक्रिय खेल से अलग किसी स्थान पर शान्त खेल को भी संभव करते हैं। वे स्वतंत्र शिक्षण और शिक्षक-निर्देशित बातचीत दोनों को बढ़ावा देते हैं, विभिन्न लर्निंग कॉर्नर में प्रोत्साहित विभिन्न प्रकार के खेल के माध्यम से समग्र विकास के अवसर प्रदान करते हैं। लर्निंग कॉर्नर में नाटकीय खेल, ब्लॉक्स/पहेली, गणित, कला/चित्रकला और किताबें शामिल हैं।

लर्निंग कॉर्नर की स्थापना और रखरखाव में शिक्षक सक्रिय भूमिका निभाते हैं। वे इन कोनों को आकर्षित बनाए रखने व जीवन्त रखने के लिए ज़िम्मेदार होते हैं, और यह सुनिश्चित करते हैं कि वे सभी बच्चों की सीखने की ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

क) शिक्षक को बच्चों के विभिन्न समूहों के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन करना चाहिए। सामग्री ऐसी होनी चाहिए कि कोई भी बच्चा, जिसने अभी-अभी एक अवधारणा सीखना शुरू किया है या कोई अन्य जिसने इसके बारे में अधिक सीखा है, अपने लिए कुछ उपयुक्त पाता है।

ख) बच्चों को जो भी सामग्री वे चाहते हैं उन्हें देखने की अनुमति दी जानी चाहिए। शुरुआत में बच्चे अक्सर एक कोने से दूसरे कोने में जा सकते हैं। एक बार जब वे टिक जाते हैं, तो वे लम्बी अवधि के लिए अपनी पसन्द की गतिविधियों और सामग्री के साथ गम्भीरता से जुड़ना शुरू कर देते हैं।

ग) शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को सप्ताह के दौरान सभी कॉर्नर्स में जाने के लिए प्रोत्साहित करे। यदि सीमित सामग्री है, तो शिक्षक प्रतिदिन प्रत्येक कोने में बच्चों की संख्या पर निर्णय ले सकता है। कुछ सामग्री को हर 15 दिनों में बदला जा सकता है। इससे बच्चों को नई चीज़ों की खोज करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। शिक्षक उस अवधि के सीखने के प्रतिफलों के लिए सामग्री को align कर सकता है।

घ) जब बच्चे कॉर्नर में खेल रहे हों, तब शिक्षक को बच्चों के एक समूह से दूसरे समूह के पास जाना, उनके साथ बातचीत करना और उनके साथ खेलना ज़रूरी होता है। वह बच्चों के आधे समूह को अपने समय का उपयोग मुक्त खेल के रूप में करने दे सकता है और समूह के दूसरे आधे हिस्से के लिए मार्गदर्शित या संरचित खेल पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है, जिससे उन्हें कुछ विशिष्ट सीखने में मदद मिलती हो।

ङ) जब भी बच्चे कॉर्नर्स का उपयोग करते हैं, तब शिक्षक को बच्चों का निरीक्षण करना चाहिए। वह सवाल पूछ सकता है, किसी विचार का परिचय दे सकता है, या उसका विस्तार कर सकता है, पहेली हल करने के लिए सुराग दे सकता है, कहानी में कुछ स्पष्ट कर सकता है, बच्चों की प्रतिक्रियाओं को रिकॉर्ड कर सकता है और बच्चे क्या कर रहे हैं, इसे संक्षिप्त में नोट कर सकता है। यह प्रक्रिया अवलोकनों के आधार पर अगले दिन, अगले सप्ताह या महीने की योजना बनाते समय शिक्षक को सुविचारित निर्णय लेने में मदद करती है।

च) कॉर्नर्स का इस्तेमाल करते वक़्त बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए।

अधिक विवरण के लिए कृपया अधिगम वातावरण पर अध्याय 5, खण्ड 5.6 देखें।

अध्याय 5

शिक्षण के लिए विषयवस्तु का चयन, संगठन और संदर्भीकरण

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु में सीखने का माहौल, शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) और किताबें शामिल हैं। विषयवस्तु का चयन काफ़ी हद तक दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के साथ-साथ अपनाए जाने वाले शैक्षणिक पद्धति (pedagogical approach) से निर्धारित होता है।

फाउंडेशनल स्टेज के लिए सीखने के वातावरण की व्यवस्था और आयोजन बहुत महत्त्वपूर्ण है। फाउंडेशनल स्टेज में बच्चे सबसे प्रभावी ढंग से आस-पास की भौतिक दुनिया के साथ उलट-पलट करते हुए और उससे सक्रिय रूप से जुड़कर सीखते हैं। इस समृद्ध संवेदी अनुभव को सुनिश्चित करने में सावधानीपूर्वक चुनी गई शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) कक्षाओं में एक आवश्यक भूमिका निभाती है।

फाउंडेशनल स्टेज के लिए NCF पर आधारित पाठ्यक्रम विकसित करने की प्रक्रिया के बारे में खण्ड 5.1 में विस्तार से बताया गया है। खण्ड 5.2 फाउंडेशनल स्टेज में सभी आयु समूहों में विषयवस्तु चयन के सिद्धान्तों और विचारों की रूपरेखा बताता है। विषयवस्तु चयन को भाषा, गणित और कला आदि अपनी विशिष्ट माँग के अनुरूप निर्धारित करते हैं। खण्ड 5.3 सामग्री को

व्यवस्थित करने के विभिन्न तरीक़ों की रूपरेखा देता है। खण्ड 5.4 फाउंडेशनल स्टेज के लिए उपयुक्त प्रासंगिक शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) को सूचीबद्ध करता है। खण्ड 5.5 फाउंडेशनल स्टेज के लिए उपयुक्त पुस्तकों के चयन और पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन के लिए दिशा-निर्देश देता है। खण्ड 5.6, घर के अन्दर और बाहर, दोनों जगह सीखने के माहौल को व्यवस्थित करने के लिए दिशानिर्देश और सुझाव देता है।

खण्ड 5.1
पाठ्यक्रम का विकास

यह पाठ्यचर्या की रूपरेखा, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों और प्राप्त की जाने वाली दक्षताएँ निर्धारित करती है तथा विषयवस्तु चयन, फाउंडेशनल स्टेज के लिए प्रासंगिक शैक्षणिक पद्धतियाँ (pedagogical approaches) और उपयुक्त आकलन प्रक्रियाओं के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त देती है। यह रूपरेखा विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों के लिए समय के आवंटन और उसके अनुरूप अभीष्ट सीखने के प्रतिफलों के बारे में सुझाव भी देती है।

पाठ्यक्रम बनाने वालों को इन सुझावों के अनुरूप स्थानीय सन्दर्भों-सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण और प्रथाओं, शिक्षकों की क्षमता, स्कूलों के बुनियादी ढाँचे और भौतिक वातावरण आदि पर विचार करने के बाद पाठ्यक्रम विकसित करना चाहिए।

क) पाठ्यक्रम को NCF में उल्लिखित प्रत्येक दक्षता के लिए अभीष्ट सीखने के प्रतिफलों को दोहराना चाहिए। यह ऊपर वर्णित स्थानीय सन्दर्भों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। NCF में व्यक्त किए गए सीखने के प्रतिफल इस उद्देश्य के लिए उपयोगी उदाहरण हो सकते हैं।

ख) **पाठ्यक्रम को स्थानीय सन्दर्भ के लिए विचारों के साथ-साथ सीखने के प्रतिफलों, NCF के सिद्धान्तों और दिशानिर्देशों के आधार पर विषयवस्तु** का चयन करना चाहिए। विषयवस्तु चयन के सिद्धान्त, विषयवस्तु को संगठित करने की पद्धतियाँ,, शिक्षण-अधिगम सामग्रियों में से चुनाव आदि के बारे में इस अध्याय के आगे के हिस्सों में विस्तार से बताया गया है।

ग) सीखने के प्रतिफलों और विषयवस्तु चयन के आधार पर, पाठ्यक्रम को उन गतिविधियों के अनुक्रम और सीखने के अनुभवों को स्पष्ट करना चाहिए, जिन्हें शिक्षकों द्वारा सुगम बनाया जाना है। इस अनुक्रमण (sequencing) के लिए, विभिन्न सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए समय आवंटन को उचित रूप से सन्तुलित करने की आवश्यकता है। शिक्षणशास्त्र पर अध्याय 4 में दिए गए दिशानिर्देश और दृष्टिकोण, पाठ्यक्रम बनाने वालों की गतिविधियों और सीखने के अनुभवों के निर्माण में सहायता करेंगे।

घ) **फाउंडेशनल स्टेज के लिए शिक्षकों के लिए गतिविधि पुस्तकें और अन्य पुस्तिकाएँ (handbooks) विकसित करना उचित होगा। ये पुस्तकें पाठ्यक्रम और उसमें नियोजित अनुक्रम के बारे में शिक्षकों का मार्गदर्शन करेंगी।** इस अध्याय का खण्ड 5.5 पुस्तकों और पाठ्यपुस्तकों के बारे में है, यह पाठ्यक्रम बनाने वालों के लिए आगे का मार्गदर्शन करता है।

ङ) **पाठ्यक्रम को आकलन के लिए व्यापक दिशानिर्देश तैयार करना चाहिए जो पाठ्यक्रम में अभिव्यक्त सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि की जाँच करता है** *(कृपया आकलन पर अध्याय 6 देखें)*। इन दिशानिर्देशों से शिक्षकों को विद्यालय में आयोजित किए जाने वाले विशिष्ट आकलन विकसित करने में सहायता मिलेगी। इस चरण के लिए उपयुक्त दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के आधार पर पाठ्यक्रम को समग्र प्रगति कार्ड के लिए एक विशिष्ट प्रारूप तैयार करना चाहिए।

खण्ड 5.2
विषयवस्तु चयन के सिद्धान्त

यद्यपि दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल स्पष्ट निर्देश देते हैं कि बच्चों के लिए सीखने के अनुभवों का निर्माण करने के लिए किस विषयवस्तु का उपयोग किया जाना है, फिर भी रेखांकित करना ज़रूरी है कि विषयवस्तु चयन के लिए कई अन्य बातों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। इनमें से कुछ विचार नीचे दिए गए हैं:

क) फाउंडेशनल स्टेज में गठित अवधारणाएँ काफ़ी हद तक संवेदी बोधात्मक (perceptive) होती हैं (मसलन रंगों की अलग-अलग पहचान) या फिर व्यावहारिक (जैसे टिन के कवर को खोलने के लिए चम्मच का लीवर के रूप में उपयोग या किसी दुकान से चीज़ें खरीदने के लिए पैसे का उपयोग)। ये अवधारणाएँ सैद्धान्तिक नहीं होतीं (जैसे रंग को प्रकाश के स्पेक्ट्रम के बतौर समझना, लीवर को एक साधारण मशीन के रूप में या मुद्रा को विनिमय के माध्यम के रूप में समझना)। संवेदी बोधात्मक और व्यावहारिक अवधारणाओं के पीछे के सिद्धान्तों की खोज स्कूली शिक्षा के बाद के चरणों में ही अपेक्षित है। **इसलिए चुनी गई विषयवस्तु संवेदनात्मक रूप से आकर्षक होनी चाहिए (जैसे बच्चे की इन्द्रियों को सक्रिय करना, सौन्दर्यात्मक महत्त्व का होना) और/या उन्हें बच्चे के अनुभवों के सन्दर्भ में व्यावहारिक रूप से प्रासंगिक होना चाहिए।**

ख) **विषयवस्तु को बच्चों के जीवन के अनुभवों से प्राप्त किया जाना चाहिए और इसे उन सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक सन्दर्भों को प्रतिबिम्बित करना चाहिए जिनमें बच्चा विकसित हो रहा है और बढ़ रहा है।** किसी समुदाय या समूह में काम करने, खाना पकाने, यात्रा करने, लोक गीतों और कहानियों, त्योहारों और अनुष्ठानों की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियाँ भी व्यवस्थित रूप से जानने और अनुभव करने योग्य हैं।

ग) विषयवस्तु को परिचित से अपरिचित, सरल से जटिल और स्वयं से दूसरों तक जाना चाहिए। छोटे बच्चे अपने आस-पास के वातावरण में वस्तुओं और घटनाओं को समझ सकते हैं और उनमें रुचि रखते हैं। ऐसी चीज़ों से वे ख़ुद को जोड़ सकते हैं और ये उनके लिए आसान होती हैं। धीरे-धीरे विषयवस्तु अधिक जटिल हो सकती हैं और इसमें ऐसे विषय भी शामिल हो सकते हैं जो बच्चों के अपने आस-पास के वातावरण में नहीं मिलते हैं।

घ) चूँकि संज्ञानात्मक विकास का लक्ष्य आस-पास की दुनिया के बारे में जानना और उसके अनुकूल बनना है; **इसलिए विषयवस्तु उन topics और themes से सम्बद्ध होनी चाहिए जो बच्चों को प्राकृतिक और मानवीय वातावरण से परिचित कराएँ, उनके आस-पास की, सामाजिक और भौतिक दुनिया, लोगों, स्थान, जीवित और निर्जीव चीज़ों के बारे में परिचित कराएँ।**

ङ) विषयवस्तु को उभरते हुए कौशलों यानी बच्चों की व्यक्तिगत विशेषताओं से जोड़ा जाना चाहिए। सभी बच्चे अलग हैं और अपनी गति से सीखते हैं। **अलग-अलग बच्चों की विविध रुचियों को समायोजित करने के लिए सामग्री विविध और समावेशी होनी चाहिए।** इसमें गतिविधियों और अनुभवों के कई स्तर होने चाहिए ताकि यह हर बच्चे के लिए उसकी क्षमताओं और कौशलों के सन्दर्भ में चुनौतियाँ पेश कर सकें।

च) **इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि रूढ़िवादिता को बढ़ावा न मिले।** जैसे उल्लू और साँप को अशुभ के रूप में, या काली-चमड़ी वाले लोगों को डरावने के रूप में, या माँ हमेशा रसोई ही सँभालती है, जैसी रूढ़िवादी बातों को बढ़ावा नहीं देना चाहिए।

5.2.1 भाषा के लिए विषयवस्तु

भाषा के लिए texts में स्थानीय प्राकृतिक और मानवीय वातावरण सम्बन्धित विषयवस्तु के साथ-साथ कहानियों और कविताओं का एक अच्छा सन्तुलन होना चाहिए। जहाँ कहानियाँ और कविताएँ छोटे बच्चों की कल्पनाशीलता और भाषायी क्षमताओं को बढ़ाती हैं, वहीं वनस्पतियों और जीवों के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर विषयवस्तु बच्चों को उनके आसपास की दुनिया की समझ हासिल करने में मदद करती है।

क) **पाठ्यपरक विषयवस्तु (Textual content)** प्रारम्भिक स्तर की पाठ्यपरक विषयवस्तु में चित्रों के सन्दर्भ में पर्याप्त दृश्य संकेत होने चाहिए ताकि उनका अर्थ समझने में शुरुआती पाठक की मदद की जा सके।

ख) Fonts ऐसे होने चाहिए जो सौन्दर्य अपील बढ़ाने की बजाय दृश्य जटिलता को कम करने को प्राथमिकता दे।

ग) Fonts कम-से-कम 14-पाइंट साइज़ का होना चाहिए।

घ) उपयोग की जाने वाली शब्दावली में मानक लिखित रूप की तुलना में परिचित और अपरिचित शब्दों का एक विवेकपूर्ण मिश्रण होना चाहिए जो भाषा के बोले जाने वाले रूप के क़रीब हो (कई भारतीय भाषाओं में बोले जाने वाले और लिखित रूपों में बहुत ही अलग शब्दावली होती है)।

विषयवस्तु के स्वरूप

क) **पाठ्यपुस्तकें/ कार्यपुस्तिकाएँ:** पाठ्यपुस्तकें कक्षा 1 में आ सकती हैं लेकिन वे ऐसी होनी चाहिए कि बच्चे उनके साथ सक्रिय संवाद कर सकें।

ख) **बाल साहित्य:** किसी व्यापक साक्षरता कक्षा के लिए, अच्छे और प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य तक बच्चों की पहुँच ज़रूरी है। इसमें स्थानीय संस्कृति की कहानियाँ, गीत और साहित्य के अन्य रूप शामिल होने चाहिए। उदाहरण के लिए, बंगाली में इस लोरी को कक्षाओं में गाने के साथ गाने के रूप में शामिल किया जा सकता है।

घूम परानी माशी पिशी, *मोदेर बारी एशो* *खाट नाईं पलंग नाईं* *चोख पेटे बोशो* *बाटा भोरा भात देबो* *गाल भोरे खेओ* *खोकर चोखे घुम नाईं* *घूम दिए जियो।*	*सो रही चाची,* *हमारे घर आओ।* *कोई बिस्तर नहीं, कोई बिस्तर नहीं।* *हमारी आँखों में नींद ले आओ।* *मैं तुम्हें चावल से भरा कटोरा दूंगा,* *तब तक खाएँ जब तक आपके गाल भर न जाएँ।* *लड़के की आँखों में नींद नहीं आती,* *उसे नींद दो।*

कक्षा-कक्ष में आकर्षक बाल साहित्य से भरी हुई किताबों की अलमारीहोनी चाहिए, जिसमें किताबें दिखें। शिक्षक को अपनी साप्ताहिक योजना के अनुसार पुस्तकों को अदल-बदल करके रखने में सक्रिय रुचि लेनी चाहिए।

ग) **वर्कशीट्स:** ऐसी सरल वर्कशीट्स, जिन्हें बच्चे ख़ुद से चुनें और स्वयं उन पर काम पूरा कर सकें। यह साक्षरतामें बच्चों के काम के अभ्यास और रचनात्मक आकलन, दोनों में ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

घ) **सामग्री:** कार्डबोर्ड/सैंडपेपर में फ्लैशकार्ड, अक्षर फॉर्म, खेल, पहेली और अन्य गतिविधियों के लिए सामग्री भाषा और साक्षरता गतिविधियों को आकर्षक और रोचक बनाए रखती है।

ङ) **ऑडियो-विजुअल सामग्री:** स्मार्टफोन जैसे डिजिटल उपकरणों की सर्वव्यापकता के साथ, अच्छी गुणवत्ता वाली ऑडियो सामग्री कक्षा 1 और 2 के लिए बहुत प्रभावी हो सकती है। कविताएँ, कहानियाँ और अन्य कथाएँ बच्चों के लिए मौखिक भाषा इनपुट का एक अच्छा स्रोत हो सकती हैं।

शिक्षक की आवाज़ 5.2 क

रोल करें, पढ़ें और लिखें!

मैं कक्षा 1 में पढ़ाती हूँ, और मेरे बच्चों को एक जगह बैठना पसन्द नहीं है। इसलिए तीन अक्षरों वाले बार-बार इस्तेमाल होने वाले शब्दों को पहचानने, पढ़ने और लिखने का अभ्यास करने के लिए मैंने रोल करें, पढ़ें और लिखें के इस खेल को बनाया। इसके लिए मुझे बस एक वर्कशीट, पासा और पेंसिल चाहिए। बच्चे बारी-बारी से पासा पलटते हैं, उस संख्या से मेल खाने वाले शब्द को पढ़ते हैं और उसे वर्कशीट में सम्बन्धित बॉक्स में लिखते हैं।

हम तब तक खेलना जारी रखते हैं जब तक या तो एक पूरा कॉलम या पूरा बोर्ड भर नहीं जाता। इस गतिविधि के साथ, मैं पासों और उनकी पिनर ग्रिप पर संख्याओं की पहचान करने की उनकी क्षमता पर भी काम करने में सक्षम हूँ। यह एक सरल, मज़ेदार और आकर्षक गतिविधि है।

'the, is, at and, he, she' का अभ्यास करने के लिए मैंने जिस वर्कशीट का इस्तेमाल किया, वह नीचे दी गई है:

Name: ___________

Roll, Read, & Write!

Directions: Roll the dice. Read the word that matches the number, then write it in the box above.

Continue rolling the dice until a column is filled!

the	is	at	and	he	she

5.2.2 गणित के लिए विषयवस्तु

भाषा के समान, गणित की विषयवस्तु स्थानीय वातावरण के साथ जुड़ाव दर्शा सकती है। आकृतियों को समझने या गिनने जैसी गणितीय गतिविधियों को प्राकृतिक और मानवीय वातावरण के साथ जोड़ा जा सकता है।

क) **पाठ्यपुस्तकों और कार्यपुस्तिकाओं** में कक्षा 1 और 2 में गणित के लिए अवधारणात्मक विषयवस्तु को एक ऐसी कहानी में पिरोने की आवश्यकता है जो बच्चों के लिए आकर्षक और दिलचस्प हो। उदाहरण के लिए बड़े और छोटे की अवधारणा को नीचे के चित्र में एक साधारण कहानी के माध्यम से दिखाया गया है।

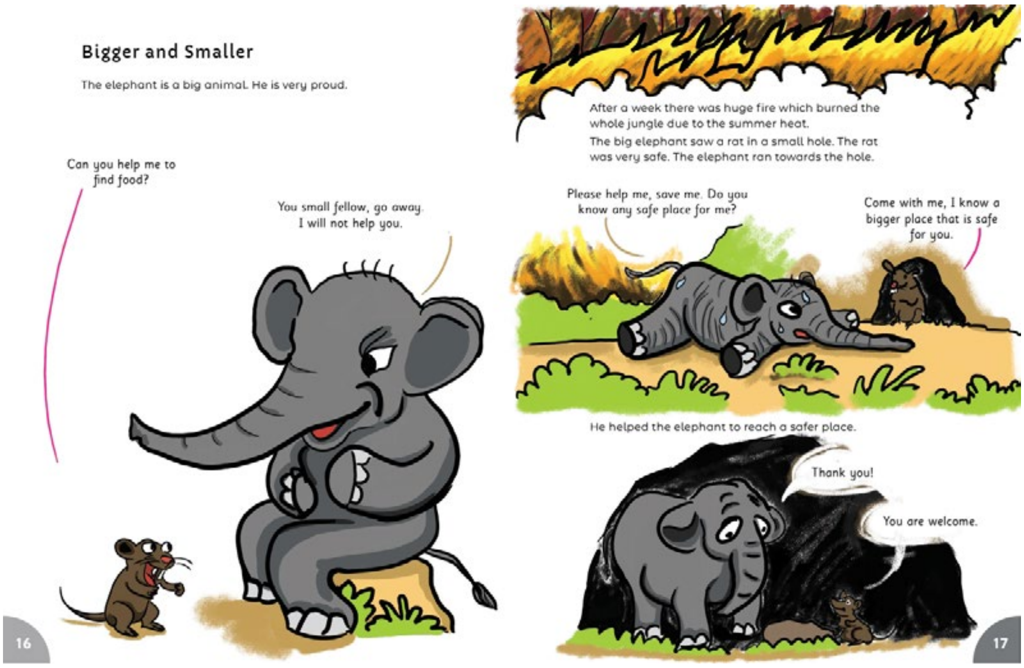

ख) पाठ्यपुस्तकों और कार्यपुस्तिकाओं की विषयवस्तु के साथ कक्षा में उपयुक्त **जोड़-तोड़** (manipulatives) भी किया जाना चाहिए। गिनना, आकृतियाँ और क्रम में लगाना, इन्हें ठोस रूप में जोड़-तोड़ के साथ-साथ क़लम और काग़ज़ के माध्यम से भी सिखाने की ज़रूरत है।

शिक्षक की आवाज़ 5.2 ख

हत्तीरा हत्तु!

20 तक संख्याओं को जोड़ने का अभ्यास करने के लिए, हम इस खेल "हत्तीरा हत्तु" के साथ आए, जिसका अर्थ है 10 के क़रीब। इसके लिए हमें चाहिए, 1 से 10 तक लिखे हुए कार्डों का एक डेक (deck)। बच्चों के प्रत्येक जोड़े के लिए 10 कंकड़ों का सेट, कुछ टुकड़े चॉक के और एक चॉकबोर्ड। हम बच्चों की जोड़ी बनाकर शुरू करते हैं। प्रत्येक जोड़ी को ताश के पत्तों का एक डेक दिया जाएगा, जिसे नीचे की ओर रखा जाएगा और गणना करने के लिए 10 कंकड़ों का एक सेट दिया जाएगा। प्रत्येक बच्चा 2 कार्ड उठाएगा। उनमें से प्रत्येक दो कार्डों पर संख्याओं को जोड़ देगा और हम देखेंगे कि कौन-सा 10 के सबसे क़रीब है। उदाहरण के लिए, हीरा 8 और 1 वाले कार्ड उठाती है, जिसका कुल मूल्य 9 है। रोहन कार्ड 6 और 7 उठाता है, जिनका कुल मूल्य 13 है। हीरा इस दौर को जीतेगी क्योंकि 9, 13 की अपेक्षा 10 के ज़्यादा क़रीब है। दोनों जोड़ने और घटाने के लिए कंकड़ों के सेट का उपयोग करते हैं।

इस गतिविधि को विभिन्न अवधारणाओं का अभ्यास कराने के लिए संशोधित किया जा सकता है, जैसे : 3 कार्ड चुनना यह देखने के लिए कि कौन-सी संख्या 30 के क़रीब है; या 0 के सबसे क़रीब की संख्या जानने के लिए 2 कार्डों को घटाना।

ग) **वर्कशीट्स:** वर्कशीट्स का प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को गणितीय कौशल का पर्याप्त अभ्यास कराना और उनके सीखने को बेहतर करना है। यह अभ्यास सार्थक सन्दर्भ में होना चाहिए और इसे ख़ास तरह के गणितीय कार्यों पर ध्यान देना चाहिए। वर्कशीट में स्पष्ट निर्देशों के साथ पर्याप्त जगह भी होनी चाहिए।

नमूना वर्कशीट नीचे दी गई है:

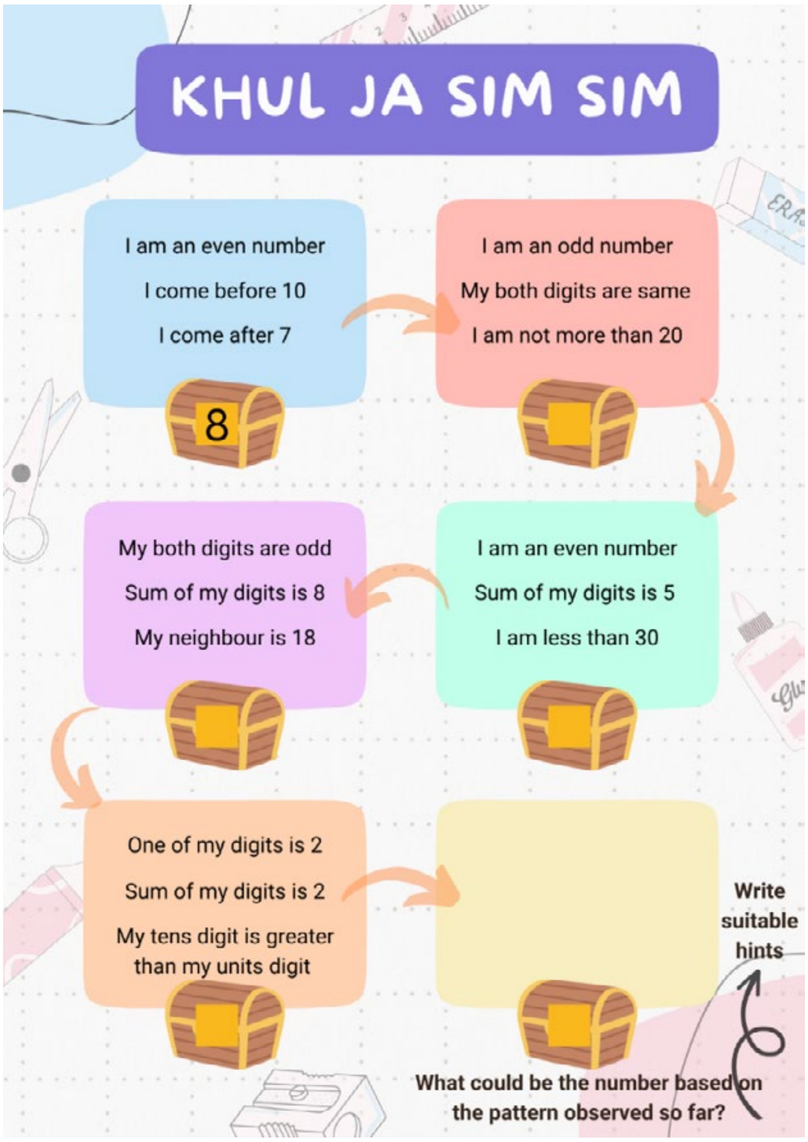

5.2.3 कला के लिए विषयवस्तु

कला सीखने के अनुभवों को विशिष्ट सीखने के प्रतिफलों पर केन्द्रित गतिविधियों के रूप में नियोजित किया जाना चाहिए और विषयवस्तु स्कूल के स्थानीय सन्दर्भ से ली जानी चाहिए। शिक्षक को अपने स्कूल में बच्चों के जीवन के आस-आस के रंगों और पैटर्न पैटर्नों पर ध्यान देना चाहिए और उन्हें कला की कक्षा में इस्तेमाल करना चाहिए। इसी तरह गायन, धुन, नृत्य और कहानियों (लोक और समकालीन दोनों) के स्थानीय रूपों का उपयोग संगीत, गतिविधि और रंगमंच की प्रदर्शन कला के सन्दर्भ में किया जा सकता है।

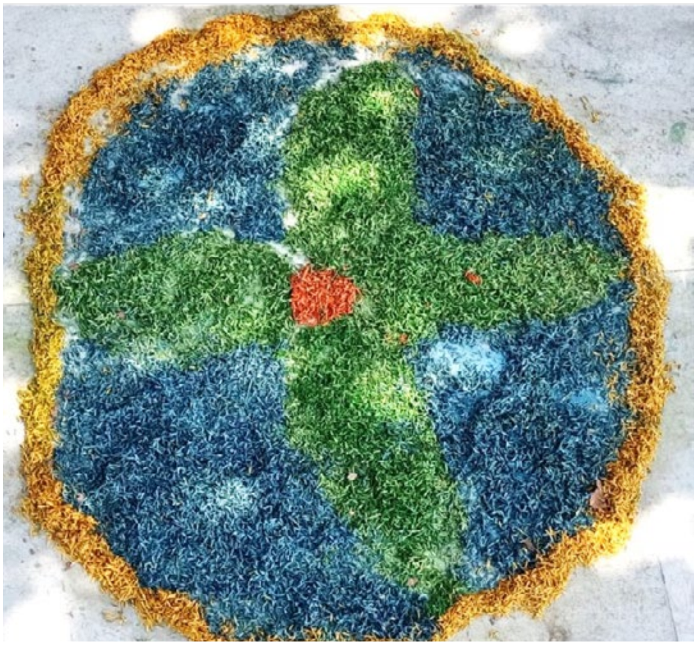

चित्र 5.2 ख : रंगोली कला

चित्र 5.2 ग : कोलाज कला

खण्ड 5.3
विषयवस्तु को संगठित करने के तरीक़े

आरंभिक वर्षों में सीखने के लिए विषयवस्तु को कई तरह से संगठित किया जा सकता है, इसमें 'खेल' बच्चे का प्राथमिक अनुभव होता है। सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाली कुछ पद्धतियों (approaches) का वर्णन नीचे किया गया है।

5.3.1 परियोजना आधारित पद्धति (Project-based Approach)

आरंभिक शिक्षा में करके सीखना महत्त्वपूर्ण है। विशेष रूप से अपने साथियों के सहयोग से जुड़ी परियोजनाएँ बच्चों को कौशलों की एक विस्तृत श्रृंखला विकसित करने में सक्षम बनाती हैं। बच्चे परियोजनाओं के आस-पास केन्द्रित सीखने के वातावरण में ज्ञान और कौशल प्राप्त करते हैं, क्योंकि वे एक विशिष्ट प्रश्न, समस्या या चुनौती पर एक अवधि में लगातार काम करने में सक्षम होते हैं। परियोजनाओं में समय की अवधि में स्वाभाविक लचीलापन और निरन्तरता होती है। इससे प्रत्येक बच्चे को छानबीन और खोज करने का अवसर मिलता है जिससे आलोचनात्मक चिंतन और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित होती है। बच्चों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करने, ख़ुद को संभालने, प्रश्न पूछने, पूछताछ करने और इस तरह सीखने के अवसर भी मिलते हैं। ये सभी न केवल स्कूली शिक्षा के लिए बल्कि बाद में युवा वयस्कों के रूप में सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण जीवन कौशल हैं।

इस चरण के लिए परियोजनाएँ छोटे बच्चों की समझ में आने के लिहाज़ से छोटी और सरल हो सकती हैं। प्रामाणिकता परियोजना-आधारित शिक्षा की कुंजी है। बच्चे वास्तविक दुनिया के सन्दर्भ से जुड़ते हैं और उन्हें अपनी रुचियों और प्रश्नों को आगे बढ़ाने दिया जाता है। बच्चों को अन्वेषण, खोज और आलोचना के लिए स्थायी और वास्तविक दुनिया के अवसर प्रदान किए जाते हैं, जो उनके विकास और सीखने में योगदान करते हैं।

किसी परियोजना को करने की प्रक्रिया के दौरान या उसके परिणामों में कोई सही या ग़लत उत्तर नहीं होता है। निहितार्थ यह है कि एक बच्चा असफलता के डर के बिना अपनी रचनात्मक चिंतन को विस्तार दे सकता है। इस तरह, परियोजनाएँ बच्चों की प्राकृतिक जिज्ञासा का पोषण करती हैं और अन्वेषण तथा खोज की अनुमति देती हैं। बच्चों के विचारों को महत्त्व देते हुए और उनकी रुचियों व रचनात्मकता को पोषित करते हुए बच्चों की सीखने की ज़रूरतों को पूरा किया जाता है।

परियोजना कार्य का एक लाभ यह है कि यह विद्यार्थियों को केवल पाठ्यपुस्तक से विषयवस्तु पढ़ने और याद करने की जगह विषयवस्तु की एक विस्तृत श्रृखंला के साथ काम करने देता है। इस तरह, शिक्षक विषयवस्तु को कवर नहीं करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों को विषयवस्तु खोजने, बातचीत करने, अनेक विषयों और वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़ने के अवसर मिलते हैं। इस अंतःक्रिया में कौशलों को हासिल करना और अनुप्रयोग शामिल है, जिस पर बाद में और अधिक विस्तार से चर्चा की गई है।

स्वभाव से, परियोजनाएँ अंतःअनुशासनात्मक (interdisciplinary) हैं जिसमें भाषा, कला, सामाजिक अध्ययन, गणित, विज्ञान, नाटक, नृत्य और स्वास्थ्य जैसे कई विषयों के साथ-साथ वास्तविक जीवन के अनुभव भी शामिल हैं। इसके अलावा परियोजनाएँ अकादमिक विषयों और वास्तविक जीवन परिदृश्यों में उपयोग किए जाने वाले कौशलों को हासिल करने, अभ्यास करने और लागू करने के अवसर प्रदान करती हैं।

5.3.2 कहानी आधारित पद्धति (Story-based Approach)

अच्छी कहानी सभी को पसन्द होती है, ख़ासकर बच्चों को।

कहानियाँ सम्प्रेषण के सबसे पुराने माध्यमों में से एक हैं। हमारी संस्कृति में, कहानियाँ परिवारों और समुदायों को एक साथ जोड़ने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कहानियों का उपयोग बच्चों के साथ दुनिया भर के बारे में बात करने के लिए किया जा सकता है - प्रकृति, जानवर, लोग, उन्हें परम्परा की समृद्धि के बारे में बताएँ, उन्हें चीज़ों को करने के विभिन्न तरीक़ों से परिचित कराएँ और आचार और नैतिकता के सवालों में उलझाएँ। कहानियाँ पारिवारिक और सामुदायिक सम्बन्धों को बनाए रखने का एक प्रभावी माध्यम भी रही हैं।

भावनात्मक जुड़ाव के कारण कहानियाँ बच्चों के ध्यान और स्मृति को उद्दीप्तकरने में सक्षम होती हैं। कहानियाँ रोज़मर्रा की बातचीत में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं - कहानियों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को सम्प्रेषित किया जाता है। चूँकि अधिकांश बच्चे अपनी घरेलू भाषा में कहानियों से पहले ही परिचित हो चुके होते हैं इसलिए स्कूल में उनका उपयोग एक सार्थक सन्दर्भ में नई भाषाओं से परिचय कराने के लिए किया जा सकता है।

कहानियाँ, बच्चों को सीधे सीखने की प्रक्रिया में शामिल करती हैं, उन्हें अपनी शब्दावली बनाने में मदद करती हैं। भाषा सीखने और सिखाने में एक समृद्ध संसाधन होने के अलावा, कहानियाँ बच्चों को उनकी तात्कालिक दुनिया से बाहर की चीज़ों से परिचित कराती हैं। इससे बच्चों को शब्दों से कहीं अधिक सीखने में मदद मिलती है।

कहानियाँ अनन्त हैं, उनमें से कुछ चुनी जा सकती हैं। साथ ही ऐसी कहानियों का चुनाव करना चाहिए जो बच्चे की वास्तविकता को दर्शाती हैं। ये कहानियाँ न केवल 'प्रामाणिक इनपुट' का एक समृद्ध स्रोत प्रदान करती हैं बल्कि प्रेरक और चुनौतीपूर्ण होती हैं। बच्चों के लिए प्रत्येक शब्द को समझना आवश्यक नहीं है क्योंकि चित्र, हावभाव और स्वर, उन्हें कहानी के सार को समझने में मदद करते हैं और उन्हें उपलब्धि की भावना प्रदान करते हैं।

कहानियाँ बच्चों के समग्र विकास के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में भी काम करती हैं। वे भाषा सीखने के साथ-साथ भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देती हैं।

शिक्षक बाल साहित्य के समृद्ध भण्डार में से कहानियाँ चुन सकते हैं, बेहतर होगा कि उन कहानियों का चुनाव किया जाए जिनसे बच्चे अपनी घरेलू भाषा में पहले से ही परिचित हैं, उदाहरण के लिए पारम्परिक कहानियाँ और किस्से। अन्य शैलियों में चित्र पुस्तकें, मिथक, किंवदन्तियाँ, लोककथाएँ, दन्तकथाएँ, कविताएँ, गीत, तुकबन्दी, वर्णमाला और गिनती की किताबें, जानवरों की कहानियाँ, हास्य-कहानियाँ आदि भी चुनी जा सकती हैं।

कहानी-आधारित पद्धति की योजना बनाते समय शिक्षकों को इस पर विचार करना चाहिए कि वे इनके जरिये क्या हासिल करना चाहते हैं। उन्हें सम्भावित गतिविधियों, आवश्यक समय, पाठ्यचर्या से सम्बन्ध, बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषा आदि के बारे में विचार कर लेना चाहिए। इसी आधार पर सामग्री की तैयारी व पाठ योजना का निर्माण किया जाना चाहिए।

कहानी-आधारित पद्धति आमतौर पर तीन चरणों के आधार पर विकसित किया जाता है - कहानी से पहले की गतिविधियाँ, कहानी पढ़ते समय गतिविधियाँ और कहानी के बाद की गतिविधियाँ।

क) पहला क़दम शिक्षण उद्देश्यों और बच्चों की ज़रूरतों के आधार पर कहानियों का चयन करना है। इसके बाद कहानियों पर आधारित गतिविधियों पर विचार-मन्थन करना चाहिए, जिससे पाठ योजना तैयार की जा सके।

ख) कहानी-पूर्व पढ़ने की गतिविधियाँ निम्नलिखित हो सकती हैं: पुस्तक का कवर और शीर्षक दिखाएँ और इसके बारे में बात करें, बच्चों से कहानी के नाम और उपयोग किए जा रहे चित्र के बारे में प्रश्न पूछें, पढ़ी जाने वाली कहानी के बारे में प्रश्न पूछें, कहानी के इर्द-गिर्द छोटा खेल खेलें।

ग) पढ़ते समय गतिविधियाँ निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं: शब्दावली दोहराएँ और माइम करें, कार्ड पकड़ें, अनुमान लगाएँ कि आगे क्या होने वाला है, कहानी के कुछ हिस्सों को क्रम दें, हाँ/नहीं वाले प्रश्न पूछें, अन्त का अनुमान लगाएँ।

घ) पठन के बाद की गतिविधियों में निम्नलिखित शामिल हो सकती हैं: कहानी का एक और शीर्षक चुनें, चित्रों या घटनाओं को क्रम दें, एक मिनी-पुस्तक या पोस्टर बनाएँ, कहानी पढ़ें या अभिनय करें, कहानी के बारे में खेल खेलें, कहानी के बारे में एक गाना गाएँ, कठपुतली बनाएँ/ मुखौटे बनाएँ, कहानी को फिर से सुनाएँ आदि।

शिक्षक की आवाज़ 5.3 क

कहानियों का उपयोग करना

मैं 3-6 साल के बच्चों को पढ़ाती हूँ जहाँ कहानियाँ उन सभी को जोड़े रखने का एक महत्त्वपूर्ण तरीक़ा है। कहानियाँ उनकी कल्पना और शब्दावली का निर्माण करने के साथ-साथ सकारात्मक शिक्षा पर बात करने और संवाद का ज़रूरी माध्यम हैं। मैं कहानी का चयन बच्चों की पसन्द के आधार पर या फिर इस आधार पर करती हूँ कि मैं उन्हें किन मूल्यों को सिखाना चाहती हूँ। मेरे पास पहले से ही बच्चों के आयुवर्ग के लिए उपयुक्त कहानियों का संग्रह है। आमतौर पर कक्षा से पहले, मैं सन्दर्भ सेटिंग के लिए एक कहानी-पूर्व गतिविधि की योजना बनाती हूँ, कहानी (जिसे मैं कभी-कभी सुनाती हूँ, कभी-कभी एक एनिमेटेड वीडियो चलाती हूँ और कभी-कभी उसके प्रदर्शन में भूमिका निभाती हूँ) और कहानी के बाद की गतिविधि। मैं उन नए शब्दों को भी ध्यान में रखती हूँ जिन्हें इस अवधि के अन्त तक उन्हें सीखना चाहिए। उदाहरण के लिए, मैंने अपनी कक्षा के समय में कहानी-पूर्व गतिविधि के रूप में पहले से ही जानवरों के फ्लैश कार्ड पर एक गतिविधि की है। अब, मैं हाथियों और चूहों पर पंचतंत्र की एक कहानी पर काम करने की योजना बना रही हूँ।

कहानी कुछ इस प्रकार है :

एक बार की बात है एक पेड़ के नीचे चूहों का एक समूह शान्तिपूर्ण तरीके से रहता था। लेकिन एक बार उस रास्ते से हाथियों का एक समूह गया और उसने चूहों के घरों को नष्ट कर दिया, कई चूहे कुचल कर मार दिए गए। तब चूहों के राजा ने हाथियों के राजा के पास जाने का फैसला किया और उससे अनुरोध किया कि वह अपने झुण्ड कामार्गदर्शन दूसरे रास्ते से करे। हाथी राजा इस पर सहमत हो गया और पानी के लिए दूसरा रास्ता अपनाया। जिससे चूहों की जान बच गई। एक दिन हाथी-शिकारियों का एक दल आया और उसने बहुत-से हाथियों को विशाल जालों में फँसा लिया। तभी हाथी राजा को अचानक चूहों के राजा की याद आई। उसने अपने झुण्ड के हाथियों में से एक को बुलाया, जो चूहों के राजा से सम्पर्क करने के लिए गया। हाथी की बात सुनते ही चूहों का राजा चूहों के अपने पूरे समूह को ले गया और उन्होंने हाथियों के झुण्ड को फँसाने वाले जाल को काट दिया। इस तरह से चूहों ने हाथियों के झुण्ड को पूरी तरह से मुक्त कर दिया।

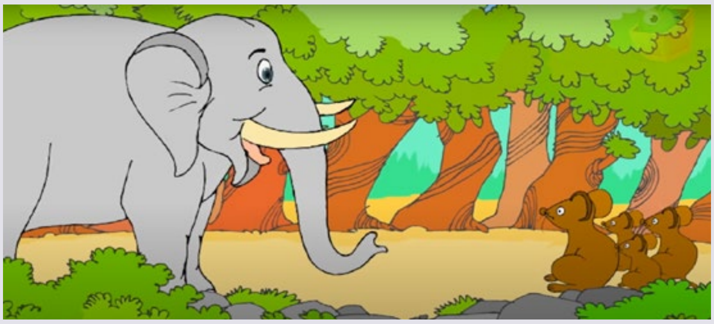

(स्रोत: यूट्यूब चैनल- MagicBox English Stories)

मित्र वही जो मुसीबत में काम आए!

हमने जिन नए शब्दों पर ध्यान केन्द्रित किया, वे थे 'शान्तिपूर्ण', ' पास जाना', ' मार्गदर्शन', ' बुलाना' और दोस्ती के बारे में चर्चा।

कहानी के बाद मैंने प्रश्न पूछकर चर्चा शुरू की। जैसे "आपने क्या देखा? कहानी में क्या हो रहा था? जब चूहों ने मदद मांगी तो हाथियों ने क्या किया? हाथियों ने चूहों की मदद क्यों की? जब हाथियों ने मदद माँगी तो चूहों ने क्या किया? चूहों ने हाथियों की मदद क्यों की? क्या आपके पास दोस्त हैं? आपके कितने दोस्त हैं? क्या आप हमें उनके नाम बता सकते हैं? आप अपने दोस्तों के साथ क्या करते हैं?" और इसी तरह अन्य प्रश्न।

ऐसी किसी भी गतिविधि में, मैं सभी जवाबों को स्वीकार करती हूँ, बिना किसी निर्णय (judgement) के उनकी सराहना करती हूँ और अपने सभी बच्चों को उत्तर देने और भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ।

कहानी के बाद की गतिविधि के रूप में, हम 'मेरे मित्र' के बारे में एक चित्र बनाएंगे।

5.3.3 थीम आधारित पद्धति (Theme-based Approach)

थीम आधारित पद्धति सीखने-सिखाने का एक तरीक़ा है जहाँ पाठ्यचर्या के कई क्षेत्रों को एक साथ जोड़ा जाता है और एक थीम के भीतर एकीकृत किया जाता है। इसमें अलग-अलग समय पर अलग-अलग कौशलों या अलग-अलग विषयों को सीखने की बजाय, बच्चों को एक थीम के माध्यम से सार्थक संबंधों को बनाने और एक थीम के भीतर मौजूद विभिन्न topics या पहलुओं का पता लगाने में मदद मिलती है।

एक थीम को एक व्यापक विचार/टॉपिक के रूप में परिभाषित किया जाता है, यह सीखने के विशिष्ट अनुभवों के विकास का मार्गदर्शन करती है। बच्चे छोटी अवधि के लिए अलग-अलग विषयों को सीखने की बजाय लम्बी अवधि के लिए अलग-अलग तरीक़ों से एक टॉपिक को explore करते हैं। हम इसे ऐसे common thread के रूप में देख सकते हैं जिसका उपयोग सीखने के अनुभवों को एक साथ बुनने के लिए किया जाता है।

इसमें बच्चे थीम को अलग-थलग अवधारणाओं के रूप में नहीं बल्कि वास्तविक जीवन की स्थितियों में होने वाली प्रक्रियाओं के रूप में समझते हैं। यह अनुभवों को बच्चों के लिए प्रासंगिक, संदर्भगत और ठोस बनाता है। यह बच्चों को टॉपिक के बारे में एक एकीकृत समझ विकसित करने में मदद करता है।

थीम ऐसी सुपरिचित स्थितियों का निर्माण करती है जिन पर नए ज्ञान का निर्माण किया जा सके। हर थीम बच्चों के लिए सीखने की अपार सम्भावनाओं के साथ आती है। थीम के भीतर किसी भी घटना, विचार, वस्तु, सम्बन्ध या अनुभव की कल्पना सीखने के अनुभव के निर्माण के लिए आधार के रूप में की जा सकती है।

थीम के भीतर, बच्चे अपने बारे में, अपनी रुचियों, रिश्तों और लोगों के साथ बातचीत, अपने आस-पास के पर्यावरण से संबंधित topics के बारे में पता लगाते हैं। वे इन्हें बेहतर ढंग से समझने, अन्वेषण करने, प्रयोग करने, अनुभव करने के लिए प्रश्न पूछते हैं और इस प्रकार अपने पहले से मौजूद ज्ञान में नई चीज़ें जोड़ते हैं।

कुछ थीम इस प्रकार हो सकती हैं : मेरा घर, मेरा पड़ोस, मेरा बग़ीचा, मेरा स्कूल, बाज़ार, खेत और जंगल, पहाड़ी और पर्वत, नदियाँ और महासागर, वाहन आदि। सभी थीमों में sub-themes होते हैं ताकि बच्चे थीम के भीतर विभिन्न पहलुओं का पता लगा सकें।

क) थीम के केन्द्र में बच्चे होते हैं। जब बच्चों को केन्द्र में रखा जाएगा तो पाठ्यचर्या के साथ-साथ शिक्षक भी बच्चों के सीखने के अनुभवों को उनके जीवन से जोड़ने में मदद करेंगे।

ख) ज्ञान और सीखने को अलग-थलग नहीं रखा जाएगा बल्कि यह बच्चों के दैनिक जीवन के अनुभवों से जोड़ा जाएगा।

ग) संदर्भों की विविधता और बच्चों के व्यक्तिगत अनुभव थीम के अन्तर्गत सीखने के अनुभवों की योजना बनाने के लिए बहुत ज़रूरी हैं।

घ) सीखने की इस यात्रा में उत्पाद की तुलना में प्रक्रिया अधिक महत्त्वपूर्ण है।

ङ) शिक्षक की भूमिका एक सुगमकर्ता (facilitator) की होती है, वह सीखने की प्रक्रिया में मध्यस्थता करता है। कुछ अनुभव बच्चों की रुचि से निकलकर आ सकते हैं और उन्हें शिक्षक द्वारा सुगम बनाया जाता है। अन्य अनुभव शिक्षक द्वारा शुरू किए गए हो सकते हैं लेकिन उनमें बच्चों के लिए निर्णय लेने और अन्वेषण के पर्याप्त अवसर होने चाहिए। बच्चों और शिक्षकों को sub-themes के भीतर विभिन्न विचारों/पहलुओं का पता लगाने की रचनात्मक आज़ादी है।

थीम और sub-themes बच्चों को अनुभवों की समझ बनाने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करते हैं ताकि वे अन्य अनुभवों के साथ आपसी संबंध बना सकें, सामान्यीकरण (generalizations) कर सकें और अन्ततः अधिक अमूर्त विचारों का निर्माण कर सकें। बच्चे प्रत्येक sub-theme में नई अवधारणाएँ विकसित करते हैं, नए कौशलों का अभ्यास करते हैं, प्रवृत्तियाँ (dispositions) बनाते हैं और भावनात्मक अनुभव प्राप्त करते हैं।

बक्स 5.3 क

_थीम : घर_

Sub-theme: रसोई में क्या हो रहा है?

छोटे बच्चे किचन को लेकर काफ़ी आकर्षित रहते हैं। भोजन की गन्ध, विभिन्न बर्तन और खाना पकाने की प्रक्रिया उन्हें आकर्षित करती है। अक्सर माता-पिता या दादा-दादी खाना पकाने के दौरान रसोई में बच्चों से बात करते हैं। रसोई के आसपास काफ़ी आदान-प्रदान होता है। हम देख सकते हैं कि रसोई पहले से ही बच्चों के लिए एक बड़ी महत्त्वपूर्ण जगह है।

वे बहुत कुछ सीख भी रहे हैं। वे रसोई में मौजूद विभिन्न वस्तुओं के भौतिक गुणों के बारे में सीखते हैं। इन वस्तुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपनी सभी इन्द्रियों का उपयोग करते हैं। वस्तुओं के बीच सम्बन्ध बनाने के लिए अलग-अलग कौशल लागू करते हैं जैसे कि क्रम में लगाने के कौशल का उपयोग करके सबसे बड़े से सबसे छोटे चम्मच को रखना या विभिन्न खाद्य पदार्थों को वर्गीकृत करना। ऐसा करते हुए वे पूछताछ और प्रयोग के माध्यम से वैज्ञानिक और गणितीय अवधारणाओं का निर्माण भी कर रहे हैं।

वे ठोस अनुभव के माध्यम से जेण्डर भूमिकाओं के बारे में भी सीखते हैं और सवाल करते हैं कि ये खाना पकाने और देखभाल करने वाली भूमिकाएँ उनके परिवारों में कैसे ली जाती हैं। वे प्रवृत्तियों का निर्माण भी कर रहे हैं और भावनात्मक रूप से इन अनुभवों से सम्बन्धित हैं।

5.3.4 चयनशील पद्धतियाँ (Eclectic Approaches)

उपरोक्त सभी पद्धतियों (approaches) की अलग-अलग खूबियाँ हैं। हम आरंभिक वर्षों के लिए किसी एक ख़ास पद्धति की अनुशंसा नहीं करते हैं। यह स्कूलों और शिक्षकों पर छोड़ दिया गया है कि वे अपने सन्दर्भ और ज़रूरतों के आधार पर सीखने के लिए विषयवस्तु डिज़ाइन करने के लिए सही प्रकार की पद्धति चुनें।

स्कूल और शिक्षक अक्सर ख़ास तरह की दक्षताओं के लिए विषयवस्तु को संगठित करने के लिए ख़ास तरह की पद्धतियों का उपयोग करते हैं। सीखने के अनुभवों को व्यक्तिगत सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखकर विषयवस्तु, पेडागॉजी और आकलन के ख़ास तरह के संयोजन में नियोजित किया जा सकता है। सम्भव है कि यह किसी ख़ास 'पद्धति' में फिट न हो। हालाँकि इस तरह की योजना में असंगत दिखने का जोखिम होता है। किसी विशिष्ट पद्धति का पालन किए बिना भी सीखने के अनुभवों का एक अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया अनुक्रम सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में समान रूप से आकर्षक और प्रभावी हो सकता है।

खण्ड 5.4
शिक्षण-अधिगम सामग्री

फाउंडेशनल स्टेज में बच्चे तब ज़्यादा सीखते हैं जब वे कई इन्द्रियों का उपयोग करते हैं और सक्रिय रूप से अपने हाथों का उपयोग करते हैं। खेलने के लिए साधारण खिलौनों से लेकर गिनने और संख्या ज्ञान के लिए जोड़-तोड़ वाली सामग्री तक, इस चरण में विभिन्न प्रकार के TLM आवश्यक हैं।

सामान्य रूप से किताबें, और विशेष रूप से बाल साहित्य, बचपन के सीखने के माहौल को समृद्ध बनाने और पढ़ने के उत्साह को बढ़ावा देने के लिए अनिवार्य हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वर्कबुक्स और वर्कशीट्स का उपयोग भी ठीक रहता है। TLM के चुनाव के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त हैं:

क) इस आयु वर्ग के बच्चों द्वारा उपयोग की जाने वाली सामग्री आकर्षक और सुरक्षित होनी चाहिए। चूँकि 3 साल के बच्चे चीज़ों को अपने मुँह में डालते हैं, इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि सामग्री और रंगों को उचित रूप से चुना जाए और इनमें ऐसे रंग न हों जो विषाक्त हो सकते हैं।

ख) चुनी गई सामग्री के साथ बच्चों को अन्वेषण करने और प्रयोग करने के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए। टिकाऊ और अच्छी तरह से बनाई गई सामग्री 'रफ़' उपयोग की अनुमति देगी और भविष्य में उपयोग के लिए भी उपलब्ध होगी।

ग) जहाँ तक सम्भव हो चुनी गई सामग्री स्थानीय रूप से निर्मित या स्थानीय रूप से उपलब्ध होनी चाहिए। इससे इसे आसानी से बदला जा सकेगा।

घ) TLM में खरीदी गई सामग्री, स्थानीय रूप से निर्मित सामग्री, शिक्षकों द्वारा बनाई गई सामग्री और यहाँ तक कि बच्चों द्वारा बनाई गई सामग्री भी शामिल होनी चाहिए।

भाषा और साक्षरता के विकास में सामग्री के साथ-साथ पुस्तकें बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। फाउंडेशनल स्टेज में बच्चों के साहित्य का एक छोटा लेकिन अच्छा संग्रह होने से TLM सेट पूरा होता है।

5.4.1 शिक्षक द्वारा तैयार की जा सकने वाली सामग्री

फाउंडेशनल स्टेज के लिए आवश्यक अधिकांश TLM स्थानीय रूप से उपलब्ध और कम लागत वाली सामग्री का उपयोग करके बनाया जा सकता है। **शिक्षकों को स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से सरल TLM बनाने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।** कार्डबोर्ड, स्ट्रॉ, पैकेजिंग सामग्री, पुराने कपड़े, बोतल के ढक्कन/बीज/कंकड़ (गिनने के लिए), माचिस की तीली (रसायन हटाकर), पुराने टायर, प्लास्टिक की बोतलें, और कण्टेनर (मापने के लिए), नारियल के खोल, इस्तेमाल किया हुआ काग़ज़, इस्तेमाल किया हुआ अण्डा कार्टन (छाँटनेके लिए), सभी TLM विकसित करने के स्रोत बन जाते हैं।

5.4.2 सामग्री जो बच्चों द्वारा तैयार की जा सकती है

बच्चे अपनी कला और शिल्प कार्य के हिस्से के रूप में सरल TLM बना सकते हैं। शिक्षक इस्तेमाल किए गए कपड़े को नरम कपड़े के गोले, कठपुतली और खेलने के लिए खिलौने बनाने के लिए ला सकते हैं। **छोटे बच्चों के लिए साधारण खिलौने, पहेलियाँ और बोर्ड गेम बनाना बहुत ही आकर्षक गतिविधियाँ हो सकती हैं और वे इन सामग्रियों को डिज़ाइन करने और बनाने में विकास के सभी क्षेत्रों को नियोजित कर सकते हैं।**

5.4.3 बाज़ार से खरीदी जा सकने वाली सामग्री

कुछ TLM ऐसी सामग्रियों से बने होते हैं जो शायद स्थानीय रूप से उपलब्ध न हों। उन्हें बनाने के लिए अधिक परिष्कृत उपकरणों और औज़ारों की ज़रूरत हो सकती है। ये सामग्री बाज़ार से मंगवाई जा सकती है। ऐसी सामग्री की एक उदाहरण सूची नीचे दी गई है:

तालिका 5.4 क

बिल्डिंग ब्लॉक सेट (बुनियादी आकृतियाँ जो रंग, आकार और मोटाई में भिन्न होते हैं)	
रंगीन मोतियाँ और तार	मॉडलिंग सामग्री (जैसे लोई, क्ले)
लेसिंग बोर्ड	अलग-अलग आकार की गेंदें
सरल पहेलियाँ (जैसे पहेली, रंग पहेली, शरीर के अंगों की पहेली और आकृति पहेली)	
मैग्निफाइंग ग्लास	अलग-अलग क्षमता के मैग्नेट
डॉट और नम्बर डोमिनोज़	वर्णमाला और नम्बर कार्ड
चित्र कार्ड या फ्लैश कार्ड	एक या दो पंक्तियाँ लिखी हुई चित्र पुस्तकें
कहानी की किताबें	डफली या छोटा ड्रम
चित्र वार्तालाप चार्ट	नरम खिलौने (जैसे गुड़िया)
रसोई सेट	डॉक्टर सेट
मॉडल फल और सब्ज़ियाँ	प्लास्टिक का तराजू
विभिन्न आकारों के मापन कप	चटाइयाँ
चिपकाने की चीज़ें, गोंद, टेप	रस्सियाँ
कुंद कैंचियाँ	
अनेक तरह के कण्टेनर (जैसे कटोरे, बाल्टी, जग)	
विभिन्न प्रकार के उपकरण (जैसे चम्मच, कुप्पी, मापने वाले कप, चम्मच/कप, पेण्ट ब्रश)	
काग़ज़ की विविधता (जैसे अखबारी काग़ज़, चमकीला काग़ज़, रिसाइकिल किया काग़ज़)	
क्रेयॉन, मार्कर, रंगीन पेन्सिल, रंगीन चॉक	

5.4.4 कक्षा 1 और 2 के लिए गणित TLM

यहाँ कुछ बुनियादी TLM दिए गए हैं जिन्हें स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों से बनाना आसान है। ये सामग्रियाँ गणित सीखने को बच्चों के लिए अधिक ठोस अनुभव बनाती हैं।

काउंटर्स : कुछ भी हो सकते हैं जिन्हें गिना जा सके - कंकड़, बीज, बटन, फलियाँ, अनाज, दालें, मोतियाँ। पुरानी कार्डबोर्ड पैकिंग सामग्री का उपयोग करके भी साधारण काउंटर्स बनाए जा सकते हैं।

तीली-बण्डल : तीली-बण्डल मोटे तौर पर एक ही आकार के किसी भी स्टिक से बनाए जा सकते हैं। टहनियाँ, पुआल, घास, नारियल की झाड़ू की तीलियाँ (लगभग 10 सेमी लम्बे टुकड़ों में कटी हुई), टूथपिक्स, सूखे स्केच पेन - इन सभी का उपयोग रबर बैंड के साथ बण्डल बनाने के लिए किया जा सकता है। यह महत्त्वपूर्ण है कि इन्हें तब पेश किया जाए जब बच्चे 0-100 से संख्याएँ सीख रहे हों और उन्हें 10 तीलियों के बण्डल बनाने का बहुत अभ्यास हो। 10 बण्डलों को मिलाकर 100 का एक बड़ा बण्डल बनाया जा सकता है। ये स्थानीय मान (दाशमिक या दस आधारित/base-10 प्रणाली) की समझ के लिए ज़रूरी हैं और संख्याओं की तुलना करने के लिए भी इनका उपयोग किया जा सकता है। ये जोड़ और घटाव के लिए मानक एल्गोरिदम को समझने में भी बहुत उपयोगी हैं।

गणितमाला: पूर्ण संख्याओं और संक्रियाओं (या अन्य चीज़ों) को सीखने के लिए उपयुक्त 2 रंगों में 100 मोतियों की माला को पूर्णांकों के लिए 4 रंगों वाली माला तक बढ़ाया जा सकता है।

एरोकार्ड ऐरोकार्ड: संख्या कार्ड जो स्थानीय-मान को समझने में मदद करते हैं।

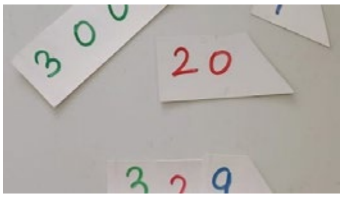

Flats-Longs-Units: पूर्ण संख्याओं के लिए 2D base-10 सामग्रियाँ।

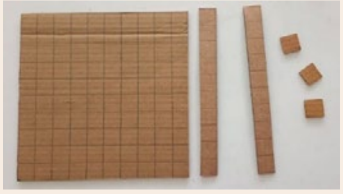

आकृतियाँ कट-आउट: कार्डबोर्ड से कटी हुई ज्यामितीय आकृतियाँ, आकृतियों की समझ विकसित करने में मदद करती हैं।

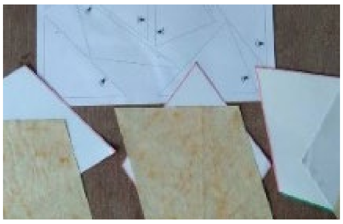

स्ट्रॉ मॉडल: कोणों और बहुभुजों के लिए मॉडल।	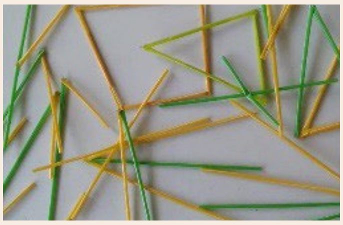
Polyominoes: यह एक लोकप्रिय पहेली है जहाँ प्रत्येक टुकड़ा identical वर्ग (वर्गों) से बना होता है और इसे विभिन्न तरीक़ों से इस्तेमाल किया जा सकता है।	
टैनग्राम: यह एक लोकप्रिय 7-पीस पहेली है और इसे विभिन्न तरीक़ों से इस्तेमाल किया जा सकता है।	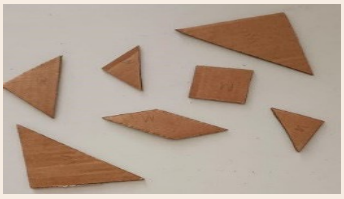

5.4.5 पुस्तकालय और बाल साहित्य

पुस्तकालय पुस्तकों के संग्रह के लिए एक स्थान है। भारतीय सन्दर्भ में पुस्तकों को देखना और उन्हें पढ़ना बहुत आवश्यक है क्योंकि यहाँ किसी texts को पुस्तकों से पढ़ने की संस्कृति अभी भी उभर ही रही है। पढ़ना सीखने के लिए पुस्तकालय एक बड़ी प्रेरणा हो सकते हैं और आसानी से सुलभ बाल साहित्य इस प्रेरणा और पढ़ने में रुचि पैदा करने में मददगार हो सकता है।

पुस्तकालय केवल पुस्तकों का संग्रह नहीं है। पुस्तकों का आकर्षक प्रदर्शन बच्चों का ध्यान आकर्षित करता है। पुस्तकालय को पढ़ने की एक सक्रिय जगह बनाए रखने के लिए समय-समय पर इसमें किताबों के प्रदर्शन को बदलना ज़रूरी है।

पुस्तकालय को केवल पुस्तकों के भण्डारण स्थान के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे पुस्तकों के साथ जुड़ाव के लिए एक सक्रिय वातावरण के रूप में देखा जाना चाहिए। पढ़कर सुनाना और किताबों के साथ अन्य जुड़ाव पुस्तकालय में सबसे बेहतर किए जा सकते हैं। शिक्षक और अन्य वयस्क भी पुस्तकालयों में पढ़ने के व्यवहार का मॉडल बन सकते हैं।

बच्चों को पुस्तकालय से किताबें 'उधार' लेने, उन्हें घर ले जाने और पुस्तकालय में समय पर वापस लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

यदि स्कूल में पुस्तकालय के लिए जगह है, तो शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कक्षा-कक्ष में किताबों की प्रदर्शनी में अच्छी गुणवत्ता वाले बाल साहित्य तक बच्चों की पहुँच हो सके। यह काम समय-समय पर पुस्तकालय से पुस्तकें 'उधार' लेकर कक्षा में प्रदर्शनी लगाकर किया जा सकता है। जहाँ स्कूलों में एक अलग पुस्तकालय के लिए पर्याप्त जगह नहीं है, वहाँ पढ़ने के कोने (reading corners) कक्षा में ही बनाए जा सकते हैं।

बॉक्स 5.4 क

पंचतंत्र

हर पंचतंत्र की कहानी से कुछ-न-कुछ सीखने को मिलता है! महान विद्वान विष्णु शर्मा ने चार राजकुमारों को जीवन का ज्ञान सिखाने के लिए, बहुत समय पहले पंचतंत्र की कहानियाँ लिखी थीं।

सुन्दर और एक-दूसरे से जुड़ी हुई दन्तकथाओं, जादुई कहानियों और जानवरों की कहानियों के संग्रह पंचतंत्र ने सदियों से युवाओं और वृद्धों को मंत्रमुग्ध किया है। ये दन्तकथाएँ समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं और आज भी प्रासंगिक हैं।

पंचतंत्र ने मौखिक लोककथाओं और अनुवादों के माध्यम से भारत के बाहर अपना रास्ता खोज लिया। उन्होंने दुनिया भर में दन्तकथाओं के अन्य लेखकों को काफ़ी प्रभावित किया। यह विश्व साहित्य में भारत के सबसे प्रभावशाली योगदानों में से एक है।

भारत में लोककथाओं और स्थानीय किंवदन्तियों की एक विविध और समृद्ध परम्परा है। इनका उच्च गुणवत्ता वाले बाल साहित्य में अनुवाद किया जा सकता है और विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराया जा सकता है।

साधारण चित्र पुस्तकों से लेकर प्रत्येक पृष्ठ पर छोटे पैराग्राफ वाली पुस्तकों तक (चित्रों के साथ) इस फाउंडेशनल स्टेज के श्रेणीबद्ध पाठकों के लिए उपयुक्त हैं। L1 और L2 दोनों की सूची में अन्य भाषाओं की पुस्तकों के साथ विशेष रूप से बच्चों की घरेलू भाषाओं में पुस्तकें होनी चाहिए। सम्भव है कि उनकी घरेलू भाषाएँ, L1 और L2 भिन्न हों। भाषाओं की विभिन्न बोलियों में लिखी गई पुस्तकें भी भाषायी विविधता के विचार को बढ़ावा देंगी और सभी प्रकार की भाषा के उपयोग को वैधता और गरिमा प्रदान करेंगी।

छपी पुस्तकों के अलावा ऑडियो पुस्तकें और छोटे बच्चों की स्पर्श क्षमताओं से जुड़ी पुस्तकें विविध क़िस्म के शिक्षार्थियों के लिए पुस्तकों को अधिक सुलभ बनाती हैं।

5.4.6 उपयोग संस्कृति

जितना ज़रूरी है स्कूल में सामग्री और पुस्तकों का भण्डारण, उतना ही ज़रूरी है इन सामग्रियों के उपयोग में देखभाल और रखरखाव की संस्कृति पर ज़ोर देना। शिक्षकों को इसे अपने शैक्षणिक अभ्यास के हिस्से के रूप में देखना चाहिए और सामग्री का सावधानीपूर्वक उपयोग करना चाहिए। स्कूल अक्सर सामग्री को अलमारी में बन्द करने से लेकर सामग्री के लापरवाह उपयोग तक के बीच झूलते हैं, दोनों ही मामलों में बच्चों के पास सार्थक रूप से काम करने के लिए कोई सामग्री नहीं रह जाती है। सामग्री का उपयोग करने और साझा करने के दौरान देखभाल और ज़िम्मेदारी की संस्कृति को इस चरण के लिए एक ज़रूरी सीखने के प्रतिफल के रूप में देखा जाना चाहिए। ये आदतें जल्दी बनती हैं और स्कूली शिक्षा के बाद के चरणों में भी चलती हैं।

पुस्तकालय की पुस्तकें जब उधार ली जाती हैं और घर ले जाई जाती हैं तो उन्हें नियत तारीख तक और अच्छी स्थिति में वापस कर देना चाहिए। इस उपयोग संस्कृति के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण है कक्षा में TLM का वास्तविक और प्रभावी उपयोग।

5.4.7 तकनीकी, डिजिटल और ऑडियो-विजुअल सामग्री

क.) इस स्तर पर तकनीकी का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए?

i. **बच्चे के लिए प्रासंगिक विषयवस्तु और सामग्री की विविध रेंजतक उनकी पहुँच सुनिश्चित करना। यह उनकी उम्र के उपयुक्त हो और कई भाषाओं में हो।**

ii. **दिव्यांग बच्चों समेत सभी बच्चों की इस सामग्री तक समान रूप से पहुँच और समावेशन सुनिश्चित करने के लिए विविध रूपों, स्थानों और प्रारूपों में विषयवस्तु तक पहुँच सुनिश्चित करना।**

iii. **यह सुनिश्चित करना कि सामग्री का मुख्य फोकस शिक्षार्थी के लिए एक सुखद अनुभव का निर्माण करना और बच्चे की सहज जिज्ञासा और प्रतिनिधित्व (agency) को जगाना है।**

iv. **शिक्षकों, माता-पिता और समुदाय की क्षमता के विकास में सहयोगकरना।**

ख.) विषयवस्तु, प्रारूप और पहुँच में विविधता

i. Multimodal पहुँच के लिए विषयवस्तु के विविध प्रारूप

1) ऑडियो - सुनने के कौशल को बढ़ाएगा और भाषा के विकास में सहायता करेगा।
2) वीडियो - दृश्य आकर्षक हैं और उपशीर्षक (subtitles) वाली विषयवस्तु भाषा उपलब्धि को बढ़ाएगी; सांकेतिक भाषा में वीडियो कंटेंट व्यापक पहुँच सुनिश्चित करेगी।
3) सुलभ डिजिटल स्वरूपों में टेक्स्ट।
4) चित्रों के साथ टेक्स्ट (जैसे चित्र पुस्तकें)
5) Interactive कंटेंट (जैसे खेल, पहेलियाँ, क्विज़)
6) संवर्द्धित वास्तविकता/आभासी वास्तविकता-आधारित विषयवस्तु, जो बच्चों और वयस्कों को किसी घटना, स्थान, या अनुभव का एक आभासी अनुभव दे सकती है, जिसका अनुभव करना मुश्किल है, उदाहरण के लिए मानव शरीर के अंदर, चन्द्रमा की सतह पर, सागर के भीतर।

ii. Multimodal पहुँच

1) रेडियो, लाउडस्पीकर
2) टीवी, प्रोजेक्टर
3) Interactive Voice Response (IVR) - मैसेजिंग सेवाएँ
4) स्मार्टफोन (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और Interactive कंटेंट)
5) टैबलेट (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और Interactive कंटेंट)
6) कंप्यूटर/लैपटॉप (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और Interactive कंटेंट)
7) स्मार्टबोर्ड (ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट और Interactive कंटेंट)
8) सहायक तकनीकियाँ

ग) तकनीकी आधारित TLM के विभिन्न प्रकार क्या हो सकते हैं?

i. कंटेंट सम्पदा- विस्तृत और विविध पहुँच को सुनिश्चित करना

1) वीडियो कंटेंट और ऑडियो-विजुअल कंटेंट से अलग आयु-उपयुक्त और सम्बन्धित ऑडियो कंटेंट शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के लिए एक उपयोगी सहायता होगी। उन्हें बालवाटिका, आँगनवाड़ियों और स्कूलों तक पहुँचाना चाहिए।

2) मनोरंजक तरीक़े से समझाए गए अपरिचित विचार (जैसे डायनासोर, ग्रह या रेगिस्तान में रहने वाले बच्चों के लिए समुद्र का परिचय या इसके विपरीत) बच्चों में शब्दावली और पृष्ठभूमि ज्ञान का निर्माण करने में मदद करेंगे। ये उनकी सीखने की आगे की यात्रा में काम आएंगे।

3) परिवार, जानवर, ब्रह्माण्ड और ग्रह, भोजन, प्राकृतिक तत्व और कई अन्य विषयों का पता लगाया जा सकता है।

4) एक दिन में एक कहानी सुनना या एक साथ एक वीडियो देखना और उसी के बारे में बात करना बच्चों के बीच जीवन्त बातचीत करने में मददगार होगा।

5) अगर शिक्षक या माता-पिता के पास कहानी की किताबों की एक श्रृखंला तक डिजिटल रूप से पहुँच होगी तो वे अपने बच्चों को "पढ़कर सुनाने" में सक्षम होंगे; ख़ासकर उन माता-पिता के लिए जो शिक्षा की भाषा से अपरिचित हैं या पढ़ने में पारंगत नहीं हैं।

6) डिजिटल पहेलियों और खेलों के अलावा, छाँटने, गिनने, या इनडोर और आउटडोर शारीरिक खेलों को "कैसे खेलें" विषय पर वीडियो का उपयोग, छोटे बच्चों के दिमाग़ और शरीर के लिए बहुत फ़ायदेमन्द होता है।

7) स्क्रीन पर ज़्यादा समय बिताने के जोखिम से बचते हुए बच्चों के बीच उनकी उम्र के लिए उपयुक्त डिजिटल साक्षरता विकसित करने में शिक्षक की केन्द्रीय भूमिका है।

ii. डिजिटल infrastructure और मंचों का लाभ उठाना

1) पारिस्थितिकी तंत्र के योगदानों से सामग्री जुटाना: विषयवस्तु निर्माताओं के जीवन्त पारिस्थितिकी तंत्र को एनडीईएआर (NDEAR) (ndear.gov.in) और विद्यादान (vdn.diksha.gov.) का उपयोग करके बच्चों, शिक्षकों, माता-पिता और समुदाय के लिए विषयवस्तु का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इन प्लेटफॉर्मों पर शिक्षकों के पास विभिन्न प्रारूपों में विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु उपलब्ध होती है। वे अपनी कक्षा की ज़रूरतों के आधार पर डिजिटल सामग्री का विवेकपूर्ण तरीक़े से उपयोग कर सकते हैं।

2) संदर्भगत पाठ्यचर्या से जुड़ी विषयवस्तु तक पहुँच में आसानी के लिए QR कोड का उपयोग करते हुए शिक्षक और विद्यार्थी सामग्री को 'जीवन्त' बनाना। QR कोड का उपयोग यह भी सुनिश्चित करता है कि लिंक की गई सामग्री को किसी भी समय अपडेट/संशोधित किया जा सकता है।

3) बहुभाषी स्थितियों में तकनीकी, शिक्षकों की सहायता करती है ताकि वे प्रत्येक बच्चे की उसकी मातृभाषा में सीखने की आवश्यकता का ध्यान रख सकें। स्थानीय/क्षेत्रीय भाषाओं में TLM के अनुवाद के लिए भाषिनी (https://bhashini.gov.in/en/ और ULCA (https://bhashini.gov.in/ulca) कार्यक्रमों का लाभ उठाया जा सकता है।

iii. बच्चों के लिए डिजिटल infotainment

1) इस वास्तविकता को स्वीकार करते हुए कि सभी उम्र और पृष्ठभूमि के बच्चे डिजिटल विषयवस्तु के उपभोक्ता और इण्टरनेट के उपयोगकर्ता बन गए हैं, मनोरंजन उद्देश्यों के लिए भी सामग्री का ज़िम्मेदार तरीक़े से निर्माण आवश्यक है। यह देश भर में बच्चों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने वाली गुणवत्तापूर्ण सामग्री में निवेश करने और विकसित करने का भी एक अवसर है। गाने, तुकबन्दी, पहेलियाँ (riddles and puzzles), कहानियाँ, फिल्में, लघु फिल्में और एनिमेशन सीरीज़ शुरुआती वर्षों में बहुत ज़रूरी हैं।

2) टीवी और ओटीटी शो बच्चों के लिए शैक्षिक और मनोरंजक रहे हैं। दुनिया के कई हिस्सों में शुरुआती वर्षों के लिए विशेष चैनलों और कार्यक्रमों के उदाहरण मौजूद हैं। भारत अपने विशाल मनोरंजन और रचनात्मक प्रतिभा के साथ प्रारम्भिक वर्षों में बच्चों के विकास के वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर कई भाषाओं में अद्वितीय सामग्रियों का उत्पादन कर सकता है।

3) रेडियो - सार्वजनिक प्रसारण मीडिया, साथ ही सामुदायिक रेडियो पहल, प्रारम्भिक वर्षों के बच्चों के लिए विषयवस्तु वितरित करने के लिए बहुत शक्तिशाली सहयोगी हो सकते हैं।

4) इण्टरनेट - बच्चे को उनके मनोरंजन की सामग्री की तलाश के समय थोड़े समय के लिए डिजिटल उपकरण दिए जा सकते हैं। अत्यन्त संक्षिप्त सामग्री तैयार करना जैसे कि 90-सेकंड की कहानियाँ बहुत उपयोगी हैं, इसे सोशल मीडिया पर आसानी से साझा किया जा सकता है।

5) किसी चित्र पुस्तक से पढ़कर सुनाई जाने वाली कहानी या यहाँ तक कि ऑडियोबुक तक पहुँच बहुत फ़ायदेमन्द होगी। ख़ुद पढ़कर सुनाना आदर्श है लेकिन एक विशेषज्ञ नैरेटर द्वारा पढ़ी गई कहानियों का वीडियो भी उतना ही फ़ायदेमन्द होगा। प्रारम्भिक वर्षों में बच्चों के लिए पुस्तकों और विषयवस्तु के प्रकाशकों के पारिस्थितिकी तंत्र को ऐसे विचारों पर विषयवस्तु विकसित करने और उत्पादित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6) बच्चों के साथ पढ़ने में मदद करने के लिए ऐप के रूप में उपकरण, मुफ्त डिजिटल किताबें, पहेलियाँ और खेल संज्ञानात्मक विकास के लिए फ़ायदेमन्द होंगे।

घ) समावेशी पहुँच के लिए तकनीकी (दिव्यांग)

i. डिजिटल विषयवस्तु: सभी डिजिटल विषयवस्तु सुलभ, समावेशी और प्रयोग करने योग्य होनी चाहिए। तकनीकी समाधानों में उपयोगिता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। सीखने के लिए किसी भी डिजिटल माध्यम का उपयोग करने वाले सभी दिव्यांग बच्चों के लिए भाषा और संख्या ज्ञान कौशल विकसित करने की आवश्यकता महत्त्वपूर्ण है।

ii. सुलभ स्वरूपों में डिज़ाइन किए गए उपकरण, ऐसे कई शब्दों को शीघ्रता से समझने के लिए जिन्हें बच्चा पहचानना और पढ़ना जानता है; या शिक्षकों के लिए डिजिटल रूप से उपलब्ध है, श्रवण-बाधित बच्चे के पढ़ने के स्तर और संख्या ज्ञान में स्तर का आकलन करने के लिए मददगार हो सकते हैं। अक्सर स्क्रीनिंग और आकलन टूल्स विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिज़ाइन नहीं किए जाते हैं।

iii. विषयवस्तु के निर्माण और curation को प्रोत्साहित करने के लिए प्लेटफॉर्म सभी प्रकार के बच्चों के अनुरूप होने चाहिए। दिव्यांग बच्चों को भी ध्यान में रखकर डिजिटल रूप से बनाई गई कहानियों, गीतों, कविताओं और नाटकों की आवश्यकता होती है ताकि हाशियाकरण या संलग्नता की कमी का मुकाबला किया जा सके।

iv. दिव्यांग विद्यार्थियों की सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए विशेष रूप से curated e-content ऑडियो, वीडियो, ISL और अन्य डिजिटल प्रारूपों जैसे Epub, फ्लिप बुक्स, इंटरैक्टिव, Digitally Accessible Information System (DAISY) आदि पर उपलब्ध होनी चाहिए।

ड) ECCE में डिजिटल तकनीकी का उपयोग करने में सावधानियाँ

बच्चों के डिजिटल अधिकार: समानता के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चे को तकनीकी की भागीदारी और उपयोग का अधिकार हो और उस तक पहुँच हो। सुरक्षा और भागीदारी के बीच एक सन्तुलित दृष्टिकोण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। बच्चों को सूचना, स्वतंत्रता और गोपनीयता का अधिकार है और दुर्व्यवहार व नुकसान से सुरक्षा का अधिकार है। डिजिटल वातावरण तक पहुँच को सक्षम करने में भेदभाव रहित, साथ-ही-साथ उनकी गोपनीयता, सुरक्षा और दुरुपयोग से सुरक्षा सुनिश्चित करना। बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र आयोग ने 2021 में बच्चों के डिजिटल अधिकारों पर सामान्य टिप्पणी 25 को अपनाया और निम्नलिखित मार्गदर्शन जारी किया। बाल अधिकारों के चार सिद्धान्त हैं :

i. ग़ैर-भेदभाव: बच्चों को भेदभाव से बचाया जाना चाहिए और उनके साथ उचित व्यवहार किया जाना चाहिए, चाहे वे कोई भी हों।

ii. उत्तरजीविता और विकास: बच्चे हानिकारक हस्तक्षेप के बिना बड़े होकर जैसा भी बनना चाहते हैं, उसके लिए उनका समर्थन किया जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में, बच्चों के डेटा की गोपनीयता और उपयोग को सावधानी से संभाला जाना चाहिए।

iii. बच्चे का सर्वोत्तम हित: कोई भी निर्णय लेते समय, वयस्कों - सरकारों और व्यवसायों सहित - को वही करना चाहिए जो बच्चों के लिए सबसे अच्छा हो न कि स्वयं के लिए।

iv. बच्चों के विचारों का सम्मान: बच्चों की राय होती है जिसे उन सभी चीज़ों में ध्यान में रखा जाना चाहिए जिनकी उन्हें परवाह है।

च) UNICEF द्वारा अनुशंसित और NDEAR द्वारा स्वीकृत

"एक डिजिटल दुनिया में, जहाँ उनके कार्य और बातचीत उन्हें वयस्कता में प्रभावित कर सकती हैं, बच्चों की रक्षा करने का कर्तव्य सरकारों, निजी संगठनों और नागरिक समाज का है।

i. बच्चों को गोपनीयता और उनके व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा का अधिकार है।

ii. बच्चों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और विविध स्रोतों से जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है।

iii. बच्चों को उनकी प्रतिष्ठा पर हमले का शिकार नहीं होने का अधिकार है।

iv. बच्चों की निजता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को उनकी विकसित क्षमताओं के अनुसार संरक्षित और सम्मानित किया जाना चाहिए।

v. बच्चों को निजता और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अपने अधिकारों के उल्लंघन और दुर्व्यवहार, और उनकी प्रतिष्ठा पर हमलों के लिए उपचार प्राप्त करने का अधिकार है।

छ) अन्य चिन्ताएँ

बच्चों द्वारा डिजिटल तकनीक का उपयोग करने में लगने वाले समय और उनकी शारीरिक गतिविधि और मानसिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव के बारे में कई चिन्ताएँ भी उठाई गई हैं। साक्ष्य बताते हैं कि डिजिटल तकनीक का मध्यम और नियंत्रित उपयोग बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए फ़ायदेमन्द हो सकता है, जबकि अत्यधिक उपयोग हानिकारक हो सकता है।

खण्ड 5.5
किताबें और पाठ्यपुस्तकें

फाउंडेशनल स्टेज पर बच्चों को texts के विभिन्न रूपों (जैसे चित्र पुस्तकें, कहानी पुस्तकें, सरल से जटिल होती पुस्तकें और वर्कशीट्स) के साथ जुड़ने की आवश्यकता है। हालाँकि वर्तमान ज़मीनी हक़ीक़त को देखते हुए, कक्षा 1 और 2 के शिक्षक पाठ्यपुस्तकों के उपयोग के विचार से अधिक परिचित हैं। पाठ्यपुस्तकें कक्षा 1 और 2 के लिए विकसित की जा सकती हैं, लेकिन इस NCF के शिक्षणशास्त्रीय विचारों के अनुसार, उन्हें अपनी कल्पना और उपयोग में पूरी तरह से अलग होना चाहिए। यह खण्ड फाउंडेशनल स्टेज के लिए उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों सहित सभी प्रकार की पुस्तकों के विकास और उपयोग का वर्णन करता है।

5.5.1 बच्चों की किताबें

पिछले खण्ड में फाउंडेशनल स्टेज में कक्षा-कक्ष के वातावरण के लिए आवश्यक खिलौनों और अन्य जोड़-तोड़ के लिए ठोस सामग्री की प्रासंगिकता के बारे में बात की गई थी। बच्चों को विभिन्न प्रकार की पुस्तकों और अन्य पठन सामग्री तक पहुँच प्रदान करना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। मानव विरासत की सम्पत्ति किताबों में कैद है, और छोटे बच्चों को इस दुनिया में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित करना स्कूली शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। जैसा कि खण्ड 4.5 में उल्लेख किया गया है, अच्छी गुणवत्ता वाला बाल साहित्य बच्चे की भाषा और साक्षरता के विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3 साल के बच्चों सहित सभी बच्चों के लिए उपयुक्त विभिन्न प्रकार की किताबें स्कूलों को उपलब्ध कराई जानी चाहिए। बड़ी चित्र वाली किताबें, रंग-बिरंगे ग्रेड वाले रीडर, दिलचस्प कहानियों वाली किताबें और कविताएँ, ये सभी किताबें पढ़ने को बच्चों के लिए एक रोमांचक और आकर्षक अनुभव बना देंगे। हमारे देश में कहानियों, लोककथाओं और किंवदन्तियों की एक समृद्ध विरासत है जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न होती है। इन कहानियों का सभी भाषाओं में अनुवाद करने की आवश्यकता है और इन स्रोतों से अच्छे बाल साहित्य का निर्माण किया जा सकता है और सभी के लिए उपलब्ध कराया जा सकता है।

कई भाषाओं में दक्षताओं को बढ़ावा देने के लिए अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई द्विभाषी पुस्तकों का उपयोग किया जा सकता है। द्विभाषी texts कुछ सन्दर्भों में उपयोगी रहे हैं जब शिक्षकों में उन्हें प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता होती है।

विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध कराकर बाल मन में साहित्य बोध और इसमें रुचि को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

5.5.2 6-8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों का महत्त्व

NEP 2020 ने पाठ्यपुस्तकों के सम्बन्ध में विशेष सिफ़ारिश की है। NEP 2020 (4.31) में कहा गया है कि ‘ विषयवस्तु में कमी और स्कूली पाठ्यचर्या के लचीलेपन में वृद्धि - और रटने कीबजाय रचनात्मकता पर नए सिरे से ज़ोर देना चाहिए। यह स्कूली पाठ्यपुस्तकों में समानान्तर परिवर्तनों के साथ होना चाहिए। सभी पाठ्यपुस्तकों का उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण समझी जाने वाली आवश्यक मूल सामग्री (चर्चा, विश्लेषण, उदाहरण और अनुप्रयोगों के साथ) को शामिल करना होगा, लेकिन साथ-ही-साथ स्थानीय सन्दर्भों और ज़रूरतों के अनुसार किसी भी वांछित बारीकियों और पूरक सामग्री को शामिल करना होगा। जहाँ सम्भव हो, स्कूलों और शिक्षकों के पास राष्ट्रीय और स्थानीय सामग्री वाली पाठ्यपुस्तकों के एक समूह में से पाठ्यपुस्तकें चुनने के विकल्प होंगे - ताकि वे अपने विद्यार्थियों और समुदायों की ज़रूरतों के अनुसार अपनी शैक्षणिक शैली के लिए सबसे उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों का चुनाव कर सकें।’

फाउंडेशनल स्टेज के लिए पाठ्यपुस्तकों की भूमिका बहुत स्पष्ट होनी चाहिए :

क) फाउंडेशनल स्टेज के पहले तीन वर्षों में, 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए कोई निर्धारित पाठ्यपुस्तक नहीं होनी चाहिए। सीखने का माहौल, TLM और, जहाँ उपयुक्त हो, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों और शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सरल वर्कशीट्स ही पर्याप्त हैं। **इस आयु वर्ग के बच्चों पर पाठ्यपुस्तकों का बोझ नहीं डाला जाना चाहिए। जहाँ 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकें अनुपयुक्त हो सकती हैं वहीं गतिविधि पुस्तकें शिक्षकों का मार्गदर्शन कर सकती हैं।** पाठ्यचर्या बनाने वाले इस आयु वर्ग के लिए कक्षा के अनुभवों की योजना बनाने और व्यवस्थित करने के लिए शिक्षकों के लिए हैंडबुक के साथ ऐसी किताबें विकसित कर सकते हैं।

ख) प्रारम्भिक चरण के अन्तिम दो वर्षों में 6 से 8 वर्ष की आयु के लिए सरल और आकर्षक पाठ्यपुस्तकों पर विचार किया जा सकता है। **इस चरण के लिए पाठ्यपुस्तकों में न केवल कक्षा-कक्षीय शिक्षण के लिए विषयवस्तु होनी चाहिए बल्कि बच्चों को स्वयं काम करने के अवसर देने के लिए और उनके काम के रिकॉर्ड के रूप में भी कार्यपुस्तिका होनी चाहिए।**

ग) **यह सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है कि कक्षा में विषयवस्तु और गतिविधियाँ केवल पाठ्यपुस्तक में जो है उस तक ही सीमित न रहें।** विशेष रूप से भाषा और साक्षरता विकास के लिए। अच्छे बाल साहित्य सहित टेक्स्ट के विभिन्न स्रोतों को कक्षा में लाने की आवश्यकता है। जहाँ आवश्यक और उपयुक्त हो, शिक्षकों को पाठ्यपुस्तक के साथ वर्कशीट्स का इस्तेमाल करना चाहिए।

घ) पाठ्यपुस्तकों को उपयुक्त क्यूआर कोड के माध्यम से डिजिटल और ऑडियो-विजुअल सामग्री सन्दर्भों के साथ उचित रूप से संवर्द्धित किया जा सकता है।

अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई पाठ्यपुस्तकें शिक्षक को कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं - मुख्य विषयवस्तु, शिक्षण-विधि और आकलन के मामले में दिशा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आगे की खोज के क्षेत्रों को पाठ्यपुस्तकों में भी दर्शाया जा सकता है। शिक्षकों को उनकी पसन्द की सामग्री का उपयोग करने की गुंजाइश दी जानी चाहिए और पाठ्यपुस्तक में भी इसे इंगित किया जा सकता है। वे क्रमिक, सुसंगत और सार्थक सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करने के लिए एक तैयार संसाधन होती हैं और अपेक्षित सीखने के प्रतिफलों को हासिल करने में मदद करती हैं।

पाठ्यपुस्तकें अक्सर एकमात्र ऐसी किताबें होती हैं जिनसे कई बच्चे जुड़ते हैं। अपने आस-पास के परिवेश से परे की दुनिया के बारे में उनकी समझ पाठ्यपुस्तकों के दृष्टान्तों के माध्यम से निर्मित होती है, गतिविधियाँ और आकलन उन्हें उनसे अपेक्षाओं से परिचित कराते हैं, और पाठ्यपुस्तक की सामग्री उन्हें प्रेरित करती है।

शिक्षक के काम और बच्चों के सीखने में उनकी केन्द्रीयता को देखते हुए, पाठ्यपुस्तकें अक्सर कक्षाओं में बदलाव लाने का साधन होती हैं। यह बात और भी अधिक संगत हो जाती है, जब हम मानते हैं कि पाठ्यपुस्तकों के महत्त्वपूर्ण माध्यम से शिक्षा के लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, दक्षताओं, सीखने के प्रतिफलों, शिक्षणशास्त्र से सम्बन्धित सिद्धांतों, विषयवस्तु , जैसा कि इस NCF में व्यक्त किया गया है, को कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं में लागू किया जाता है।

दक्षताओं पर शिफ्ट हुए फ़ोकस के साथ, पाठ्यपुस्तकों को विशिष्ट दक्षताओं की उपलब्धि को सुनिश्चित करने की दिशा में विषयवस्तुके सुसंगत मैपिंग को भी प्रतिबिम्बित करना चाहिए।

5.5.3 पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन के सिद्धान्त

पाठ्यपुस्तक के डिज़ाइन के लिए निम्नलिखित सिद्धान्त उपयोगी और मार्गदर्शक हैं।[12]

क) **पाठ्यचर्या सिद्धान्त:** पाठ्यपुस्तक को विशेष रूप से फाउंडेशनल स्टेज के लिए बताई गई दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए। पाठ्यपुस्तक बनाने वालों और डिज़ाइनरों को न केवल उस विशेष डोमेन या विषय क्षेत्र की दक्षताओं के बारे में पता होना चाहिए जिसके लिए पाठ्यपुस्तक विकसित की जा रही है, बल्कि पूरे चरण की दक्षताओं के बारे में भी पता होना चाहिए। यह उन्हें फाउंडेशनल स्टेज में विभिन्न क्षेत्रों (domains) के बीच क्षैतिज सम्बन्ध बनाने में मददगार होगा।

ख) **अनुशासन/विषय सिद्धान्त:** पाठ्यपुस्तक बनाने वालों को applied भाषाविज्ञान और गणित का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। पाठ्यपुस्तक में शामिल विषयवस्तु और अनुक्रम को इन विषयों के कुछ मूल सिद्धान्तों का खण्डन न करने के प्रति सावधानी रखनी होगी।

ग) **शिक्षणशास्त्र सिद्धान्त:** पाठ्यपुस्तक बनाने वालों को दक्षता और विषयवस्तु के लिए उपयुक्त शिक्षणशास्त्र की स्पष्ट समझ होनी चाहिए (उदाहरण के लिए भाषा में मौखिक भाषा, phonics और शब्द समाधान निर्देश तथा अर्थ निर्माण के सन्तुलित दृष्टिकोण को एक साथ शामिल करने की आवश्यकता है)।

घ) **तकनीकी सिद्धान्त:**
पाठ्यपुस्तक बनाने वालों को बच्चों के सीखने के अनुभव को बढ़ाने के लिए उपलब्ध वर्तमान तकनीकी और ऑडियो-विजुअल सामग्री के बारे में पता होना चाहिए। ऐसी गतिविधियाँ, जिनमें डिजिटल तकनीकी और बाह्य सामग्री के सन्दर्भ शामिल हैं, को पाठ्यपुस्तक में उचित रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

ङ) **संदर्भ सिद्धान्त:** पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु के चयन के लिए बच्चे का स्थानीय सन्दर्भ और वातावरण एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण विचार होना चाहिए। परिचित से अपरिचित की ओर बढ़ना सीखने का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है और पाठ्यपुस्तक में दोनों तरह के सन्दर्भों का सन्तुलन होना चाहिए। परिचित सन्दर्भ बच्चोंके लिए सुखद होते हैं और अपरिचित सन्दर्भों को उनके विचारों और प्राथमिकताओं के लिए जिज्ञासा व चुनौती पैदा करनी चाहिए।

च) **प्रस्तुति सिद्धान्त:** पाठ्यपुस्तकों को आकर्षक होना चाहिए और उन्हें छोटे बच्चों का ध्यान आकर्षित करना चाहिए। फाउंडेशनल स्टेज के लिए, दृश्य सामग्री और टेक्स्ट के बीच सन्तुलन को दृश्य सामग्री की ओर झुकाया जाना चाहिए।

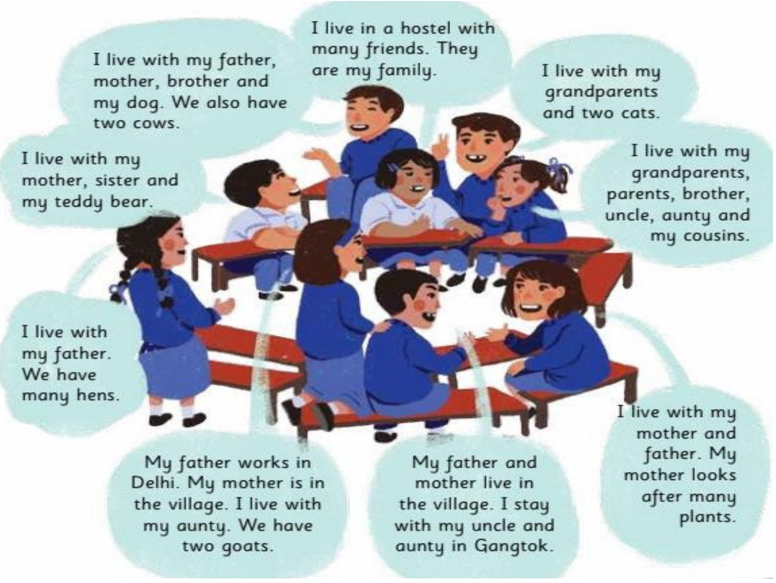

चित्र 5.5 क : स्रोत- कक्षा 2 के लिए सिक्किम ईवीएस पाठ्यपुस्तक

colour schemes और डिज़ाइन थीम्स आकर्षक और सुसंगत होनी चाहिए। छोटे बच्चे समझ सकें इसलिए टेक्स्टसामग्री के फ़ॉण्ट और आकार दोनों देखने में स्पष्ट और न्यूनतम भ्रम पैदा करने वाले वाले होने चाहिए।

छ) **विविधता और समावेशन:** भारतीय सन्दर्भ में, पाठ्यपुस्तकों के लिए विषयवस्तु के चुनाव में एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त के रूप में विविधता और समावेशन को बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है। यहाँ तक कि राज्यों के भीतर भी क्षेत्रीय भिन्नताएँ हैं और पाठ्यपुस्तकों में इनका पर्याप्त प्रतिनिधित्व होने की आवश्यकता है। सन्तुलित जेण्डर और सामुदायिक प्रतिनिधित्व (उदाहरण के लिए कहानियों, पात्रों, चित्रों के उपयोग के माध्यम से) सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

5.5.4 पाठ्यपुस्तक विकास की प्रक्रिया

पाठ्यपुस्तक विकास के सिद्धान्तों को लागू करने की प्रक्रिया निम्नलिखित हो सकती है :

क) **पाठ्यक्रम दस्तावेज़ का निर्माण** – पाठ्यचर्या के मार्गदर्शक सिद्धान्तों को अमल में लाते हुए दक्षताओं, सीखने के प्रतिफलों, किसी विषय की प्रकृति, शिक्षणशास्त्र और आकलन, विषय को पढ़ाने के उद्देश्य, शामिल की जाने वाली विषयवस्तु के लिए दृष्टिकोण (अवधारणा या थीम), पाठ्यक्रम दस्तावेज़ की संरचना (प्रश्नों, प्रमुख अवधारणाओं, सुझाई गई रणनीतियों या गतिविधियों के रूप में), विषयवस्तु का चयन करना जो संज्ञानात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हो, आदि पाठ्यक्रम दस्तावेज़ में शामिल हो सकते हैं। पाठ्यक्रम दस्तावेज़ विषयवस्तुकी सीमा और गहराई तय करने के लिए शोध अध्ययनों, नीतिगत दस्तावेज़ों, शिक्षक के अनुभवों, विषय-विशेषज्ञ की रायों आदि का उपयोग कर सकता है।

ख) **पाठ्यपुस्तक लेखकों, समीक्षकों और डिज़ाइनरों/चित्रकारों का पैनल** - पाठ्यपुस्तक के विकास में निम्नलिखित लोग शामिल हो सकते हैं:

i. **पाठ्यपुस्तक लेखक और समीक्षक** - शिक्षकों को इस समूह का हिस्सा अवश्य होना चाहिए। उनके अलावा विषय विशेषज्ञ, विश्वविद्यालयों के अध्यापक व शोधार्थी भी शामिल हो सकते हैं।

ii. **डिज़ाइनर/चित्रकार** - ऐसे लोग/संगठन जिनके पास स्थानीय सन्दर्भ और डिज़ाइन दोनों की समझ हो। बेहतर हो कि स्थानीय विशेषज्ञों को शामिल किया जाए और उन्हें प्रक्रिया की शुरुआत से शामिल होना चाहिए।

iii. **तकनीकी विशेषज्ञ** - डिजिटल मीडिया के माध्यम से पाठ्यपुस्तक के पूरक के रूप में बहुत सारी सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है। तकनीकी विशेषज्ञ के लिए शुरू से ही पाठ्यपुस्तक विकास टीम का हिस्सा होना महत्त्वपूर्ण है - मीडिया कंटेंट पर बाद में विचार नहीं किया जाना चाहिए।

प्रक्रिया की एक सामान्य समझ बनाने के लिए समूह को शुरुआत से एक साथ काम करना चाहिए और प्रतिक्रिया, सुझावों और कई पुनरावृत्तियों के लिए पाठ्यपुस्तक को खुला होना चाहिए।

ग) **विषयवस्तु, पेडागॉजी और आकलन का चुनाव** - चुने गए टॉपिक/थीम में शिक्षार्थी के सन्दर्भ (पिछले अनुभवों, भाषा सहित) और आगे की खोज के लिए गुंजाइश को शामिल करने की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, कुमाऊँ में इस लोकप्रिय लोरी का उपयोग कक्षाओं में बातचीत शुरू करने के लिए किया जा सकता है।

घुघुती बसूति	*कहे कबूतर गुटर-गूँ*
क्या खान्दि	*क्या खाओगे?*
दुद भाती?	*दूध और चावल?*
के उन्दा कांसै थकुली!	*काँसे की थाली में!*
कू देली	*कौन देगा?*
ब्वे मेरी!	*माँ मेरी!*

प्रत्येक कक्षा की विषयवस्तु अगली कक्षा के लिए अग्रगामी (precursor) होनी चाहिए। विषयवस्तु और सीखने के प्रतिफलों के साथ पेडागॉजी और आकलन के संरेखण (alignment) को सुनिश्चित करना आवश्यक है।

घ) **पाठ्यपुस्तक की संरचना और प्रयुक्त भाषा** - यह देखते हुए कि पाठ्यपुस्तक शिक्षक और बच्चे के बीच जुड़ाव का एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है, इसे दोनों के लिए उपयोगी होना चाहिए। विषयवस्तु के अलावा, पाठ्यपुस्तक में शिक्षकों और अभिभावकों के लिए एक नोट शामिल हो सकता है। यह नोट शिक्षक को सुझाए गए शिक्षणशास्त्र की तरफ़ बढ़ने में मददगार होगा। साथ ही पाठ्यपुस्तक में टीचर नोट्स भी होने चाहिए जिनमें पाठ्यपुस्तक के हर अध्याय का संक्षिप्त ब्यौरा हो, शिक्षणशास्त्रीय तरीका हो और विशिष्ट उदाहरणों के साथ आकलन के अवसर दिए गए हों।

ङ) **प्रस्तुति और डिज़ाइन** - पाठ्यपुस्तक की प्रस्तुति फ़ॉन्ट आकार, छवियों, रेखाचित्रों, उपयोग किए गए रंगों और इन तीनों के सटीक सन्तुलन पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, प्रारम्भिक ग्रेड में textual कंटेंट सीमित और बड़ी संख्या में छवियाँ हो सकती है। फ़ॉन्ट का आकार बड़ा होना चाहिए और उपयोग किए गए चित्र संवेदनशील व समावेशी होने चाहिए। उपयोग की जाने वाली भाषा कक्षा के लिए उपयुक्त और विषय के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए।

च) **लेखन, समीक्षा और प्रायोगिक संचालन** - पाठ्यपुस्तक के लेखन के लिए पर्याप्त समय, नियमित सहकर्मी समीक्षा और पैनल समीक्षा की आवश्यकता होती है। जिस विषयवस्तु पर काम किया जा रहा है, उसकी आवश्यकता को परिभाषित करने और दोहराने के लिए चित्रकारों के साथ नियमित बैठकें आवश्यक हैं। यह पाठ्यपुस्तक निर्माण के प्रयासों की गहनता को बढ़ाता है और सभी विषयों में टेक्स्ट, छवियों, विचारों की पुनरावृत्ति से बचने में सहायता करता है क्योंकि चित्रकार सभी लेखकों के साथ काम करते हैं।

समीक्षा को रचनात्मक और उत्साहजनक होने की आवश्यकता होगी। फीडबैक में सुझाव और वैकल्पिक विचार शामिल होने चाहिए। लेखकों को कई पुनरावृत्तियों के लिए खुला होना चाहिए और विषयवस्तु लिखने के सिद्धान्तों से परिचित होना चाहिए। समीक्षा प्रक्रिया को अध्यायवार और फिर समग्र रूप से पाठ्यपुस्तक के लिए किया जाना चाहिए। पाठ्यपुस्तक की सावधानीपूर्वक प्रूफ़ रीडिंग आवश्यक है, यह उनकी गुणवत्ता में योगदान देता है। पाठ्यपुस्तकों के प्रायोगिक संचालन के लिए चयनित स्कूलों की पहचान की जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के प्रायोगिक संचालन के दौरान, लेखकों को स्कूलों का दौरा करना चाहिए और कक्षा के अवलोकन, शिक्षकों, बच्चों, अभिभावकों के साथ बातचीत और पाठ्यपुस्तक के बारे में प्रतिक्रिया प्राप्त करनी चाहिए।

छ) **पाठ्यपुस्तकों पर शिक्षकों का आमुखीकरण (orientation)** - पाठ्यपुस्तक की उत्पत्ति, उसके तर्क, शिक्षणशास्त्र और आकलन के दृष्टिकोण, कक्षा में इसके उचित उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए इसके बारे में शिक्षकों का आमुखीकरण करने का प्रावधान होना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के उपयोग में आने वाली चुनौतियों को समझने के लिए स्कूल के दौरों, वेबिनार, best practices को साझा करने और शिक्षकों के साथ नियमित बातचीत के माध्यम से इस आमुखीकरण को किया जाना चाहिए।

5.5.5 पाठ्यपुस्तकें और आकलन

पाठ्यपुस्तक में शिक्षकों को शिक्षण-अधिगम के साथ आकलन को एकीकृत करने के ठोस तरीक़े होने चाहिए। कुछ सम्भावित विचार जो पाठ्यपुस्तक में ऐसे आकलन प्रक्रियाओं का मार्गदर्शन कर सकते हैं, नीचे सूचीबद्ध हैं :

क) पाठ्यपुस्तक में स्पष्ट रूप से उन दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों का उल्लेख होना चाहिए जो पूरी पुस्तक और सम्बन्धित अध्यायों से प्राप्त किए जाने हैं। यदि आवश्यक हो, तो इन प्रतिफलों को सरल बनाया जा सकता है और शिक्षकों व अभिभावकों के लिए पढ़ने में आसान तरीक़े से प्रस्तुत किया जा सकता है।

ख) शिक्षक को सीखने का आकलन करने के लिए पाठ्यपुस्तक में कई अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। ये प्रश्नों और आकलन कार्यों के रूप में हो सकते हैं।

ग) पूरी पाठ्यपुस्तक में आकलन अभ्यासों (exercises) को शामिल किया जा सकता है। पाठ्यपुस्तकों में इन अभ्यासों के संचालन के लिए दिशानिर्देश और सुझाए गए आकलन उपकरण और रूब्रिक दिए जा सकते हैं।

घ) समय पर, विश्वसनीय और व्यक्तिगत फीडबैक देना प्रभावी आकलन का एक प्रमुख घटक है। पाठ्यपुस्तक के भीतर, शिक्षकों को विशिष्ट आकलन कार्यों पर फीडबैक देने के लिए संकेत दिए जा सकते हैं।

ङ) वर्कशीट्स और गतिविधि शीट्स में सरल अभ्यास होने चाहिए जिन्हें बच्चे स्वतंत्र रूप से कर सकें। आमतौर पर आकर्षक दृश्यों के साथ न केवल आकलन में, बल्कि सीखने में भी विशेष मदद मिलती है।

5.5.6 पाठ्यपुस्तकों के सार्थक उपयोग के लिए शिक्षक सहायता

पाठ्यपुस्तक में शिक्षक के लिए शिक्षण-अधिगम के व्यापक दृष्टिकोण को इंगित करने के साथ-साथ पाठ्यपुस्तक का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए दिशानिर्देश शामिल होने चाहिए। यह इंगित करना चाहिए कि पाठ्यपुस्तक में सुझाई गई सामग्री / गतिविधियों के सेट के उपयोग के परिणामस्वरूप प्रत्येक अध्याय या इकाई या पाठ के लिए किन दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करना है।

पाठ्यपुस्तक में सीखने के कार्यों, गतिविधियों, परियोजनाओं, क्षेत्र अध्ययन यात्राओं, सरल प्रयोगों के साथ-साथ आकलन जैसी प्रक्रियाओं पर शिक्षकों के लिएदिशानिर्देश भी प्रदान करना चाहिए। इसमें टेबल, आँकड़े, फ्लो चार्ट, कार्टून व चित्र शामिल होने चाहिए जो सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में सहयोग करें, साथ ही शिक्षक को उन मिलती-जुलती सामग्रियों के बारे में बताएँ जिन्हें स्थानीय रूप से प्राप्त किया जा सकता है।

शिक्षक को विषयवस्तु या गतिविधि के औचित्य की व्याख्या करने वाले और सुझावों के नोट्स, पाठ्यपुस्तक में रणनीतिक बिन्दुओं के लिए समर्पित पृष्ठ व व्यावहारिक सुझाव देने वाले पृष्ठ, जो शिक्षक के कक्षा अध्यापन के दायरे के अलावा भी हो सकते हैं, कुछ ऐसे उपकरण हैं जिनका उपयोग पाठ्यपुस्तक में किया जा सकता है।

यदि व्यावहारिक हो, तो पाठ्यपुस्तक के सहयोगी के बतौर एक शिक्षक मैनुअल भी बनाया जा सकता है। इसे पाठ्यपुस्तक के दृष्टिकोण और विषयवस्तु, दोनों के अनुरूप होना चाहिए। यद्यपि शिक्षक मैनुअल मुख्य रूप से शिक्षक के लिए है लेकिन इसके उपयोग से बच्चों को भी लाभ होगा। उदाहरण के लिए, शिक्षक मैनुअल में कक्षा में विविधता को समायोजित करने, राज्य स्तर पर चुनी गई सामग्री को प्रासंगिक बनाने और अन्य विषयों के साथ जुड़ाव पर सुझाव शामिल हो सकते हैं। यह बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं की व्याख्या कर सकता है। यह सुझा सकता है कि किसी ख़ास विषय में सीखना कैसे होता है। यह सब शिक्षक को इनके अनुरूप शिक्षण और आकलन करने में मदद करेगा।

खण्ड 5.6
सीखने का माहौल

NCF में उल्लिखित दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए हर बच्चे की भागीदारी का समर्थन करने वाला एक समावेशी, स्वागत करने वाला, रंगीन और आनन्दमय वातावरण बहुत महत्त्वपूर्ण है।

क) इनडोर वातावरण में अच्छी रोशनी होनी चाहिए और उसे अच्छी तरह हवादार होना चाहिए।

ख) यहाँ बच्चों को सुरक्षित और आमंत्रित महसूस करना चाहिए।

ग) इसे समावेशी बनाने की ज़रूरत है।

घ) इसमें बच्चे के लिए परिचित और नए, दोनों तरह के अनुभवों का सन्तुलन होना चाहिए।

ङ) इसमें ऐसी सामग्री का सन्तुलन होना चाहिए जो विकास के विभिन्न क्षेत्रों को प्रोत्साहित करे।

च) इसे व्यक्तिगत कार्य और सहकारी कार्य, दोनों के लिए अनुमति देनी चाहिए।

छ) इसमें बच्चों के काम का प्रदर्शन शामिल होना चाहिए और बच्चों की कार्य-प्रगति को संरक्षित करने की अनुमति भी देनी चाहिए।

5.6.1 आन्तरिक वातावरण को व्यवस्थित करना

उपरोक्त सिद्धान्तों के आधार पर कक्षा-कक्ष को व्यवस्थित करने का एक तरीक़ा नीचे दिखाया गया है। यह व्यवस्था ECCE के कुछ मूलभूत सिद्धान्तों का उपयोग करके बनाई गई है। शिक्षकों को कक्षा-कक्ष के आयामों और आकार, स्थानीय परिस्थितियों और उपलब्ध सामग्री के आधार पर अपने कक्षा के वातावरण को व्यवस्थित करने की स्वायत्तता है।

चित्र में फर्श और दीवार, दोनों को दिखाया गया है और विभिन्न स्थानों और उनके उपयोगों को क्रमांकित करके नीचे उनका विवरण दिया गया है:

क) **रनिंग ब्लैकबोर्ड (चित्र में a):** रनिंग ब्लैकबोर्ड को कक्षा की तीन दीवारों के निचले भाग पर, दीवार के नीचे से आधा फुट जगह छोड़ने के बाद बनाया जा सकता है क्योंकि बच्चे उस स्थान पर लिख नहीं सकते हैं। प्रत्येक बच्चे को ब्लैकबोर्ड पर कम-से-कम 3 फीट की जगह चाहिए। कला के साथ-साथ साक्षरता और संख्या ज्ञान की गतिविधियों में बच्चों को ख़ुद को अभिव्यक्त करने के लिए रनिंग ब्लैकबोर्ड का उपयोग कई तरीक़ों से किया जा सकता है। इस व्यवस्था का लाभ यह है कि बच्चों का काम शिक्षक और अन्य बच्चों को तुरन्त दिखाई देता है।

ख) **वृत्त (चित्र में b):** बच्चों के लिए सर्कल टाइम में बैठने के लिए फ़र्श पर संकेन्द्रित (concentric) वृत्तों का एक सेट बनाना अच्छा होगा। व्यवस्था और उद्देश्य की भावना के साथ काम करने के लिहाज़ से बच्चों के लिए फ़र्श की जगह को साफ़ और व्यवस्थित रखना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

ग) **कोनों की स्थापना (चित्र में c):** कक्षा के अन्दर कोनों की योजना बनाई जा सकती है। यह स्थान एक समय में लगभग चार बच्चों को समायोजित कर सकता है। कोनों को गत्ते के बक्से या कम ऊँचाई वाली अलमारियों द्वारा सीमांकित किया जा सकता है और उनके भीतर उपयुक्त सामग्री रखी जा सकती है। यह कोने विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। उदाहरण के लिए:

i. नाटक का कोना - इस कोने को दो तरफ़ से पारदर्शी पर्दों से ढका जा सकता है। कोने में मुखौटों और कठपुतलियों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के सेट रखे जा सकते हैं। इन सामग्रियों को कम लागत और स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से इकट्ठा या तैयार किया जा सकता है। इस कोने में बच्चों को बिना किसी हिचकिचाहट के खेलने का मौका मिलता है और वे वयस्कों को जो करते हुए देखते हैं उसका अनुकरण करते हैं।

ii. ब्लॉक/पहेली और गणित का कोना - इस कोने में हम ब्लॉक ब्लॉक्स, पहेलियाँ, मोतियाँ, पेगबोर्ड, मिलान करने, वर्गीकरण की सामग्री आदि की व्यवस्था कर सकते हैं। सामग्री को अक्सर बदलना होगा। संवेदी विकास के साथ-साथ संख्या ज्ञान के लिए ऐसी सामग्री का उपयोग करते हुए गतिविधियाँ बहुत प्रभावी होती हैं। बच्चे अपनी कल्पना और मौखिक अभिव्यक्तियों को विकसित करने के लिए मॉडल बनाने और इन मॉडलों के बारे में बात करने के लिए ब्लॉक और अन्य सामग्रियों का भी उपयोग कर सकते हैं।

iii. चित्रकला का कोना - इस कोने में काग़ज़, क्रेयॉन, पेंसिल, रंग, ब्रश, पत्ते और डण्डे हो सकते हैं। यह कोना बच्चों को मुक्त ड्राइंग तथा अपने विचार और भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर देगा। कपड़ा, धागा, ओरिगेमी पेपर, कार्डबोर्ड शीट और शिल्प कार्यों के माध्यम से वे त्रिविमीय अभिव्यक्तियों में भी सक्षम बनेंगे।

iv. पुस्तकें/भाषा का कोना - इस कोने में चित्र पुस्तकें, चित्र चार्ट, चित्र कार्ड और बाल साहित्य हो सकता है। इस कोने के माध्यम से बच्चों को पुस्तकों के माध्यम से चीज़ें देखने, चुपचाप किताबें पढ़ने, चित्र कार्ड के बारे में बात करने और समूह में अन्य बच्चों के साथ अपने विचार साझा करने आदि का अवसर मिलेगा। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चे मौखिक भाषा की क्षमता, छपे हुए पाठ के प्रति जागरूकता और पढ़ने की क्षमता हासिल करते हैं।

स्थान की उपलब्धता के आधार पर अतिरिक्त कोनों को जोड़ा जा सकता है। छोटे बच्चों के लिए सुरक्षित घरेलू उपकरणों को अलग करने और उन्हें एक साथ रखने के लिए एक टिंकरिंग कॉर्नर, बच्चों के दिमाग़ को चुनौती देने के लिए आदर्श होगा।

घ) **कक्षा प्रदर्शनी (चित्र में d):** कक्षा को जीवन्त और गतिशील रखने के लिए बच्चों और शिक्षकों दोनों के काम को प्रदर्शित करने के लिए कमरे में एक विशिष्ट स्थान महत्त्वपूर्ण है। डिस्प्ले को कार्डबोर्ड के टुकड़े के उपयोग से व्यवस्थित किया जा सकता है, जिस पर एक सफेद शीट चिपकाई जाती है। डिस्प्ले को दीवार पर टांगने की ज़रूरत है, बहुत ज़्यादा ऊँचाई पर नहीं, बल्कि बच्चों की आँखों की ऊँचाई पर। यह सुनिश्चित करना महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों के सभी कार्य एक के बाद एक प्रदर्शित किए जाएँ।

i. मौसम चार्ट: इस स्थान पर दैनिक और साप्ताहिक मौसम के साथ-साथ सप्ताह के दिन की जानकारी प्रदर्शित की जा सकती है। एक चार्ट पेपर के साथ एक कार्डबोर्ड का टुकड़ा पृष्ठभूमि में हो सकता है और दिन के मौसम को चित्र से और लिखकर दर्शाया जा सकता है।

ii. समय सारिणी: यह महत्त्वपूर्ण है कि समय-सारिणी कक्षा में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो। यह शिक्षक के साथ-साथ बच्चों का भी मार्गदर्शन करती है। इस उम्र के बच्चे संरचना और क्रम को अच्छा समझते हैं।

iii. शिक्षक द्वारा तैयार किए गए चार्ट: कक्षा में यह स्थान शिक्षक द्वारा तैयार किए गए चार्ट प्रदर्शित कर सकता है। इसमें प्रासंगिक कहानियाँ, या स्कूल के आसपास या बच्चों के घरों में पाई जाने वाली वस्तुओं की तस्वीर हो सकती है। इसे उस समय सीखे जा रहे विषय के लिए प्रासंगिक होना चाहिए। शिक्षक और बच्चे इन चार्टों को एक साथ तैयार कर सकते हैं।

iv. नियम चार्ट: कक्षा के नियमों को प्रमुखता से प्रदर्शित करना महत्त्वपूर्ण है। इन्हें केवल नियमों का क्रम नहीं होना चाहिए, बल्कि नियमों को चित्रों और कहानियों के माध्यम से रचनात्मक रूप से व्यक्त किया जाना चाहिए।

ङ) **पोर्टफ़ोलियो बैग (चित्र में e):** बच्चों के काम को रिकॉर्ड और सुरक्षित करना ज़रूरी है। इसे अन्य बच्चों के लिए सुलभ और दिखने में स्पष्ट बनाना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। यह आकलन के लिए भी प्रासंगिक होता है। पोर्टफ़ोलियो बैग को तार/रस्सी पर लटकाया जा सकता है। इसे प्रत्येक बच्चे के नाम के साथ बड़े करीने से लेबल किया जाना चाहिए।

इन प्रदर्शन क्षेत्रों के साथ, प्रत्येक कक्षा में एक आइना और घड़ी होनी चाहिए। जूते और कूड़ेदान रखने के लिए बाहर निर्धारित स्थान होना चाहिए।

इन स्थानों की लेबलिंग, डिस्प्ले में टेक्स्ट और रीडिंग कॉर्नर आदि के उपयोग से माहौल को समृद्ध, रंगीन और खुशहाल बनाना चाहिए।

5.6.2 बाहरी उपकरण और सामग्रियाँ

क) **रेत का गड्ढा:** यदि पर्याप्त जगह उपलब्ध हो, तो रेत का गड्ढा बच्चों के लिए एक उत्कृष्ट खेल की जगह होगी। जहाँ ऐसी जगह उपलब्ध न हो वहाँ ईंटों और रेत का इस्तेमाल करके ऐसा गड्ढा बनाया जा सकता है। पत्थरों और अन्य धारदार या नुकीली वस्तुओं को हटाने के लिए रेत के गड्ढे / बॉक्स को समय-समय पर साफ़ किया जाना चाहिए। खेल के दौरान बच्चे रेत क्षेत्र का उपयोग कर सकते हैं।

ख) **मिट्टी का डिब्बा:** ईंटों से बना छोटा डिब्बा जिसमें मिट्टी भरी हो, बच्चों के लिए आकर्षक होता है। वे इसमें मिट्टी को मिलाने, उसे गूँथने और मिट्टी की आकृतियाँ व खिलौने बनाने का काम कर सकते हैं। यह उनकी सूक्ष्म व स्थूल मांसपेशियों की क्षमता को विकसित करने का बहुत अच्छा अभ्यास है।

ग) **पानी:** बहुत से छोटे बच्चों को पानी में खेलने से सुकून मिलता है। बिना छलकाए पानी डालने से कई मांसपेशियों के समन्वय में मदद मिलती है और ध्यान बढ़ता है। पानी मापन के लिए भी उपयोगी है। रेत और मिट्टी के क्षेत्रों के साथ पानी की गतिविधियों के लिए बाल्टी, मग और एक टब की सामान्य व्यवस्था रखी जानी चाहिए।

घ) **किचन गार्डन:** विभिन्न प्रकार के पौधों (जैसे फूल, लताएँ, जड़ें, सब्जियाँ, पत्तेदार सब्जियाँ) के साथ भीतरी वातावरण से सटा एक छोटा किचन गार्डन बच्चों को संवेदी अनुभव, अपने हाथों से काम करने के अवसर और प्राकृतिक पर्यावरण के बारे में अवधारणाएँ देता है। सामूहिक कार्य, शारीरिक श्रम और कार्य के प्रति ऐसे ही अन्य सकारात्मक दृष्टिकोण भी किचन गार्डन में काम करने वाले बच्चों द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं।

ङ) **बाहरी खेल उपकरण:** स्लाइड, झूमा-झूमी (see-saws) और झूले कुछ आवश्यक आउटडोर खेल उपकरण हैं। यदि स्लाइड में चढ़ने के लिए सीढ़ी है, तो बहुत छोटे बच्चे भी उस पर चढ़ पाते हैं। यह उन बच्चों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण विकास गतिविधि है जिनके पास चढ़ने के लिए छोटे पेड़ नहीं हैं। स्लाइड पर चढ़ने के लिए बाहरी क्षेत्र में छोटी सीढ़ियाँ रखी जा सकती हैं। बाद के वर्षों में, अधिक श्रम करके चढ़ाई का अनुभव लेने के लिए रस्सी की सीढ़ी टांगी जा सकती है। पुराने टायरों का उपयोग करके झूले बनाए जा सकते हैं।

अध्याय 6
सीखना आगे बढ़ाने के लिए आकलन

आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। इसमें बच्चों के सीखने के बारे में अलग-अलग स्रोतों से जानकारी को व्यवस्थित कर इकट्ठा किया जाता है। हालाँकि विषयवस्तु और शिक्षणशास्त्र बच्चों के लिए सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करने में मदद करते हैं, पर आकलन से शिक्षक, माता-पिता और ख़ुद बच्चों को भी उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी पाने में मदद मिलती है। शिक्षक बच्चों के लिए सीखने के अनुभवों की योजना बनाने और उन्हें व्यवस्थित करने के लिए नियमित रूप से चल रहे आकलन से मिलने वाली जानकारी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

हर बच्चा अद्वितीय होता है और उसके सीखने के तरीक़े और सीखने की गति अलग होती है। आकलन इस तरह की विविधता को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए। आकलन से निकलने वाले नतीजों से शिक्षक उन बच्चों की भी पहचान कर सकते हैं जिन्हें अतिरिक्त मदद और ज़्यादा ध्यान की ज़रूरत है। खण्ड 6.1 में आकलन के कुछ मार्गदर्शक सिद्धान्त बताए गए हैं, जो फाउंडेशनल स्टेज के लिए प्रासंगिक हैं। खण्ड 6.2 में आकलन के उन तरीक़ों और साधनों का ब्यौरा दिया गया है, जो फाउंडेशनल स्टेज के लिए ज़रूरी हैं। शिक्षक द्वारा बच्चों की प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण करने के तरीक़ों को खण्ड 6.3 में बताया गया है। खण्ड 6.4 उन तरीक़ों का तफ़सील से ब्यौरा देता है, जिनसे बच्चे के सीखने के आकलन और प्रगति को दर्ज और सम्प्रेषित किया जाता है।

खण्ड 6.1
आकलन के कुछ मार्गदर्शक सिद्धान्त

6.1.1 आकलन की प्रकृति और उद्देश्य

NCF द्वारा प्रस्तावित दक्षता-आधारित पाठ्यचर्या में आकलन बच्चों की सीखने की उपलब्धियों का प्रमाण एकत्र करने का आसान तरीक़ा और साधन है।

फाउंडेशनल स्टेज पर आकलन नीचे दिए गए उद्देश्यों को पूरा कर सकता है :

क) बच्चे की ज़रूरतों, प्राथमिकताओं और रुचियों की पहचान करना - यह जानकारी शिक्षक को विषयवस्तु और शैक्षणिक पद्धतियों के चयन में मार्गदर्शन कर सकती है।

ख) शिक्षक को बच्चे की सीखने की उपलब्धि के बारे में जानकारी देना और आगे के कामों के लिए शिक्षक को राह दिखाना - आकलन कार्यों बच्चों की प्रतिक्रियाएँ जानकारी का ख़ज़ाना हैं जिस पर शिक्षक आगे कार्य कर सकते हैं। ये प्रतिक्रियाएँ बच्चे की सोच और सीखने की प्रक्रिया को समझने का एक रास्ता देती हैं। बच्चों की प्रतिक्रियाओं का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करना शिक्षक का उतना ही महत्त्वपूर्ण काम है जितना कि सोच-समझकर आकलन कार्य को डिज़ाइन करना।

ग) सीखने का समेकन करना – जब आकलन कार्य अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया हो, तो बच्चों को सार्थक गतिविधियों और अभ्यासों के ज़रिए उनके सीखने को मज़बूत करने में मदद करता है। हाल ही में अर्जित ज्ञान और कौशल के अनुप्रयोग के माध्यम से बच्चे अपनी समझ और क्षमताओं को और गहरा करते हैं।

घ) बच्चों के लिए सीखने के उपयुक्त अवसर देने की कोशिशों में मदद और समन्वय सम्भव बनाना – आकलन के ज़रिए जमा की गई जानकारी को बच्चों को सीखने को बढ़ावा देने में रुचि रखने वाले सभी हितधारकों के साथ साझा किया जा सकता है।

ङ) प्रत्येक बच्चे के लिए एक समयावधि में प्रगति की दर देना - यह न केवल दक्षताओं की उपलब्धि है, बल्कि इन दक्षताओं को प्राप्त करने में लगने वाला समय भी है जो सीखने की प्रक्रिया के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी देता है।

च) कक्षा में बच्चों के सीखने की उपलब्धि का समग्र स्तर पर एक सम्पूर्ण दृष्टिकोण देना - यह जानकारी सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को हासिल करने के लिए विषयवस्तु एवं पेडागॉजी की योजना बनाने और इन्हें संगठित करने में शिक्षक और विद्यालय दोनों के लिए मददगार है।

छ) बच्चों की अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और सीखने की गति में अन्तर को देखते हुए, एक ही कक्षा में बच्चों के बीच सीखने में फ़र्क जल्दी उभरना शुरू हो जाते हैं और अगर वक़्त पर इसे सुलझाया नहीं किया गया तो दूसरी कक्षा तक इसके असर देखे जा सकते हैं। बेहतर ढंग से डिज़ाइन किया गया आकलन कार्य पर्याप्त रूप से नहीं सीख पा रहे बच्चों के बारे में ख़ास अतिरिक्त सीखने के अनुभव तैयार करने में शिक्षकों की मदद कर सकता है।

ज) बच्चों द्वारा सामना किए जाने वाली सम्भावित विकासात्मक चुनौतियों या सीखने की कठिनाइयों के बारे में शुरुआती संकेत देना - हालाँकि यह विशेष रूप से फाउंडेशनल स्टेज में ज़रूरी है कि सभी बच्चों की समान रूप से देखभाल की जाए। साथ ही बच्चों को खराब तरीक़े से डिज़ाइन किए गए आकलन कार्य के आधार पर लेबल करने से बचा जाना चाहिए।

इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया अध्याय 8 देखें।

6.1.2 फाउंडेशनल स्टेज के लिए आकलन के बारे में कुछ विचार

फाउंडेशनल स्टेज में बच्चे बहुत छोटे होते हैं। आकलन की प्रक्रिया की वजह से होने वाला कोई भी ग़ैर-ज़रूरी भावनात्मक तनाव किसी भी अच्छी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के ख़िलाफ़ है। नीचे दी गई बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है :

क) आकलन से बच्चों पर ज़रूरत से ज़्यादा बोझ नहीं पड़ना चाहिए। आकलन उपकरण और प्रक्रियाओं को इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि वे बच्चों के लिए सीखने के अनुभव का एक स्वाभाविक हिस्सा हों। इस चरण के लिए निश्चित परीक्षण और परीक्षा पूरी तरह से अनुपयुक्त आकलन उपकरण हैं।

ख) आकलन सूचना का एक भरोसेमन्द स्रोत होना चाहिए। चूँकि यह बच्चे के सीखने का इतना महत्त्वपूर्ण सबूत है, इसलिए इसमें दक्षताऔर सीखने के प्रतिफलों की उपलब्धि के आकलन के उद्देश्य को सटीकता से प्रतिबिंबित होना चाहिए। अपेक्षित सीखने के प्रतिफल और आकलन के बीच सम्बन्ध को स्पष्ट और सटीक होना चाहिए।

ग) बच्चों और उनके सीखने में विविधता को आकलन में स्वीकार्यता दी जानी चाहिए। बच्चे अलग-अलग तरह से सीखते हैं और अपने सीखने को तरह-तरह से व्यक्त भी करते हैं। किसी सीखने के प्रतिफल या दक्षता की उपलब्धि का आकलन करने के कई तरीक़े हो सकते हैं। एक ही सीखने के प्रतिफल के लिए अलग-अलग तरह के आकलन कार्य को डिज़ाइन करने और हर एक आकलन का सही उपयोग करने की क्षमता शिक्षक में होनी चाहिए।

घ) आकलन को अभिलेख-संधारण और दस्तावेज़ीकरण में सहयोगी होना चाहिए। प्रमाणों के व्यवस्थित संग्रह के माध्यम से बच्चों की प्रगति का वर्णन और विश्लेषण किया जाना चाहिए।

ङ) आकलन को शिक्षक पर ज़रूरत से ज़्यादा बोझ नहीं बनना चाहिए। शिक्षक के पास आकलन के लिए उचित उपकरण के विवेकपूर्ण ढंग से चयन करने और आकलन से जुड़े रिकॉर्ड बनाने और रखने की अवधि तय करने में स्वायत्तता होनी चाहिए। हालाँकि ऐसी स्वायत्तता महत्त्वपूर्ण है, लेकिन बच्चों के आकलन का व्यवस्थित रिकॉर्ड रखना शिक्षक की पेशेवर जिम्मेदारियों के एक ज़रूरी हिस्से के रूप में देखा जाना चाहिए।

खण्ड 6.2
आकलन के तरीक़े और उपकरण

बुनियादी स्तर के लिए उपयुक्त आकलन के दो व्यापक तरीक़े हैं - बच्चों का अवलोकन और बच्चों द्वारा अपने सीखने के अनुभव के हिस्से के रूप में प्रस्तुत किए गए कार्यों का विश्लेषण (analysing artefacts) करना।

यह खण्ड विस्तार से बताता है कि इन विधियों और उपकरणों का फाउंडेशनल स्टेज पर कैसे उपयोग किया जा सकता है। अन्य उपकरण और तरीक़े जो सृजित किए गए हैं, उन्हें पिछले खण्ड में दिए गए आकलन के सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए।

6.2.1 बच्चों का अवलोकन

समय-समय पर किया जाने वाला अवलोकन शिक्षक को बच्चे के सीखने की व्यापक समझ प्रदान करता है। ऐसे कई प्रसंग हो सकते हैं जहाँ बच्चे अपने व्यवहार, नज़रिए और अपनी सीख को अभिव्यक्त करते हैं।

बच्चे अपनी समझ को करके, दिखाकर और बताकर ज़ाहिर करते हैं। बच्चों की विभिन्न दक्षताओं की उपलब्धि, जिन्हें बच्चे कई सम्भावित तरीक़ों से प्रदर्शित कर सकते हैं, को समझने में अवलोकन शिक्षकों की मदद कर सकते हैं। इसे प्रभावित करने वाले कारकों को भी शिक्षक नोट कर सकते हैं। कभी-कभी, विशेष हालात या चीज़ें बच्चे को कुछ ख़ास तरीक़े से काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं। जैसे, अगर शिक्षक बच्चे की खिलौने को दूसरे बच्चों को देने और वापस लेने की क्षमता का पता लगाना चाहता है, तो एक विशेष परिस्थिति बनाई जानी चाहिए ताकि बच्चा साझा करने या लेने की अपनी क्षमता प्रदर्शित कर सके। शिक्षक एक बच्चे को कक्षा के एक शान्त कोने में किसी और बच्चे के साथ बारी-बारी से खेलने के लिए कह सकता है।

आकलन के लिए व्यवस्थित अवलोकन में निम्नलिखित चरण शामिल हैं :

क) योजना बनाना: कक्षा में अवलोकन के लिए कुछ बच्चों की पहचान करें। तय करें कि आप पाठ्यचर्या के किन उद्देश्यों को देखना चाहेंगे। उन दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों की एक सूची बनाएँ जिन्हें आप उसके भीतर देखना चाहते हैं। अवलोकनों को रिकॉर्ड करने के लिए आवश्यक उपकरण का निर्धारण और तैयारी करें।

ख) सबूत इकट्ठा करें: एक समय चुनें जहाँ चयनित दक्षताओं या सीखने के प्रतिफल बच्चों द्वारा प्रदर्शित किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर यह स्थूल मोटर विकास (gross motor development) के बारे में है, तो आउटडोर खेल अवलोकन के लिए एक अच्छी सेटिंग होंगे। अगर यह सामाजिक विकास के बारे में है, तो बच्चों से समूह गतिविधियाँ या नाटकीय खेल करवाए जा सकते हैं। आप जो देखते हैं उसे ठीक से रिकॉर्ड करते रहें। उदाहरण के लिए, यदि आप देखते हैं कि कोई बच्चा स्वतंत्र रूप से खेल में अपनी बारी लेने में सक्षम है तो आप अपनी चेकलिस्ट पर एक टिक चिह्नित कर सकते हैं और सबूत के रूप में सटीक अवलोकन को नोट कर सकते हैं।

ग) चिन्तन और आकलन करें: प्रत्येक बच्चे की समय-समय पर प्रगति को ट्रैक करने के लिए सबूत और रिकॉर्ड का अध्ययन करें। प्रत्येक ठोस साक्ष्य शिक्षक को सूचित करेगा कि बच्चों के लिए भविष्य में शिक्षण की योजना कैसे बनाई जाए और उसे कैसे संशोधित किया जाए।

सामान्य शैक्षणिक प्रक्रियाओं के दौरान अवलोकन के लिए कुछ उदाहरणात्मक संकेत नीचे दिए गए हैं:

क) कहानी सुनाना :

i. क्या बच्चा कहानी में शामिल हो रहा है?

ii. क्या बच्चा चित्रों का वर्णन कर रहा है?

iii. क्या बच्चा कहानी के विभिन्न पात्रों के बारे में सवाल पूछ रहा है?

iv. क्या बच्चा व्यक्तिगत अनुभवों को कहानी की घटनाओं से जोड़ रहा है?

v. क्या बच्चा कहानी से परिचित शब्द याद कर रहा है?

vi. क्या बच्चा कहानी के बारे में पसन्द या नापसन्द ज़ाहिर कर रहा है?

ख) निर्देशित बातचीत:

i. क्या बच्चा सर्कल टाइम के दौरान दूसरों की बात सुन रहा है?

ii. क्या बच्चा बोलने के लिए अपनी बारी का इन्तज़ार कर रहा है?

iii. क्या बच्चा दूसरों की बात सुनकर अपनी ख़ुशी या नाराज़गी व्यक्त कर रहा है?

iv. क्या बच्चा आगे क्या होने वाला है इसे पहचान पाने में सक्षम है?

ग) खेल – स्वतंत्र, मार्गदर्शित या संरचित :

i. क्या बच्चा साधारण समस्याओं को हल कर रहा है?

ii. क्या बच्चा खेल सामग्री के साथ जुड़ने के लिए बड़ी और छोटी मांसपेशियों का उपयोग करने में सक्षम है?

iii. क्या बच्चा विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम है?

iv. क्या बच्चा दूसरों की भावनाओं के प्रति उचित प्रतिक्रिया देने में सक्षम है?

6.2.1.1 अवलोकन दर्ज करने के उपकरण

शिक्षक अपने अवलोकन को दर्ज करने के लिए उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड / वृत्तांत अभिलेख (anecdotal records), चेकलिस्ट और इवेंट सैंपलिंग (event sampling) जैसे उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं।

क) उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड / वृत्तांत अभिलेख (Anecdotal records) उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड विशेष रुचि या चिन्ता के ख़ास प्रकरण या घटना को विस्तार से रिकॉर्ड करने का एक प्रयास है।

जब कोई ख़ास घटना शिक्षक का ध्यान आकर्षित करती है, तो वे जितनी जल्दी हो सके घटना का वर्णनात्मक विवरण लिख लें। उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड इस बात का अवलोकन है कि बच्चे किसी ख़ास गतिविधि में लगे रहने के दौरान क्या कहते हैं और क्या करते हैं।

शिक्षक की आवाज़, 6.2क

उपाख्यानात्मक अवलोकन रिकॉर्ड का एक नमूना	
प्रसंग : मैं 4-5 साल के बच्चों की एक कक्षा को पढ़ाता हूँ। जब मैं अपनी कक्षा के बच्चों के साथ 'कहानी सुनने-सुनाने' पर काम कर रहा था, तब मैंने कुछ ऐसी चीज़ों का अवलोकन किया जिन्होंने मेरा ध्यान अपनी तरफ़ खींचा।	
नाम: देवी	उम्र: 4.5 साल
अवलोकन की तारीख़ और समय : DDMMYY, HH:MM	स्थान/सेटिंग: कक्षा
अवलोकन का उद्देश्य : भावनात्मक नियमन (Emotional regulation)	
अवलोकन : मैंने अपनी कक्षा में 'राजेश ने अपनी बहन को गले लगाया' कहानी पढ़ी। देवी गुस्सा हो गई और बगल में बैठे बच्चों को धक्का दे दिया। कहानी पढ़ने के बाद मैंने बच्चों से अपने परिवार का चित्र बनाने को कहा। देवी ने ऐसा किया लेकिन चित्र में दिख रहे लड़के को क्रेयॉन रंग से काला कर दिया। मैंने उससे इसके बारे में पूछा तब उसने कहा, 'यह मेरा भाई है। मैं उसे पसन्द नहीं करती हूँ। वह हमेशा मुझे चिढ़ाता है और मेरा खाना ले लेता है। माता-पिता उसे ही पसन्द करते हैं।'	
व्याख्या: • ऐसा लगता है कि देवी को अपने भाई के लिए अपनी भावनाओं का सामना करने में कठिनाई हो रही है। • हो सकता है कि वह अपने माता-पिता से अपनी भावनाओं को जताना न जानती हो। • इसका प्रभाव अन्य बच्चों के साथ उसके व्यवहार पर भी हो रहा था।	
कार्ययोजना: • इस बारे में देवी के माता-पिता से बात करना। इसके लिए उन्हें घर पर कुछ इंतज़ाम करने पड़ सकते हैं - जैसे कि देवी और उसके भाई को एक साथ खेलने की सुविधा देना, दोनों को कुछ काम एक साथ करने के लिए कहना, एक-दूसरे से खाना बाँटने के लिए कहना। साथ ही उसे स्पष्ट रूप से जताना कि किस तरह वे उसके भाई और उससे समान रूप से प्यार करते हैं। • माता-पिता और भाइयों के पात्रों वाली कहानियों और रोल-प्ले के प्रति कक्षा में देवी की प्रतिक्रियाओं और दृष्टिकोण पर अधिक ध्यान देना; प्रगति का निरीक्षण करना और दर्ज करना।	

ख) चेकलिस्ट्स

चेकलिस्ट, बच्चे ने सूचीबद्ध सीखने के प्रतिफलों को पूरा किया है या नहीं, यह पहचानकर दर्ज करने का उपकरण है। आमतौर पर इसमें बच्चे के प्रदर्शन परिणाम को हाँ या नहीं के रूप में दर्ज किया जाता है।

चेकलिस्ट्स आमतौर पर सीखने के लिए एक अनुक्रमिक (sequential) दृष्टिकोण पर आधारित होती हैं और इसमें यह माना जाता है कि सभी बच्चे एक ही व्यवस्थित क्रम में अनुक्रम से होते हुए आगे बढ़ेंगे। जब कई तरह के परिणामों को देखना होता है, तब चेकलिस्ट्स का इस्तेमाल किया जाता है। इनका इस्तेमाल जल्दी और आसानी से किया जा सकता है। शिक्षकों

को चेकलिस्ट और प्रश्नावली का उपयोग सुधार के मक़सद से करना चाहिए न कि बच्चों की उपलब्धि के 'रिपोर्ट कार्ड' के रूप में। चेकलिस्ट्स का उपयोग करते समय, एक 'mix and match' दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी जाती है जो चेकलिस्ट को किसी और आँकड़ा संग्रहण विधि के साथ जोड़ता है (जैसे, निर्णय लेने के लिए अवलोकन दर्ज करने वाली चेकलिस्ट)।

भाषा और साक्षरता के कौशल के अवलोकन के लिए एक नमूना चेकलिस्ट नीचे दी गई है। इसका इस्तेमाल एक बच्चे के लिए और बच्चों के समूह के लिए किया जा सकता है।

तालिका 6.2क : अवलोकन के लिए नमूना चेकलिस्ट

	सुनना और बोलना	**तिमाही 1**	**तिमाही 2**	**तिमाही 3**
1	बातचीत और कहानियों को ध्यान से सुनना			
2	छोटी कविताओं, अभिनय गीतों को सुनाना, दोहराना और संगीत और लयबद्ध गतिविधियों में भाग लेना			
3	2 या 3 चरण के निर्देशों का पालन करने में सक्षम होना			
4	उचित रूप से प्रयुक्त वाक्यों के माध्यम से सवालों का जवाब देना			
5	उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग करना और किसी विचार/वस्तु/चित्र/अनुभव के बारे में पूर्ण वाक्य बोलना			
	शुरुआती पढ़ना (Emergent reading)			
6	*प्रिंट जागरूकता* और अर्थ निर्माण - कक्षा और परिवेश में छपी हुई सामग्री (प्रिन्ट) के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करता है			
7	अपने नाम और बोले गए शब्दों व लिखित शब्दों के समूह को जोड़ने और पहचानने में सक्षम होना			
8	*पुस्तकों के साथ जुड़ाव* - आयु-उपयुक्त पुस्तकों (जैसे, चित्र पुस्तकें, कविता पुस्तकें, कहानी पुस्तकें) की शृंखला को जानने-समझने की क्षमता प्रदर्शित करता है।			
9	पढ़ने का नाटक करना - यह किताबों में रुचि, किताबों को देखना और उन्हें पढ़ने की कोशिश करना प्रदर्शित करता है।			
10	चित्र पुस्तकों या कहानी की किताबों में छपी हुई सामग्री (प्रिन्ट) के अर्थ को समझने और व्याख्या करने में सक्षम होना।			

ग) इवेंट सैंपलिंग (Event Sampling)

उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड विस्तृत गुणात्मक अवलोकन होते हैं और चेकलिस्ट संक्षिप्त किस्म का अवलोकन होती है, वहीं इवेंट सैंपलिंग में दोनों का मिला-जुला रूप हो सकता है। हर बार जब कोई लक्षित घटना होती है, तो शिक्षक लिखित रूप में घटना की शुरुआत से लेकर अन्त तक जितना सम्भव हो उतना विवरण दर्ज कर सकते हैं।

जब शिक्षक बच्चों के अस्वीकार्य व्यवहार या कार्य को पुनःनिर्देशित करना चाहते हैं, तब इवेंट या आवृत्ति सैंपलिंग विशेष रूप से उपयोगी होता है। इसे एक साधारण तालिका के रूप में दर्ज किया जा सकता है, जहाँ शिक्षक अस्वीकार्य व्यवहार या कार्य होने की संख्या की जाँच करता है। इसमें व्यवहार के कारण के पीछे की घटना, समय, तारीख़, अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति और स्थिति जैसे विवरणों को शामिल किया जा सकता है।

इसी तरह, अगर शिक्षक समस्या की तीव्रता को समझने के लिए नियमित अन्तराल पर कुछ व्यवहार या कार्यों का आकलन करना चाहते हैं, तो वे इसे 'टाइम सैंपलिंग' में कर सकते हैं, जैसे दो दिनों तक सुबह के सत्रों में एक-एक घण्टे की गतिविधि में 10-10 मिनट की अवधि में एक कार्य दर्ज करना (जैसे, अगर शिक्षक किसी बच्चे के आक्रामक व्यवहार का निरीक्षण करना चाहते हैं, तो वह खेलने के समय पर हर 10 मिनट में एक ही गतिविधि को दो दिनों तक दर्ज कर सकता है, उसे बच्चे की शरारतों और संघर्षों की स्पष्ट समझ मिलेगी और साथ ही किसी ख़ास स्थिति में बच्चे के सामाजिक-भावनात्मक व्यवहार की समझ भी बन सकेगी)।

शिक्षक की आवाज़, 6.2ख

<table>
<tr><td colspan="2">इवेंट सैंपल – अवलोकन रिकॉर्ड
इवेंट सैंपल – अवलोकन रिकॉर्ड
प्रसंग : यह 4-5 साल के बच्चों की कक्षा थी। मैंने अपने बच्चों को समूह कार्य दिया था और अपनी टिप्पणियों को दर्ज किया। इससे मुझे आगे के काम के लिए उपयोगी अन्तर्दृष्टि मिली।</td></tr>
<tr><td>बच्चों के नाम : मुथु, चन्द्री, सूर्यन, कार्तिक</td><td>उम्र : 4.5 साल</td></tr>
<tr><td>अवलोकन का समय और तारीख़ : DDMMYY, HH:MM</td><td>स्थान / सेटिंग : रचनात्मक गतिविधि, आउटडोर</td></tr>
<tr><td colspan="2">अवलोकन का उद्देश्य : बच्चों का समूह कार्य</td></tr>
<tr><td>घटना का विवरण</td><td>व्याख्या</td></tr>
<tr><td>• मैंने उन्हें 3 या 4 के छोटे समूहों में टहनियों और पत्तियों का उपयोग करके चित्र बनाने का काम दिया था। उन्हें इन्हें बाहर से इकट्ठा करना था, और फिर अन्दर आकर काम खत्म करना था।
• मुथु, चन्द्री, सूर्यन और कार्तिक एक समूह में थे। कार्तिक ने टहनियों और पत्तियों को छुआ लेकिन कार्य को पूरा करने में योगदान नहीं दिया। वह अन्य बच्चों को बाधित करने के लिए इधर-उधर भागता रहा।
• मुथ और चन्द्री ने एक-दूसरे का सहयोग किया और अपनी टहनियों और पत्तियों से एक पेड़ का मॉडल बनाया।
• सूर्यन इस प्रक्रिया का आनन्द लेते दिखा, लेकिन उसने ज़्यादा योगदान नहीं दिया।</td><td>• ये बच्चे अलग-अलग स्तरों पर हैं :
• कार्तिक काम बिगाड़ने वाला व्यवहार प्रदर्शित करता है, काम पर ध्यान केन्द्रित करने में सक्षम नहीं है। मुझे उसके साथ मिलकर इस पर काम करना होगा।
• हालाँकि सूर्यन काम बिगाड़ने वाला नहीं है, लेकिन उसे उचित सामाजिक व्यवहार प्रदर्शित करने के लिए सहयोग की आवश्यकता होगी।
• मुथ और चन्द्री समूहों में अच्छा काम कर सकते हैं और काम को पूरा कर सकते हैं।</td></tr>
<tr><td colspan="2">मैं विशेष रूप से कार्तिक के काम बिगाड़ने वाले व्यवहार के बारे में चिन्तित थी। इसे और अधिक समझने के लिए, मैंने कार्तिक का आवृत्ति-सैंपल अवलोकन करने का फ़ैसला किया। जैसे, हर एक दिन बाद, दिन में 30 मिनिट की अवधि में हर 5 मिनिट में उसका अवलोकन करना और उसके व्यवहार की व्याख्या करना, जिसमें वह किसी दिए गए काम पर कितना समय केन्द्रित कर पाता है और उसके व्यवहार के कारण को समझना शामिल है। मैंने इसे एक साधारण चेकलिस्ट के रूप में दर्ज कर लिया है।
इसके बाद मैं उसके परिवार के साथ मिलकर इस मुश्किल को सुलझाने की कोशिश कर सकती हूँ। परिवार उसकी रुचि के अनुसार उसे कुछ काम देगा और उसे पूरा करने पर उसे कुछ इनाम या प्रशंसा मिलेगी।</td></tr>
</table>

6.2.2 Artefacts का विश्लेषण

आरम्भिक बाल्यावस्था की कक्षा में एक artefact का मतलब सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान एक बच्चे द्वारा बनाई गई वस्तु से है। Artefacts का उपयोग बच्चे के काम को देखकर, यह देखने के लिए किया जा सकता है कि किसी विशेष सीखने के प्रतिफल में उसकी समझ के स्तर ने उसके द्वारा बनाई वस्तु (उत्पाद) को कैसे प्रभावित किया। Artefacts बच्चे की ताकतों एवं क्षमताओं के बारे में जानकारी का एक समृद्ध स्रोत उपलब्ध कराती हैं।

6.2.2.1 Artefacts के कुछ उदाहरण

शिक्षक बच्चों के पूरे किए गए कार्य या उनके artefacts की तस्वीरें 'प्रगति एवं विकास' नाम के एक फ़ोल्डर में रख सकते हैं। बच्चे यह फ़ोल्डर सत्र के आख़िर में अपने घर ले जा पाएंगे। Artefacts और गतिविधियों का यह संकलन, फील्ड ट्रिप से artefacts का संग्रह, विभिन्न गतिविधियाँ करते हुए बच्चों की तस्वीरें, विडियो या ऑडियो रिकार्डिंग (अगर सम्भव हो) के साथ-साथ शिक्षकों की टिप्पणियों और अवलोकन नोटों के व्यवस्थित रिकॉर्ड से बच्चे के सीखने की व्यापक जानकारी मिल सकती है।

बच्चों की प्रगति के सबूत मानकर इन्हें दस्तावेज़ के रूप में संस्था में बच्चे के पोर्टफ़ोलियो की तरह संग्रहित किया जा सकता है।

पोर्टफ़ोलियो बच्चों के महत्त्वपूर्ण कार्यों के नमूनों और अभिलेखों का सप्रयास किया गया संग्रह है, जो विशिष्ट सीखने के प्रतिफलों से सम्बन्धित प्रयास और उपलब्धियों का सबूत प्रस्तुत कर आकलन को बेहतर बनाता है।

शिक्षक को कुछ ख़ास प्रतिफलों को ध्यान में रखकर बच्चे के पोर्टफ़ोलियो का विश्लेषण करना चाहिए और बच्चे की क्षमताओं के सामने उसकी प्रगति को दर्ज करना चाहिए। बच्चे के पोर्टफ़ोलियो के संगठन में प्रतिफलों जिनकी उपलब्धि करनी है, को स्पष्ट रूप से दर्ज किया जाना चाहिए। Artefacts को संग्रहित करने के लिए प्रत्येक बच्चे का अपना अलग फ़ोल्डर होना चाहिए।

क) कलाकृति (Artwork) के रूप में बच्चों के काम के नमूने

शिक्षक की आवाज़, 6.2 ग

सबूत के रूप में विद्यार्थी का कार्य

मैं जिन 3-4 साल के बच्चों के साथ काम कर रहा हूँ, उनके सीखने के प्रतिफलों में मोटर कौशल (motor skills) विकसित करना कई सीखने के प्रतिफलों में से एक है। इन बच्चों के इन कौशलों को विकसित करने में मदद करने के लिए मैं जिन प्रमुख तरीक़ों का इस्तेमाल कर रहा हूँ, उनमें से कलाकृति भी एक है। बच्चों ने शुरु में और सत्र के अन्त में जो कलाकृतियाँ बनाई हैं, उनमें साफ़ फ़र्क दिखाई देता है कि ये कलाकृतियाँ उनकी प्रगति का स्पष्ट प्रमाण हो सकती हैं। यह इनमें से एक बच्चे का काम का नमूना है, जिसमें आप ज़ाहिर तौर पर देख सकते हैं कि इस अवधि में हाथ और आँख के समन्वय और मोटर कौशल में प्रगति हुई है।

सत्र की शुरुआत में	*सत्र के अन्त में*

ख) वर्कशीट

बच्चों द्वारा किए जाने वाले काम और लिखित जवाब वर्कशीट में दर्ज होते हैं। इन कामों को किन्हीं ख़ास सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है।

वर्कशीट शिक्षकों के लिए बहुत प्रभावी आकलन उपकरण हो सकता है। वर्कशीट में विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने से शिक्षक को बच्चे के सीखने के स्तर की स्पष्ट समझ मिल सकती है।

विशिष्ट साक्षरता और संख्या ज्ञान की दक्षताओं के मद्देनज़र, कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए इन आकलन वर्कशीट्स को वर्कबुक्स के भाग के रूप में शामिल करना उपयोगी हो सकता है।

एक नमूना वर्कशीट और विद्यार्थी प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण से प्राप्त की जा सकने वाली अन्तर्दृष्टि अनुलग्नक 2 में उदाहरण के तौर पर दी गई हैं।

खण्ड 6.3
प्रभावी शिक्षण-अधिगम के लिए बच्चों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करना

आकलन से हमें बच्चों के सीखने के बारे में अन्तर्दृष्टि मिलती है। इससे मिली जानकारी से हमें बच्चों की ज़रूरतों और रुचियों को ध्यान में रखकर कक्षा-कक्ष की पेडागॉजी की योजना बनाने और डिज़ाइन करने में काफ़ी मदद मिलती है। किसी भी कक्षा में आकलन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए चक्रीय (cyclical) और पुनरावृत्तीय (iterative) प्रक्रिया का पालन करना चाहिए जैसा कि नीचे दिखाया गया है :

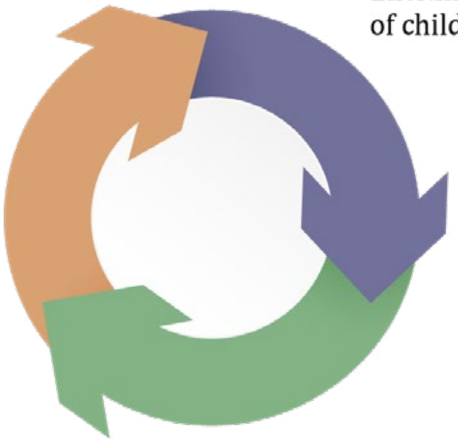

चित्र 6.3 अ : प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने के लिए प्रवाह

6.3.1 सबूतों का विश्लेषण

सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षक को इन सबूतों का विश्लेषण और व्याख्या कैसे करनी चाहिए? विद्यार्थियों के कार्य का विश्लेषण करने के लिए कौन-सी पूर्व-शर्तें और सामान्य सिद्धान्त हैं?

6.3.1.1 आकलन से मिले सबूतों का विश्लेषण करने के लिए पूर्व-शर्तें (Pre-requisites)

क) शिक्षक जिन बच्चों को पढ़ा रहे हैं, उनके प्रति उनका रवैया निष्पक्ष और विचार उदार होने चाहिए। बच्चों और उनकी क्षमताओं या योग्यताओं के बारे में उनकी राय जाति, लिंग, धर्म, सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसे कारकों से प्रभावित नहीं होनी चाहिए।

ख) आकलन को अच्छी तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए और फाउंडेशनल स्टेज के सीखने के प्रतिफलों और दक्षताओं के अनुरूप होना चाहिए। तभी वे बच्चों की पढ़ाई के बारे में सटीक और उपयोगी जानकारी देंगे।

ग) आकलन को औपचारिक और अनौपचारिक रूप से कक्षा-कक्ष में और कक्षा-कक्ष से बाहर की गतिविधियों में एकीकृत किया जाना चाहिए। इन आकलन उदाहरणों का उपयोग बच्चों के सीखने के प्रमाण के रूप में किया जाना चाहिए। शिक्षकों को बच्चों के व्यवहार, प्रतिक्रियाओं, मनोदशा, पसन्द और नापसन्द से ऐसे सबूत इकट्ठा करने में सक्षम होना चाहिए।

घ) विभिन्न आकलनों (जैसे, अवलोकन, वर्कशीट, कलाकृति) से बच्चों के सीखने के साक्ष्य एकत्र करने और उनका दस्तावेज़ीकरण करने की एक प्रणाली होनी चाहिए।

6.3.1.2 आकलन से मिले सबूतों के विश्लेषण के लिए सिद्धान्त

क) शिक्षकों को इस बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए कि बच्चे क्या नहीं जानते और क्या नहीं कर सकते। उनके आकलन के निष्पक्ष और सटीक होने के लिए, उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि बच्चे क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं।

ख) शिक्षकों को सबूतों का विश्लेषण करना चाहिए ताकि यह पता लगाया जा सके कि बच्चों ने किस हद तक कौशल की समझ और उपलब्धि का प्रदर्शन किया है - पूरी तरह से, आंशिक रूप से या ग़लत तरीके से।

ग) ऐसे साक्ष्यों का विश्लेषण करते समय शिक्षकों को misconceptions या alternative conceptions, या बच्चों के सीखने में gaps की पहचान करने में सक्षम होना चाहिए।

घ) बच्चे के सीखने के बारे में निष्कर्ष निकालने से पहले शिक्षकों को सबूतों के कई स्रोतों का उपयोग करना चाहिए। उदाहरण के लिए, उन्हें बच्चे के सीखने की एक विश्वसनीय और सुसंगत व्याख्या बनाने के लिए कक्षा की प्रतिक्रियाओं, लिखित कार्य और देखे गए व्यवहार से जानकारी को एकीकृत करना चाहिए।

ङ) आकलन से एकत्र किए गए सबूतों का उपयोग बच्चों की सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षण योजना बनाने या बदलने के लिए किया जाना चाहिए। इस तरह का शिक्षण लक्षित गतिविधियों, क्षमतानुसार समूहीकरण और स्वतंत्र गृहकार्य असाइनमेंट का रूप ले सकता है।

6.3.2 विश्लेषण पर कार्य करना

सीखने के इन सबूतों पर शिक्षक को कैसे कार्य करना चाहिए? आकलन के सबसे ज़रूरी और निर्णायक पहलुओं में से हर एक अवलोकन या बच्चों के काम से मिली जानकारी का उपयोग उनके सीखने के लिए मंच प्रदान करने के लिए करना है।

नीचे दी गई कुछ रणनीतियों का उपयोग किया जा सकता है :

क) ज़्यादातर बच्चों द्वारा नहीं सीखे गए कौशलों का दोहरान या अभ्यास करना।

ख) अलग तरह की रणनीतियों और विधियों के माध्यम से सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करना (यदि पहले की शिक्षण विधि प्रभावी नहीं थी)।

ग) ऐसे बच्चों की पहचान करना, जिन्हें विशिष्ट दक्षताओं के विकास के लिए अतिरिक्त ध्यान और आधार देने की आवश्यकता है। इसके लिए उनके साथ अलग से समय लगाना ज़रूरी है।

खण्ड 6.4
आकलन का दस्तावेज़ीकरण और सम्प्रेषण

जब फाउंडेशनल स्टेज पर दैनिक आकलन भी चल रहा हो, तब ख़ास अवधि के दौरान सभी आकलनों से प्राप्त जानकारी को समय-समय पर एकत्र करना, सार निकालना और विश्लेषण करना महत्त्वपूर्ण है।

स्कूल को हर एक बच्चे के लिए एक फोल्डर रखना चाहिए। फोल्डर में बच्चे के बारे में सभी जानकारी और प्रत्येक टर्म/वर्ष के दौरान शिक्षक द्वारा दर्ज किया गया विवरण रखा जा सकता है।

इस तरह के विश्लेषण का सारांश 'समग्र प्रगति कार्ड' (HPC - Holistic Progress Card) में दर्ज किया जा सकता है और इसे बच्चे के माता-पिता और परिवार से साझा किया जा सकता है।

6.4.1 पारिवारिक पृष्ठभूमि की सामान्य जानकारी

बच्चे की प्रोफ़ाइल के केन्द्र में सामान्य जानकारी होती है। यह बच्चों के व्यवहार, भागीदारी और प्रगति की व्याख्या करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बच्चे का नाम, जन्म तिथि, परिवार के बारे में जानकारी, बच्चे की पसन्द और नापसन्द जैसे बुनियादी विवरण; बच्चे के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी जैसे ऊँचाई, वज़न, वृद्धि, टीकाकरण को दर्ज किया जाना चाहिए और समय-समय पर अपग्रेड किया जाना चाहिए।

6.4.2 शिक्षक नैरेटिव सारांश

नैरेटिव सारांश में सूचना के कई स्रोतों (जैसे उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड, इवेंट सैंपल, चेकलिस्ट, पोर्टफ़ोलियो, वर्कशीट) की व्याख्या के आधार पर बच्चे की प्रगति के बारे में गुणात्मक जानकारी के साथ बच्चे के सीखने का विवरण होता है।

यह बच्चे की सीखने की प्रगति के बारे में माता-पिता और अन्य शिक्षकों को गहराई से जानने में मदद करता है। नैरेटिव सारांश में नीचे दी गई बातें शामिल हैं :

क) बच्चे की क्षमताएँ और चुनौतियाँ, विकास और सीखने की प्रगति

ख) बच्चे की रुचियाँ

ग) सुदृढ़ करने की आवश्यकता वाले क्षेत्र

अगर नैरेटव सारांश को दर्ज करना और बनाए रखना बोझिल लगता है, तो इसे वैकल्पिक अतिरिक्त इनपुट के रूप में माना जा सकता है, लेकिन अगले भाग में वर्णित एचपीसी बच्चे की प्रगति का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ है और इसलिए इसे हर एक शैक्षणिक वर्ष के लिए बनाए रखना ज़रूरी होता है। शिक्षक को एचपीसी बनाने के लिए पर्याप्त जानकारी दर्ज करना और उसे बनाए रखना ज़रूरी होता है।

6.4.3 होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड (Holistic Progress Card-HPC)

NEP 2020 में संकेत किया गया है कि HPC एक 'बहु-आयामी कार्ड होगा जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी की विशिष्टताओं के साथ-साथ संज्ञानात्मक, भावात्मक, साइकोमोटर डोमेन में विकास के बारीकी से किए गए विश्लेषण का विस्तृत विवरण दिया जाएगा।' (परिच्छेद 4.35)

HPC में न केवल शिक्षक द्वारा किए गए आकलन शामिल हो सकते हैं, बल्कि माता-पिता द्वारा की गई टिप्पणियाँ व अवलोकनों और स्वयं बच्चों द्वारा किए गए सरल स्व-आकलन भी शामिल हो सकते हैं।

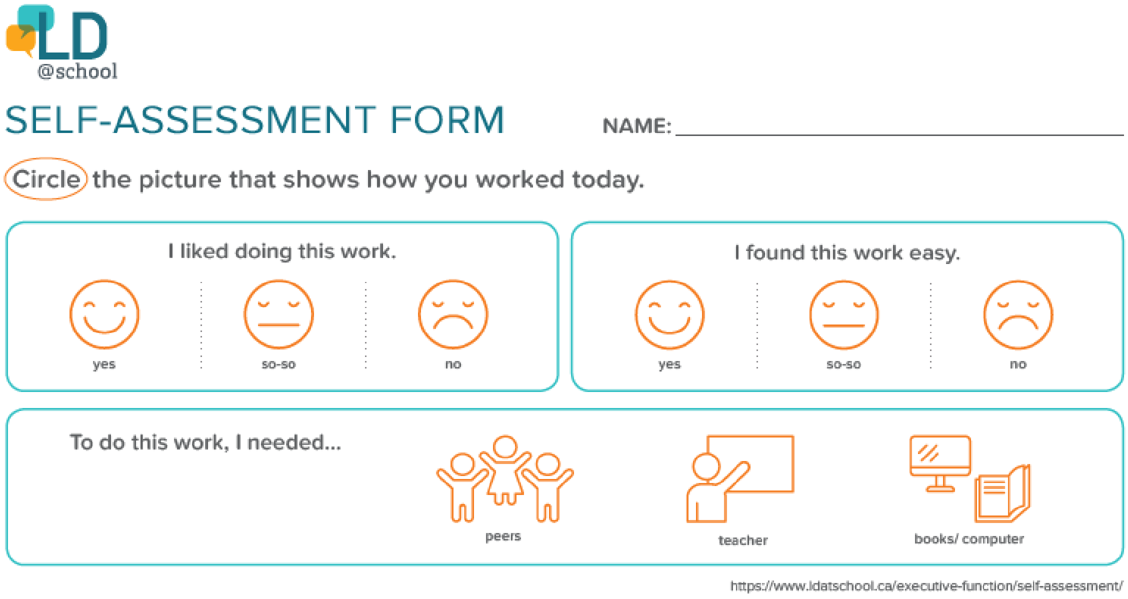
LD @school

SELF-ASSESSMENT FORM NAME: ____________

Circle the picture that shows how you worked today.

I liked doing this work.
yes so-so no

I found this work easy.
yes so-so no

To do this work, I needed...
peers teacher books/ computer

https://www.ldatschool.ca/executive-function/self-assessment/

चित्र 6.4क : बच्चों के लिए एक नमूना स्व-आकलन फ़ॉर्म

HPC एक ख़ास वक़्त में कक्षा की गतिविधियों के माध्यम से जमा किए गए सबूतों के आधार पर एक बच्चे की प्रगति की व्यक्तिगत और व्यापक रिपोर्टिंग है। HPC में माता-पिता के आकलन और बच्चे के सीखने के बारे में समझ को भी दर्ज करना महत्त्वपूर्ण है।

कई हितधारकों के लिए HPC प्रासंगिक हो सकती है। HPC वह माध्यम है जिससे स्कूल बच्चे के सीखने की प्रगति को परिवारों तक पहुँचाता है। HPC का विश्लेषण करके शिक्षक बच्चे की बहुत अच्छी समझ प्राप्त कर सकते हैं। यह सूचना का प्राथमिक स्रोत है जिस पर अभिभावक-शिक्षक बैठकें प्रभावी ढंग से आयोजित की जा सकती हैं।

व्यवस्थित रूप से लगातार तैयार की गई HPC स्कूली व्यवस्था के अधिकारियों के लिए महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। HPC से जमा किए गए आँकड़ों का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर बच्चों की सीखने की उपलब्धियों को प्रभावी ढंग से समझने के लिए किया जा सकता है। इस समझ का उपयोग जहाँ उपयुक्त हो वहाँ प्रभावी और प्रासंगिक हस्तक्षेप प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।

6.4.3.1 HPC में दक्षताएँ

HPC में एक ऐसा सेक्शन होना चाहिए जो दक्षता आधारित हो। इस सेक्शन में पाठ्यचर्या के विशिष्ट उद्देश्यों के लिए परिभाषित हर एक दक्षता के आगे बच्चे की प्रगति को लगातार दर्ज किया जाना चाहिए।

इन दक्षताओं को आगे सीखने के प्रतिफलों में एक trajectory पर विकास के पाँच चरणों (A, B, C, D, E) में बाँटा जा सकता है। ये चरण लगभग एक आयु समूह को मैप करते हैं, लेकिन ज़रूरी नहीं कि वे एक विशिष्ट आयु समूह से ही जुड़े हों। बच्चे विकास के एक चरण से दूसरे चरण में उस गति से आगे बढ़ सकते हैं, जिसमें वे सहज महसूस करते हैं। उनमें से कुछ इसे तेज़ गति से प्राप्त कर सकते हैं और उनमें से कुछ को अधिक समय लग सकता है। इन पाँच चरणों में दर्शाए गए सारे संकेतक सीखने के प्रतिफल होते हैं जो उपलब्धि के आकलन के लिए एक रूब्रिक के रूप में कार्य करते हैं।

शिक्षक सीखने के trajectory में बच्चे के वर्तमान चरण के आधार पर हर एक दक्षता के आगे टिक-मार्क कर सकता है। इसके अलावा, हर एक चरण को नीचे दी गई तालिका के अनुसार उपलब्धि के विभिन्न स्तरों (I, II, III, IV) के लिए चिह्नित किया जा सकता है :

तालिका 6.4 क

बच्चों को ग्रेड देना	स्तर I	स्तर II	स्तर III	स्तर IV
बच्चों को उनके सीखने और विकास में सहयोग करने के लिए उनके ग्रेडेशन का विवरण	दी गई समय सीमा में शिक्षक की मदद से सीखने के प्रतिफलों को हासिल करने का प्रयास करती है	दी गई समय सीमा में शिक्षकों की मदद से सीखने के प्रतिफलों को हासिल करती है	ख़ुद से ही सीखने के प्रतिफलों को हासिल करती है	सीखने के प्रतिफलों को हासिल करती है सीखने के प्रतिफलों को हासिल करने में दूसरों को मदद करती है और सहारा देती है अधिक चुनौतीपूर्ण कार्यों की ज़रूरत है।
विवरण	आरंभिक BEGINNER	प्रगतिशील PROGRESSING	प्रवीण PROFICIENT	उन्नत ADVANCED

प्रत्येक दक्षता में अ-I हो सकता है जो कि उपलब्धि का निम्नतम स्तर है और E-IV जो कि उपलब्धि का उच्चतम स्तर है। उदाहरण के लिए **"सरल गीतों, तुकबंदियों और कविताओं को सुनता है और उनकी सराहना करती है"**, दक्षता के सीखने के प्रतिफल नीचे दिए गए हैं :

तालिका 6.4 ख

दक्षता: सरल गीतों, तुकबंदियों और कविताओं को सुनता है और उनकी सराहना करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• अलग-अलग तरह के गीतों और कविताओं को सुनना	• नियमित रूप से आस-पास सुने जाने वाले अलग-अलग भाषाओं के तरह-तरह के गीतों को सुनना और उन्हें आनन्द लेते हुए गुनगुनाना	• लम्बे (परिचित) गीत / कविताएँ ध्यान से सुनना और उनके बारे में बातचीत करना	• लम्बे (अपरिचित) गीत / कविताएँ ध्यान से सुनना और उनके बारे में बातचीत करना	• किसी ख़ास तरह के गीतों और कविताओं को सुनने में पसन्द दिखाना और अपनी पसन्द की वजह बताना
2	• किसी गीत या तुकबंदी को को दोहराना	• स्वर और हावभाव के साथ गीत और तुकबंदी गाना/ सुनाना	• स्मृति के सहारे छोटे-छोटे (4-5 वाक्य के) गीत गाना / कविता सुनाना	• स्मृति के सहारे छोटे-छोटे (10 वाक्य के) गीत गाना / कविता सुनाना	• स्मृति से कई छन्दों वाले गीत गाना / कविता सुनाना

अगर बच्ची गीत और कविताओं को सुनने में अपनी पसन्द ज़ाहिर करती है और अपनी स्मृति से कई छन्दों वाली कविता पढ़ती या गाती है तो इस योग्यता के लिए HPC में E-IV के रूप में दर्ज किया जाएगा। यह अंकन मानता है कि बच्ची ने पिछले चरणों (A से E) के सीखने के प्रतिफलों को हासिल कर लिया है।

अध्याय 7
समय का नियोजन

बच्चों के लिए एक सादी व सुव्यवस्थित दिनचर्या बहुत महत्त्वपूर्ण है। ऐसी दिनचर्या बच्चों को सुरक्षा का एहसास देती है क्योंकि वे जानते हैं कि दिन भर में क्या-क्या होगा। यह अहसास उन्हें किसी भी जगह पर अच्छी तरह से रमने में भी मदद करता है।

इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य समय का उपयुक्त नियोजन करना है। ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि बच्चे आराम से विकास के सभी क्षेत्रों में अवसर और सीखने के अनुभव प्राप्त कर सकें।

खण्ड 7.1
दिन का नियोजन

बच्चों को अपने आस-पास के वातावरण की जाँच-पड़ताल में मज़ा आता है। हालाँकि, जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, उनके लिए खेल आधारित किन्तु मार्गदर्शित व संरचित (structured) गतिविधियाँ आयोजित करने की ज़रूरत होती है।

पूरे दिन के लिए ध्यानपूर्वक योजना बनाने की आवश्यकता होती है ताकि बच्चों के विकास के सभी क्षेत्रों पर पर्याप्त समय और ध्यान दिया जा सके। वैसे हर विकास क्षेत्र की गतिविधियाँ दूसरे विकास क्षेत्र से सम्बद्ध होती हैं, (उदाहरण के लिए, एक अच्छी कहानी भाषा के विकास में तो मदद करेगी ही पर साथ-ही-साथ सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास में भी मदद करेगी)। तय की गई दिनचर्या यह सुनिश्चित करे कि बच्चों को ऐसे अधिक-से-अधिक अवसर मिलें, जहाँ वे हर क्षेत्र में अलग-अलग तरह के अनुभव प्राप्त कर सकें।

क) रोज़ की दिनचर्या के लिए ध्यान रखने योग्य बातें

संस्था के नियम-क़ायदों और काम करने के लिए उपलब्ध दिनों की संख्या, और काम के लिए हर रोज़ निर्धारित घण्टों के आधार पर दिन का नियोजन आधारित होगा।

हर गतिविधि की योजना बनाते समय बच्चे की ध्यान अवधि (attention span) को मद्देनज़र रखना होगा। बच्चे द्वारा शुरू की गई गतिविधियों और शिक्षक द्वारा मार्गदर्शित गतिविधियों, सामूहिक (पूरा समूह या छोटा समूह) तथा व्यक्तिगत और जोड़ी वाली गतिविधियों तथा एक के बाद एक होने वाली गतिविधियों के बीच एक सन्तुलन रखना होगा। (मसलन, खेलकूद की गतिविधि के बाद शान्त गतिविधि, सामूहिक गतिविधि के बाद व्यक्तिगत गतिविधि, बाहर की गई गतिविधि के बाद कमरे के अन्दर की कोई गतिविधि)।

इसी तरह कला और दस्तकारी, बाहर खेले जाने वाले खेल, फ्री-प्ले आदि सभी को पूरे दिन में पर्याप्त समय और फोकस मिले।

ख) 3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए रोज़ की दिनचर्या का चित्रण

3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चों की रोज़ की दिनचर्या को सुनियोजित करने के कई तरीक़े हो सकते हैं।

इसके दो उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

पहला उदाहरण उन सन्दर्भों के लिए ज़्यादा उपयुक्त है जहाँ बच्चे सर्कल टाइम, कहानी समय, अवधारणा के लिए समय/संख्या-पूर्व ज्ञान जैसी शिक्षक द्वारा निर्देशित गतिविधियों से अनुभव प्राप्त करते हैं। साथ ही जहाँ बच्चों के लिए फ्री-प्ले और कॉर्नर टाइम इनसे अलग और स्वतंत्र गतिविधियाँ होती हैं।

तालिका 7.1क

कब से	कब तक	अवधि	गतिविधि
सुबह की दिनचर्या / फ्री प्ले / कॉर्नर टाइम			
09:30	10:15	45 मिनट	सर्कल टाइम / बातचीत
10:15	10:30	15 मिनट	नाश्ता
10:30	10:45	15 मिनट	कविता / गीत / संगीत / उछल-कूद (मूवमेंट)
11:45	11:45	1 घण्टा	अवधारणा पर काम / संख्या पूर्व अवधारणाएँ
11:45	12:15	30 मिनट	कला / शिल्प / फ्री-प्ले
12:15	13:00	45 मिनट	कॉर्नर टाइम
13:00	13:45	45 मिनट	भोजनावकाश (3-4 साल के बच्चों की छुट्टी)
13:45	14:30	45 मिनट	शुरुआती पढ़ना-लिखना / कहानी समय
14:30	15:00	30 मिनट	खेलकूद और छुट्टी की तैयारी

दूसरा उदाहरण उन सन्दर्भों में ज़्यादा उपयुक्त है जहाँ कम बच्चे हैं और उनके पास काफ़ी अलग-अलग तरह की उपयुक्त सामग्री भी अन्तःक्रिया के लिए उपलब्ध है। यहाँ ज़्यादा ज़ोर ख़ुद से सीखने पर होता है और बच्चे ख़ुद ही ध्यानपूर्वक सामग्री का उपयोग करना सीखते हैं।

बच्चों को 'कार्यसमय' (Work Time) दिया जाता है, और इस दौरान वे जो गतिविधि करना चाहते हैं उसका चयन वे ख़ुद कर सकते हैं। बच्चे अपनी पसन्द की गतिविधि का चयन करते हैं और उस गतिविधि के लिए उपलब्ध सामग्री का अपनी मर्ज़ी से उपयोग करते हैं। शिक्षक बच्चों की गतिविधियों को ध्यानपूर्वक देखते रहते हैं और ज़रूरत के अनुसार मदद करते हैं। कार्यसमय के दौरान बच्चों द्वारा किए गए काम के आधार पर शिक्षक हर बच्चे के लिए आगे की गतिविधियाँ तय करते हैं। विकास के विभिन्न क्षेत्रों (उदाहरण के लिए, शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषा, कलाएँ) को ध्यान में रखते हुए गतिविधियाँ और इन गतिविधियों के लिए ज़रूरी सामग्री को व्यवस्थित किया जाता है। बच्चों को भी इस पूरी व्यवस्था से परिचित करवाया जाता है।

तालिका 7.1 ख

कब से	कब तक	अवधि	गतिविधि
सुबह की दिनचर्या + चुपचाप खेले जाने वाले खेल			
09:30	10:15	45 मिनट	सर्कल समय (बातचीत, गीत, कविताएँ)
10:15	10:30	15 मिनट	नाश्ता
10:30	12:15	1 घण्टा 45 मिनट	कार्यसमय
12:15	13:00	45 मिनट	कला/ दस्तकारी/ खेल /फ्री-प्ले
13:00	13:45	45 मिनट	भोजनावकाश (3-4 वर्ष के बच्चों की छुट्टी)
13:45	15:00	1 घण्टा 15 मिनट	भाषा और शुरुआती पढ़ना-लिखना (उम्र 4-6)

इन दोनों उदाहरणों में स्कूल का कुल समय साढ़े पाँच घण्टे है। इसमें लगभग साढ़े चार घण्टे 4 से 6 साल के बच्चों को सक्रिय रूप से निर्देशित सीखने-सिखाने के लिए हैं।

ग) 6 से 8 साल के बच्चों के लिए दैनिक / साप्ताहिक दिनचर्या का चित्रण

6 से 8 साल के बच्चों के लिए रोज़ की दिनचर्या थोड़ी लम्बी होगी और कुछ हद तक ज़्यादा व्यवस्थित भी।

जहाँ 3-6 साल के बच्चों के साथ सभी भाषाओं पर एक साथ काम किया जा सकता है; वहाँ इस उम्र के बच्चों के लिए हर भाषा के लिए कुछ निश्चित समय देना ज़रूरी है। साक्षरता, संख्या ज्ञान और कला के लिए विशेष खण्ड शामिल किए जा सकते हैं। पहली भाषा (L1) के लिए 90 मिनट और द्वितीय भाषा (L2) के लिए 60 मिनट का समय चाहिए। गणित और संख्या ज्ञान के लिए पूरे दिन में 60 मिनट का समय ज़रूरी होगा। जैसा कि अध्याय 4 के खण्ड 4.5 में विवरण दिया गया है, ये समयावधि विभिन्न कालांशों में भी व्यवस्थित की जा सकती हैं।

तालिका 3.1 ग

कब से	कब तक	अवधि	गतिविधि
09:00	09:30	30 मिनट	सर्कल समय – गीत / उछल-कूद
09:30	10:00	30 मिनट	L1 – मौखिक भाषा
10:00	10:30	30 मिनट	L1 – शब्द पहचान
10:20	10:35	15 मिनट	नाश्ता
10:35	11:35	1 घण्टा	गणित
11:35	12:05	30 मिनट	कला और शिल्प
12:05	12:45	30 मिनट	L1 – पढ़ना / लिखना
12:45	13:30	45 मिनट	भोजनावकाश
13:30	14:30	1 घण्टा	L2 – मौखिक भाषा, शब्द पहचान
14:30	15:00	30 मिनट	खेल

ज़्यादा समय होने से विभिन्न गतिविधियों जैसे कला, खेलकूद, बागवानी आदि के लिए भी अधिक समय मिल पाएगा। उदाहरण के लिए, नीचे दी गई साप्ताहिक समय-सारिणी को देखें जो इस तरह की सम्भावनाओं को दर्शाती है। जैसा कि पहले भी बताया गया है, गणित और पहली भाषा (L1) के लिए एक-से अधिक कालांशों को मिलाकर गतिविधियाँ आयोजित करनी होंगी। जैसा कि अध्याय 4 के खण्ड 4.5 में वर्णन किया गया है।

तालिका 3.1 घ

कब से	कब तक	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार
09:00	10:00	गणित	गणित	L2	गणित	L2
10:00	10:45	L1	L1	L1	L1	L1
10:45	11:00			नाश्ता		
11:00	12:00	L1	L1	L1	L1	L1
12:00	13:00	L2	L2	गणित	L2	Art
13:00	13:45			भोजनावकाश		
13:45	14:45	कला	गणित	कला	कला	गणित
14:45	15:30	पुस्तकालय	बागवानी	खेल	बागवानी	खेल

घ) स्कूल का वार्षिक कैलेंडर

स्कूल का कैलेंडर एक वार्षिक योजना होती है जो यह बताता है कि वर्ष में कब, कौन-सी ख़ास कार्यक्रम/घटना होगी। शिक्षक इसके अनुसार अपनी कक्षा की गतिविधियों की योजना बना सकते हैं। यह विद्यार्थियों और उनके परिवारों को भी सूचित करता है कि स्कूल में कब क्या होने वाला है ताकि वे भी इसकी तैयारी कर सकें। स्कूल का यह कैलेंडर सभी की पहुँच में होना चाहिए, अभिभावकों और परिवारों की भी।

स्कूल का यह कैलेंडर, जिसमें स्कूल के सभी ख़ास कार्यक्रमों का विवरण हो, उनके समय का विवरण हो स्कूल का अकादमिक वर्ष शुरू होने के साथ ही बना लिया जाना चाहिए। इसे स्थानीय ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए बनाया जाना चाहिए। किसी स्कूल की ख़ास परिस्थिति को देखते हुए ज़रूरत के अनुसार इसमें कुछ छोटे-मोटे परिवर्तन भी किए जा सकते हैं।

कैलेंडर में वर्ष भर में होने वाले, स्कूल के सभी महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों का विवरण हो (उदाहरण के लिए, स्कूल की अवधि, छुट्टियाँ, वार्षिक उत्सव, खेलकूद दिवस, स्कूल के अन्य कार्यक्रम, प्रदर्शनी/फील्ड ट्रिप, अभिभावक-शिक्षक बैठक, शिक्षक की पेशेवर तैयारी के लिए होने वाले कार्यक्रम, स्कूल की बैठकें)।

पढ़ाए जाने वाले विषयों का एक वार्षिक कैलेंडर भी स्कूल द्वारा बनाने का सोचा जा सकता है। इससे शिक्षकों को अपनी कक्षा के लिए गतिविधियाँ बनाने में और पाठ्यचर्या में वे कितना आगे बढ़ पाए हैं इसका विवरण रखने में मदद मिलेगी।

अध्याय 8
अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण क्षेत्र

सीखने और विकास के लिए फाउंडेशनल स्टेज महत्त्वपूर्ण है। हमारा उद्देश्य एक सुरक्षित, सहायक और उत्तरदायी वातावरण प्रदान करना है जो हमारे साथ सीखने वाले हर बच्चे की गरिमा को बनाए रखता है।

खण्ड 8.1 बच्चे जो जोखिम में हैं (children at risk), उनकी बात करता है - शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे ऐसे जोखिमों की जल्द-से-जल्द पहचान करें और उनका समाधान करें ताकि सभी बच्चे अपने सीखने के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें।

सीखने के दौरान हमारे बच्चों को सुरक्षित होना चाहिए। खण्ड 8.2 सुरक्षा के पहलुओं को रेखांकित करता है जो उस संस्था की ज़िम्मेदारी है जिसमें हमारे बच्चे हैं।

खण्ड 8.1
विकासात्मक विलम्ब और डिसेबिलिटी को संबोधित करना

दीप्ति छह साल की एक सक्रिय बच्ची है जिसे बोर्ड-गेम खेलना और कहानियाँ पढ़ना पसन्द है। दीप्ति इधर-उधर जाने के लिए व्हीलचेयर का उपयोग करती है और स्कूल में काम करने के लिए अपने हाथों का उपयोग करती है। उसका स्कूल कक्षा तक ले जाने वाली तीन सीढ़ियों को उसके लिए एक रैंप में बदल देता है। उसकी शिक्षिका कक्षा को इस प्रकार व्यवस्थित करती है कि दीप्ति अपनी व्हीलचेयर में आसानी से घूम सके। वह दीप्ति को ऐसी गतिविधियाँ देती हैं जिन्हें टेबल पर ही पूरा किया जा सकता है और उस टेबल के नीचे उसकी व्हीलचेयर जा सकती है। दीप्ति के दोस्त उसे धैर्यपूर्वक सुनते हैं, हालाँकि दीप्ति धीरे-धीरे बोलती है। शिक्षक दीप्ति की प्रगति को समझने के लिए उसके माता-पिता और डॉक्टर के साथ लगातार सम्पर्क में हैं, और उसके अनुसार स्कूल में गतिविधियों की योजना बनाते हैं।

इस्माइल पाँच साल का हँसमुख बच्चा है जो अपने सभी सहपाठियों के साथ बात करना और मस्ती करना पसन्द करता है। एक सप्ताह से अधिक समय से, वह बहुत शान्त है, और सुस्त रहता है। शिक्षक उसे देखते हैं, उससे आराम से बात करते हैं, उसके परिवार से मिलते हैं, और उन्हें पता चलता है कि उसके पेट में लगातार दर्द हो रहा है जिससे वह पर्याप्त भोजन नहीं कर रहा और कुपोषित हो रहा है। शिक्षक यह सुनिश्चित करते हैं कि उसका परिवार उसे स्वास्थ्य केन्द्र ले जाए और वह अपना भोजन अच्छी तरह से खाए। कुछ हफ़्तों की चिकित्सा उपचार और नियमित भोजन के बाद, इस्माइल अपने हँसमुख, ख़ुशमिज़ाज स्वभाव में वापस आ जाता है।

सेल्वी तीन साल की ख़ुशमिज़ाज बच्ची है जिसे पानी और रेत से खेलना पसन्द है। वह ज़्यादा नहीं बोलती है। शिक्षक ने नोटिस किया कि अगर कोई पीछे से उसका नाम पुकारता है तो सेल्वी जवाब नहीं देती है। वह यह भी देखती है कि सेल्वी को एक साधारण कहानी को समझने में समय लगता है, जब कहानी केवल शब्दों के साथ सुनाई जाती है। वह इस ओर उसके परिवार का ध्यान खींचती है और सेल्वी की माँ को भी यही बातें नज़र आने लगती हैं। वे जल्दी से स्थानीय डॉक्टर से मिलने और सलाह लेने का फैसला करते हैं। सेल्वी अब हियरिंग एड पहनती है, उसने कुछ शब्दों का उपयोग करना शुरू कर दिया है, और कक्षा की गतिविधियों में बेहतर भाग लेने में सक्षम है।

हर बच्चा अनोखा (unique) होता है। हम जानते हैं कि कोई भी दो बच्चे ठीक एक जैसे नहीं सीखते हैं। दीप्ति, इस्माइल और सेल्वी की तरह, कई बच्चों को कई कारणों से स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने में कठिनाई हो सकती है। कुछ कारण अस्थायी हो सकते हैं (इस्माइल जैसे), और कुछ लम्बे समय तक चलने वाले हो सकते हैं (दीप्ति और सेल्वी जैसे)।

यद्यपि बच्चों का विकास एक सुसंगत trajectory का अनुसरण करता है, और हर व्यक्ति प्रत्येक प्रमुख अवस्थाओं से गुजरता है, और सभी के विभिन्न क्षेत्रों में विकास में व्यक्तिगत अन्तर होते हैं। सभी बच्चे एक ही समय में विकासात्मक मुख्य पड़ावों को हासिल नहीं करते हैं। ये व्यक्तिगत अन्तर विभिन्न कारकों की वज़ह से होते हैं।

बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्ष वृद्धि और विकास के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये वर्ष उन रास्तों को निर्धारित करते हैं जिन पर भविष्य की शिक्षा आधारित है। जितनी जल्दी हम सीखने और विकास में आने वाली किसी भी चुनौती को पहचानते और उसका समाधान करते हैं, उसके निवारण और सफलता का मौक़ा उतना ही बेहतर होता है। सर्वोत्तम पोषण और देखभाल करने वाला और उत्प्रेरक वातावरण इस स्तर पर सीखने और विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है।

हमें बच्चों को इस तरह से सहारा देने की ज़रूरत है कि प्रारम्भिक और बाद की स्कूली शिक्षा के बीच अन्तर की बजाय एक सेतु हो।

8.1.1 विकासात्मक विलम्ब और डिसेबिलिटी को पहचानना

विकासात्मक विलम्ब विकास के मुख्य पड़ावों को प्राप्त करने में स्पष्ट अन्तर को बताता है। इस तरह का विलम्ब बच्चों में मौजूद उस व्यक्तिगत अन्तर से काफ़ी अलग है जिसे हम सभी जानते हैं। विलम्ब किसी भी विकास क्षेत्र में हो सकता है – शारीरिक, भाषा, सामाजिक-भावनात्मक, संज्ञानात्मक - या इन सभी के मिलेजुले क्षेत्र में। उदाहरण के लिए, चार साल की आयु में तीन सीढ़ियों से उतरने और चढ़ने के लिए संघर्ष करने वाला बच्चा या पाँच साल की आयु में एक परिचित भाषा में तीन शब्दों के वाक्यों को समझने के लिए संघर्ष करने वाला बच्चा या तीन साल की आयु में आराम से बैठने के लिए संघर्ष करने वाला बच्चा।

विकासात्मक डिसेबिलिटी - जैसे autism spectrum disorder, cerebral palsy, बौद्धिक डिसेबिलिटी, दृष्टि बाधित, सुनने में परेशानी - आमतौर पर शैशवावस्था या बचपन के दौरान स्पष्ट हो जाती है और इसे सीखने, भाषा, सम्प्रेषण, संज्ञान, व्यवहार, समाजीकरण, या गतिशीलता में विलम्बित विकास और कार्यात्मक सीमाओं (functional limitation) द्वारा चिह्नित किया जाता है।

कभी-कभी विलम्ब और डिसेबिलिटी के बीच अन्तर को जानना मुश्किल होता है। कभी-कभी इन शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जाता है। बच्चे अक्सर निरन्तर सहयोग और प्रोत्साहन से विकासात्मक विलम्ब को दूर कर लेते हैं या उससे आगे निकल जाते हैं। विकासात्मक डिसेबिलिटी लम्बे समय तक चलने वाली होती हैं, हालाँकि बच्चे इसी तरह के सहयोग से उन्हें भी प्रबन्धित करने में काफ़ी प्रगति कर सकते हैं।

समय पर हस्तक्षेप के लिए, विकासात्मक विलम्ब और डिसेबिलिटी के 'जोखिम में (at risk)' बच्चों की जल्दी पहचान बहुत महत्त्वपूर्ण है। समय पर हस्तक्षेप विकासात्मक विलम्ब और डिसेबिलिटी दोनों को दूर करने में मदद कर सकता है।

8.1.2 फाउंडेशनल स्टेज के संस्थानों को क्या करना चाहिए?

शैक्षणिक संस्थान और शिक्षक विकासात्मक विलम्ब और डिसेबिलिटी का निदान करने के लिए अधिकृत नहीं हैं। यह अधिकृत चिकित्सा पेशेवरों का काम है।

लेकिन शिक्षक विकासात्मक विलम्ब और डिसेबिलिटी के जोखिम वाले (at risk) बच्चों की पहचान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चों के लिए जल्द-से-जल्द सही प्रकार की सहायता प्राप्त करना महत्त्वपूर्ण है ताकि भविष्य की कठिनाइयों को यथासम्भव कम किया जा सके।

क) शिक्षकों को इस धारणा से शुरुआत करनी चाहिए कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति से सीखता है। सीखने और विकास के स्तरों में अन्तर हर बच्चे की बढ़ती उम्र का हिस्सा होता है।

ख) लेकिन अगर उन्हें कोई ध्यान देने लायक या सतत समस्या दिखाई देती है, तो पहला क़दम है कि सभी विकासात्मक क्षेत्रों में बच्चे की गतिविधियों को समझने के लिए बच्चे का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया जाए।

ग) दूसरा क़दम कुछ बुनियादी सवालों के आधार पर बच्चे के दैनिक या साप्ताहिक अवलोकन का रिकॉर्ड रखना होगा। नीचे दी गई WHO की दस प्रश्नों वाली सूची का उपयोग जोखिम वाले (at risk) बच्चों की पहचान करने और उनका अवलोकन करने के लिए एक गाइड के रूप में किया जा सकता है।

बॉक्स 8.1क

विश्व स्वास्थ्य संगठन की दस प्रश्नीय जाँच (Ten Questions Screening)

- *अन्य बच्चों की तुलना में, क्या बच्चे को बैठने, खड़े होने या चलने में कोई गम्भीर विलम्ब हुआ?*
- *अन्य बच्चों की तुलना में, क्या बच्चे को दिन में या रात में देखने में कठिनाई होती है?*
- *क्या बच्चे को सुनने में कठिनाई होती है?*
- *जब आप बच्चे को कुछ करने के लिए कहते हैं, तो क्या वह समझ नहीं पा रहा है कि आप क्या कह रहे हैं?*
- *क्या बच्चे को चलने या हाथ हिलाने में कठिनाई होती है या उसके हाथ या पैर में कमजोरी और/या अकड़न है?*
- *क्या बच्चे को कभी-कभी दौरे पड़ते हैं, उसका शरीर कठोर हो जाता है, या होश खो बैठता है?*
- *क्या बच्चा अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तरह काम करना सीखता है?*
- *क्या बच्चा बोल पाता है (क्या वह खुद के शब्दों में समझा सकता है; क्या वह कोई पहचानने योग्य शब्द कह सकता है)?*
- *3 से 9 साल के बच्चों के लिए, पूछें : क्या बच्चे का बोलना किसी भी तरह से सामान्य से अलग है (उसके परिवार के अलावा अन्य लोगों द्वारा समझने के लिए पर्याप्त स्पष्ट नहीं है)? 2 साल के बच्चों के लिए पूछें : क्या वह कम-से-कम एक वस्तु (उदाहरण के लिए, एक जानवर, एक खिलौना, एक कप, एक चम्मच) का नाम बता सकता है?*
- *अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तुलना में क्या बच्चा किसी भी तरह से सुस्त या धीमा दिखाई देता है?*

घ) यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि सभी बच्चों को पोषण और देखभाल की आवश्यकता होती है, चाहे उनकी गतिविधि या विकास का स्तर कुछ भी हो। शिक्षक को जोखिम वाले बच्चे के साथ वैसे ही खेलना और काम करना चाहिए जैसे वे अन्य बच्चों के साथ करते हैं। कभी-कभी, चीज़ों को व्यवस्थित करने के लिए बच्चों के दैनिक कार्यक्रम में थोड़े अतिरिक्त ध्यान या समायोजन या अकेले में कुछ समय या आहार में बदलाव की आवश्यकता होती है।

ङ) यदि समस्या बनी रहती है और रोज़मर्रा की कोशिशों से ठीक नहीं होती है, तो तीसरा क़दम माता-पिता और परिवार के साथ इस समस्या को साझा करना होगा। बातचीत यथासम्भव सौम्यता से होनी चाहिए, बच्चे की स्थिति पर कोई निर्णय या अन्तिम निष्कर्ष नहीं होना चाहिए - यह सिर्फ़ एक साझा चिन्ता होनी चाहिए।

च) यदि परिवार सहमत है, तो चौथा क़दम होगा कि बच्चे को एक उपयुक्त पेशेवर चिकित्सक के पास ले जाया जाए ताकि यह जाँचा जा सके कि क्या समस्या वैध है और क्या बच्चे को वास्तव में विलम्ब और डिसेबिलिटी का ख़तरा है। एक विकासात्मक बाल रोग विशेषज्ञ परामर्श करने के लिए सबसे अच्छा होगा। संस्था के पास ऐसे सन्दर्भों के लिए स्थानीय संस्थानों/संगठनों और पेशेवरों की एक सूची होनी चाहिए ताकि शिक्षक परिवार को उसके अनुसार मार्गदर्शन कर सके।

छ) यदि पेशेवर चिकित्सक जोखिम की पुष्टि करता है, तो परिवार, शिक्षक और चिकित्सा पेशेवर को मिलकर अगले चरणों की योजना बनानी चाहिए। इसमें एक डिसेबिलिटी रिहैबिलिटेशन पेशेवर (जैसे फिजियोथेरेपिस्ट, स्पीच थेरेपिस्ट, विशेष शिक्षक) से परामर्श करना, दवाएँ शुरू करना, aids (जैसे हियरिंग ऐड या बैसाखी) का उपयोग करना, सरल बातचीत और भाषा की गतिविधियाँ या चिकित्सा (therapy) साधारण शारीरिक गतिविधियाँ या चिकित्सा (therapy), संज्ञानात्मक व्यायाम, और कक्षा के लिए निर्देश, या कुछ और जो बच्चे के लिए आवश्यक है, शामिल हो सकते हैं।

ज) पाँचवाँ क़दम स्कूल में बच्चे को केन्द्र में रखकर उसके साथ काम शुरू करना होगा।

i. शिक्षक को बच्चे की एक दस्तावेज़ी प्रोफ़ाइल बनानी चाहिए, जिसे नियमित रूप से अपडेट किया जाता है।

ii. चिकित्सक या रिहैबिलिटेशन पेशेवर द्वारा सुझाई गई उपयुक्त चेकलिस्ट या उपकरण के आधार पर नियमित आकलन करना होगा।

iii. शिक्षक को माता-पिता और देखभाल करने वालों के परामर्श से बच्चे के लिए एक व्यक्तिगत शिक्षण योजना तैयार करने की आवश्यकता है। कृपया इस खण्ड के अन्त में उसका नमूना देखें।

iv. यदि बच्चे की डिसेबिलिटी गम्भीर है जिसके लिए स्कूल के पास पर्याप्त संसाधन नहीं हैं, तो वैकल्पिक समाधान खोजने के लिए परिवार, सम्बन्धित शिक्षा अधिकारियों और चिकित्सा/रिहैबिलिटेशन पेशेवर के साथ इस पर विस्तार से चर्चा करना महत्त्वपूर्ण होगा।

बॉक्स 8.1ख

NCERT की प्रशस्त (PRASHAST) एक चेकलिस्ट है जो जोखिम में (at risk) बच्चों की पहचान करने में सक्षम बनाती है। इस चेकलिस्ट के दो भाग हैं। पहला भाग - प्रथम स्तर की स्क्रीनिंग के लिए नियमित शिक्षकों द्वारा उपयोग के लिए है और दूसरा भाग दूसरे स्तर की स्क्रीनिंग के लिए विशेष शिक्षकों और अन्य लोगों द्वारा उपयोग के लिए है। यह अवैज्ञानिक निदान और बच्चों के अनावश्यक labelling से बचाव है। यह दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 (RPWD) के अनुरूप है।

8.1.3 शिक्षक रोज़मर्रा की कक्षा में क्या कर सकते हैं?

सभी बच्चे अलग-अलग तरीक़ों से शिक्षक को सुनकर, देखकर और जुड़कर सीखते हैं। इस बात पर ध्यान दिए बिना कि जोखिम वाले (at risk) बच्चे को अन्य पेशेवरों से सहयोग मिलता है या नहीं, शिक्षक निम्नलिखित सरल रणनीतियों का उपयोग करके बच्चों की मदद कर सकते हैं :

क) जितना हो सके बच्चे के बारे में जानें।

i. उदाहरण के लिए, बच्चा क्या कर सकता है और क्या नहीं, बच्चे को क्या करना पसन्द है और क्या करना पसन्द नहीं है।

ii. उदाहरण के लिए, वे कौन-से विभिन्न तरीक़े हैं जिनसे बच्चा सर्वोत्तम रूप से सीखता है; बच्चे के घर का वातावरण, परिवार और समुदाय कैसा है।

ख) बच्चे के लिए ऐसे लक्ष्य निर्धारित करके सफलता प्राप्त करें जो यथार्थवादी और प्राप्त करने योग्य हों।

i. उदाहरण के लिए, जब अमित की शब्दावली में केवल 30 शब्द हैं और वह दो शब्दों को संयोजित करने के लिए संघर्ष कर रहा है 'तो अमित एक महीने में 3-4 शब्दों वाले वाक्यों में बोलना शुरू करेगा' यह अवास्तविक है। एक यथार्थवादी लक्ष्य होगा कि 'अमित एक महीने में लगभग 50 अर्थपूर्ण शब्द बोल सकेगा और दो शब्दों को जोड़कर वाक्यांश बनाने का प्रयास करेगा।'

ग) बच्चे को, जितना हो सके, अपने पास बैठाएँ।

घ) सरल, परिचित भाषा का प्रयोग करें तथा स्पष्ट रूप से और धीरे-धीरे बोलें।

ङ) उदारतापूर्वक प्रशंसा और प्रोत्साहित करें।

च) एक बहुसंवेदी दृष्टिकोण का उपयोग करें।

i. उदाहरण के लिए, ऐसे बालगीत का उपयोग करें, जिसमें बोलना और अभिनय एक साथ हो।

ii. उदाहरण के लिए, चित्र दिखाते हुए एक अवधारणा सिखाएँ, उसके बारे में बात करें और चित्र में दिख रही वस्तु को बनवाएँ।

छ) जानकारी को यथासम्भव पुख़्ता बनाएँ।

i. उदाहरण के लिए, पैटर्न सिखाने के लिए, उपलब्ध वस्तुओं जैसे लकड़ी और पत्थरों, खिलौनों, ब्लॉकों का उपयोग करें और फिर काग़ज़-पेंसिल से सम्बन्धित कार्यों पर आगे बढ़ें।

ज) किसी कार्य को पूरा करने के लिए भरपूर अभ्यास और भरपूर समय दें।

झ) जब भी ज़रूरत हो कार्यों से ब्रेक दें।

ञ) दिखाना, प्रदर्शित करना और मॉडल बनाना- इस चक्र को जितनी बार सम्भव हो दोहराएँ।

ट) अन्य बच्चों के साथ बातचीत को बढ़ावा दें।

ठ) अन्य बच्चों को स्थिति के प्रति संवेदनशील बनाएँ।

i. इस विषय पर प्रश्न-उत्तर सत्र आयोजित करें। जैसे क्या आपको लगता है कि सुरेश अलग दिखता है? क्या आपको लगता है कि जब आप अश्विनी से बात करते हैं तो उसे समझ नहीं आता? आपको क्यों लगता है कि अहमद आपसे बात नहीं करता है?

ii. जब बच्चे अधीर हों तो उन्हें समझाएँ। उदाहरण के लिए, क्या आप नरेन्द्र की बात खत्म होने तक इन्तजार कर सकते हैं? मुझे पता है कि उसे कुछ शब्द बोलने में बहुत समय लगता है और वह बहुत-से शब्दों को दोहराता है; लेकिन क्या आप उसे सुनने में धैर्य रख सकते हैं?

ड) विभिन्न क्षमताओं को उजागर करने वाली कहानियों, अभिनयात्मक गतिविधि (role play) का उपयोग करें।

इसके कुछ उदाहरण अनुलग्नक 2, खण्ड 2.10. में उपलब्ध हैं।

ढ) अन्य बच्चों को, जोखिम वाले बच्चे के साथ संवाद करने और खेलने के लिए सिखाएँ और प्रोत्साहित करें।

ण) जोखिम वाले बच्चे के लिए बाकी कक्षा में से एक मेंटर/दोस्त चुनें (इस चुने जाने को एक बड़े सम्मान की तरह बताएँ!)

त) जोखिम वाले बच्चे के प्रति आहत करने वाली भाषा या व्यवहार के प्रयोग को सक्रिय रूप से हतोत्साहित करें।

थ) जोखिम वाले बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए क्या करें और क्या न करने कि एक स्पष्ट सूची रखें और अन्य सभी बच्चों को इसके बारे में बताएँ।

द) हमेशा बच्चे को प्रोत्साहित करें, समर्थन और सम्मान करें।

i. ऐसे लेबल/शब्दों का उपयोग न करें जो आहत करने वाले और अपमानजनक हों न दूसरों को ऐसा करने की अनुमति दें (जैसे, लंगड़ा लड़का, अन्धी लड़की, गूँगा लड़का, बेवकूफ लड़की)।

ii. जोखिम वाले बच्चे के बारे में नकारात्मक टिप्पणी न करें और न ही दूसरों को ऐसा करने दें।

शिक्षक की आवाज़ 8.1 क

व्यक्तिगत शिक्षा योजना (Individualized Education Plan- IEP): नमूना

शशांक साढ़े पाँच साल का बच्चा है। उससे जो कुछ कहा जा रहा है, वह पूरी तरह समझ सकता है और लगभग बीस शब्द अर्थपूर्ण ढंग से बोल सकता है। वह एक बार में एक शब्द बोलता है। हालाँकि वह स्वतंत्र रूप से नहीं चल सकता, लेकिन कुछ मदद से वह खड़ा हो सकता है, और वह कुछ क़दम आगे चलने की कोशिश करता है। ज़्यादातर समय उसकी लार बहती रहती है।

यह एक 3 महीने की व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP) है जिसे मैंने उसके लिए तैयार किया है।

उद्देश्य	सीखने के प्रतिफल	विशिष्ट कक्षा गतिविधियाँ
शारीरिक विकास	बिना सहारे के खड़े रहना सहारे के साथ दस क़दम आगे चलना	एक रेखा खींचें और एक लाल गेंद (जो उसकी प्रिय है) को अन्तिम बिन्दु पर रखें। गेंद तक चलने के लिए उसे सहारा दें। जब वह सहारे के साथ क़दम उठाता है, तो उसके क़दम 1 से 10 तक गिनें। ऐसा करते समय उसे लगातार प्रोत्साहित करें।
भाषा विकास	50 अर्थपूर्ण शब्द बोलना, दो शब्दों का उपयोग करके आवश्यकताओं को इंगित करना, मुँह की मांसपेशियों को मज़बूत करके लार आना कम करना	उसके पास एक रंगीन बॉक्स में विभिन्न वस्तुओं, जैसे गेंद, कप, प्लेट रखें। एक बार में एक वस्तु निकालने में उसकी मदद करें, और उसे उनका नाम बताने के लिए कहें। वस्तुओं या लोगों की स्पष्ट तस्वीरों का उपयोग करके यही गतिविधि की जा सकती है। गीत और कविता गाते/सुनाते समय उसे जानवरों की आवाज़ निकालने और गतिविधि दर्शाने वाले शब्द कहने के लिए प्रोत्साहित करें। खेल गतिविधियों का उपयोग करें जैसे कि गुड़िया को खाना खिलाना, उसे नहलाना, उसे सुलाना और उसे इन सभी गतिविधियों को शब्दों में वर्णित करने के लिए कहें। मुँह के आकार और जीभ के स्थान को निर्दिष्ट करते हुए, प्रत्येक ध्वनि को कैसे निकालना है, यह दिखाने के लिए एक दर्पण का उपयोग करें। मुँह की मांसपेशियों के विशिष्ट व्यायाम दिन में चार बार करवाएँ।

स्वयं-सहायता (Self-Help)	अपने दाँतों को स्वयं ब्रश करना, खुद खाना, शब्दों और इशारों का उपयोग करके शौचालय सम्बन्धित ज़रूरतों को इंगित करना	प्रत्येक गतिविधि को सरल चरणों में बाँटें और उसे प्रत्येक चरण से गुज़ारें। वह यह कैसे कर रहा है यह दिखाने के लिए एक दर्पण का प्रयोग करें। वह जो कर रहा है उसे इंगित करने में उसकी मदद करने के लिए चित्रों का उपयोग करें। प्रत्येक गतिविधि के लिए आरम्भिक ध्वनियों का प्रयोग करें। जैसे शौचालय की जरूरतों के लिए 'सु', ब्रश करने के लिए 'ईई', खाने के लिए 'उम'।
संज्ञानात्मक विकास	श्रेणियों के आधार पर वस्तुओं को छाँटना, चित्रों से वस्तुओं का मिलान करना, 1 से 10 तक अर्थपूर्ण ढंग से गिन पाना	विभिन्न श्रेणियों की वस्तुओं को एक साथ मिलाएँ, जैसे जानवर और फल। उसके सामने दो कटोरे रखें और उन वस्तुओं को दो कटोरों में छाँटने/अलग करने में उसकी मदद करें। मेज़ पर उसकी परिचित तस्वीरें (जैसे गेंद, कप, गुड़िया) रखें। उसे तस्वीर के अनुरूप वस्तु दें और बच्चे को उसके अनुसार तस्वीर का मिलान करने में सहायता करें। गतिविधि करते समय तस्वीर वाली वस्तु को नाम दें। बिल्डिंग ब्लॉक्स या कपड़े सुखाने वाली चिमटी (cloth clips) का इस्तेमाल करें और उन्हें सही तरीक़े से फिट करने में उसकी मदद करें। एक बार हो जाने के बाद, अर्थपूर्ण ढंग से गिनने में उसकी मदद करें और जो संख्या मौजूद है उसे बताएँ। संख्याओं में बदलाव करें और बच्चे को गिनने में मदद करें।
सामाजिक-भावनात्मक विकास	एक समूह में बैठना, साथियों की उपस्थिति को स्वीकार करना, अभिवादन करना और अपने दोस्तों को बुलाना	बच्चों के एक समूह को जोखिम वाले बच्चे के साथ एक घेरे में बैठकर पासिंग बॉल खेलने के लिए कहें। जैसे ही वह गेंद को पास करता है, उसे अपना और दूसरों का नाम बोलने के लिए प्रेरित करें और प्रोत्साहित करें। उसे चिक्की का एक सेट दें - उसे समूह में प्रत्येक बच्चे को नाम से बुलाने और प्रत्येक को एक चिक्की देने के लिए कहें। इस प्रक्रिया में दूसरों द्वारा धन्यवाद देना भी सीखा जा सकता है।

खण्ड 8.2
स्कूल में सुरक्षा और संरक्षण

हमारी सभी शैक्षणिक व्यवस्थाएँ एक ऐसा वातावरण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो न केवल उत्प्रेरक और आनन्दमय हों, बल्कि सुरक्षित और संरक्षित भी हों।

8.2.1 शारीरिक सुरक्षा

क) शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे हर समय शारीरिक रूप से 'दिखाई" दें। ब्रेक और खेल के दौरान एक ज़िम्मेदार व्यक्ति को बच्चों की निगरानी करनी चाहिए।

ख) सभी भवनों और उपकरणों को सुरक्षा मानकों का पालन करना चाहिए। जैसे खिड़कियों पर जाली, बालकनियों पर रेलिंग, सुरक्षित विद्युत कनेक्शन, अर्थिंग वाले विद्युत उपकरण, कुएँ ढके होने चाहिए।

ग) सुरक्षा उपकरण (जैसे अग्निशामक यंत्र) तुरन्त उपलब्ध होने चाहिए और अच्छी स्थिति में बनाए रखना चाहिए।

घ) खिड़कियाँ कक्षा के अन्दर नहीं खुलनी चाहिए क्योंकि वे अक्सर दुर्घटनाओं की वजह होती हैं (उदाहरण के लिए, बच्चे जब खड़े होते हैं या घूमते हैं तो उनका सिर अक्सर खिड़की के पल्ले से टकरा जाता है)।

ङ) सभी चीज़ें जो सम्भावित रूप से ख़तरनाक हो सकती हैं उन्हें सावधानीपूर्वक ऐसे स्थान पर संग्रहित किया जाना चाहिए जो बच्चों की पहुँच में नहीं हो; उनका उपयोग किसी वयस्क की देखरेख में किया जाना चाहिए (जैसे चाकू, कैंची, ब्लेड, सफ़ाई के तरल पदार्थ)।

च) स्कूल में एक प्राथमिक उपचार किट काम में लेने की स्थिति में होना चाहिए। सभी शिक्षकों को बुनियादी प्राथमिक उपचार करने में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

छ) पौष्टिक मध्याह्न भोजन (mid-day meals) सुरक्षित और साफ़-सुथरी परिस्थितियों में परोसा जाना चाहिए।

ज) दुर्घटना या चिकित्सा आपातस्थिति के मामले में, पर्यवेक्षण करने वाले वयस्क (जैसे शिक्षक या प्रधान शिक्षक) को निर्णय लेना चाहिए और माता-पिता को तुरन्त सूचित करना चाहिए।

झ) यदि कोई बच्चा स्कूल में अस्वस्थ महसूस करता है, लेकिन यह कोई मेडिकल इमरजेंसी नहीं है, तो शिक्षक माता-पिता से सम्पर्क कर सकता है, और उन्हें बच्चे को घर लेने जाने के लिए कह सकता है। या यदि सम्भव हो तो, स्कूल से कोई ज़िम्मेदार व्यक्ति, यह सुनिश्चित करने के बाद कि घर में कोई ज़िम्मेदार व्यक्ति मौजूद होगा, बच्चे को घर ले जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, यदि आराम करने के लिए कोई जगह है, तो बच्चा स्कूल में आराम कर सकता है, और सामान्य समय पर घर जा सकता है।

8.2.2 भावनात्मक सुरक्षा

क) स्कूल में कोई भी वयस्क बच्चों के साथ शारीरिक हिंसा या शारीरिक दण्ड का प्रयोग नहीं कर सकता है।

ख) वयस्कों को बच्चों को डराना-धमकाना (bully), परेशान या भयभीत नहीं करना चाहिए। उनके प्रति अपमानजनक या नीचा दिखाने वाली भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते हैं या बच्चों को लेबल नहीं कर सकते हैं।

ग) शिक्षकों को सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करना चाहिए और दैनिक गतिविधियों में सभी की समान भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए।

घ) शिक्षकों को हर समय बच्चों के साथ सकारात्मक भाषा का प्रयोग करना चाहिए और प्रोत्साहन देना चाहिए जो कक्षा में और अन्यथा, सकारात्मक व्यवहार और कार्यों को पुष्ट करता है।

ङ) शिक्षकों को हस्तक्षेप ज़रूर करना चाहिए यदि वे ऐसा अनुचित व्यवहार होता देखते हैं जो दूसरों को चोट पहुँचाता है। यदि कोई बच्चा एक निश्चित सीमा लाँघता है, तो पहला क़दम कारणों या अन्तर्निहित कारणों को समझने और उन्हें सम्बोधित करने का प्रयास करना होगा।

च) संवेदनशील जानकारी (जैसे बच्चे की विशेष परिस्थितियों के सम्बन्ध में) की गोपनीयता बनाए रखी जानी चाहिए।

स्कूल सुरक्षा पर शिक्षा मंत्रालय के दिशानिर्देश स्पष्ट रूप से उन उपायों को परिभाषित करते हैं जो स्कूलों और अन्य सम्बन्धित हितधारकों को सभी बच्चों के लिए एक सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए करने चाहिए। वे सभी शैक्षणिक संस्थानों और व्यवस्थाओं के लिए एक उत्कृष्ट संसाधन हैं।

8.2.3 बाल यौन शोषण

क) यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (POCSO) अधिनियम, 2012 के अनुसार, बाल यौन शोषण के प्रति किसी भी तरह की उदारता नहीं होनी चाहिए।

ख) शिक्षकों और अन्य सभी वयस्कों को बाल यौन शोषण और पॉक्सो (POCSO) अधिनियम के बारे में पता होना चाहिए। उन्हें यौन शोषण के सम्भावित संकेतकों को पहचानना आना चाहिए (उदाहरण के लिए, चेहरे, पैर, या शरीर पर आगे या पीछे खरोंचे या चोट, या खुद को अलग-थलग कर लेना, आक्रामक होना, या आत्मघाती होना)।

ग) कहानियों और नाटकों (जैसे कठपुतली का उपयोग) के माध्यम से शिक्षक बच्चों को सुरक्षित स्पर्श और असुरक्षित स्पर्श के विचारों से परिचित करा सकते हैं।

घ) यदि शिक्षक बच्चे के व्यवहार में निश्चित बदलाव नोटिस करते हैं, तो उन्हें इसकी सूचना तुरन्त प्रधानाध्यापक/प्राचार्य/पर्यवेक्षक को देनी चाहिए।

ङ) ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए सभी प्रक्रियाओं से बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। सभी मामलों में, बच्चों की सुरक्षा, ध्यान में रखा जाने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण विचार है।

च) हर समय गोपनीयता बनाए रखने की ज़रूरत है। सम्भावित बाल शोषण के बारे में जानकारी केवल आवश्यकता (need-to-know) के आधार पर साझा की जानी चाहिए।

8.2.4 अन्य समग्र सुरक्षा उपाय

क) माता-पिता के पते और फोन नम्बर नियमित रूप से अपडेट किए जाने चाहिए और उन्हें पहुँच के अन्दर रखा जाना चाहिए। सभी बच्चों/वयस्कों के लिए आपातकालीन सम्पर्क नम्बर उपलब्ध होने चाहिए।

ख) किसी विशेष चिकित्सा स्थिति (medical condition) के बारे में जानकारी, और सम्बन्धित दवा या निवारक उपायों को प्रवेश के समय लिया जाना चाहिए और नियमित रूप से अपडेट किया जाना चाहिए। यह जानकारी सभी सम्बन्धितों को उपलब्ध कराई जाना चाहिए। यह सभी बच्चों और विशेष रूप से जोखिम वाले बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण है। विशेष रूप से, स्कूल में हर किसी को अस्थमा, मिर्गी या ज्ञात एलर्जी वाले बच्चों के बारे में पता होना चाहिए। इन बच्चों का इलाज करने वाले डॉक्टर द्वारा बताई गई मिर्गी-रोधी या एलर्जी-रोधी दवाएँ स्कूल में उपलब्ध होनी चाहिए। इनका उपयोग करने के लिए स्कूल के पास माता-पिता/देखभाल करने वालों की लिखित सहमति होनी चाहिए।

ग) किसी भी भावनात्मक उथल-पुथल या आघात, जिससे बच्चा अस्थायी रूप से गुजर रहा हो, के बारे में जानकारी सभी सम्बन्धित शिक्षकों को उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

घ) निकटतम चिकित्सा केन्द्र/अस्पताल/डॉक्टर, एम्बुलेंस, फायर स्टेशन और पुलिस स्टेशन के टेलीफ़ोन नम्बर आसानी से उपलब्ध होने चाहिए या ऐसे केन्द्रीय स्थान पर लगाए जाने चाहिए जहाँ उन्हें सभी देख सकें।

अध्याय 9
प्रिपरेटरी स्टेज तक की कड़ियाँ

जब बच्चा फाउंडेशनल स्टेज से प्रिपरेटरी स्टेज में जाता है तब स्कूल के चरणों के 5+3+3+4 मॉडल में निरन्तरता और परिवर्तन दोनों की आवश्यकता होती है।

सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन फाउंडेशनल स्टेज में विकासात्मक कल्पना से उन क्षमताओं और कौशलों के विकास पर ध्यान केन्द्रित करने से जुड़ा शिफ्ट है जो हमारे आस-पास की दुनिया की एक व्यवस्थित समझ हासिल करने के लिए आवश्यक हैं। मोटे तौर पर ये क्षमताएँ हैं - साक्षरता, संख्या ज्ञान, तथा परिकल्पना करने, अवलोकन करने, आंकड़ों को एकत्र करने और आँकड़ों का विश्लेषण करने की क्षमता। इन शैक्षिक क्षमताओं के साथ, कला और खेल में संलग्नता प्रिपरेटरी स्टेज का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन जाती है, साथ ही मूल्यों, विश्वासों और सामाजिक क्षमताओं का विकास भी होता है। बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे कक्षा 3 के अन्त तक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त कर लें, जो कि प्रिपरेटरी स्टेज का हिस्सा है।

खण्ड 9.1
विकासात्मक क्षेत्रों से पाठ्यचर्या के क्षेत्रों तक

फाउंडेशनल स्टेज में, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को निम्नलिखित विकासात्मक क्षेत्रों के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है - शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक-नैतिक, संज्ञानात्मक, भाषा और साक्षरता, सौन्दर्य बोध और सांस्कृतिक, तथा सकारात्मक सीखने की आदतें। प्रिपरेटरी स्टेज में, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को निम्न पाठ्यचर्या के क्षेत्रों में संगठित किया जाएगा – भाषाएँ, गणित, हमारे आस-पास की दुनिया, कलाएँ, शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा।

क) **भाषाएँ** - L1 और L2 दोनों भाषा और साक्षरता विकास प्रिपरेटरी स्टेज में जारी रहेगा। बच्चे प्रिपरेटरी स्टेज में अपने पहले वर्ष में L1 में बुनियादी साक्षरता हासिल करेंगे। उनसे प्रिपरेटरी स्टेज के अन्त तक L2 में यह साक्षरता हासिल करने की उम्मीद की जाएगी। इसलिए, प्रिपरेटरी स्टेज के अन्त तक, बच्चों को L1 और L2 दोनों में स्वतंत्र पाठक और लेखक बनाने का लक्ष्य होगा।

ख) **गणित** - फाउंडेशनल स्टेज में गणितीय क्षमताओं को संज्ञानात्मक विकास के भाग के रूप में देखा जाता है। प्रिपरेटरी स्टेज में, पाठ्यचर्या के क्षेत्र के रूप में गणित पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। प्रिपरेटरी स्टेज में पहले वर्ष के अन्त तक बच्चों से बुनियादी संख्या ज्ञान प्राप्त कर लेने की उम्मीद की जाएगी।

ग) **हमारे आस-पास की दुनिया** - प्रिपरेटरी स्टेज में यह पाठ्यचर्या का क्षेत्र फाउंडेशनल स्टेज के संज्ञानात्मक क्षेत्र से विस्तार पाता है। बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक और मानवीय वातावरण के साथ व्यापकता और गहराई से जुड़ेंगे। वे परिकल्पना बनाने और सत्यापित करने के लिए अवलोकन, आँकड़ों का संग्रह और विश्लेषण के अपने कौशल को और विकसित करेंगे। वे अपने आस-पास की मानव दुनिया की सामाजिक-सांस्कृतिक समझ भी हासिल करेंगे।

घ) **कला** - प्रिपरेटरी स्टेज की फाउंडेशनल स्टेज से एक निरन्तरता है। जहाँ फाउंडेशनल स्टेज अपनी प्रकृति में स्वतंत्र और अधिक खोजपूर्ण है वहीं प्रिपरेटरी स्टेज में, बच्चे कला के विभिन्न रूपों में विशिष्ट कौशल प्राप्त करना शुरू कर देंगे। यह उन्हें खुद को अधिक व्यापक तरीक़ों से व्यक्त करने में सक्षम करेगा।

ङ) **शारीरिक शिक्षा** - प्रिपरेटरी स्टेज में शारीरिक शिक्षा के रूप में शारीरिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। जबकि फाउंडेशनल स्टेज में, खोजपूर्ण और मुक्त खेल पर ज़ोर दिया जाता है। प्रिपरेटरी स्टेज में, खेल का परिचय और शारीरिक गतिविधि में अधिक औपचारिक जुड़ाव पर ज़ोर दिया जाएगा।

च) **व्यावसायिक शिक्षा** - फाउंडेशनल स्टेज में, "सेवा" के लिए एक पाठ्यचर्या का उद्देश्य है। इसमें और अधिक विस्तार किया जाएगा ताकि बच्चे प्रिपरेटरी स्टेज में उत्पादक कार्य में संलग्न हों। NEP 2020 शिक्षा को समग्रता में देखता है। यह बच्चों में न केवल दुनिया की समझ बनाने बल्कि उस समझ के आधार पर सार्थक और उत्पादक रूप से कार्य करने पर ज़ोर देता है। सब्जियों को उगाने और खाना पकाने जैसी साधारण गतिविधियों से लेकर सिलाई जैसे अधिक कुशल काम तक, बच्चों को प्रोत्साहित किया जाएगा कि वे अपने दिमाग़ और शरीर का उपयोग उत्पादक कार्यों में करें।

छ) **सामाजिक-भावनात्मक** - नैतिक शिक्षा और सकारात्मक सीखने की आदतें - फाउंडेशनल स्टेज में, यह उपयुक्त है कि बचपन में विकास की ज़रूरतों को देखते हुए, इन दोनों क्षेत्रों के पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को स्पष्ट करने के सन्दर्भ में विशेष ज़ोर दिया जाए। विभिन्न पद्धतियों के माध्यम से उद्देश्यों को प्राप्त करने के साथ, प्रिपरेटरी स्टेज में यह ज़ोर जारी रहेगा।

खण्ड 9.2
विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन में निरन्तरता और परिवर्तन

दूसरा बदलाव कक्षा में प्रयुक्त विषयवस्तु के रूप में है। प्रिपरेटरी स्टेज में बच्चे केवल ठोस अनुभवों की बजाय अधिक सारगर्भित विषयवस्तु का उपयोग करने के लिए तैयार होते हैं। पाठ्यपुस्तकें और कार्यपुस्तिकाएँ सीखने को व्यवस्थित करने में बड़ी भूमिका निभा सकती हैं। विषयवस्तु समझ के सन्दर्भ का विस्तार भी कर सकती है लेकिन इसे बच्चे के अनुभव संसार से पूरी तरह से जुड़ा होने की आवश्यकता है। बच्चों की कल्पना देश (space) और काल (time) दोनों के सन्दर्भ में विस्तार लेती है, ऐसे में उपयोग की जाने वाली विषयवस्तु को इस विस्तार को प्रतिबिम्बित करना चाहिए। विषयवस्तु का चुनाव परिचित और अपरिचित के विवेकपूर्ण सन्तुलन को प्रतिबिम्बित कर सकता है, जो बच्चों को आश्वासन और चुनौती दोनों देता है।

तीसरा बदलाव कक्षा संचालन और शिक्षणशास्त्र में है। जहाँ शिक्षणशास्त्र को बच्चों को अपने स्वयं के अन्वेषण और जिज्ञासा के माध्यम से सीखने की अनुमति जारी रखने की आवश्यकता है, लेकिन साथ ही अब बच्चे एक अधिक औपचारिक कक्षा के वातावरण में प्रवेश करेंगे, और सीखने के अनुभव अधिक समूह आधारित हो जाएंगे। बच्चों से समूह के वातावरण में सीखने और सीखने में अधिक स्वतंत्र होने की अपेक्षा की जाती है। प्रिपरेटरी स्टेज में बच्चों से अधिक स्व-निर्देशित कार्य की अपेक्षा की जा सकती है। कौशल को मज़बूत और गहन करने के लिए अधिक दोहराव और अभ्यास की आवश्यकता होगी। प्रिपरेटरी स्टेज में वातावरण अधिक औपचारिक हो जाता है लेकिन फाउंडेशनल स्टेज के शिक्षार्थी-केन्द्रित दृष्टिकोण को यहाँ भी जारी रखना महत्त्वपूर्ण है। कुछ बच्चों को अधिक व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता होगी। यह महत्त्वपूर्ण है कि प्रिपरेटरी स्टेज में शैक्षणिक रणनीतियों को इस तरह चुना जाए ताकि सभी बच्चे मिडिल स्टेज में समझ के विभिन्न रूपों के साथ अधिक औपचारिक जुड़ाव की तैयारी में बुनियादी क्षमता प्राप्त कर सकें।

अन्ततः आकलन के तरीक़ों में बदलाव होगा। फाउंडेशनल स्टेज में अधिकांश आकलन विद्यार्थी के काम के बारे में शिक्षक 'अवलोकन' पर आधारित होते हैं लेकिन प्रिपरेटरी स्टेज में, अधिक स्पष्ट आकलन कार्यों की शुरुआत की जा सकती है। अभी भी निरन्तरता इस अर्थ में होगी कि आकलन को 'कम महत्व' का रखा जाएगा, भले ही वे अधिक स्पष्ट व ठोस हों। प्रिपरेटरी स्टेज में बच्चों के लिए यह उपयोगी होता है कि वे अपने स्वयं के सीखने के के कुछ पहलुओं के बारे में अधिसंज्ञानात्मक तौर पर जागरूक हों। यह जागरूकता और अधिक स्पष्ट आकलन कार्यों द्वारा प्रदान की जा सकती है। वर्कशीट के अलावा, बच्चों को लिखित आकलन कार्य दिए जा सकते हैं जिन्हें उन्हें एक विशिष्ट समय के भीतर पूरा करने की आवश्यकता होगी।

अध्याय 10
एक सहयोगी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण

NCF, NEP 2020 की केन्द्रीय परिवर्तनकारी ताक़तों में से एक है। जैसा कि पिछले अध्यायों से साफ़ है, फाउंडेशनल स्टेज पर NCF की पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन के स्तर पर कई काम करने होंगे। इस सबके किए एक सहयोगी माहौल की ज़रूरत है। इसे सम्भव बनाने के लिए इस हिस्से में अध्यापकों, पदाधिकारियों, अभिभावकों और समुदाय की भूमिका पर चर्चा की गई है।

NEP 2020 के अनुरूप ही खण्ड 10.1 विभिन्न तरीक़ों से शिक्षकों को सशक्त बनाने की बात करता है। इस पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए ज़रूरी ढाँचे और सीखने के सहयोगी संसाधनों का उल्लेख खण्ड 10.2 में किया गया है। खण्ड 10.3 अकादमिक और प्रशासनिक पदाधिकारियों की भूमिका को रेखांकित करता है। खण्ड 10.4 बुनियादी स्तर पर विद्यार्थियों के सीखने में अभिभावकों और समुदाय के सहयोग के महत्त्व पर प्रकाश डालता है। सक्षम बनाने में तकनीकी (technology) की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, खण्ड 10.5 उन तरीक़ों का वर्णन करता है जिनसे फाउंडेशनल स्टेज पर शिक्षण और सीखने में तकनीकी सहयोगी भूमिका निभा सकती है।

खण्ड 10.1
शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाना

शिक्षण, बौद्धिक और नैतिक रूप से बहुत अधिक अपेक्षाओं से भरा पेशा है। फाउंडेशनल स्टेज पर पढ़ाने वाले शिक्षकों में देखभाल करने, ऊर्जा, मेहनत, धैर्य और रुचिकर तरीक़े से काम करने जैसे विशिष्ट गुण होने चाहिए ताकि वे नन्हे विद्यार्थियों के साथ काम कर सकें।

10.1.1 शिक्षकों को सक्षम बनाने वाला माहौल सुनिश्चित करना

एक अच्छे स्कूल के लिए ऐसी संस्कृति की ज़रूरत होती है जो परस्पर विश्वास और सम्मान पर टिकी हो, जो लोगों को सीखने और साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सके। यह ऐसे माहौल में सम्भव है जो खुला हो और जहाँ एक-दूसरे की देखभाल की जाए। जहाँ के कामकाज में बातचीत, सहयोग, जाँच-पड़ताल और विचार-विमर्श घुले-मिले हों।

शिक्षकों को संसाधन सम्पन्न और प्रेरक माहौल की ज़रूरत होती है। उन्हें पेशेवर तरीक़े से सीखने और अन्तःक्रिया के मौक़ों की लगातार ज़रूरत होती है। एक सुयोग्य, संगठित और जीवन्त पेशेवर समूह से जुड़े होने के कारण शिक्षकों में गर्व का भाव होना चाहिए।

10.1.2 सहायक सुविधाएँ और काम का माहौल

सुरक्षित पेय जल, पानी के साथ सुचारू शौचालय और हाथ धोने की मूलभूत सुविधाओं के साथ स्कूलों में समुचित और सुरक्षित भौतिक ढाँचे, सुविधाएँ और सीखने के संसाधन उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए सुचारू कक्षा बोर्ड, कला/शिल्प के लिए सामग्री, सीखने का कोना बनाने के लिए सामग्री और तरह-तरह के बाल साहित्य सहित ज़रूरी ढाँचा और शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

10.1.3 सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा

फाउंडेशनल स्टेज के लिए शिक्षकों की मांग और आपूर्ति का आकलन पहला क़दम है। विशिष्ट स्तरों के लिए शिक्षकों की मांग और आपूर्ति से सम्बन्धित उपलब्ध अध्ययनों को आधार बनाते हुए NCTE को इसे प्राथमिकता देनी चाहिए।

इस आकलन से यह सुनिश्चित करने में मदद होगी कि सही संख्या और विशिष्टता वाले विश्वविद्यालय बुनियादी स्तर में विशेषज्ञता वाले चार वर्षीय समेकित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (Integrated Teacher Education Programme - ITEP) चला सकें।

ITEP में फाउंडेशनल स्टेज की विशेषज्ञता वाले कार्यक्रम की पाठ्यचर्या NCF की फाउंडेशनल स्टेज की पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र पर आधारित होनी चाहिए। इस पाठ्यचर्या में फाउंडेशनल स्टेज के सभी तरह के परिवेशों, मसलन आँगनवाड़ी, बालवाटिका, अकेले चल रहे प्री-स्कूल, बड़े स्कूलों की प्री-स्कूल कक्षाओं और कक्षा-1 व 2 के स्तर पर विद्यार्थी शिक्षकों के लिए समुचित अभ्यास के अवसर सुनिश्चित किए जाने चाहिए।

स्कूल स्तरों का पुनर्गठन पूरा होने के बाद फाउंडेशनल स्टेज के सभी शिक्षकों को शिक्षक योग्यता परीक्षा (Teacher Eligibility Test - TET) के दायरे में ले आना चाहिए। NEP 2020, फाउंडेशनल स्टेज सहित शिक्षा के सभी स्तरों को TET के दायरे में लाने की परिकल्पना करता है। पढ़ाने की योग्यता का यह प्रमाण सभी तरह के स्कूलों के शिक्षकों को अपने दायरे में ले लेगा।

जैसा कि NEP 2020 में कहा गया है, शिक्षकों की भर्ती की प्रक्रिया कठोर होनी चाहिए जिसमें न सिर्फ़ लिखित परीक्षा बल्कि साक्षात्कार और कक्षा में पढ़ाने का प्रदर्शन भी शामिल होना चाहिए।

10.1.4 सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा, मेंटरिंग और सहयोग

शिक्षक पेशेवर विकास (Teacher professional development) एक यात्रा है जिसमें शिक्षक अपनी निजी गति के अनुसार विकास करता है। अपनी विकास यात्रा में शिक्षक अलग-अलग चरण में हो सकता है और इस लिहाज़ से विकास के लिए उसकी अलग-अलग ज़रूरत हो सकती है। विकास के हर चरण के लिए अलग विषयवस्तु की ज़रूरत होती है। हर चरण में सीखने का अनुभव उस जगह तक समग्र और पूर्ण होना चाहिए जहाँ से शिक्षक अपने शिक्षण प्रक्रियाओं में सतत एवं सुस्थिर बदलाव ला सके और विकास के अगले चरण तक जा सके।

शिक्षकों का पेशेवर विकास इस तरह होना चाहिए कि वे शैक्षिक सुधारों का संचालन करने की योग्यता हासिल करते हुए सक्षम (competent) और चिन्तनशील (reflective) व्यक्ति बन सकें। शिक्षकों के काम को सुगम बनाने वाले और उनके सीखने में मददगार सहायता ढाँचे और उन्हें सक्षम बनाने वाले साधन उपलब्ध होने चाहिए।

शिक्षकों को अपने पेशेवर विकास में तरह-तरह के साधनों के जरिए लगातार जुटे रहना चाहिए। विषयवस्तु व्यापक, सम्पूर्ण, प्रासंगिक, कक्षा से जुड़ी और शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों को सम्बोधित करने वाली होनी चाहिए। Mentoring and coaching support के साथ आपस में सीखने (peer learning) के मंच ज़रूर ही उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

फाउंडेशनल स्टेज के शिक्षकों को नन्हे विद्यार्थियों के लिए सीखने का सुरक्षित, प्रेरक और रुचिकर माहौल मुहैया कराना होगा जिसका ज़ोर खेलने और खोजने पर हो। सहायक सामग्री विकसित करने, क्षमता संवर्द्धन सत्र आयोजित करने, कार्यस्थल का निरीक्षण करने व गुणवत्ता की निगरानी और देखभाल करने के जरिए NCERT, SCERT, DIETs, BITEs, BRCs, CRCs, शिक्षकों और स्कूलों को अकादमिक मेंटरिंग व सहयोग प्रदान करें। ये अकादमिक संसाधन संस्थान यह सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं कि शिक्षकों को पेशेवर विकास के अवसर हमेशा मुहैया हों।

शिक्षकों के लिए पेशेवर विकास - उदाहरणात्मक घटक और मोड्स

तालिका 10.1क

पेशेवर विकास के घटक	
वैश्विक शोध	मस्तिष्क विकास विकासात्मक अवस्थाएँ, विकासात्मक पड़ाव (milestones) बच्चे कैसे सीखते हैं, खेलना महत्त्वपूर्ण क्यों है परिवारों और समुदायों को समझना स्कूल में सीखने का मतलब
विषयवस्तु की समझ	विकास के सभी क्षेत्र शुरुआती भाषा और साक्षरता, शुरुआती गणित

पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ, सीखने के प्रतिफल	पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को समझना - उनका तर्क और शिक्षा के लक्ष्य, विकासात्मक क्षेत्रों के साथ सम्बन्ध दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों की समझ हासिल करना कक्षा-कक्ष के लिए इनका निहितार्थ
शिक्षणशास्त्र	विद्यार्थियों को सुरक्षा, आराम, सम्मान और प्रोत्साहन महसूस कराना खिलौनों, कहानियों, कला, खेलों, संगीत और बातचीत का इस्तेमाल कक्षा-कक्ष में पढ़ना, लिखना, गणित
विषयवस्तु और सामग्री	उपयुक्त विषयवस्तु की पहचान करना - चयन के लिए तर्क उपयुक्त विषयवस्तु का चुनाव स्थानीय संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए उपयुक्त सामग्री बनाना तकनीकी का इस्तेमाल करना
आकलन	आकलन के सिद्धान्त आकलन के लिए उपयुक्त टूल्स और तकनीकों का प्रयोग शिक्षण और सीखने को बेहतर बनाने के लिए आकलन के आँकड़ों का इस्तेमाल करना
जोख़िम में बच्चे (Children at risk)	बच्चे के विकास में विलम्ब और डिसेबिलिटी के चिह्नों को पहचानना उपयुक्त कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाएँ पेशेवरों के साथ काम
योजना	सीखने के सभी क्षेत्रों में विद्यार्थियों की ज़रूरतों के मुताबिक़ बहु-स्तरीय शिक्षण योजना बनाना
अभिभावकों और समुदाय के साथ काम करना	सकारात्मक सम्बन्ध बनाना स्कूल में अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी
शिक्षक अधिगम समुदाय (Teacher Learning Community) का निर्माण	शिक्षक engagement के लिए मंच (forums) फेस-टू-फेस, तकनीकी का इस्तेमाल
शोध और दस्तावेज़ीकरण	शोध साहित्य का इस्तेमाल केस स्टडी लिखना

तालिका 10.1ख

पेशेवर विकास के मोड्स	
स्कूल के भीतर प्रक्रियाएँ	योजना बनाना, साप्ताहिक बातचीत, साझा करने की बैठकें, एक-दूसरे की कक्षा का अवलोकन और फ़ीडबैक।
स्कूल में संबलन (scaffolding) और सहयोग	CRC, BRC, DIET और अन्य सहायक संस्थाएँ स्कूलों में नियमित तौर पर विज़िट कर सकते हैं। इन विज़िट के दौरान वे शिक्षकों का अवलोकन कर सकते हैं, उनके साथ विचार-विमर्श कर सकते हैं, शिक्षण विधि को प्रदर्शित कर सकते हैं, सामग्री विकास में शिक्षकों के साथ काम कर सकते हैं और आगामी कार्यक्रमों व गतिविधियों के बारे में उन्हें जानकारी दे सकते हैं।
औपचारिक कार्यशालाएँ	ये सीखने और विकास के सभी क्षेत्रों पर फेस-टू-फेस किए गए सत्र हैं। शिक्षकों के बड़े समूहों के लिए 3 दिवसीय आवासीय कार्यशालाओं से लेकर शिक्षकों के छोटे समूहों के लिए ख़ास टॉपिक्स पर आधे दिन के सत्र तक, ये कार्यशालाएँ विभिन्न अवधियों और प्रारूपों की हो सकती हैं।
सामग्री विकसित करने के लिए कार्यशालाएँ	शुरुआती वर्षों में शिक्षा के लिए बहुत सारी शिक्षण अधिगम सामग्री की ज़रूरत होती है। अगर शिक्षकों के समूह (मसलन किसी बड़े स्कूल के भीतर या क्लस्टर या ब्लॉक स्तर पर) साथ मिलकर ये सामग्री विकसित कर सकें तो यह उन सबके लिए सीखने का बेहतरीन मौक़ा होगा।
शिक्षक मंच (forums)	फाउंडेशनल स्टेज (मसलन क्लस्टर स्तर पर) के शिक्षकों के लिए मंच पर कामकाज पर बातचीत के लिए मासिक बैठकें कर सकते हैं। किसी ख़ास विषय के लिए शिक्षण ज़िम्मेदारी ले सकते हैं और उस विषय पर शिक्षण योजना और संसाधन बना सकते हैं, जिन्हें सबके साथ साझा किया जा सकता है। इससे तैयारी का भार घटेगा और शिक्षक इन संसाधनों को अपने-अपने विद्यार्थियों के अनुकूल बना सकेंगे।
सोशल मीडिया समूह	सोशल मीडिया के मंचों पर ऐसे समूहों को ख़ुद शिक्षकों द्वारा चलाया जा सकता है जो अनुभव व शिक्षण संसाधन साझा करें, एक तरह से सोचने वाले शिक्षकों या किसी ख़ास विषय के शिक्षकों के बीच विचार-विमर्श में मदद कर सकें और उसका संचालन कर सकें।
हैंडबुक्स	ऐसी हैंडबुक्स तैयार की जा सकती हैं, जो शिक्षकों को सीखने के प्रतिफल हासिल करने की योजना बनाने के लिए मार्गदर्शित करें। ऐसी अतिरिक्त सामग्री के सन्दर्भ इन हैंडबुक्स को और मूल्यवान बना सकते हैं, जिन्हें शिक्षक पढ़ सकें/जिन तक उनकी पहुँच हो सके।
DIKSHA का इस्तेमाल	शुरुआती वर्षों की शिक्षा के लिए DIKSHA पर मौजूद सामग्री का इस्तेमाल किसी एक शिक्षक या शिक्षकों के समूह द्वारा किया जा सकता है।
मेंटर शिक्षक	हर क्लस्टर के लिए अनुभवी और समर्पित शिक्षक चिह्नित किए जा सकते हैं। वे दूसरे स्कूलों में विज़िट कर सकते हैं और दूसरे शिक्षकों की मदद कर सकते हैं। सहयोग चाहने वाले शिक्षक इन मेंटर शिक्षकों के पास स्वतंत्र रूप से भी पहुँच सकते हैं।
वार्षिक शिक्षक संगोष्ठियाँ	बड़े स्तर पर कम समयावधि वाले कार्यक्रम, जो ख़ास विषयों पर केन्द्रित हों, जिनमें शिक्षक अपने विचारों / प्रक्रियाओं (practices) / सामग्री की प्रस्तुति कर सकें और विशेषज्ञ वक्ताओं को सुन सकें। शिक्षकों को शिक्षण सम्बन्धी नए और अलग विचारों से शिक्षण के शुरुआती वर्षों में परिचित कराया जा सकता है।

कृपया कुछ उदाहरण संलग्नक 2 में देखें।

10.1.5 कैरियर की सीढ़ी और पेशेवर विकास की सम्भावनाएँ

स्कूली शिक्षा के शुरुआती चरण महत्त्वपूर्ण हैं और इसके लिए बच्चों की प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में दक्ष सुयोग्य शिक्षकों की ज़रूरत होगी।

NEP 2020 स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर सेवा शर्तों में बराबरी की बात करता है। इसका मतलब यह है कि जल्द-से-जल्द और आगामी समय में भी, शिक्षकों का वेतन और सेवा शर्तें उनकी सामाजिक और पेशेवर ज़िम्मेदारियों के अनुरूप होंगी। वेतन और सेवा शर्तें प्रतिभाशाली शिक्षकों को शिक्षण के पेशे में टिकाए रखने और आकर्षित करने के लिहाज़ से तय की जानी चाहिए। बुनियादी से लेकर सेकेण्डरी स्तर तक सभी शिक्षक उनकी काम की ज़रूरतों के मुताबिक़ मानक सेवा शर्तों और समान वेतन ढाँचे पर भर्ती किए जाएंगे।

सभी शिक्षकों के पास अपने कैरियर में प्रगति करने (वेतन व पदोन्नति आदि के लिहाज़ से) के अवसर होंगे हालाँकि वे शिक्षा के समान स्तर पर शिक्षक बने रहेंगे (मसलन बुनियादी, प्रिपरेटरी, मिडिल या सेकेण्डरी)। इस अप्रोच से यह तय होगा कि किसी एक स्कूल स्तर के भीतर शिक्षक के लिए कैरियर (वेतन और पदोन्नति) का विकास सुनिश्चित किया जा सके। इससे यह भी सुनिश्चित किया जा सकेगा कि शुरुआती स्तर से बाद के स्तरों में जाने का कैरियर विकास सम्बन्धी प्रोत्साहन नहीं हो। (हालाँकि अगर शिक्षक की इच्छा हो और उसके पास यथोचित योग्यताएँ हों तो विभिन्न शिक्षा स्तरों के बीच कैरियर बदलने की इजाज़त दी जाएगी।)

10.1.6 शिक्षक की स्वायत्तता और जवाबदेही

विद्यार्थियों के सीखने के लिए शिक्षक ज़िम्मेदार हैं और इसके लिए उन्हें ज़रूर ही जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। लेकिन इस जवाबदेही की पूर्वशर्त शिक्षक का सशक्तीकरण और उसकी स्वायत्तता है। जवाबदेही महत्त्वपूर्ण तो है पर उतनी ही महत्त्वपूर्ण स्वायत्तता है - स्वायत्तता पर आधारित सशक्त बनाने वाली संस्कृति जवाबदेही की अनिवार्य शर्त है।

सीखने की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए के लिए सक्षम और योग्य शिक्षक महत्त्वपूर्ण हैं। स्कूलों के भीतर सहयोगी माहौल और पारिस्थितिकी तंत्र शिक्षक के प्रभाव को बढ़ा देते हैं। शिक्षक विशिष्ट (unique) व्यक्ति होते हैं जिनके विद्यार्थियों, सीखने और शिक्षा के बारे में अपने विश्वास और अपने सिद्धान्त होते हैं।

एक रचनात्मक और विवेकशील शिक्षक के लिए सीखने का हर प्रसंग स्वतःस्फूर्त और स्वाभाविक तरीक़े से उस सीखने को प्रोत्साहित करने और इस प्रक्रिया में मदद देने का एक अप्रत्याशित अवसर होता है, जिसकी योजना नहीं बनाई गई थी। और किन्हीं ख़ास मौक़ों पर सीखने के प्रसंग ऐसे अवसर सामने लाते हैं जहाँ जो पढ़ाया जाना था या जिसकी योजना बनाई गई थी, उसे रचनात्मक और विवेकशील शिक्षक उसे छोड़ देता है।

विषयवस्तु की योजना बनाने, उसे संगठित करने, क्रम निर्धारित करने, परिस्थितियों के मुताबिक़ बच्चों के लिए शिक्षण विधियों और विद्यार्थियों के सीखे हुए के आकलन करने के तरीक़ों के मामलों में शिक्षकों को शिक्षणशास्त्रीय स्वायत्तता अवश्य होनी चाहिए। यह सब फाउंडेशनल स्टेज में निर्धारित पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, दक्षताओं, सीखने के प्रतिफलों, शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियों व सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए।

खण्ड 10.2
सीखने का समुचित माहौल सुनिश्चित करना

10.2.1 डिज़ाइन की कल्पना (Design Imagination)

ऐसी भौतिक जगह जो सुरक्षित, रुचिकर और आरामदेह माहौल प्रदान करे, जो फाउंडेशनल स्टेज पर सीखने को सुचारू बनाए, बहुत महत्त्वपूर्ण है। फाउंडेशनल स्टेज पर NEP 2020 के ECCE पर पर्याप्त ज़ोर को ध्यान में रखते हुए ऐसी जीवन्त जगहें विकसित की जानी चाहिए।

इन जगहों की डिज़ाइन बनाने और इनके क्रियान्वयन के लिए तथा उच्च गुणवत्ता वाली ECCE को सुनिश्चित करने में अपनी भूमिका अदा करने के लिए बेहद रचनात्मक कल्पना की ज़रूरत है। और यह काम व्यावहारिक स्तर पर लागत, संचालन की सम्भावना और लागू किए जाने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।

इस रचनात्मक कल्पना के दायरे में न सिर्फ़ फाउंडेशनल स्टेज की शिक्षा को लागू करने वाले संस्थान बनाने के सभी पहलू शामिल होंगे बल्कि उनका नज़दीकी परिवेश भी शामिल होगा। चाहे नए बने भवन (या कक्ष) हों या मौजूदा ढाँचों को फिर से सुधार कर बनाए गए हों, इसी कल्पना से संचालित होने चाहिए। ऐसी कल्पना के फलने-फूलने और ठोस रूप ग्रहण करने के लिए ज़्यादा प्रभावी अप्रोच यह होगा कि cross-disciplinary / cross-field समूह बनाए जाएँ, जो इन विचारों, ख़ाकों और दिशानिर्देशों को विकसित करने के लिए ज़िम्मेदार हों। इन अनुशासनों/क्षेत्रों में ECCE, बाल विकास, अभियांत्रिकी और स्थापत्य, समाजशास्त्र और मानवशास्त्र आदि शामिल किए जा सकते हैं। स्थानीय सन्दर्भों व ज़रूरतों के लिहाज़ से पूरे देश में ऐसे कई समूहों की ज़रूरत हो सकती है। ये समूह राज्यों में उपयुक्त संस्थाओं, मसलन DWCD, SCERT आदि के द्वारा बनाए जा सकते हैं।

ECCE में निवेश समुचित तरीक़े से संचालित हो सके, इसके लिए ज़रूरी है कि इस कार्ययोजना पर अमल जल्दी किया जाए।

10.2.2 बुनियादी ढाँचा (Infrastructure) और सीखने के संसाधन

बेहतर तरीक़े से सीखने के लिए समुचित और उपयुक्त बुनियादी ढाँचा और सीखने के लिए शिक्षण सामग्री हर बच्चे को उपलब्ध कराई जानी चाहिए। समुचित और उपयुक्त ढाँचागत सुविधाएँ और सीखने के संसाधन सीखने में सहायक माहौल पर महत्त्वपूर्ण असर डालते हैं। एक अच्छे और not-so-good स्कूल के बीच मुख्य अन्तरों में से एक बुनियादी ढाँचे की गुणवत्ता, सम्पूर्णता और रखरखाव होता है, ख़ासकर अभिभावकों और समुदाय की नज़र में। बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम को उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट करने वाला, परिवेश को खंगालने की आज़ादी देने वाला, अन्त:क्रिया के अवसर मुहैया कराने वाला और उनका अधिकतम समग्र विकास करने वाला होना चाहिए। शिक्षण सामग्री से जुड़ने, बाहर खेलने, एक-दूसरे से और शिक्षक से अन्त:क्रिया करने का बच्चों को मौक़ा हर रोज़ मिलना चाहिए।

सीखने का सहयोगी माहौल बच्चे को सीखने और विकास का एक समग्र अनुभव प्रदान करेगा। बच्चे का विकास सिर्फ़ शिक्षक और उसके बीच की अन्त:क्रिया पर निर्भर नहीं करता बल्कि उन संवेदी अनुभवों पर भी निर्भर करता है जिसे बच्चे कक्षा के भीतर और बाहर के भौतिक माहौल से पाते हैं।

निर्धारित मानकों के मुताबिक़ सुरक्षित, बाधा-मुक्त और समुचित भौतिक ढाँचा उपलब्ध कराया जाना चाहिए। भवन और उपकरण क़ानून के मुताबिक़ सुरक्षा मानकों के अनुसार होने चाहिए। ढाँचे के विकास व देखरेख, और शिक्षण-अधिगम सामग्री के लिए समुचित बजट और उसका समुचित उपयोग अवश्य ही होना चाहिए।

इसमें शामिल हैं:

क) साफ़, सुरक्षित और क्रियाशील शौचालय और साफ़ पेयजल।

ख) सुरक्षित और पोषक भोजन (तय मानकों के मुताबिक़) और सभी बच्चों के लिए स्वास्थ्य सहायता।

ग) साफ़, हवादार और अच्छी रोशनी वाले कक्षा-कक्ष जिनमें प्राकृतिक रोशनी और हवा का अधिकतम इस्तेमाल हो।

घ) सीखने की जगहें दूसरी जगहों (मसलन खाना बनाने की) से अलग हों, जगहों का इस्तेमाल इस तरह से किया जाए ताकि सुरक्षा या सीखने की प्रक्रिया में कोई बाधा न पहुँचे।

ङ) कक्षा 1 और 2 के लिए अलग कक्ष हों।

च) बाहर सुरक्षित जगह हो, और/या बच्चों के खेलने के लिए छोटे बग़ीचे हों।

छ) भवन और दीवारें ख़ुशनुमा रंगों में रंगी हों, (बच्चे इस पेंटिंग कार्य में भाग ले सकते हैं)।

ज) उपयुक्त उच्च गुणवत्ता वाले सीखने के संसाधन/सामग्री और किताबें हों।

झ) उपयुक्त सुरक्षा प्रक्रिया के साथ चीज़ें अपनी नियत जगहों पर व्यवस्थित तरीक़े से रखी हों (मसलन सफ़ाई की सामग्री या चाकू बन्द जगहों में रखे जाएँ)।

ञ) सीखने के कोने और उपयुक्त प्रदर्शनी बच्चों की आँखों के स्तर पर हों।

ट) जगहों और सामग्री का नियमित परीक्षण करते हुए सफ़ाई/हाइजीन का ध्यान रखा जाए।

विस्तार के लिए कृपया देखें अध्याय 5, भाग 5.4, 5.5, और 5.6।

10.2.3 विद्यार्थी शिक्षक अनुपात

बड़े स्तर पर यह समझा और माना जाता है कि उचित Pupil-Teacher Ratio (PTR), शिक्षक को विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने में सक्षम बनाता है। और इसीलिए उचित विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात विद्यार्थियों की भागीदारी और उपलब्धियों को बढ़ा सकता है। महत्त्वपूर्ण है कि PTR को सिर्फ़ आँकड़ों की तरह न देखा जाए, बल्कि इसे ऐसे उपाय की तरह देखा जाए जो बच्चों के लिए सीखने के परिणामों को बेहतर बनाती है। अगर शिक्षक के अनुकूल PTR का माहौल हो तो बहुत-सी कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाएँ बेहतर तरीक़े से लागू की जा सकती हैं। शिक्षणशास्त्र के विशेषज्ञों का तर्क है कि कम PTR का स्कूली शिक्षा के आरंभिक वर्षों में बहुत गहरा असर पड़ता है। यह पाया गया है कि कम PTR वाले स्कूलों में शिक्षा पाए बच्चों में इस बात की ज़्यादा सम्भावना होती है कि वे ज़्यादा वर्षों तक स्कूली शिक्षा में रह जाएँ।

एक महत्त्वपूर्ण चेतावनी यह भी है कि PTR को कम करने का मतलब यह नहीं है कि स्कूलों को संविदा पर और कम योग्यता वाले शिक्षकों से भर दिया जाए। PTR को योग्य शिक्षकों की नियुक्ति और उनके पेशेवर विकास के ज़रिए भरा जाना चाहिए। PTR को सुधारने के साथ ही, कम PTR की स्थिति में भी पूरा फ़ायदा उठाने के लिए ढाँचे सम्बन्धी मुद्दों और शिक्षकों की अकादमिक व शिक्षणशास्त्रीय क्षमताओं का भी ध्यान रखना होगा। फाउंडेशनल स्टेज पर सभी बच्चों के लिए पर्याप्त शिक्षक होने चाहिए।

10.2.4 दाख़िले की उम्र

RTE 2009, राष्ट्रीय ECCE नीति 2013 और NEP 2020 जैसे नीतिगत दस्तावेज़ों ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि 3 से 6 साल तक के बच्चों को आँगनवाड़ी या प्री-स्कूल जाना चाहिए, इसके बाद ही उन्हें कक्षा-1 या प्राथमिक स्कूल में दाख़िल होना चाहिए।

NEP 2020 कहता है कि शिक्षा का फाउंडेशनल स्टेज 3 साल की उम्र से शुरू और 8 साल पर ख़त्म होता है। मतलब कि प्री-स्कूल से लेकर कक्षा-2 तक का स्कूल शिक्षण। इसलिए बच्चों को कक्षा-1 में 6 साल की उम्र में दाख़िल होना चाहिए। हालाँकि बहुत से राज्यों की नीतियों में उम्र और विकास के इस मापदण्ड की झलक नहीं दिखती।

दिमाग़ी विकास की त्वरित गति और शुरुआती वर्षों में बच्चे के समग्र विकास के लिहाज़ से कुछ महीनों तक का अन्तर भी बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। कक्षा-1 के लिए बनाई गई पाठ्यचर्या इस मान्यता के साथ बनाई गई है कि दाख़िल हुए बच्चे की उम्र 6 वर्ष से ज़्यादा होगी। कक्षा-1 में दाख़िले की उम्र को आधिकारिक रूप से घटाने का चलन इस मान्यता को नकारता है। इससे बच्चों के आगे होने वाले सीखने (cumulative learning) को पर्याप्त नुक़सान पहुँच सकता है।

खण्ड 10.3
अकादमिक और प्रशासनिक पदाधिकारियों की भूमिका

10.3.1 हेड टीचर / प्रधानाध्यापक

स्कूल के नेतृत्वकर्ता का मुख्य काम, स्वायत्तता देने वाली और जवाबदेही सुनिश्चित कराने वाली प्रक्रियाओं के जरिए स्कूल में सहयोगी और सशक्त बनाने वाले माहौल का निर्माण है।

हेड टीचर्स / प्रधानाध्यापकों / निरीक्षकों को शिक्षकों की हर तरह से मदद करनी चाहिए ताकि वे ठीक से शिक्षण कर सकें। इसके लिए उपयुक्त संसाधनों तक उनकी पहुँच बनानी होगी, कक्षाओं की योजना बनाने में उनकी मदद करनी होगी, कक्षाओं का अवलोकन करना होगा तथा उन्हें रचनात्मक प्रतिपुष्टि (feedback) देनी होगी और ऐसे माहौल का निर्माण करना होगा जहाँ शिक्षक, शिक्षण और बच्चों के सीखने के बारे में सोच सकें और बात कर सकें।

बच्चों के साथ सम्पर्क व घनिष्ठता बनाने, नेतृत्व का उदाहरण पेश करने, शिक्षकों के साथ सम्पर्क में रहने और उनके दृष्टिकोण व समस्याओं को समझने के लिहाज़ से यह अच्छा होगा कि हेड टीचर फाउंडेशनल स्टेज पर समय-समय पर कोई कक्षा पढ़ाएँ। इससे यह भी दिखेगा कि पूरे स्कूल के लिए फाउंडेशनल स्टेज कितना महत्त्वपूर्ण है और इससे शिक्षकों में आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

स्कूल में छोटे बच्चों की नियमित उपस्थिति और यह सुनिश्चित करने के लिए कि अभिभावक/परिवार को बच्चे के सीखने तथा विकास के स्तर के महत्त्व को समझाया जा सके, हेड टीचर को अभिभावकों, परिवार के लोगों और समुदाय के सम्पर्क में रहना चाहिए। इससे स्कूल को प्रासंगिक मुद्दों और चुनौतियों पर उपयुक्त प्रतिक्रिया देने में भी मदद मिलेगी, मसलन अगर किसी बच्चे के विकास में विलम्ब हो रहा है या उसके व्यवहार को लेकर चिन्ता है, तो संवेदनशील ढंग से अभिभावकों/परिवार के लोगों तक यह सूचना पहुँचाई जा सकेगी।

10.3.2 अकादमिक पदाधिकारी

क्लस्टर और ब्लॉक स्तर के पदाधिकारियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है: स्कूल विजिट्स, कक्षा अवलोकन और शिक्षकों को रचनात्मक फीडबैक के जरिए on-site support करना। क्लस्टर और ब्लॉक स्तर पर काम करने वाले पदाधिकारियों को नियमित तौर पर उस pedagogy का प्रदर्शन करना चाहिए जिसे शिक्षकों को इस्तेमाल में लाना है। इससे शिक्षकों को बेहतर समझने में मदद मिलेगी, साथ ही पदाधिकारियों को शिक्षण तथा बच्चों के सम्पर्क में रहने में मदद मिलेगी।

क्लस्टर स्तर की बैठकों में कक्षा प्रक्रियाओं पर विचार-विमर्श होना चाहिए और हर कुछ महीनों में कोई एक बैठक फाउंडेशनल स्टेज पर कक्षा अनुभवों के बारे में बातचीत के लिए नियत होनी चाहिए। आरंभिक वर्षों में सीखने के विकास के महत्त्व, स्कूल में बच्चों की नियमित उपस्थिति तथा भागीदारी पर अभिभावकों और समुदाय के साथ होने वाली बातचीत में भी उन्हें शामिल रहना चाहिए। स्कूलों द्वारा चलाई जाने वाली गतिविधियों, मसलन सीखने के कोने का निर्माण, बाल साहित्य इकट्ठा करना आदि में पूरी तरह मदद की जानी चाहिए और इसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

DIET संस्थानों में अकादमिक पदाधिकारियों को इस बात पर फ़ोकस करना चाहिए कि स्थानीय भाषाओं और सन्दर्भों में बच्चों और शिक्षकों के लिए विशाल, आकर्षक, रोचक और नई-नई सामग्री विकसित करें। इस सामग्री को इस्तेमाल करने के लिए एक समग्र शिक्षक सहयोग योजना इसमें शामिल की जा सकती है। हर DIET को जिले के हर ब्लॉक में फाउंडेशनल स्टेज पर शिक्षकों को सहयोग देने के लिए विशेषज्ञ अकादमिक विद्वानों का एक समूह भी विकसित करना चाहिए।

SCERT के अकादमिक पदाधिकारियों का ज़ोर फाउंडेशनल स्टेज के लिए पाठ्यचर्या, कक्षा-1 व 2 के लिए पाठ्यपुस्तकों व कार्यपुस्तिकाओं के निर्माण पर होना चाहिए। उनका ज़ोर अतिरिक्त सामग्री के नमूने जुटाने पर होना चाहिए जिसे DIET आगे सन्दर्भीकृत कर सके और जिसके आधार पर सामग्री तैयार कर सके। इसके अलावा उनका ज़ोर आकलन चेकलिस्ट्स व प्रक्रियाओं पर होना चाहिए जिन्हें शिक्षक इस्तेमाल कर सकें। फाउंडेशनल स्टेज के लिए इस्तेमाल होने वाली सामग्री के अनुवाद के लिए SCERT को स्रोत, सन्दर्भ और समन्वयन सम्बन्धी ज़िम्मेदारी उठानी चाहिए।

10.3.3 प्रशासनिक पदाधिकारी

फाउंडेशनल स्टेज पर पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित कराना, शिक्षण-अधिगम संसाधनों (मसलन खेल सामग्री, किताबें, अभ्यास पुस्तिकाएँ) की आपूर्ति और वितरण को समय से उपलब्ध कराना महत्त्वपूर्ण है। पाठ्यचर्या की ज़रूरतों और शिक्षक पेशेवर विकास के लिए नियमित निगरानी और प्रक्रिया की समीक्षा के साथ समुचित बजट का प्रावधान किया जाना चाहिए।

सावधानी से योजनाबद्ध और सोच-विचार कर एकत्र किए गए आँकड़े सामाजिक व आर्थिक रूप से वंचित समूहों (Socially and Economically Disadvantaged Groups - SEDGs) की शिक्षा तक पहुँच को सुनिश्चित कराने में सहयोगी हो सकते हैं। ख़ासकर 3 से 8 साल की उम्र वाले बच्चों की जनसंख्या का सही आकलन ज़रूरी है, जिससे कि समुचित योजना बनाई जा सके- इसके लिए आगे की योजना और निगरानी, दोनों की ज़रूरत होगी। जहाँ सम्भव हो, न्यूनतम प्रयास और अधिकतम जवाबदेही के साथ सटीक आँकड़े इकट्ठा करने में तकनीकी का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। ताकि ये आँकड़े हफ़्तों और महीनों में नहीं, कुछ दिनों में फैसला लेने वालों को उपलब्ध हो सकें।

फाउंडेशनल स्टेज पर शिक्षा की गुणवत्ता का सूचक प्रतिफलों की उपलब्धि, ख़ासकर कक्षा-3 में FLN से सम्बन्धित प्रतिफलों की उपलब्धि होनी चाहिए। NAS ने इसकी निगरानी सम्भव बना दी है। NAS के अलावा, राज्य इस पर केन्द्रित अपने State Learning Achievement Surveys (SLAS) बना सकते हैं।

जन सेवा संदेशों और मीडिया अभियानों के जरिए बड़े स्तर पर प्रचार-प्रसार, अभिभावकों से सीधी बातचीत और बड़े पैमाने पर उन सहज विधियों और सामग्रियों को प्रसारित करने की योजना भी बनानी चाहिए, जिनसे अभिभावक अपने बच्चों की शुरुआती शिक्षा की ज़रूरतों में मदद करने में ख़ुद को सक्षम बना सकें।

खण्ड 10.4
अभिभावकों और समुदाय की भूमिका

10.4.1 अभिभावक और परिवार

बच्चे के सीखने और विकास में अभिभावक और परिवार स्कूल के साझीदार होते हैं। शुरुआती वर्षों में यह और भी महत्त्वपूर्ण है कि अभिभावक स्कूल में जो होता है, उसे समझें और मदद करें। इसी तरह शिक्षक के लिए भी यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि घर पर बच्चे की क्या स्थिति है जिससे कि बच्चे से बातचीत में वे इसका ध्यान रख सकें।

अभिभावकों और परिवारों से सम्बन्ध मुद्दों को ध्यान में रखते हुए बनाए और चलाए जाने चाहिए। अभिभावकों के साथ बातचीत बार-बार होनी चाहिए और चलती रहनी चाहिए। बातचीत में अभिभावकों से प्रक्रिया में बराबर के भागीदार की तरह बर्ताव होना चाहिए। उन्हें ऐसे लोगों की तरह नहीं समझना चाहिए जिन्हें बातचीत करके समझा दिया जाना है या उन्हें सिर्फ़ रिपोर्ट करना है। अभिभावकों को बच्चे की प्रगति के बारे में बताना होगा। यह काम अभिभावक को बच्चे के सीखने के बारे में बातचीत के लिए नियमित स्कूल में आमंत्रित करके और शिक्षकों द्वारा उनके घर जाकर किया जा सकता है। इन बैठकों में स्कूल संचालन पर अभिभावकों की राय व्यक्त करने की भी जगह होनी चाहिए। अभिभावक भी ज़रूरत के मुताबिक शिक्षक के साथ बैठक का समय मांग सकते हैं।

ख़ासकर बच्चे के शुरुआती विकास के लिए, विकास और सीखने के विभिन्न क्षेत्रों के लिए, घर के सहायक और सुरक्षित माहौल में सीखने में दिलचस्पी और प्रोत्साहन की ज़रूरत के लिए, मूलभूत स्वास्थ्य और पोषण के महत्त्व के लिए, वंचना और बाल शोषण के प्रभावों के लिए और परिवार व शिक्षक के बच्चे के विकास में भूमिका के लिहाज़ से एक साझा समझ उपयोगी हो सकती है।

अभिभावक और परिवार स्कूलों को अपने स्तर पर मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए : ख़ास जलसों, स्कूल के महत्त्वपूर्ण दिवसों व कार्यक्रमों में भागीदारी करना, स्कूल की छोटी क्षेत्र-यात्राओं का आयोजन करना और उनकी निगरानी करना, पढ़ाए जा रहे विषय के बारे में अपने ज्ञान और अनुभव को साझा करना (मसलन पेड़ उगाना, कीड़ों को नियंत्रित करना, छोटी चोटों का प्राथमिक उपचार करना, सरल स्वास्थ्यकर भोजन बनाना, लकड़ी के शुरुआती काम का प्रदर्शन करना, वाहनों और पशुओं के बारे में बातचीत करना आदि), स्कूली अभ्यासों को स्थानीय सन्दर्भ से जोड़ने में शिक्षक की मदद करना (मसलन स्थानीय त्यौहार, स्थानीय खाना, स्थानीय कला रूप) और नियत दिनों पर अवलोकनकर्ता या सह-शिक्षक के रूप में कक्षा में भागीदारी करना। अभिभावक स्कूल प्रबन्धन समिति के सदस्य भी हो सकते हैं और अभिभावकों, स्कूल, समुदाय और शिक्षकों के बीच पुल का काम कर सकते हैं। वे अन्य अभिभावकों और स्कूल के बीच सभी मसलों पर साफ़ और पारदर्शी संवाद सुनिश्चित कराने की ज़िम्मेदारी ले सकते हैं, वे अतिरिक्त संसाधन या सीखने की सामग्री जुटाने में मदद कर सकते हैं, वे उन अभिभावक समूहों का हिस्सा बन सकते हैं जो शिक्षक दिवस या खेल दिवस जैसे आयोजनों की योजना बनाएँ तथा उनका संयोजन व प्रबन्धन करें।

10.4.2 समुदाय

स्थानीय समुदाय में अभिभावक, परिवार, पड़ोस में रहने वाले, युवा समूह, समुदाय के नेता और स्थानीय सरकारी संस्थान शामिल हैं। समुदाय को स्कूलों की सहायता में कई तरीक़ों से शामिल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए : सभी छोटे बच्चों के नामांकन और नियमित उपस्थिति सुनिश्चित कराने में, शिक्षक के साथ अपने अवलोकन के अनुभव साझा करने में, अतिरिक्त

ढाँचागत संसाधन, सीखने की सामग्री, बच्चों के भोजन के लिए बेहतर पोषण स्रोत उपलब्ध कराने या अन्य सेवाओं में (मसलन ग्राम पंचायत दूसरी योजनाओं का पैसा पानी आपूर्ति की व्यवस्था के लिए कर सकती है), सभी अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को स्कूल का सक्रिय भागीदार बनाने को प्रेरित करने में और स्कूल को समुदाय का अभिन्न हिस्सा बनाने में मदद करने में।

शिक्षक की आवाज़ 10.4क

बाल मेला

मेरा हमेशा से विश्वास रहा है कि बच्चों के सीखने में अभिभावकों और व्यापक समुदाय को शामिल करना महत्त्वपूर्ण है। इसके लिए बाल मेले बहुत प्रभावी हैं। बाल मेले में मेरे बच्चों को अपनी सीखी हुई चीजें अपने अभिभावकों और स्थानीय समुदाय को दिखाकर ख़ुशी होती है। इस तरह के आयोजन समुदाय और स्कूल के बीच बेहतर सम्बन्ध बनाने में मददगार होते हैं। इससे फाउंडेशनल स्टेज के बारे में अभिभावकों और समुदाय के बीच जागरूकता पैदा करने में मदद मिलती है।

हमारे गाँव में सभी शिक्षक और दूसरे पदाधिकारी इसके लिए साथ मिलकर काम करते हैं। हालाँकि हम हर बार विवरण बदलते रहते हैं, पर आमतौर पर एक बाल मेला कुछ ऐसा होता है :

- हम शिक्षक आयोजन स्थल को सजाते हैं और इन चीज़ों को प्रदर्शित करते हैं :
    - नाम, उम्र और बनाने की तारीख़ के साथ बच्चों के बनाए हुए चित्र
    - हमारे द्वारा तैयार की गई सीखने-सिखाने की सामग्री
    - बच्चों के काम के साथ उनके पोर्टफोलियो
    - शिक्षा के आरंभिक वर्षों के महत्त्व, दिमाग़ के विकास, बच्चे कैसे सीखते हैं, सीखने का दोस्ताना माहौल कैसा होना चाहिए आदि को दर्शाते चार्ट और पोस्टर। हम इस सबके बारे में चित्र के ज़रिए दिखाते हैं ताकि हर कोई आसानी से समझ सके।
- जब तक दूसरे भागीदार आयोजन स्थल तक नहीं पहुँचते, बच्चे कलाकारी करने और चित्र बनाने में ख़ुश रहते हैं।
- जब दूसरे भागीदार पहुँच जाते हैं, तब हम (कुछ बड़े बच्चों के साथ) अपना उद्देश्य, कार्यक्रम की समय-सारणी उन्हें बताते हैं। हम उनसे खूब प्रोत्साहन की उम्मीद करते हैं।
- गतिविधियाँ शुरू होती हैं- कुछ में बच्चे होते हैं, कुछ में बच्चे और अभिभावक होते हैं और कुछ सिर्फ़ अभिभावकों के साथ की जा सकती हैं।
- हर गतिविधि के अन्त में सम्बद्ध शिक्षक और कुछ बड़े बच्चे गतिविधि का उद्देश्य बताते हैं। वे यह भी बताते हैं कि इस गतिवधि से कैसे बच्चे के विकास में मदद मिलेगी या कैसे यह गतिविधि विकास को बढ़ाएगी। वे यह भी बताते हैं कि घर पर मौजूद संसाधनों में भी यह गतिविधि कैसे की जा सकती है।
- हम पिताओं की भागीदारी की विशेष तौर पर कोशिश करते हैं और उन्हें अपने बच्चे के विकास के बारे में खुद के विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

- गतिविधियों के बाद हम महत्त्वपूर्ण विषयों, जैसे दिमाग़ का विकास, शुरुआती वर्षों का महत्त्व, बच्चे के विकास में अभिभावक की भूमिका आदि पर चार्ट और पोस्टर का इस्तेमाल करते हुए बात करते हैं।
- अपने बच्चों को कक्षा में नियमित भेजने के बारे में अभिभावक अपने अनुभव साझा करते हैं।

आखिर में शिक्षक, अभिभावकों और समुदाय से अपनी अपेक्षाएँ, ख़ासकर नामांकन और बच्चों की उपस्थिति के बारे में साझा करते हैं और उनकी भागीदारी के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं। बाल मेले सच में उत्सव हैं जहाँ सारा गाँव बच्चे के सीखने में भागीदारी के लिए बाहर आ जाता है!

खण्ड 10.5
तकनीकी का लाभ उठाना

शिक्षण की विषयवस्तु के स्रोत की तरह तकनीकी के इस्तेमाल (कृपया अध्याय 5, भाग 5.4 देखें) के अलावा फाउंडेशनल स्टेज पर तकनीकी एक सहयोगी पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के लिए बेहद मददगार हो सकती है।

मौजूदा तकनीकी का लाभ उठाने और डिजिटल ढाँचे व ख़ाके के उपयोग से क्षमता संवर्द्धन को तेज़ करने में मदद मिल सकती है, इससे भागीदारी, संलग्नता और साथ काम करने की प्रवृत्ति को बढ़ाया जा सकता है। इसका एक उदाहरण National Digital Education Architecture (NDEAR) है, जिसे NEP 2020 के एक साल पूरा होने के मौक़े पर शुरू किया गया है। NEP को लागू करने में इसकी मुख्य सहयोगी भूमिका है। इसकी योजना 'एक समेकित राष्ट्रीय डिजिटल ढाँचा बनाने और पारिस्थितिकी क्षमताओं के आपस में लाभ उठाने के लिए बेहतरीन संयोजक की तरह काम करने' की है।

NCF शुरुआती वर्षों में तकनीकी के इस्तेमाल के लिए कुछ विचार सुझा सकता है, पर भविष्य की सभी सम्भावनाओं और निश्चित ही समाधानों जो आगे के लिए प्रासंगिक हों, को सोच पाना असम्भव है। NDEAR जैसे लाभकारी तकनीकी ख़ाकों का इस्तेमाल दूरदर्शिता होगी, जो समय के मुताबिक़ अलग-अलग तरह के और modular समाधान विकसित करने में मददगार होगा।

10.5.1 क्षमता संवर्द्धन के लिए तकनीकी

छोटे बच्चों की मदद और उन्हें समृद्ध करने से सम्बन्धित कई विषयों पर छोटी 'कैसे करें' गाइडें, नवाचारों का प्रदर्शन, शिक्षण की योजना जैसे डिजिटल पाठ्यक्रम आरम्भिक वर्षों के बच्चे के बारे में समझ बढ़ाने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों के लिए भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। पर इन्हें और बेहतर बनाए जाने की ज़रूरत है।

यह काम करने के तरीक़ों में सूचनात्मक और शैक्षिक विषयवस्तु (मसलन बातचीत का मूल्य, विकास के पड़ावों के बारे में जानकारी), अच्छे अभ्यासों (मसलन स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का छोटे बच्चों के लिए इस्तेमाल करना), गतिहीन पाठ योजना को संवादात्मक, व्यक्तिगत शिक्षण योजना बनाने, जो शिक्षक को लचीलेपन और चुनने का मौक़ा दे, आदि को शामिल किया जा सकता है।

तकनीकी उल्लेखनीय तरीक़े से एक-दूसरे से सीखने, विषयवस्तु और प्रक्रियाओं को साझा करने, मदद मांगने और उन दूसरे लोगों के साथ समुदाय का बोध बनाने में सक्षम बनाती है जो इन्हीं सन्दर्भों में काम कर रहे होते हैं। यह तब बहुत अच्छे तरीक़े से काम करता है जब सामग्री स्थानीय भाषाओं में हो और तकनीकी यह करने में सक्षम बनाती है।

NISHTHA एक राष्ट्रीय मिशन है जिसका उद्देश्य ऑनलाइन मोड में चलाए जा रहे डिजिटल रूप से सक्षम शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के जरिए विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों को बेहतर बनाना है। इससे लाभ उठाना चाहिए और इसे लगातार बेहतर बनाना चाहिए।

शिक्षक खुद की बनाई हुई विषयवस्तु DIKSHA जैसे मंचों पर अपलोड कर सकते हैं और वे NDEAR compliant open-source content authoring tools का इस्तेमाल तरह-तरह की विषयवस्तु निर्मित करने के लिए कर सकते हैं।

10.5.2 डिजिटल ढाँचों, मंचों और टूल्स से लाभ उठाना

विषयवस्तु निर्माताओं के जीवन्त परिस्थितिकी तंत्र को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे NDEAR (ndear.gov.in), और विद्यादान (vdn.diksha.gov.in) की क्षमताओं का इस्तेमाल करते हुए बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के लिए विषयवस्तु निर्माण में योगदान दें।

शिक्षक और बच्चे, जो QR codes का इस्तेमाल प्रासंगिक पाठ्यचर्या सम्बन्धित विषयवस्तु तक आसान पहुँच के लिए करते हैं, के लिए 'energizing' सामग्री बहुत अच्छे से काम करती है। QR codes का इस्तेमाल यह भी सुनिश्चित करता है कि इससे जुड़ी हुई विषयवस्तु को किसी समय भी updated या संशोधित किया जा सकता है।

विकासात्मक चुनौतियों को दर्ज और चिह्नित करने वाले tools और शुरुआती जाँच के उपकरण शिक्षक को बच्चे के लिए ज़रूरी मदद की सिफ़ारिश करने में सहयोग देते हैं, मसलन PRASHAST जो कि अक्षमता जाँच की परीक्षण चेकलिस्ट है।

व्यावहारिक और प्रभावी तकनीकी सक्षम उपकरण प्रशासनिक कामकाज को आसान बनाते हुए शिक्षक का समय बचाते हैं और उनको कार्यकुशल बनाते हैं। सीखने की जगहों में छोटे-छोटे सुधारों के विचार और कार्यक्रम की योजना बनाने और उसके क्रियान्वयन में मदद के लिए शिक्षक और प्रशासक सक्षम बनाने वाले उपकरणों की सहायता ले सकते हैं। तकनीकी अभिभावक-शिक्षक समुदायों को जोड़ने में भी मददगार है। ख़ासकर जहाँ विशिष्ट ज़रूरतों या विकास में विलम्ब वाले बच्चों का मामला हो, specialist और expert संसाधनों की खोज करने वाले tools को भी ध्यान में रखना चाहिए। बहुभाषिक स्थितियों में तकनीकी उपकरण शिक्षकों के सहयोगी हो सकते हैं। शिक्षक इनकी मदद से हर बच्चे की ज़रूरत का ध्यान रख सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धि (Artificial Intelligence- AI) और मशीन लर्निंग (ML) का इस्तेमाल कुछ चुनौतियों का हल निकालने में किया जा सकता है जैसे अनुवाद के लिए (भाषिनी https://bhashini.gov.in/en/ और ULCA https://bhashini.gov.in/ulca) का इस्तेमाल किया जा सकता है और ज़रूरत पड़ने पर शिक्षकों के द्वारा और उनके लिए, प्रासंगिक सामग्री खोज सकने में सक्षम बनाने के लिए विषयवस्तु खोजी solutions (जैसे चैटबोट्स)। AI और ML को बच्चों सम्बन्धी या बाल अभिमुख किसी भी solutions के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

10.5.3 अभिभावकों और समुदाय के लिए तकनीकी

रेडियो, टीवी, OTT मंचों जैसे प्रसार मीडिया माध्यमों और IVR तथा ऐसे ही अन्य तरीक़ों से सन्देश भेजकर उत्तरदायी परवरिश को प्रोत्साहित किया जा सकता है। कई राज्य, नागरिक समाज की संस्थाओं के साथ मिलकर कुछ नए कार्यक्रम लागू कर रहे हैं, इन्हें आगे बढ़ाया जा सकता है।

सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का इस्तेमाल करते हुए 'एक दिन एक कहानी' कार्यक्रम, खेलने और सीखने की गतिविधियाँ, साथ-साथ पढ़ने और सुनने और कार्यपुस्तिका पर अभ्यास करने के मौक़े अभिभावकों को बच्चों के साथ जोड़ने के लिए उपलब्ध कराए गए हैं। बहुत से अभिभावक अब सन्देश सेवाओं का इस्तेमाल लोगों से जुड़ने और विषयवस्तु के उपभोग के लिए करते हैं। इसका लाभ उठाना चाहिए।

अनुलग्नक 1:
सीखने के प्रतिफलों के उदाहरणात्मक विवरण

यहाँ हर दक्षता के लिए सीखने के प्रतिफलों के उदाहरण दिए गए हैं। ये फाउंडेशनल स्टेज के पाँच वर्षों में सीखने के trajectories हैं, जो सम्बन्धित दक्षता हासिल करने की तरफ़ आगे ले जाते हैं।

- *जैसे पाठ्यचर्या के उद्देश्य विकासात्मक हैं, उसी तरह दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल भी विकासात्मक हैं।*
- *इस चरण पर, हर आयु वर्ग के लिए, अधिगम के सभी प्रतिफलों के विकासात्मक trajectory होते हैं। ख़ास उम्र में हासिल किए जाने वाले उद्देश्यों की बजाय इन्हें एक सातत्य और trajectory के रूप में देखा जाना चाहिए।*
- *3 से 8 वर्ष की उम्र विकासात्मक होती है। अलग-अलग बच्चों में यह विकास अलग-अलग रफ़्तार से होता है। एक समय में सभी बच्चे समान उम्र-वार सीखने के प्रतिफल नहीं हासिल कर पाएंगे।*
- *नीचे दिया गया उम्र-वार वर्गीकरण निर्देशात्मक है और यह कक्षा में हर बच्चे के सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करने में शिक्षकों की मदद करेगा।*
- *हर सीखने का प्रतिफल अवलोकनीय है, इनकी जाँच हो सकती है। सीखने के प्रतिफलों का इस्तेमाल करते हुए शिक्षक, बच्चे की दक्षताओं का अवलोकन या जाँच कर पाएंगे।*
- *सीखने के प्रतिफलों को cumulative के रूप में समझा जाना चाहिए। पहले के उम्र समूहों में बच्चे द्वारा सीखे हुए को बाद के स्तरों पर भी दिखना जारी रहना चाहिए। उदाहरण के लिए अगर 4-5 वर्ष के लिए सीखने का प्रतिफल 'बिना बिखराए खाना' है तो यह 5-6 साल और उसके बाद भी जारी रहना चाहिए।*

नीचे के हिस्से में पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को CG-1, CG-2, CG-3… और योग्यताएँ को C-1.1, C-2.1, C-3.1… की तरह लिखा गया है। सीखने के प्रतिफल, दक्षताओं के अनुसार हैं।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, सीखने के प्रतिफलों को एक निरन्तरता में देखा जाना चाहिए। नीचे दी गई तालिका में उन्हें रीडिंग ग्रिड में रखा गया है - खड़ी सूची में 1, 2, 3,... और आड़ी सूची में A, B, C,... केवल सन्दर्भ की आसानी के लिए रखा गया है। जैसे पाठक इस उदाहरण सूची के भीतर एक विशिष्ट सीखने के प्रतिफल को इंगित करने के लिए दक्षता C-2.1 के आगे सीखने का प्रतिफल D.1 का उल्लेख कर सकते हैं।

1.1.1 शारीरिक विकास (Physical Development)

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग़ रहता है। इसी स्तर पर बच्चे चपल गतिविधियों में शामिल होने के लिए अपनी सभी इन्द्रियों और पूरे शरीर का इस्तेमाल सीखते हैं। इसलिए यहाँ स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन करने, स्वच्छता सम्बन्धी आदतें विकसित करने, सुरक्षा के प्रति जागरूक होने, संवेदी ध्यान को बेहतर बनाने, कसरत करने और विभिन्न मांसपेशी समूहों को समन्वित करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

CG-1: बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं

बच्चे, स्वस्थ भोजन की आदत और पोषण की समझ, दोनों विकसित करते हैं। खाने की विविधता का स्वाद विकसित करने के लिए शुरू में ही विभिन्न तरह के भोजन-समूहों से परिचय कराया जाना ज़रूरी है। स्वच्छता की कमी के कारण अक्सर स्वास्थ्य ख़राब होता है और बच्चे पोषक खाने से हासिल किया गया स्वास्थ्य लाभ खो देते हैं। इसलिए स्कूल के शुरुआती वर्षों में बेहतर स्वच्छता व्यवहार विकसित करना महत्त्वपूर्ण है। इस लिहाज़ से शुरुआती बचपन बहुत महत्त्वपूर्ण है, जब बच्चे की प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो रही होती है। चूँकि बच्चे, झुण्ड में स्कूल आते हैं, इसलिए स्कूल के लिहाज़ से कुछ बुनियादी स्वच्छता व्यवहार ज़रूरी हो जाते हैं।

चूँकि स्कूल सार्वजनिक स्थान हैं, इसलिए उनको तैयार करने में सुरक्षा और संरक्षण पर विशेष ध्यान अनिवार्य रूप से ज़रूरी है। सुरक्षा और संरक्षण के ख़ास व्यवहार हासिल करने के बाद बच्चे स्कूल में सीखने के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो पाते हैं। स्कूल, जो कि उनके घर से भौगोलिक और सांस्कृतिक, दोनों रूप से दूर है।

दक्षताएँ हासिल करने में समय लगता है, इसलिए सीखने की उपलब्धियों का अंतरिम चिह्नक (interim markers) ज़रूरी है। ये अंतरिम चिह्नक, सीखने के प्रतिफल हैं। नीचे दिए गए उदाहरण दक्षता के लिए सीखने के प्रतिफलों को दर्शाते हैं। तालिका में हर कॉलम (A-E) milestone है। Milestones का यह क्रम किसी दक्षता को हासिल करने के लिए सीखने की trajectory को दर्शाता है।

C-1.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 1

C-1.1: पौष्टिक भोजन में रुचि व इसकी समझ दिखाती है तथा भोजन बर्बाद नहीं करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• उन चीज़ों को पहचानती है जिन्हें खाया जा सकता है और जिन्हें नहीं खाया जा सकता • खाने की शुरुआत करती है और वयस्कों के कहने पर तरह-तरह के खाद्य पदार्थों का नाम लेती है	• वयस्कों के सहयोग से अलग-अलग खाद्य समूहों से तरह-तरह का खाना खाती है - अनाज, सब्जियाँ, फल, और प्रोटीन (मसलन दाल, बीन्स, मेवे और दूध से बने खाद्य)	• अलग-अलग खाद्य समूहों से स्वतंत्र रूप से खाती है	• अलग-अलग खाद्य समूहों से खाने की विविधता का आनन्द लेती है	• पोषण की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए विविधता खोजती है
2	• कुछ स्वास्थ्यकर और कुछ अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों के नाम बताती है	• किसी दुकान पर स्वास्थ्यकर और अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों को पहचानती है • तर्क देती है कि कुछ खाने की चीजें स्वास्थ्य के लिए क्यों अच्छी हैं	• अलग-अलग खाद्य समूहों से खाने की चीज़ें पहचानती और उनके लाभ/हानि बताती है • अच्छे पोषक खाद्य पदार्थों के कुछ गुण बताती है (मसलन अण्डे और दाल से ताक़त मिलती है, पालक से 'ख़ून साफ़ होता है' दूध से दाँत मज़बूत होते हैं)	• मदद के साथ परिचित खाने की मुख्य सामग्री को पहचानती है (मसलन सांभर में दाल या चटनी में मूंगफली) • सामग्री और पोषण के बीच के सम्बन्ध को बताती है (मसलन चिक्की में गुड़ और मूँगफली स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं)	• पके भोजन की सामग्रियों का अनुमान लगाती है और बताती है कि वे स्वास्थ्य के लिए अच्छी हैं या बुरी • डिब्बाबन्द खाने की सामग्रियों को पहचानती है (मसलन बिस्कुट, नूडल) और बताती है कि वे स्वास्थ्य के लिए अच्छी हैं या बुरी।
3		• सरल नाश्ता बनाने के लिए चित्रों द्वारा खाना बनाने की विधि का अनुसरण करती है	• वयस्कों की मदद से पोषक नाश्ता बनाने में भागीदारी करती है (मसलन उबले चने, अंकुरित सलाद, भेलपूरी मिलाना)	• खाना बनाने की विधि का इस्तेमाल करते हुए स्वतंत्र रूप से पोषक नाश्ता बनाती है	
4		• बिना बिखराए खाती है	• उचित मात्राओं में परोसे गए भोजन को बिना बर्बाद किए खाती है	• खाने की उचित मात्रा मांगती है	• बिना बिखराए अपने लिए खाने की उचित मात्रा लेती है

C-1.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 2

C-1.2: अपनी देखभाल और स्वच्छता का बुनियादी व्यवहार करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• खाने या शौच के पहले और बाद हाथ धोने और सुखाने के लिए मदद लेती है	• खाने या शौच के पहले और बाद हाथ धोना और सुखाना शुरू करती है	• खाने या शौच के पहले और बाद हमेशा हाथ धोती और सुखाती है	• शौचालय का समुचित इस्तेमाल प्रदर्शित करती है	• अपनी देखभाल और स्वच्छता के बुनियादी व्यवहार में आत्मनिर्भर हो जाती है
2	• कपड़े पहन सकती है (बटन बन्द किए बग़ैर) और वयस्कों की मदद से चप्पल-जूता पहन सकती है	• स्वतंत्र रूप से कपड़े और जूते-चप्पल पहन सकती है	• किसी के निरीक्षण में छोटी-मोटी सिलाई के लिए सुई-धागे का इस्तेमाल शुरू करती है	• किसी की मदद के साथ सुई-धागे से बटन लगा लेती है, थोड़ा फटा हुआ कपड़ा सिल लेती है	• स्वतंत्र रूप से सुई-धागे से बटन लगा लेती है, थोड़ा फटा हुआ कपड़ा सिल लेती है
3		• स्वयं व्यक्तिगत देखभाल की चीज़ों (कंघी, टूथब्रश) का इस्तेमाल शुरू कर देती है		• व्यक्तिगत देखभाल की चीज़ों का समुचित इस्तेमाल करने लगती है	

C-1.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 3

C-1.3: स्कूल/कक्षा-कक्ष को स्वच्छ और व्यवस्थित रखती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• अपने सामानों जैसे झोला, बोतल, जूते और रूमाल आदि के बारे में जागरूक रहती है	• अपने निजी सामान को सही जगह पर रखती है और वहीं से लेती है	• निजी सामानों को अच्छी हालात में रखती है	• पढ़ने की सामग्री को ध्यान से इस्तेमाल करती है	• स्कूल की सम्पत्तियों, किताबों, सामग्रियों और फ़र्नीचर का ध्यान रखती है
2	• गन्दी प्लेटों और बर्तनों को वयस्कों की मदद से निर्धारित स्थान पर रखती है	• स्वतंत्र रूप से साफ़ गिलासों और प्लेटों की पहचान और उनका उपयोग करती है तथा गन्दी प्लेटों और बर्तनों को निर्धारित स्थान पर करीने से रखती है	• अपनी थाली और बर्तन धोती है	• कक्षाओं, खेल के मैदानों आदि में स्वच्छता बनाए रखना शुरू करती है	• कक्षाओं और खेल के मैदानों की सफ़ाई में भाग लेती है
3	• किसी की सहायता के साथ कूड़ेदान का उपयोग करती है	• कचरे के निपटान के लिए कूड़ेदान का उपयोग करना शुरू करती है	• कचरे के निपटान के लिए हमेशा कूड़ेदान का उपयोग करती है	• कचरे (गीला कचरा और सूखा कचरा) को अलग करना शुरू करती है	• कचरे को उचित तरीके से अलग करती है

C-1.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 4

	A	B	C	D	E
	C-1.4: सामग्रियों और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का व्यवहार करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• आग, गर्म स्टोव, चाकू, बिजली के प्लग जैसी हानिकारक वस्तुओं को न छूकर ख़तरे से बचती है	• कैंची, चाकू, माचिस की तीली जैसी हानिकारक या ख़तरनाक वस्तुओं को सावधानी से सम्भालती है	• किसी की देखरेख में चाकू, कैंची का इस्तेमाल करती है	• नाखून काटने वाली मशीन और छोटे चाकू का इस्तेमाल किसी की देखरेख में ध्यान से करती है	• नाखून काटने की मशीन, कैंची और छोटे चाकू का इस्तेमाल स्वतंत्र रूप से करती है

C-1.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 5

	A	B	C	D	E
	C-1.5: गतियों (चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना) में सुरक्षा संबंधी सावधानी प्रदर्शित करती है और समुचित तरीके से ये कार्य करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• सड़क सुरक्षा के महत्त्व को पहचानते हैं , वयस्कों का हाथ पकड़कर सड़क पर चलती है	• सड़क पार करने से पहले दोनों तरफ़ देखती है, साथियों या वयस्कों का हाथ पकड़ती है और सुरक्षित रूप से चलती है	• स्वतंत्र रूप से सड़क सुरक्षा नियमों (किनारे पर चलना, सड़क पार करना आदि) का पालन करती है • यातायात चिह्नों (सिग्नल लाइट, चिह्न- जेब्रा क्रॉसिंग, यू-टर्न, ब्रिज/रेलवे ब्रिज आदि) को पहचानती है	• सार्वजनिक परिवहन के बुनियादी सुरक्षा नियमों का सड़क पर, साइकिल चलाते समय आदि में पालन करती है	• साइकिल चलाते समय, सड़क पर चलते हुए यातायात नियमों का पालन करती है • ज़्यादातर सुरक्षा चिह्नों (बिजली, आग, मरम्मत, खुदाई आदि) को पहचानते हैं और ख़तरे से बचती है

C-1.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 6

C-1.6: असुरक्षित स्थितियों को समझती है और मदद मांगती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• परिचित और अजनबी वयस्कों के बीच अन्तर करती है	• पूछे जाने पर विश्वसनीय वयस्कों को असुविधा के बारे में बताती है • अजनबियों से खिलौने, चॉकलेट, पैसे या अन्य चीज़ें स्वीकार नहीं करती	• सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श के बीच अन्तर को समझती है • अजनबियों से दूरी बनाए रखती है • भरोसेमन्द वयस्कों के साथ ख़ुद ही असुविधा के बारे में बात करती है	• वयस्क और साथियों की मदद लेने के लिए थोड़ी-बहुत भाषा का इस्तेमाल करती है	• किसी भी ख़राब स्पर्श/व्यवहार की सूचना देते हैं, उचित दूरी बनाए रखती है
2			• चोट (मसलन, घुटने में खरोंच, जलना, बिजली का झटका) लगने पर वयस्कों से मदद मांगती है • आपात स्थिति में मदद करने वाले समुदाय के लोगों - डॉक्टर, अग्निशामक आदि की पहचान करती है	• बुनियादी सुरक्षा प्रोटोकॉल को समझते हैं और उनका उपयोग करती है (मसलन जलने के बाद ठण्डे पानी से धोना)	

CG-2: बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं

हर तरह के सीखने के लिए संवेदी विकास बुनियादी है। हमारे संवेदी रिसेप्टरों, विकसित होती अनुभूतियों, विचारों और यहाँ तक कि हमारी चेतना के बीच गहरे तंत्रिका सम्बन्ध धीरे-धीरे सामने आ रहे हैं। संवेदी विकास के लिए समुचित अनुभवों को सिर्फ़ संज्ञानात्मक विकास के पूर्ववर्ती के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। इसे बच्चे के समग्र विकास के लिए एक स्वतंत्र क्षमता के रूप में भी देखा जाना चाहिए। संवेदी विकास पर ध्यान देने से उन कठिनाइयों का जल्दी पता लगाने का मौक़ा भी मिल जाता है, जो सीखने को प्रभावित कर सकती हैं।

C-2.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 7

	A	B	C	D	E
	C-2.1: आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अन्तर करती है (उम्र 3 से 8)				
1	• अपने परिवेश में प्राथमिक रंगों (लाल, नीला, पीला) और अन्य सामान्य रंगों (काले, सफ़ेद, भूरे) में अन्तर करती है और उनके नाम बताती है	• प्राथमिक रंगों और द्वितीयक रंगों के प्रकारों (यानी, हल्का नीला, गहरा नीला, हल्का हरा, गहरा हरा) के बीच अन्तर करती है	• दो रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाने का प्रयास करती है (मसलन नीला और पीला मिलाने पर हरा बनता है, या लाल और सफ़ेद मिलाने पर गुलाबी बनता है)	• दो रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इसका अनुमान लगाती है	• कला रूपों, रेखांकनों, सजावट और प्रदर्शन में प्रयोग करती है और रंगों का इस्तेमाल करती है
2	• रंग के आधार पर चीज़ों के समूह बनाती है (मसलन सभी लाल चीज़ें एक साथ)	• आयाम- लम्बाई, चौड़ाई व ऊँचाई के आधार पर चीज़ों के समूह बनाती है (मसलन सभी लम्बी चीज़ें एक साथ)	• रंगों और आकृतियों की दृश्य विशेषताओं के संयोजन के आधार पर चीज़ों के समूह बनाती है (सारे लाल त्रिभुज एक साथ, सभी बड़ी हरी पत्तियाँ एक साथ)	• पैटर्न बनाती है, पहेलियाँ सुलझाती है, विभिन्न आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स की पहचान करते हुए और उनका समूह बनाते हुए खेल खेलती है	

C-2.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 8

	A	B	C	D	E
	C-2.2: प्रतीकों और निरूपणों के लिए दृश्य स्मृति विकसित करती है (उम्र 3 से 8)				
1	• एक जैसे पैटर्न, ओरिएंटेशन व आकार वाली दो दृश्य प्रतीकों का मिलान करती है (मसलन को से मिलाना, ∞ को ∞ से मिलाना)	• एक जैसे पैटर्न पर अलग ओरिएंटेशन व आकार वाली दो दृश्य प्रतीकों का मिलान करती है (मसलन को से मिलाना, ∞ से को मिलाना	• स्मृति से दृश्य प्रतीकों को याद करती है और उनका मिलान करती है (मसलन कार्ड्स का इस्तेमाल करके स्मृति खेल)		

C-2.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 9

	A	B	C	D	E
	C-2.3: ध्वनियों में उसके पिच, वॉल्यूम से और ध्वनि पैटर्न्स में पिच, वॉल्यूम और टेम्पो से अंतर करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• परिवेश की ध्वनियों को मनुष्यों, जानवरों, वाहनों, ताली की आवाज़, नल, चीज़ों की आवाज़ आदि के रूप में अलग करती है	• पक्षियों व जानवरों की आवाज़, वाद्ययंत्र और मनुष्य की आवाज़ में ऊँचे स्वर और नीचे स्वर के बीच भेद कर पाती है	• मध्यम स्वर पहचान पाती है	• यदि कोई दो ध्वनि/सुर, पिच या वॉल्यूम के लिहाज़ से मेल खाते हैं तो उन्हें पहचानती है	• दिए गए स्केल में संगीत के स्वरों की रेखीय और ग़ैर-रेखीय प्रगति के बीच अन्तर कर पाती है
2	• तेज़ और मृदु ध्वनि में अन्तर करती है	• ताल में धीमी और तीव्र गति का अन्तर कर पाती है	• वॉल्यूम और टेम्पो में मध्यम स्तर को पहचानती है	• संगीत के दिए गए किसी अंश में गति (tempo) का बदलाव पहचान लेती है	

C-2.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 10

	A	B	C	D	E
	C-2.4: विभिन्न गन्धों और स्वादों के बीच अन्तर करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• सुगन्ध और दुर्गन्ध (इत्र, फूल, कचरा आदि) की पहचान करती है	• फूल, इत्र और खाद्य पदार्थों आदि की सुगन्ध में भेद करती है	• उन गन्धों को पहचानते हैं जो ख़तरे का संकेत देती है (मसलन धुआँ, सड़े हुए अण्डे)		
2	• मीठे, नमकीन, कड़वे, खट्टे और गर्म (मसालेदार) स्वाद की पहचान करती है	• विभिन्न प्रकार के भोजनों से तरह-तरह के व्यंजन और स्वादों की खोज करती है			

C-2.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 11

	A	B	C	D	E
	C-2.5: स्पर्श की अनुभूतियों में विभेद की क्षमता विकसित करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• कठोर और मुलायम, गर्म और ठण्डी, खुरदरी और चिकनी सतहों में अन्तर करती है।	• कठोर और मुलायम, गर्म और ठण्डी, खुरदुरी और चिकनी के आधारों पर दो वस्तुओं की तुलना करती है	• सही शब्दावली के साथ कठोर और मुलायम, गर्म और ठण्डी, खुरदुरी और चिकनी के आधार पर 3-5 वस्तुओं को क्रमबद्ध करती है (सबसे चिकना, चिकना, कठोर, उससे ज़्यादा कठोर, सबसे ज़्यादा कठोर)	• सूक्ष्म विविधताओं के आधार पर बनावटों की तुलना को विस्तृत करती है, जैसे गुदगुदा, फर वाला, बुना हुआ, चुभने वाला, गड्ढेदार आदि	

C-2.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 12

	A	B	C	D	E
	C-2.6: अनुभवों की समग्र जागरूकता प्राप्त करने के लिए संवेदी अनुभूतियों को एकीकृत करना शुरू करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• ताक़त लगाकर साँस फेंकती है।	• हल्की चीज़ें (मसलन काग़ज़) फेंकती है।	• लय में साँस लेती-छोड़ती है	• साँस लेने की तुलना में लम्बे समय तक धीरे-धीरे साँस छोड़ना	• अनुलोम-विलोम श्वसन करती है
2		• थोड़ी देर के लिए स्थिर बैठती या लेटती है	• स्थिर बैठती है और अपनी साँस पर थोड़ी देर के लिए ध्यान देती है	• स्थिर बैठती है और थोड़ी देर के लिए अन्य संवेदी अनुभूतियों पर ध्यान देती है	• स्थिर बैठती है और अपने विचारों का प्रवाह देख पाती है

CG-3: बच्चे एक फिट और लचीले शरीर का विकास करते हैं

विभिन्न मांसपेशी समूहों की कसरत और ख़ास उद्देश्यों को हासिल करने के लिए उनमें समन्वय बनाने के अवसर इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए एक महत्त्वपूर्ण विकासात्मक ज़रूरत है। स्थूल मोटर विकास (Gross motor development) में बड़ी मांसपेशियों का समन्वय शामिल होता है, जो मूवमेंट को प्रभावित करने वाले सन्तुलन को प्रभावित करता है। सूक्ष्म मोटर विकास (Fine motor development) में आँखों और हाथों से जुड़ी छोटी मांसपेशियाँ शामिल होती हैं। मांसपेशी समूहों में समन्वय भी महत्त्वपूर्ण है।

C-3.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 13

C-3.1: विभिन्न गतिविधियों में संवेदी अनुभूतियों और शरीर संचालन के बीच समन्वय प्रदर्शित करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• बहुत ही बुनियादी नियंत्रण के साथ गेंदों को लपकना, फेंकना और गेंद को पैर से मारना शुरू करती है	• बड़ी गेंद लपक लेती है, फेंक लेती है और ताक़त के साथ गेंद को पैर से मारती है • कम दूरी के भीतर निशाना लगाकर फेंकने में थोड़ी सटीकता दिखाती है	• विभिन्न आकार की गेंदों को लपकने, फेंकने और पैर से मारने में बेहतरी प्रदर्शित करती है	• खेल/खेल की स्थितियों में गेंदों को लपक लेती है, फेंक लेती है और पैर से मार लेती है	

C-3.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 14

C-3.2: विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में सन्तुलन, समन्वय और लचीलापन दिखाती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• सहारे/मदद के साथ एक पैर पर खड़ा होती है।	• बिना सहारे के एक पैर पर अपेक्षाकृत देर तक खड़ा रहती है • 4-5 क़दम कूदती है	• आराम से 10-15 क़दम कूदती है	• कूदती है और पूरा खेल खेलती है	• आराम से रस्सी कूदती है
2	• एक पैर पर थोड़ी देर के लिए सन्तुलन बनाती है	• अलग-अलग सतहों (मसलन ईंट, सीढ़ी) पर सन्तुलन बनाती है	• सिर/हाथ पर चीज़ों को संतुलित करती है (मसलन सिर पर किताब रखकर चलना) • बेहतर शारीरिक सन्तुलन प्रदर्शित करती है (मसलन बिना सहारे के साथ साइकिल चलाना)	• अच्छे सन्तुलन और तकनीक के साथ भारी चीज़ें, कुर्सियाँ/ मेज़/झोला उठा लेती है • रफ़्तार के साथ अच्छा शारीरिक सन्तुलन प्रदर्शित करती है (मसलन रफ़्तार के साथ साइकिल चलाना)	• फुर्ती और सन्तुलन प्रदर्शित करती है (मसलन पेड़ों पर चढ़ना, पार्क के ढाँचों पर उतरना-चढ़ना) • दूसरे पैर को मोड़कर एक पैर के सहारे एक मिनट तक खड़ा रह सकती है (मसलन ध्रुवासन)

C-3.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 15

	A	B	C	D	E
	C-3.3 : हाथों और उंगलियों से काम करने में सटीकता और नियंत्रण दिखाती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• सरल गतिविधियों (मसलन गोंजा-गांजी, काग़ज़ फाड़ने, चिपकाने, मुक्त तरीके से रंगने और मिट्टी के काम) में बेहतर मोटर कौशल (motor skill), आँख व हाथ के समन्वय और मांसपेशियों की ताक़त को प्रदर्शित करती है	• उन कामों के लिए मोटर नियंत्रण (motor control) प्रदर्शित करती है जिनमें मध्यम सटीकता के साथ सही मोटर (motor) और आँख-हाथ समन्वय की ज़रूरत होती है (मसलन बड़े आकार काटना, बड़े मोतियों को पिरोना, बटन लगाना, बोतलों का ढक्कन खोलना-बन्द करना, क्रेयॉन से चित्र बनाना)	• उन गतिविधियों पर काम करने के लिए सही मोटर मांसपेशियों के समन्वित संचालन का इस्तेमाल करती है जिनमें कुछ सहायता के साथ ज़्यादा सटीकता की ज़रूरत होती है (मसलन पेंसिल से चित्र बनाना, सीधी या घुमावदार रेखा के आधार पर काटना, छोटे मोती पिरोना, अक्षरों का सुपाठ्य लेखन, फूलों की माला बनाना, बन्द आकृति के भीतर रंग भरना)	• शिल्प और कलाकृति का निर्माण करती है जिसमें बिना किसी मदद के छोटी मांसपेशियों के आँख और हाथ की गति में समन्वय की सटीकता की ज़रूरत होती है (जैसे, tracing, स्पष्ट लेखन और चित्र बनाना, छोटी गेंद को पकड़ना, ज्यामितीय आकृतियों की नक़ल करना, पैटर्न बनाना)	• उन गतिविधियों में सटीकता और ब्योरों के साथ काम करती है जिनमें लम्बी अवधि के लिए सही मोटर नियंत्रण (motor control) की ज़रूरत होती है (मसलन सुई में धागा डालना, सुई से काम करना, चित्रकारी, रेखांकन)

और उदाहरण

उम्र 3-4	उम्र 4-6	उम्र 6-8
• एक हाथ से गिलास पकड़ती है • अंगूठे और उंगलियों से क्रेयॉन पकड़ती है • अपने से चित्रकारी करती है: गोंजा-गांजी, कलाइयों का इस्तेमाल करते हुए रंगना • मिट्टी का गोला बनाती है या उसे टेढ़े-मेढ़े कीड़े जैसा बनाती है • चम्मच पकड़ते हुए उसमें से कम द्रव छलकाती है • काग़ज़ का एक स्तरीय सरल मोड़ मोड़ लेती है • मोती पिरोने, छेदों में छोटी चीज़ें घुसाने, बड़े बटन कसने, भोथरी कैंची से काग़ज़ काटने, बड़े काग़ज़ पर छोटे काग़ज़ के टुकड़े चिपकाने आदि में समन्वित संचालन प्रदर्शित करती है • छोटे ब्लॉकों से सरल संरचना बनाती है	• बिना मदद के ख़ुद को भोजन परोसती है • खाना खाते समय चम्मच का सही तरीके से इस्तेमाल करती है • विभिन्न ड्रॉइंग और कला सामग्रियों (क्रेयॉन, ब्रश, फिंगर पेंट, आदि) का इस्तेमाल करती है • ब्लॉकों वाली किताब में दिखाई गई आकृतियों की नक़ल करती है • सीधी या घुमावदार रेखा में काट लेती है • जटिल कामों को पूरा करने के लिए समन्वित संचालन का इस्तेमाल करती है जैसे कि एक रेखा के साथ काटना, उड़ेलना, बटन लगाना, बड़े ज़िपर का उपयोग करना आदि • छोटे ब्लॉकों से टावर बनाती है (8-10 ब्लॉक) • स्ट्रिंगिंग बोर्ड पर माला बनाती है, पूरे फूलों की माला बनाती है (सम्भव है कि किसी एक पैटर्न का अनुसरण न करें) • चीज़ों को बनाने के लिए स्वतंत्र रूप से दोनों हाथों का इस्तेमाल करती है • कुछ अक्षर या अंक लिखती है जिसे पहचाना जा सकता है • चित्र बनाने या लिखने के लिए लगातार एक हाथ का इस्तेमाल करती है	• फ़र्श से उछलती गेंद पकड़ लेती है • मनचाहे पैटर्न पर फूल और मोती गूँथ लेती है • पेंसिल को सही ढंग से पकड़ती है, काटने, पकड़ने, सिलाई, बटन लगाने आदि के दौरान उंगलियों और हाथ की गतिविधियों का सहज व नियंत्रित उपयोग करती है • लिखने/रंगने के उपकरणों का इस्तेमाल करते समय समन्वित संचालन का उपयोग करती है • लेखन और चित्रकला के उपकरणों का इस्तेमाल करते समय नियंत्रण और उचित दबाव प्रदर्शित करती है • ब्लॉकों (2"x 2" ब्लॉक) की outlines को trace कर लेती है • सरल ज्यामितीय आकृतियों और डिज़ाइनों की नक़ल करती है

C-3.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 16

	A	B	C	D	E
	C-3.4 : ढोने, चलने और दौड़ने में ताकत तथा सहनशक्ति प्रदर्शित करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• सीधी रेखा में चलती है • पीछे की ओर चलने में सक्षम होती है • पंजों पर चल सकती है (6+ कदम) • दिशा और गति को आराम से बदलते हुए चलती है और आसानी से दौड़ती है	• सीधी और घुमावदार/टेढ़ी-मेढ़ी रेखा में आराम से चलती है • सन्तुलन के साथ 6 इंच चौड़े रास्ते पर चलती है • पैर बदलते हुए ऊपर-नीचे आराम से चलती है • सुरंगों में रेंग सकती है आदि	• शरीर की गतिविधियों में सामंजस्य बिठाते हुए आसानी से चलती और दौड़ती है • सिर के ऊपर हाथ उठाकर पंजों के बल 10 मीटर तक चलती है (मसलन ताड़ासन)	• अलग-अलग रास्तों पर आसानी से एक किमी या उससे अधिक पैदल चलती है • सर के ऊपर हाथ स्थिर करके एक मिनट तक रहती है (मसलन ताड़ासन)	• अलग-अलग रास्तों पर लम्बी दूरी (2-3 किमी) चलने में ताकत और सहनशक्ति प्रदर्शित करती है
2	• एक जगह पर कूदती है, एक छोटी बाधा पार कर लेती है • कूदकर अपने पैरों पर उतर पाती है (ऊँचाई 2½-3 फीट)	• दोनों पैरों को उठाते हुए बिना सहारे/या थोड़े सहारे के कूदती है और छोटी चीज़ों के ऊपर से कूद पाती है	• ठीक-ठाक ऊँचाई से आसानी से कूद पाती है (मसलन 2 या 3 कदम, 3 फीट ऊँची बेंच)	• आसानी से चढ़ती और कूदती है (मसलन छोटे पेड़)	• चारों ओर दौड़ती है और चीज़ों के ऊपर से आसानी से कूद पाती है
3	• छोटे भार उठाकर चल पाती है (मसलन मग या बालू उठा कर एक जगह से दूसरी जगह ले जा पाती है)	• बड़े मांसपेशी समूहों के इस्तेमाल की ज़रूरत वाले कामों के लिए ताकत लगाने की इच्छा दिखाती है (मसलन कक्षा में छोटे फर्नीचर को इधर-उधर करने में मदद करती है)	• खेलने में ताकत की ज़रूरत वाले काम आसानी से करती है (मसलन रस्साकशी खेलना)	• काम और खेलने की स्थितियों में ताकत और सहनशक्ति प्रदर्शित करती है (मसलन बगीचे में छोटे बर्तन उठाना, पानी की बाल्टी रखना, 15 मिनट तक दौड़ना)	

1.1.2 सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास

शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ बच्चे के भावनात्मक विकास पर भी ध्यान देना ज़रूरी है। यह स्थापित तथ्य है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता, भावनाओं को समझने और उनका प्रबन्धन करने की क्षमता का, संज्ञानात्मक बुद्धिमत्ता से अगर ज़्यादा नहीं तो बराबर का महत्त्व है। अपनी भावनाओं को समझने और उनका प्रबन्धन करने के साथ-साथ दूसरों की भावनात्मक स्थिति को समझना हमें समानुभूति और करुणा निर्मित करने में मदद करता है। सीखने के प्रतिफलों के ज़रिए इस चरण में भावनात्मक और सामाजिक बुद्धिमत्ता के लिए एक मज़बूत बुनियाद की बात साफ़-साफ़ कही गई है।

CG-4: बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अर्थात अपनी भावनाओं को समझने व प्रबंधन करने, और सामाजिक मानदण्डों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।

इसमें शामिल हैं :

- सकारात्मक 'स्व-अवधारणा' : 'स्व' के विचार में परिवर्तन और निरन्तरता को पहचानने और जागरूक होने की क्षमता पर निर्देशित ढंग से ध्यान देने की ज़रूरत है।
- भावनात्मक जागरूकता और नियमन : अपनी भावनाओं के बारे में जागरूक होना और उनका उचित तरीक़े से नियमन करने की क्षमता विकसित करना महत्त्वपूर्ण है। इसे पहले से ही विकसित किया जाना चाहिए। यह समझना चाहिए कि इस तरह का नियमन स्वैच्छिक अभ्यास के माध्यम से विकसित कौशल है। इसे किसी ख़तरे की डर भरी प्रतिक्रिया की तरह नहीं होना चाहिए। भावनात्मक विकास वास्तव में करुणामय माहौल में ही हो सकता है।
- सामाजिक विकास : सामाजिक बुद्धिमत्ता, नैतिक, मानवतावादी और संवैधानिक मूल्यों के विकास की बुनियाद है। इसका विकास दूसरों से अन्तःक्रियाओं से शुरू होता है और इन अन्तःक्रियाओं के माध्यम से दूसरों की ज़रूरतों और भावनात्मक अवस्थाओं को पहचानने से होता है। पृष्ठभूमि की विविधता और दूसरों की ज़रूरतों की पहचान के साथ यह "अन्य/दूसरों के बारे में" छोटे बच्चों में मूल्यवान क्षमताएँ विकसित करता है।

C-4.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 17

	A	B	C	D	E
	C-4.1: परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• एक व्यक्ति के रूप में स्व के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करती है (मसलन पसन्दीदा शर्ट या बैग या चीज़ें बताती है)	• स्व को परिवार, पड़ोस, स्कूल, शहर के सदस्य के रूप में पहचानती है, जहाँ अलग-अलग लोग अलग-अलग भूमिकाएँ निभाती है		• समाज में योगदान करने के लिए अपनी क्षमताओं और रुचियों को व्यक्त करना शुरू करती है - बड़ा होकर मैं किसान, डॉक्टर, पायलट, सैनिक आदि बनना चाहती हूँ	
2	• अपना पहला और आखिरी नाम बताती है	• दूसरों की पहचान वाली सूचनाएँ साझा करती है (मसलन अभिभावकों का नाम)	• व्यक्तिगत पहचान सम्बन्धी जानकारियाँ साझा करती है, मसलन घर का पता, परिवार के सदस्यों का विवरण, स्कूल आदि	• परिवार के सदस्यों के व्यवसाय और उनके काम की जगह के निजी विवरण साझा करती है • परिवार के वयस्क सदस्यों के काम को महत्व देती है (मसलन मेरी माँ किसान हैं और उनके काम से हम सभी को अच्छा खाने में मदद मिलती है)	

C-4.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 18

	A	B	C	D	E
	C-4.2 : अलग-अलग भावनाओं को पहचानती है और उनका उपयुक्त तरीक़े से नियमन करने के लिए सुविचारित प्रयास करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• अपनी चाहतों और भावनाओं की पहचान करती है (मसलन मैं आज रंग भरना नहीं चाहती, मैं बाहर जाना चाहती हूँ) • सरल भावनाओं (भय, ख़ुशी, उदासी) को पहचानती है	• भावनाओं को शब्दों और चेहरे के भावों से जोड़ती हैं • मौखिक और ग़ैर-मौखिक के माध्यम से भावनाएँ व्यक्त करती है • तरीके (मसलन इशारे, चित्रकारी)	• अपनी भावनाओं और उनके कारणों का वर्णन करती है (मसलन मैं गुस्सा हूँ क्योंकि उसने मेरा ब्लॉक टॉवर तोड़ दिया) • दूसरे लोगों (दोस्तों व परिचित वयस्कों) के साथ भावनाएँ साझा करती है	• सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीक़ों से अपनी भावनाओं का वर्णन करती है (मसलन रोना बन्द करके बताती है कि क्यों रो रही थी)	
2			• परेशान/गुस्सा होने पर ख़ुद को शान्त करने में मदद के लिए गतिविधियों में बदलाव के लिए सहमत होती है	• समुचित भावनाओं के साथ प्रतिक्रिया देती है (मसलन सर्कल टाइम के समय सुनाए गए चुटकुलों पर हँसती है, परेशान होने पर चुपचाप बैठ जाती है) • ख़ुद को शान्त करने के लिए सचेत रूप से रणनीतियों का उपयोग करती है (मसलन साँस लेना, गतिविधि बदलना)	

C-4.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 19

	A	B	C	D	E
	C-4.3 : अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• परिवार के करीबी सदस्यों/ख़ास वयस्कों को पहचान लेती है /उनका नाम लेती है • परिचित वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करती है		• कम परिचित वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करना शुरू करती है	• परिचित और कम परिचित वयस्कों के साथ ससम्मान बातचीत करती है (मसलन नमस्ते, कृपया, धन्यवाद, क्षमा करें)	

2	• माता-पिता या परिचित वयस्कों के बिना कक्षा में आराम से रह पाती है	• परिचित बच्चों के साथ खेलने में स्वत:स्फूर्तता और वरीयता प्रदर्शित करती है, यदि ज़रूरत हुई तो वयस्कों की मदद से खेलने वाले बच्चों के समूह में शामिल हो जाती है	• दूसरे बच्चों के साथ खेलने और काम करने में रणनीतियों का प्रदर्शन करती है (मसलन उन्हें खेलने के लिए आमंत्रित करती है, आपसी नियमों, बातचीत और खेलने में भूमिकाओं को समायोजित करती है	• दूसरे बच्चों के साथ समन्वित तरीके से खेलती है, मित्रों के साथ परस्पर रुचियों को पहचानती है	• दूसरे बच्चों के साथ खेलने में विशिष्ट (प्रक्रियात्मक) नियमों को समझती है और अपनी प्रतिक्रिया देती है
3			• ज़्यादातर समय साथियों के साथ खेलने के लिए वयस्कों से स्वेच्छा से अलग हो जाती है	• साथियों की संगति में रहना अच्छा महसूस करती है	• साथियों के साथ लम्बा समय बिताती है और किसी अजनबी माहौल में वयस्क की मदद से साथ रह पाती है (लम्बी क्षेत्र-यात्राएँ)
4			• कम-से-कम किसी एक बच्चे के साथ घनिष्ठ मित्रता बनाती और कायम रखती है • परिचित वयस्कों से मदद मांगती है		• स्कूल में दोस्तों का एक समूह बनाती है • ज़रूरत पड़ने पर कम परिचित वयस्कों से मदद मांगती है • ज़रूरत पड़ने पर वयस्कों या अन्य बच्चों की मदद करती है

C-4.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 20

	A	B	C	D	E
	C-4.4 : दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• दूसरे बच्चों के साथ खेलना शुरू करती है	• दूसरे बच्चों के साथ खेलना पसन्द करती है	• अन्य बच्चों के साथ खेलना शुरू करती है और योजना बनाती है (मसलन क्या, कैसे और कब खेलना है)	• खेल के दौरान दूसरों के विचारों को शामिल करने की इच्छा प्रदर्शित करती है • दूसरों के साथ खेलते समय खेल के नियमों का पालन करती है	• दूसरों के साथ खेलने के लिए नियम बनाती है और उन नियमों का पालन करती है

C-4.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 21

C-4.5 : कक्षा और विद्यालय में सामाजिक नियमों को समझती है और उन पर सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• रोज़मर्रा की गतिविधियों में भाग लेती है	• दूसरे बच्चों के साथ रोज़मर्रा की गतिविधियों का आनन्द लेती है	• रोज़मर्रा की गतिविधियों में स्वावलम्बन प्रदर्शित करती है • ख़ुद का काम पूरा करने की ज़िम्मेदारी लेती है • असुविधाएँ साझा करती है और ज़रूरत पड़ने पर मदद मांगती है	• गतिविधि आयोजित करने के लिए पहल करती है • अलग-अलग बच्चों के साथ अलग-अलग काम करने का कौशल प्रदर्शित करती है, अन्य बच्चों के साथ ज़िम्मेदारी और काम पर बातचीत करती है	• साथ में खेलते या काम करते समय अपनी बात अभिव्यक्त करती है • एक काम लेती है और उसे पूरा करती है
2	• शिक्षक की मदद से सरल निर्देशों का पालन करती है	• अपनी बारी की प्रतीक्षा करती है	• शिक्षक की मदद से सरल निर्देशों का पालन करती है	• निर्देशों/नियमों का पालन करती है • नियमों के उल्लंघन के परिणामों को समझती है	

C-4.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 22

C-4.6 : दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति ज़रूरत के वक़्त दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1		• दूसरे बच्चों और वयस्कों के प्रति स्नेह दिखाती है	• चीज़ों को संभालने में एहतियात प्रदर्शित करती है	• दूसरी जीवित चीज़ों से पेश आने में एहतियात और कोमलता दिखाती है	• समूह में दूसरों के प्रति दया और स्नेह प्रदर्शित करते हुए साझा काम करती है

C-4.7: सीखने के प्रतिफल

तालिका 23

C-4.7 : दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक ज़रूरतों को समझती है और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1		• पृष्ठभूमि या क्षमता की परवाह किए बिना सभी बच्चों के साथ खेलती और बातचीत करती है	• बच्चों के बीच समानताएँ और अन्तर (मसलन ऊँचाई, जेण्डर, त्वचा का रंग, बोलने का तरीक़ा, खाने की प्राथमिकता) चिह्नित करना शुरू करती है	• कक्षा की गतिविधियों के लिए मिले-जुले समूहों में अच्छी तरह से काम करती है • दूसरे बच्चों को मतभेदों के कारण धमकाती नहीं/लेबल नहीं करती है	• “अपने से अलग” लोगों में जिज्ञासा और रुचि प्रदर्शित करती है • लोगों के बीच समानताओं और अन्तर पर प्रश्न बनाती है • समानताएँ और भिन्नताएँ जानने के बावजूद विविध दोस्तों के समूह के साथ आराम से अन्तःक्रिया करती है

CG-5: बच्चे उत्पादक कार्य और ‘सेवा’ के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं

C-5.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 24

C-5.1 : दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• उपयोग के बाद सामग्रियों और खिलौनों को उनके उचित स्थानों पर वापस रखती है	• शिक्षक की मदद करती है और कक्षा को व्यवस्थित करती है	• खाने के बाद ख़ुद की प्लेट या टिफ़िन साफ़ करती है • घर और/या स्कूल में उपयुक्त काम करती है (मसलन सही जगह खिलौने रखना, पौधों को पानी देना)	• स्थानीय पेड़ों का अंकुरण करती है और उनकी देखभाल करती है	• TLM बनाने में शिक्षक की मदद करती है • रसोई में सफ़ाई और काटने के काम में मदद करती है

CG-6: बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं

C-6.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 25

	A	B	C	D	E
	C-6.1: सभी सजीवों के प्रति परवाह और उनसे जुड़ने में खुशी दिखाती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• पौधों और जानवरों को देखने की उत्सुकता प्रदर्शित करती है	• पौधों और जानवरों को ग़ैर-ज़रूरी तरीक़े से नुकसान नहीं पहुँचाती है	• स्थानीय वातावरण में पौधों और जानवरों के साथ जुड़ने में ख़ुशी प्रदर्शित करती है • प्रकृति के साथ शारीरिक अन्तःक्रिया में कोई असुविधा नहीं दिखाती है (मसलन बगीचे या पार्कों में)	• ख़ास वनस्पतियों और जीवों को पहचानने में जिज्ञासा और रुचि दिखाती है • अंकुरों और पौधों की देखभाल और पालन-पोषण की जिम्मेदारी लेती है	• बिल्ली के बच्चों, पिल्लों, मुर्गियों जैसे जानवरों की देखभाल और पालन-पोषण की जिम्मेदारी लेती है • कुदरत की सैर के लिए बाहर जाने में तथा पौधों और जानवरों को देखने से ख़ुश होती है

1.1.3 संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development)

इस आयु वर्ग के बच्चे अपने अनुभवों के आधार पर आसपास की दुनिया के बारे में तेज़ी से अवधारणाएँ विकसित कर रहे होते हैं। समझ के साथ सीखने और औपचारिक शिक्षा में अवधारणाओं के विकास के लिए अनुभव और समझ के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए। केवल तथ्य याद करा देने का इरादा नहीं होना चाहिए। यहाँ संज्ञानात्मक विकास को वस्तुओं के ज्ञान के विकास, तार्किक चिंतन और समस्याओं के समाधान की सामान्य क्षमताओं के विकास, गणितीय क्षमताओं और चिन्तन के विकास और बच्चे के आसपास के प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण से सम्बन्धित अवधारणाओं के विकास के माध्यम से देखा गया है।

CG-7: बच्चे अवलोकन और तार्किक चिंतन के ज़रिए दुनिया को समझते हैं

बच्चे आस-पास की दुनिया को वस्तुओं और उनके बीच की अन्तःक्रियाओं के माध्यम से पहचानने की ताकतवर, सम्भवतः जन्मजात क्षमता के साथ आते हैं। समुचित ध्यान और अवसर देने पर ये क्षमताएँ और सुदृढ़ होंगी। अगर छोटे बच्चों की तार्किक चिंतन और समस्या-समाधान की क्षमताओं पर ध्यान केन्द्रित करें तो वे लगातार जिज्ञासु और आजीवन सीखने वाले बने रहेंगे।

C-7.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 26

	A	B	C	D	E
	C-7.1: वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के सम्बन्धों को देखती-समझती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• मदद के साथ सामान्य वस्तुओं, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों व घटनाओं आदि को पहचानती है और उनका नाम बताती है	• ख़ुद से सामान्य वस्तुओं, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों व घटनाओं आदि को पहचानती है और उनका वर्णन करती है	• तात्कालिक परिवेश और चित्रों/मॉडलों में आम वस्तुओं, लोगों, चित्रों, जानवरों व पक्षियों के सामान्य विवरण चिह्नित करती है और उनका वर्णन करती है (मसलन घर में बड़ा दरवाज़ा)	• तात्कालिक परिवेश और चित्रों/मॉडलों में वस्तुओं, संकेतों, स्थानों व सामान्य गतिविधियों के बारीक विवरण की पहचान करती है और उनका वर्णन करती है (मसलन छोटे हरे घर में बड़ा भूरा दरवाज़ा)	
2	• परिचित वस्तु की परिचित तस्वीर के गायब हिस्से की पहचान करती है	• परिचित वस्तु की तस्वीर के 3 से 5 गायब हिस्सों की पहचान करती है	• परिचित वस्तु की तस्वीर के 4 से 6 गायब हिस्सों की पहचान करती है	• दी गई वस्तुओं/चित्रों की तुलना करती है और उनमें समानता और अन्तर की पहचान करती है	
3	• श्रेणियों के भीतर hierarchical सम्बन्धों को पहचानती है (मसलन जानवर और उनके छोटे बच्चे) • श्रेणियों के भीतर और उनके बीच तुलना करती है • चीज़ों को बदल कर उनका इस्तेमाल करते हुए खेलती है (मसलन केले को टेलीफोन के रूप में इस्तेमाल करती है) • वस्तुओं और उनके उपयोग के बीच सम्बन्ध बनाती है (मसलन चम्मच खाने के लिए है, बाल्टी नहाने के लिए है, मैकेनिक गैराज में होते हैं, जैसे डॉक्टर अस्पताल में होते हैं)				

C-7.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 27

C-7.2 : प्रकृति में कार्य-कारण सम्बन्धों को सरल परिकल्पनाएँ बनाकर देखती व समझती है और परिकल्पनाओं को समझाने के लिए अपने अवलोकनों का इस्तेमाल करती है

← उम्र 3 से 8 →

	A	B	C	D	E
1			• एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर प्रभाव पहचानती है (मसलन अगर मैं पानी में नमक डालूंगी तो घुल जाएगा, अगर मैं धूप में बर्फ़ रखूंगी तो वह पिघल जाएगी) • वस्तुओं पर सरल क्रियाओं के प्रभावों की व्याख्या करती है (मसलन मैं गेंद को जितनी ज़ोर से मारूंगी, वह उतनी ही आगे जाएगी) • कारण वाले सम्बन्ध बनाती है (मसलन अब्दुल स्कूल नहीं आया क्योंकि वह बीमार था, पौधा मर गया क्योंकि बारिश नहीं हुई) • कारण वाले सम्बन्धों के आधार पर पूर्वानुमान लगाती है (मसलन अगर आसमान में सफ़ेद बादल हैं तो बारिश नहीं होगी)		
2	• अवलोकनों के आधार पर विचारों का इस्तेमाल करती है (मसलन खाने से पहले गर्म भोजन को फूंक मारकर ठण्डा करने में वयस्कों का अनुकरण करती है)	• ज्ञात जानकारी को नए सन्दर्भ में लागू करती है (मसलन कहानी की किताब में देखे गए महल को ब्लॉकों से बनाना)	• अवलोकन करती है और फ़िर सामान्यीकरण करती है (मसलन उन चीज़ों पर ध्यान देती है जो लुढ़कती हैं- टायर, चूड़ियाँ, सब "गोल" आकृति की होती है)	• सरल परिकल्पनाएँ बनाती और उनका परीक्षण करती है (मसलन प्लेटें तैरती हैं और पिन डूब जाती है, काग़ज़ का एक टुकड़ा और एक पत्थर, एक साथ गिराकर देखती है कि कौन पहले ज़मीन पर पहुँचेगा) • सरल समस्याओं को हल करने के लिए अपनी समझ का इस्तेमाल करती है (मसलन रेत का घर बनाते समय, उस संरचना को सहारा देने के लिए एक डण्डे का इस्तेमाल करे, या इसे व्यवस्थित करने के लिए पानी डाले)	
3	• दिन और रात में अन्तर करती है	• गर्मी और सर्दी पहचानती है • आसमान में मौजूद चीज़ों के नाम लेती है (मसलन सूरज, चांद, तारे, बादल)	• गर्मी और सर्दियों के लिए कपड़ों और भोजन पर बातचीत करती है • सूर्योदय और सूर्यास्त को दिन और रात से जोड़ती है	• गर्मी, सर्दी और मानसून के मौसम में अन्तर करती है • बताती है कि सूरज और चन्द्रमा कहाँ उगते और अस्त होती है	• दिशाओं का नाम लेती है (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम)
4	• चयन करते हैं और प्राथमिकताएँ अभिव्यक्त करती है	• अपनी प्राथमिकताएँ और रुचियाँ अभिव्यक्त करती है और चयन करती है	• ज़िम्मेदारी लेती है और अपनी प्राथमिकताओं और रुचियों के आधार पर चयन करती है	• खेलती है / गतिविधियों में भाग लेती है और अपनी पसंद, प्राथमिकता व रुचि के आधार पर दोस्त बनाती है	• अपनी पसन्द, प्राथमिकता व रुचि के आधार पर खेल / खेल उपकरण चुनती है

5		• शिक्षकों और दोस्तों की मदद से भौतिक परिवेश में घटी घटनाओं तथा परिघटनाओं के बारे में सरल प्रश्नों के उत्तर देती है	• जाँची जा सकने वाली प्राकृतिक परिघटनाओं से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर देने के लिए दोस्तों के साथ साझेदारी करती है (मसलन क्या तैरता है और क्या डूब जाता है, किन वस्तुओं को चुम्बक आकर्षित करती है)	• प्राकृतिक परिघटनाओं सम्बन्धी बड़े सवालों को समझने के लिए छोटे सवालों की तालिका विकसित करती है • प्राकृतिक परिवेश में पैटर्न्स के बारे में सवाल पूछती है (मसलन अलग-अलग क़िस्म की पत्तियाँ और फूल, सूर्योदय व सूर्यास्त)	• प्राकृतिक परिघटनाओं सम्बन्धी 'क्यों' वाले सवाल पूछती है, अनसुलझे सवाल पूछती है, संवाद और/ या खोज के ज़रिए इनके जवाब ढूँढ़ती है (मसलन बारिश क्यों होती है, अगर सूरज की रोशनी न हो तो क्या होगा)
6	• किसी एक की क्रियाओं/व्यवहार का दूसरे पर क्या असर पड़ा, इसकी व्याख्या करती है (मसलन कुत्ते को पत्थर से मारना असहाय प्राणी को चोट पहुँचाना है, नल को बन्द न करने से पानी बर्बाद होता है)	• पौधों, पक्षियों और जानवरों की ज़रूरतों पर विचार व्यक्त करती है	• साझा प्राकृतिक संसाधनों की अवधारणा की व्याख्या करती है (मसलन पानी का इस्तेमाल हम, पक्षी और पौधे, सब करते है)	• प्राकृतिक पर्यावरण और मनुष्यों के बीच आपसी निर्भरता पर बातचीत करती है (मसलन घरों में पानी जलाशयों से आता है)	• मानव समाज की ज़रूरतों और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच सन्तुलन कैसे बनाए रखा जाना चाहिए, इस पर बातचीत करती है (मसलन अगर हम जानवरों के प्रति दयालु होंगे तो वे हमारे साथ काम करने में सक्षम होंगे, बीमारियों से बचने के लिए कचरे का सही निपटान ज़रूरी है)

C-7.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 28

	A	B	C	D	E
	C-7.3 : दैनिक जीवन की परिस्थितियों में और सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों व तकनीकी का इस्तेमाल करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• चित्र बनाने/रंगने के सरल उपकरणों का इस्तेमाल करने में निपुणता दिखाती है	• खेलते समय सरल उपकरणों के उपयोग के प्रति झुकाव प्रदर्शित करती है • डिजिटल श्रव्य-दृश्य सामग्री के साथ अन्तःक्रिया करते समय ध्यान और नियंत्रण प्रदर्शित करती है	• खेत में काम करते हुए या कला/शिल्प में उचित काम के लिए उचित उपकरण चुनती है • शिक्षक की मदद से डिजिटल तकनीकी मसलन स्मार्टफोन / टैबलेट से जुड़ती है	• काम की स्थितियों में औज़ारों और उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करती है • सीखने की स्थितियों में डिजिटल तकनीक का सरल उपयोग करती है (मसलन श्रव्य-दृश्य सामग्री को शुरू करना/ रोकना)	• रोज़मर्रा की गतिविधियों में इस्तेमाल के लिए सरल औज़ार और उपकरण बनाती है • सीखने की स्थितियों में डिजिटल श्रव्य-दृश्य सामग्री का उपयोग करने में धाराप्रवाहिता और सहजता दिखाती है

CG-8: बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं

बहुत ज़रूरी है कि प्रतीक रूप में संख्याओं और संक्रियाओं (जोड़, घटाव, गुणा, भाग आदि) के परिचय से पहले बच्चों को गिनना, क्रमबद्धता, छाँटना जैसी गणित-पूर्व अवधारणाओं और पैटर्न संबंधी कार्य से जोड़ा जाए। इससे संख्या ज्ञान (numeracy) संबंधी प्रक्रियात्मक प्रवाह के साथ-साथ अवधारणात्मक समझ विकसित करने में बेहद मदद मिलती है।

C-8.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 29

	A	B	C	D	E
	C-8.1 : चीज़ों को एक से अधिक गुणों के आधार पर समूहों और उप-समूहों में छाँटती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• आकार, लम्बाई, ऊँचाई और वज़न के आधार पर चीज़ों को दो समूहों में छाँटती है (बड़ा-छोटा, लम्बा-छोटा)	• आकार, लम्बाई, ऊँचाई और वज़न के आधार पर चीज़ों को तीन समूहों में छाँटती है (छोटा आकार-बड़ा आकार-उससे बड़ा आकार)	• चीज़ों को उन विशेषताओं के आधार पर समूहों में छाँटती है, जिन्हें वह पहचानती है	• चीज़ों को उन विशेषताओं के आधार पर समूहों में छाँटती है जिन्हें वह पहचानती है, और इस छाँटने के नियम बताती है, (समान परिवेश में रहने वाले जानवरों को छाँटना - कुत्ते, बिल्लियाँ, चूहे, साँप; इन जानवरों में वह घास खाने वाले और मांस खाने वाले जानवरों के बीच छँटनी कर पाती है)	• चीज़ों को समूहों और उप-समूहों में छाँटती है (मसलन ब्लॉकों के एक समूह में, पहले रंग के आधार पर छाँटना, फ़िर रंग के भीतर आकृति के आधार पर छाँटना, फ़िर आकार के आधार पर छाँटना। पेड़ों और लताओं के बीच छाँटना, इनमें फलदार और ग़ैर-फलदार को छाँटना, उसके भीतर खाद्य या अखाद्य को छाँटना)

C-8.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 30

	A	B	C	D	E
	C-8.2 : अपने परिवेश, आकृतियों, और संख्याओं में सरल पैटर्न्स को पहचानती और उनका विस्तार करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• चीज़ों, चित्रों व आकृतियों के पैटर्न्स को जोड़े में पहचानती और दोहराती है - (पत्ती, फूल, पत्ती, फूल, A B A B A B A B A B A B A पैटर्न में) • ध्वनियों के पैटर्न को पहचानती और दोहराती है (दा-मा-गा, दा-मा-गा, आदि) • गतियों के पैटर्न को पहचानती है और दोहराती है (उछलो-खड़े हो, उछलो-खड़े हो)	• दोहराए जाने वाले पैटर्न को पहचानती है, और तीन से चार चीज़ों/ चित्रों/ आकृतियों को ABC|ABC|ABC (कलम-किताब-पेंसिल; कलम-किताब-पेंसिल) के पैटर्न पर बढ़ाती है • क्रियाओं / ध्वनियों के पैटर्न को पहचानती, दोहराती और बढ़ाती है • तीन अलग-अलग शारीरिक गतिविधियों के पैटर्न को स्पष्ट रूप से पहचानती और दोहराती है	• अलग-अलग विशेषताओं - रंग, आकृति व आकार पर आधारित नए पैटर्न बनाती है • पैटर्न के नियम बताते हुए विभिन्न वस्तुओं में नए पैटर्न बनाती है (टहनियों, फूलों के साथ गुच्छे बनाना)	• वयस्कों की मदद से विभिन्न रूपों में दोहराए जाने वाले सरल पैटर्न्स (मसलन लाल - नीला, लाल, नीला, लाल, ___;) के बीच ग़ायब तत्वों को भरती है।	• पैटर्न के नियमों को बताते हुए इन्हें संख्या व प्रतीक जैसे अमूर्त पैटर्नों और analogic विचार पैटर्नों पर लागू करती है (मसलन रेखांकन करते हुए या चित्र बनाते हुए रंगों का इस्तेमाल। प्रतीकों या बिन्दुओं की समान मात्रा का अलग-अलग पैटर्न्स में इस्तेमाल 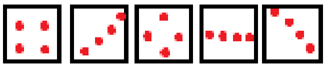 Analogical 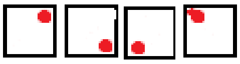

C-8.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 31

	A	B	C	D	E
	C-8.3 : सीधी और उल्टी गिनती से, और 10-10 एवं 20-20 के समूहों में 99 तक गिन पाती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• सही क्रम/सन्दर्भ के साथ मौखिक रूप से 5 तक संख्याओं का नाम बोलती/गाती है • 3 तक संख्या नामों और वस्तुओं के बीच एक-से-एक की संगति करते हुए गिनने में वयस्कों की नक़ल करती है • वस्तुओं को 3 तक गिनती है और 3 तक कुल मात्रा (cardinality) की समझ विकसित करती है (मसलन एक समूह की 3 चीज़ों को गिनती है और कहती है कि वे 3 हैं) • घालमेल में दी गई या वस्तुओं को गिनती है और अधिकतम 5 चीज़ें उठा और छोड़ सकती है। • 3 वस्तुओं तक, दो समूहों के बीच मात्रा की तुलना करती है और उनमें अन्तर कर सकती है कि वे बराबर हैं या कम-ज़्यादा	• संख्याओं को सही क्रम में 10 तक बोलती/गाती है और 5 तक संख्या नामों और वस्तुओं के बीच एक-से-एक की संगति करती है • कुल मात्रा (cardinality) की समझ के साथ वस्तुओं को 5 तक गिनती है (समूह की मात्रा को पहचान पाना) • संख्या बोध की समझ प्रदर्शित करती है (मसलन 5, अलग-अलग 5 वस्तुएँ - 5 लोग, 5 किताबें, 5 पेंसिलें हो सकती है) • 5 तक ठोस और discrete वस्तुओं तथा अमूर्त चीज़ों को गिनमें में प्रवाह दिखाती है (मसलन 5 क़दम, 5 तालियाँ) • स्मृति से सही क्रम में 10 तक गिनती करती है • 20 तक गिनती करना शुरू करती है	• संख्याओं को सही क्रम में 20 तक बोलती/गाती है और 10 तक संख्या नामों और वस्तुओं के बीच एक-से-एक की संगति करती है • कुल मात्रा (cardinality) की समझ के साथ वस्तुओं को 10 तक सही-सही गिनती है • किसी दिए गए समूह में वस्तुओं को किसी भी क्रम में सही-सही गिनती है और समझती है कि मात्रा समान ही रहती है, चाहे जिस क्रम में वस्तुओं की गिनती की जा रही हो (मसलन मुट्ठी भर मोती देने पर बच्ची किसी भी क्रम में उन्हें गिन सकती है और सही मात्रा बता सकती है) • किसी समूह में वस्तुओं को कम करके गिनती (उल्टी गिनती करती) हुई 0 की अवधारणा को एक संख्या के रूप में समझती है (मसलन 3 मोतियों में से एक-एक कम करके उल्टी गिनती करती हुई, 1 मोती के बाद क्या बचा?) • संख्या की कुल मात्रा या मान (face value) और क्रम (positioning value-ordinality) दोनों के रूप में समझ और किसी वस्तु की दाहिने से बाएँ या बाएँ से दाहिने क्रम में स्थिति को प्रदर्शित करती है (ordinal position) • उदाहरण : नीचे दिए गए क्रम में	• 20 से ज़्यादा वस्तुओं को 99 तक के संख्या नामों का उपयोग करके गिनती है और 99 तक की संख्याओं को 10-10 के समूहों के पैटर्न में देखती है • किसी ख़ास संख्या (0 से 99 के बीच) से सीधी और उल्टी गिनती करती है	• सीधी बढ़ती हुई संख्या रेखा या ब्लॉकों/ तस्वीरों में 2 या 3 छोड़कर गिन सकती है • दहाई और इकाई के समूहों में स्थानीय मान का उपयोग करके भारतीय numerals को निन्यानवे तक पढ़ती और लिखती है • 10-10, 20-20 और 30-30 के समूहों में 99 तक गिनती है

• 2 या 3 वस्तुओं के समूह की संख्या को तुरन्त पहचान लेती है	• 4 वस्तुओं के समूह की संख्या को तुरन्त पहचान लेती है (मसलन 4 बिस्कुट, चाकलेट या बिना गिने ब्लॉक्स)	• 6 वस्तुओं के समूह की संख्या को तुरन्त पहचान लेती है (मसलन 6 बिस्कुट, चाकलेट या बिना गिने ब्लॉक्स) 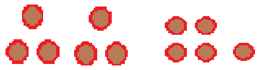	• 2 समूहों में मात्राओं को पहचानती है (मसलन 10 के दो समूह मिलकर 20 बन जाते हैं)

C-8.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 32

C-8.4 : 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• परिचित प्रसंगों/घटनाओं/वस्तुओं को क्रम से व्यवस्थित करती है (जैसे, दिनचर्या, कहानी, आकृतियाँ, 2 से 3 आकार	• वस्तुओं को 3 स्तरों तक के आकार के आधार पर व्यवस्थित करती है और इन स्तरों को मौखिक रूप से बताती है (बड़ा - छोटा - उससे छोटा; लम्बा - छोटा - उससे छोटा; ऊँचा - नीचा- उससे नीचा)	• आकार/लम्बाई / वज़न के आधार पर 5 वस्तुओं तक को बढ़ते या घटते क्रम में व्यवस्थित करती है	• वस्तुओं के विभिन्न गुणों (मसलन आकार/लम्बाई/वज़न/रंग) के आधार पर वस्तुओं के एक ही समूह को अलग-अलग क्रम में व्यवस्थित करती है	• संख्याओं के दिए गए समूह से उन्हें आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करती है

C-8.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 33

	A	B	C	D	E
	C-8.5 : दाशमिक स्थानीय मान प्रणाली की समझ के साथ 99 तक की मात्राओं को दर्शाने के लिए संख्याओं को पहचानती और उनका उपयोग करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• 3 तक की दो संख्याओं की (मौखिक रूप से) तुलना करती है व अधिक और कम जैसी शब्दावली का उपयोग करती है	• 5 तक के अंकों को पहचानती है • 5 तक की दो संख्याओं की तुलना करती है व उससे अधिक और उससे कम जैसी शब्दावली का उपयोग करती है	• 9 तक के भारतीय अंकों को पहचानती है • 9 तक के भारतीय अंकों को आराम से लिख लेती है • 9 तक की दो संख्याओं की तुलना करती है व उससे अधिक और उससे कम जैसी शब्दावली का उपयोग करती है	• वस्तु/चीज़ की अनुपस्थिति को दिखाने के लिए शून्य के प्रतीक चिह्न को पहचानती है • 20 तक की संख्याओं को पहचानती और लिखती है और 10 तक की संख्याओं को शब्दों में लिखती है • 20 तक की दो संख्याओं की तुलना करती है व उससे अधिक और उससे कम जैसी शब्दावली का उपयोग करती है	• स्थानीय मान अवधारणा का उपयोग करके 99 तक के संख्या नामों और संख्या चिह्नों को पहचानती, पढ़ती और लिखती है (दी गई संख्याओं के बिना दोहराव या दोहराव के साथ) • दो अंकों की सबसे बड़ी और सबसे छोटी संख्या बनाती है और उनकी तुलना करती है

C-8.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 34

	A	B	C	D	E
	C-8.6 : संयोजन (composition) और वियोजन (decomposition) की लचीली रणनीतियों का उपयोग करके आसानी से 2 अंकों की संख्याओं का जोड़ और घटाव करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• मौखिक जवाब की बजाय समूह बनाने (grouping) और समूह को खोलने (ungrouping) के ज़रिए बहुत ही छोटे समूहों / मात्राओं (कुल 3 तक) को पास लेती /हटाती है	• 5 वस्तुओं तक दो समूहों को मिलाती / एकत्र करती है और फ़िर से गिनती है (मसलन मेरे पास 2 चॉकलेट हैं और 3 मेरी बहन के पास हैं, उन्हें एक साथ रखकर, व गिनकर मुझे बताओ कि मेरे पास कुल कितनी चॉकलेट हैं) • किसी समूह से अधिकतम 5 चीज़ें निकालती है और उन्हें फ़िर से गिनती है	• 9 वस्तुओं तक दो समूहों को मिलाती / एकत्र करती है और फ़िर से गिनती है (मसलन मेरे पास 5 चॉकलेट हैं और 3 मेरी बहन के पास हैं, उन्हें एक साथ रखकर, व गिनकर मुझे बताओ कि मेरे पास कुल कितनी चॉकलेट हैं) • किसी समूह से अधिकतम 9 चीज़ें निकालती है और उन्हें फ़िर से गिनती है	• वास्तविक जीवन की स्थितियों और ठोस वस्तुओं के इस्तेमाल से, जोड़ तथ्यों का उपयोग करते हुए 18 तक के जोड़ का मॉडल बनाती है और हल निकालती है • वास्तविक जीवन की स्थितियों और ठोस वस्तुओं के इस्तेमाल से, घटाव तथ्यों का उपयोग करते हुए 9 तक के घटाव की समस्याओं का मॉडल बनाती है और हल निकालती है (मसलन दी गई चॉकलेटों के समूह से चॉकलेट निकालना) • संख्याओं के जोड़ और घटाव के बीच सम्बन्ध विकसित करती है • जोड़ और घटाव की संक्रियाओं के +/- चिह्नों को पहचानती है	• लचीली रणनीतियों का इस्तेमाल करते हुए संख्याओं के संयोजन (साथ मिलाने) और वियोजन (समूह में से निकाल देने) का मेल हासिल करती है, (मसलन 57 + 33 के जवाब के लिए बच्ची 33 में से 3 निकाल सकती है, उसे 57 में जोड़कर 60 बना सकती है और फ़िर उसमें 30 जोड़कर 90 तक पहुँच सकती है) • स्थानीय मान की अवधारणा का इस्तेमाल करते हुए दो संख्याओं को जोड़ती है (जिनका योग 99 से ज़्यादा न हो) और दैनिक जीवन की सामान्य समस्याओं / परिस्थितियों को हल करने के लिए उन्हें लागू करती है • स्थानीय मान की अवधारणा का इस्तेमाल करते हुए 99 तक की किन्हीं दो संख्याओं को घटाती है और दैनिक जीवन की सामान्य समस्याओं / परिस्थितियों को हल करने के लिए उन्हें लागू करती है • संख्याओं के जोड़ और घटाव के बीच सम्बन्ध को समझती है और उन्हें लागू करती है • परिचित स्थिति/सन्दर्भ में समस्याओं को हल करने के लिए उपयुक्त संक्रिया (जोड़ या घटाव) की पहचान करती है • सरल इबारती सवालों (word problems) को समझती है और हल करती है

C-8.7: सीखने के प्रतिफल

तालिका 35

	A	B	C	D	E
	C-8.7 : गुणा को बार-बार जोड़ और भाग को बराबर बँटवारे के रूप में जानती-समझती है				
	उम्र 3 से 8				
1			• चीज़ों के छोटे समूह बनाती है और वस्तुओं और समूहों की कुल संख्या गिनती है	• समूहीकरण के ज़रिए छोटी संख्याओं के गुणा के सवालों को हल करती है • गुणा संक्रिया के चिह्न को पहचानती है	• 99 तक की संख्या में बार-बार जोड़कर गुणा के सरल सवालों को हल करती है
2	• दिए गए चीज़ों के समूह को कई प्राप्तकर्ताओं (recipients) में बाँटती है	• 2 प्राप्तकर्ताओं में चीज़ों (6 तक) को बराबर बाँटती है	• 4-5 प्राप्तकर्ताओं में चीज़ों (20 तक) को बराबर बाँटती है	• भाग के सवालों को हल करने के लिए trial and error तथा समूहों में बाँटने का तरीक़ा इस्तेमाल करती है • भाग संक्रिया के चिह्न को पहचानती है	• भाग के सवालों को हल करने के लिए कितने समूह बनेंगे, यह पता करने के लिए बार-बार घटाव का इस्तेमाल करती है

C-8.8: सीखने के प्रतिफल

तालिका 36

C-8.8 : बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानती, बनाती और वर्गीकृत करती है, और किसी स्थान (space) में वस्तुओं के सापेक्ष सम्बन्ध (relative relation) को समझती व समझाती है

← उम्र 3 से 8 →

	A	B	C	D	E
1	• किसी एक गुण, आकृति, आकार या रंग द्वारा चीज़ों का मिलान करती है • आकृति, रंग और आकार जैसे किसी एक कारक के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करती है • सरल निर्देशों का पालन करती है और आकृति, रंग और स्थिति के आधार पर वस्तुओं को रखती है - मसलन लाल गुब्बारा यहाँ लाओ, मेज़ पर गोल गेंद रखो	• विभिन्न आकारों और रंगों की आकृतियों का मिलान करती है • दो कारकों के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करती है (मसलन आकृति और रंग, रंग और आकार) • विभिन्न ठोसों/ आकृतियों की भौतिक विशेषताओं का अपनी भाषा में वर्णन करती है (मसलन गेंद लुढ़कती है और इसमें कोई कोना नहीं होती है, एक बॉक्स सरकता है और इसमें कोने होते हैं) • स्थितिबोधक शब्दों (positional words) को समझते हुए कोई पैटर्न बनाने के लिए अलग-अलग आकृतियों, रंगों व स्थितियों के लिहाज़ से दिए गए कई चरणों वाले निर्देशों को समझती है (मसलन स्थितिबोधक शब्दों- बीच में, ऊपर, नीचे, को समझकर कई चीज़ों से गुच्छों / मंडलों का निर्माण करती है; कोलाज बनाती है)	• विभिन्न आकार और orientation की आकृतियों का मिलान करती है (मसलन अलग ओरिएंटेशन में रखे त्रिभुज और आकार?) • तीन कारकों (जैसे आकृति, रंग व आकार) के आधार पर वस्तुओं की तुलना और वर्गीकरण करती है • चीज़ों का वर्णन करने के लिए स्थितिबोधक शब्दों का इस्तेमाल करती है (मसलन बगल में, अंदर, नीचे) • विभिन्न ठोसों/आकृतियों की भौतिक विशेषताओं का अपनी भाषा में वर्णन करती है (मसलन गेंद लुढ़कती है और इसमें कोई कोना नहीं होता है, एक बॉक्स सरकता है और इसमें कोने होते हैं) • किसी समतल सतह पर त्रिविमीय आकृतियों के फलकों की tracing करके द्विविमीय आकृतियों की पहचान करती है • थोड़ी सटीकता और नियंत्रण के साथ द्विविमीय आकृतियों को फ्री हैण्ड से बना लेती है	• स्थानिक सम्बन्ध (जैसे, ऊपरी (top), निचला (bottom), ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर, पास, दूर, पहले, बाद) की शब्दावली विकसित करती है और उसका इस्तेमाल करती है • परिवेश से अलग-अलग आकार और आकृति वाली चीज़ें इकट्ठी करती है (मसलन कंकड़, डिब्बे, गेंद, शंकु, पाइप) • आकृति और अन्य अवलोकनीय गुणों के आधार पर वस्तुओं को छाँटती व वर्गीकृत करती है और उनका वर्णन करती है • विभिन्न ठोसों/आकृतियों की भौतिक विशेषताओं को देखती है और उनका वर्णन अपनी भाषा में करती है (मसलन गेंद लुढ़कती है, बॉक्स सरकता है) • ख़ास विशेषताओं (मसलन लम्बाई, क्षेत्रफल, आयतन) के आधार पर आकृतियों की तुलना करती है	• त्रिविमीय आकृतियों को उनके नाम (मसलन घनाभ, बेलन, शंकु और गोला) से पहचानती है और उनके अवलोकनीय गुणों के बारे में बताती है (मसलन एक घन के छह फलक होते हैं) • द्विविमीय आकृतियों को उनके नाम (मसलन वर्ग, आयत, त्रिभुज और वृत्त) से पहचानता है और उनके अवलोकनीय गुणों के बारे में बताती है (मसलन किसी पुस्तक के पृष्ठ आयताकार होते हैं और उनमें 4 भुजाएँ व 4 कोने होते हैं) • सीधी और घुमावदार रेखाओं के बीच भेद करती है और विभिन्न orientations (मसलन लम्बवत, क्षैतिज, तिरछी) में सीधी रेखाएँ खींचती / प्रदर्शित करती है • त्रिविमीय वस्तुओं की द्विविमीय outlines को trace करती है • वस्तुओं की छाया देखकर उनकी पहचान करती है

C-8.9: सीखने के प्रतिफल

तालिका 37

C-8.9 : अपने आस-पास के वातावरण में वस्तुओं की लम्बाई, वज़न और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करती है

← उम्र 3 से 8 →

	A	B	C	D	E
1	**लम्बाई** • कविताओं और कहानियों के माध्यम से लम्बाई व्यक्त करने के लिए शब्दावली (लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई व दूरी) का इस्तेमाल करती है	**लम्बाई** • दो वस्तुओं की तुलना उनकी लम्बाई के सन्दर्भ में करती है कि कौन ज़्यादा लम्बी है और कौन ज़्यादा छोटी, कौन ज़्यादा ऊँची है और कौन ज़्यादा छोटी	**लम्बाई** • तीन वस्तुओं की तुलना उनकी लम्बाई के सन्दर्भ में करती है कि कौन सबसे ज़्यादा लम्बी है और कौन सबसे ज़्यादा छोटी, कौन सबसे ज़्यादा ऊँची है और कौन सबसे ज़्यादा छोटी	**लम्बाई** • पास-दूर, पतला-मोटा, उससे लम्बा/बड़ा- उससे छोटा, ऊँचा-नीचा में अन्तर करती है • छोटी लम्बाइयों को असमान इकाइयों में मापती है (खेल के सन्दर्भ में मसलन 'गुल्ली-डंडा', कंचों का खेल) • कम दूरी और लम्बाई का अनुमान लगाती है, और असमान व अमानक इकाइयों की सहायता से उनकी पुष्टि करती है (मसलन बालिश्त, हाथ (forearm), कदम, अंगुल)	**लम्बाई** • समान (अमानक) इकाइयों का उपयोग करके लम्बाई और दूरी के साथ छोटे और लम्बे रास्तों को मापती है और इसे बड़ी लम्बाइयों तक में इस्तेमाल करती है • छड़ी/पेंसिल, कप/चम्मच/बाल्टी जैसी अमानक इकाइयों का उपयोग करके लम्बाई/दूरी और बर्तनों/पात्रों की धारिता का अनुमान लगाती है और मापती है
2	**वज़न** • कविताओं और कहानियों के माध्यम से वज़न व्यक्त करने के लिए शब्दावली का इस्तेमाल करती है	**वज़न** • दो वस्तुओं की तुलना उनके वज़न के सन्दर्भ में करती है कि कौन ज़्यादा भारी है और कौन ज़्यादा हल्की	**वज़न** • तीन वस्तुओं की तुलना उनके वज़न के सन्दर्भ में करती है कि कौन ज़्यादा भारी है और कौन ज़्यादा हल्की	**वज़न** • भारी और हल्की वस्तुओं की तुलना करती है और उन्हें भारी से हल्की और हल्की से भारी के क्रम में लगाती है	**वज़न** • सामान्य तराज़ू (simple balance) की ज़रूरत को समझती है • सामान्य तराज़ू (simple balance) का उपयोग करके दी गई वस्तुओं के वज़न की तुलना करती है
3		**आयतन** • कविताओं और कहानियों के माध्यम से आयतन को व्यक्त करने के लिए शब्दावली का इस्तेमाल करती है	**आयतन** • दो बर्तनों, बोतल, गिलास, बाल्टी आदि के आयतन की तुलना करती है	**आयतन** • कप/चम्मच/मग जैसी समान अमानक इकाइयों का इस्तेमाल करके बर्तनों/पात्रों के आयतन का अनुमान लगाती है और उन्हें मापती है	**आयतन** • अपनी धारणा के आधार पर बर्तनों/पात्रों को उनके आयतन के लिहाज़ से क्रमवार लगाती है और उड़ेलकर (by pouring out) पुष्टि करती है

C-8.10:सीखने के प्रतिफल

तालिका 38

C-8.10 : मिनटों, घण्टों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• दैनिक जीवन में आज और कल जैसी शब्दावली का इस्तेमाल करती है	• शनिवार, रविवार, छुट्टी जैसे ख़ास दिनों की पहचान करती है (मसलन रविवार को छुट्टी है)	• सप्ताह के दिनों और साल के महीनों के नाम जानती है	• पहले और बाद में जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हुए ख़ास समय पर होने वाली घटनाओं के बीच अन्तर करती है • स्कूल के दिनों बनाम छुट्टियों की लम्बी और छोटी अवधि का गुणात्मक अनुभव हासिल करती है • किसी दिन में होने वाली घटनाओं का क्रम बताती है	• ऋतुओं के क्रम (जोकि स्थानीय रूप से भिन्न होते हैं) का अनुभव हासिल करती है • मानक इकाइयों - दिन, घण्टा का उपयोग करके समय का मापन करती है (मसलन सप्ताह में 7 दिन, एक दिन में 24 घण्टे)

C-8.11:सीखने के प्रतिफल

तालिका 39

C-8.11 : 100 रुपये तक की मुद्रा का उपयोग करके सरल लेन-देन करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• कविताओं और कहानियों के माध्यम से मुद्रा से जुड़ी शब्दावली का इस्तेमाल करती है	• भारतीय सिक्कों को पहचानती है	• भारतीय नोटों को पहचानती है	• नोट और सिक्के जोड़कर 20 रुपये तक बना लेती है	• नोट और सिक्के जोड़कर 100 रुपये तक बना लेती है

C-8.12:सीखने के प्रतिफल

तालिका 40

	A	B	C	D	E
	C-8.12: मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त शब्दावली विकसित करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• आकृतियों के नाम और उनके कुछ गुण बताती है	• संख्या नामों और आकृतियों के नामों का इस्तेमाल करते हुए आसान निर्देशों को सुनती और समझती है • संख्या नामों और आकृतियों के नामों का समुचित इस्तेमाल करती है	• संख्या नामों व संक्रियाओं और आकृतियों के नामों और मापन का समुचित इस्तेमाल करती है	• मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित गणितीय समस्या बताने के लिए पूरे वाक्यों का निर्माण करती है	• Texts को समझती है और उनमें अन्तर्निहित सरल गणितीय समस्याओं को निकाल लेती है • सरल गणितीय पहेलियाँ (riddles and puzzles) बनाती है

C-8.13:सीखने के प्रतिफल

तालिका 41

	A	B	C	D	E
	C-8.13 : मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करती है और हल करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• ज्यामितीय और ग़ैर-ज्यामितीय आकृतियों के सहारे सरल इनसेट पहेलियों को हल कर लेती है	• टैनग्राम (tangram) आकृतियों से विशिष्ट figure बना लेती है	• सरल पहेलियों को हल करने के लिए अपने संख्या ज्ञान का इस्तेमाल करती है	• वास्तविक दुनिया की स्थितियों को सरल गणितीय समस्याओं के रूप में पहचानती है • विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करके सरल संख्यात्मक समस्याएँ हल करती है	• सामान्य गणितीय समस्या हल करने के विभिन्न तरीक़ों के बारे में बातचीत करती है • गलती पकड़ने के लिए सवालों के हल की फ़िर से जाँच करती है • उन खेलों और पहेलियों से जुड़ते हैं जिनमें मात्रात्मकता की ज़रूरत होती है

1.1.4 भाषा और साक्षरता विकास

भाषा और साक्षरता विकास, शिक्षा के मूलभूत लक्ष्यों में शामिल हैं। हर तरह की समझ हमारी भाषाई क्षमताओं के ज़रिए ही बनती है। हमारी भाषाई क्षमताओं और संज्ञान के बीच बहुत गहरा रिश्ता होता है। चाहे वह सम्प्रेषण के रूप में हो, समझ के माध्यम के रूप में हो या सौन्दर्यात्मक अनुभवों के रूप में हो, भाषा, इन्सानी अनुभव के केन्द्र में होती है। हमारे इन्सानी बायोलॉजी में भाषा जन्मजात रूप से होती है, पर साक्षरता चूँकि एक सांस्कृतिक उपलब्धि है और इसलिए इसकी तरफ़ ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत होती है। साक्षरता, सिर्फ़ टेक्स्ट को पढ़ लेना (decoding) नहीं है, बल्कि उससे अर्थ निर्माण करना है, उस दुनिया का अर्थ निकालना है, जिसका ये टेक्स्ट प्रतिनिधित्व करते हैं।

CG-9: बच्चे दो भाषाओं में रोज़मर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं

बच्चे की मौखिक भाषा के विकास के लिए फाउंडेशनल स्टेज पर पर्याप्त समय और प्रयास की ज़रूरत है। मौखिक भाषा दक्षताओं की मज़बूत नींव पर बुनियादी साक्षरता विकसित होती है। समय से पहले बहुत छोटे बच्चों को, जो अभी मौखिक भाषा हासिल करने के शुरुआती स्तर पर हों, लिपि से परिचय कराना उनके साक्षरता विकास के प्रतिकूल पड़ सकता है।

C-9.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 42

C-9.1 : सरल गीतों, तुकबन्दियों और कविताओं को सुनती-सराहती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• विभिन्न तरह के गीत और कविताएँ सुनती है	• घर और आस-पड़ोस में नियमित रूप से विभिन्न भाषाओं में तरह-तरह के गीत सुनते और गुनगुनाते हुए उनका आनन्द लेती है	• बड़े (4-8 वाक्य के) (परिचित) गीत व कविताएँ ध्यान से सुनती है और उनके बारे में बातचीत करती है	• बड़े (4-8 वाक्य के) (अपरिचित) गीत व कविताएँ ध्यान से सुनती है और उनके बारे में बातचीत करती है, सवाल पूछती है	• कुछ ख़ास तरह के गीतों और कविताओं को सुनने की रुचि दिखाती हैं और अपनी पसन्द का कारण बताती है
2	• सामान्य गीत या तुकबन्दी को दोहराती है	• गीतों और तुकबन्दियों को स्वर व हावभाव के साथ गाती है	• छोटे गीतों/कविताओं (4-5 वाक्य वाली) का पाठ करती है, गाती है	• बड़े गीतों/कविताओं (10 वाक्य) का पाठ करती है, गाती है	• दो या तीन छन्दों वाले गीतों/कविताओं (10 वाक्य) का पाठ करती है, गाती है

C-9.2: सीखने के प्रतिफल

तालिका 43

	A	B	C	D	E
	C-9.2 : ख़ुद सरल गीत और कविताएँ बनाती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• परिचित गीतों और कविताओं का आनन्द लेती है	• गानों और कविताओं में तुकांत वाले शब्दों का आनन्द लेती है	• परिचित कविताओं से तुकांत वाले शब्दों की पहचान करती है और नए तुकांत वाले शब्द बनाती है	• शिक्षक की मदद से छोटी कविताओं / तुकबन्दी का विस्तार/ निर्माण करती है	• अपने शब्दों में स्वतंत्र रूप से छोटी कविताएँ/ तुकबन्दियाँ बनाती है

C-9.3: सीखने के प्रतिफल

तालिका 44

	A	B	C	D	E
	C-9.3 : धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• ध्यान से सुनती है और आसपास के परिचित लोगों के साथ छोटी-छोटी बातचीत करती है	• स्कूल में तरह-तरह की स्थितियों में हर रोज़ अपने दोस्तों और शिक्षकों से बातचीत शुरू करती है	• घटनाओं, कहानियों या अपनी ज़रूरतों के आधार पर बातचीत में शामिल होती है और सवाल पूछती है	• बातचीत में शामिल होती है, बोलने के लिए अपनी बारी का इन्तज़ार करती है, और दूसरों को बोलने देती है	• तरह-तरह के भाषिक आदान-प्रदान में भी बातचीत के सूत्र को बनाए रखती है
2	• छोटे अर्थपूर्ण वाक्यों के माध्यम से अपनी ज़रूरतों और भावनाओं को व्यक्त करती है	• दैनिक अनुभवों को सरल वाक्यों में बताती है और क्या/कब/कैसे/ किससे आदि का उपयोग करते हुए सरल सवाल पूछती है	• दैनिक अनुभवों का विस्तृत विवरण वर्णन करती है और क्यों वाले सवाल भी पूछती है	• कक्षा में पढ़कर सुनायी गई या जिस पर चर्चा हो, ऐसी ग़ैर-कथात्मक सामग्री के साथ जुड़ती है, ज्ञान को अपने ख़ुद के अनुभवों से जोड़ने में सक्षम है और इसके बारे में बात करती है	• किसी विषय के बारे में चर्चा में शामिल होती है, सवाल उठाती है और सवालों के जवाब देती है

C-9.4: सीखने के प्रतिफल

तालिका 45

	A	B	C	D	E
	C-9.4 : किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझती है और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• छोटे निर्देशों को सुनती है और उनका पालन करती है (मसलन ब्लॉक यहाँ लाओ, अच्छी तरह से हाथ धोओ आदि)	• कई चरण वाले कुछ सरल निर्देशों (एक बार में 2 से 3 निर्देश) का पालन करती है	• कई चरणों वाले निर्देशों का पालन करती है - जिनमें एक बार में 4 से 5 निर्देश हों	• कई चरणों वाले निर्देशों का पालन करती है - जिनमें एक बार में 8 से 9 निर्देश हों	• सशर्त विभाजनों (conditional branching) वाले निर्देशों का पालन करती है (मसलन यदि बारिश हो रही है, तो पौधों को पानी मत दो, बजाय इसके निराई करो, अगर बारिश न हो तो पौधों को पानी दो)
2			• छोटे काम पूरे करने के लिए दूसरे बच्चों या वयस्कों को स्पष्ट निर्देश देती है	• कई चरणों वाले स्पष्ट निर्देश (एक बार में 8-9 निर्देश) देती है	• स्पष्ट निर्देश देती है जिसमें गणित शामिल हो (मसलन सटीक दिशाएँ, स्थान और समय सम्बन्धी आयाम)

C-9.5: सीखने के प्रतिफल

तालिका 46

	A	B	C	D	E
	C-9.5 : सुनाई गई/बोल कर पढ़ी गई कहानियों को समझती है, पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहती हैं, को पहचानती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• थोड़े समय (5-7 मिनट) के लिए कहानियों को ध्यान से सुनती है	• सुनाई गई कहानी के पात्रों और कुछ घटनाओं को याद करती है और उसे अपने शब्दों में फ़िर से बता लेती है	• कहानी में कथानक और पात्रों की पहचान करती है और कहानी की शब्दावली का उपयोग करके सही क्रम में फ़िर से कहानी बताती है	• कहानी में पात्रों व कथानक के आशय की व्याख्या करती है और कहानी को अलग रूप में फ़िर से कहती है	• कहानी लिखने के लिए लेखक की प्रेरणाओं की व्याख्या करती है और कहानी को फ़िर से बतौर लेखक कहती है

C-9.6: सीखने के प्रतिफल

तालिका 47

C-9.6 : स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ छोटी कहानियाँ सुनाती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1			• कहानी के अन्त की कल्पना ख़ुद करती है और उसे सुनाती है	• सरल कथानकों और पात्रों के साथ ख़ुद की छोटी कहानियाँ सुनाती है	• जटिल कथानकों और कई पात्रों के साथ ख़ुद की कहानियाँ बनाती है (समूह में)

C-9.7: सीखने के प्रतिफल

तालिका 48

C-9.7 : प्रभावी ढंग से रोज़मर्रा की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानती है, उनका इस्तेमाल करती है और मौजूदा शब्दावली का इस्तेमाल करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• कुछ सामान्य और परिचित वस्तुओं व अनुभवों के लिए उपयुक्त शब्दावली का इस्तेमाल शुरू करती है (मसलन अपना नाम, दोस्तों के नाम, सामान्य चीज़ें, चित्र, मीठा, खट्टा, गोल, बड़ा)	• ख़ास प्रसंगों और कक्षा में प्रस्तुत विषयों से प्राप्त शब्दावली का अपनी बातचीत में इस्तेमाल करती है	• क्रियाबोधक शब्दों, वर्णनात्मक शब्दों, काल आदि के सायास इस्तेमाल के साथ विस्तृत शब्दावली का प्रयोग करती है	• चित्र और सन्दर्भ संकेतों का इस्तेमाल करते हुए अनजान शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाती है	• पाठों में सामने आए अनजान शब्दों के अर्थ जानने के लिए बच्चों के शब्दकोषों का उपयोग करती है

CG-10: बच्चे भाषा 1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं

मौखिक भाषा का विकास भाषाई माहौल में तल्लीनता और समाजीकरण के ज़रिए स्वाभाविक रूप से होता है। लिखित भाषा एक सांस्कृतिक artefact होती है, जो स्वाभाविक रूप से प्राप्त नहीं होती। बच्चों को अपनी हासिल मौखिक भाषा और उसी भाषा की लेखन प्रणाली (लिपि) के बीच सम्बन्ध बनाने के लिए स्पष्ट निर्देश की आवश्यकता होती है। पहले यह समझना होगा कि हम उन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जिनमें अर्थ होता है, इन शब्दों को उन ध्वनियों में विभाजित किया जाता है जिन्हें लिपि में प्रतीकों के रूप में दिखाया जाता है। लिपि पढ़ने और लिखने के लिए स्पष्ट निर्देश की आवश्यकता होती है। बच्चा लिपि के सभी वर्ण सीख ले, इसके इन्तज़ार में अर्थ-निर्माण को स्थगित नहीं किया जाना चाहिए।

C-10.1:सीखने के प्रतिफल

तालिका 49

	A	B	C	D	E
	C-10.1 : L1 में ध्वनि जागरूकता विकसित करती है और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाती है और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) में विभाजित करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• तुकबन्दी गाती है	• तुकबन्दी वाले शब्दों और अनुप्रास की पहचान करती है	• तुकबन्दी वाले शब्दों और अनुप्रासों का निर्माण करती है		
2	• शब्दांश (syllables) ध्वनियों की नक़ल और पुनरुत्पादन करती है	• शब्दों में शुरुआत और अन्त के शब्दांशों की पहचान करती है	• शब्दांशों को उनके व्यंजन और स्वर ध्वनियों में तोड़ती है		
3		• 2-3 शब्दांशों को मिलाकर सरल शब्द बनाती है	• परिचित शब्द निर्माण के लिए ध्वनियों (स्वर और व्यंजन) को जोड़ती है		

C-10.2:सीखने के प्रतिफल

तालिका 50

	A	B	C	D	E
	C-10.2 : किताब का बुनियादी ढाँचा/प्रारूप, छपे हुए शब्द और उनकी छपाई की दिशा के आईडिया को समझती है, और मूलभूत विराम चिह्नों को पहचानती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• सामान्य संकेतों, प्रतीक चिह्नों और लेबलों को पहचानती/जानती है (मसलन, ऊपरी आवरण के रंग के आधार पर बिस्कुट का ब्रांड, साबुन का ब्रांड)	• किताब लेकर उसे खोलते और खोजने की जिज्ञासा में पन्ने पलटती है	• बताती है कि छपी हुई सामग्री (किताब, अख़बार, पर्चा) जानकारी प्रदान करती है		
2	• छपे हुए टेक्स्ट और चित्रों के बीच अन्तर करती है	• किसी छपे हुए पृष्ठ पर बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे तक शब्दों का अनुसरण करती है		• सामान्य विराम चिह्नों (पूर्ण विराम, प्रश्न चिह्न) को पहचानती है	• सामान्य विराम चिह्नों (पूर्ण विराम, प्रश्न चिह्न) का उचित इस्तेमाल करती है

3	• कहानी में चित्रों पर आधारित परिचित किताबें पढ़ने का नाटक (pretend) करती है	• किसी टेक्स्ट का अनुसरण करते हुए शब्द-जैसी समुचित ध्वनियाँ निकालते हुए पढ़ने का बहाना करती है	• आवरण पृष्ठ को देखकर किताब के बारे में बात करती है (आवरण के संकेतों का इस्तेमाल करके अनुमान लगाती है)		

C-10.3:सीखने के प्रतिफल

तालिका 51

	A	B	C	D	E
	C-10.3 : लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानती है और इस ज्ञान का इस्तेमाल शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• जानती है कि शब्द अक्षरों से बने होते हैं	• अक्षरों (मूलाक्षर/ बारहखड़ी/कगुनीता) को देखकर पहचानती है और उन्हें संगत ध्वनियों से जोड़ना शुरू कर देती है	• ज़्यादा इस्तेमाल किए जाने वाले अक्षरों (संयुक्ताक्षरों सहित) को पहचानती है और सम्बन्धित ध्वनियों से उन्हें जोड़ती है	• सभी अक्षरों (संयुक्ताक्षरों सहित) को पहचानती है और उन्हें सम्बन्धित ध्वनियों से जोड़ती है	
2		• दो-अक्षरों वाले सामान्य शब्दों को पढ़ लेती है जो परिचित और पहचाने अक्षरों से बने होते हैं	• तीन से चार अक्षरों वाले सामान्य शब्दों (ऐसे शब्द भी जिनमें आमतौर पर व्यंजन दो बार आते हैं) को पढ़ लेती है जो परिचित और पहचाने अक्षरों से बने होते हैं	• कई अक्षरों वाले शब्दों (व्यंजन समूहों सहित) को पढ़ लेती है	• कई अक्षरों वाले शब्दों (व्यंजन समूहों सहित) को और ग़ैर-शब्दों (non-words) को सटीक ढंग से पढ़ती है
3		• अपने परिवेश की चीज़ों के लेबल और अपना नाम, दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानती है	• आमतौर पर इस्तेमाल होने वाली चीज़ों, सर्वनामों और जोड़ने वाले शब्दों को दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानती है		

C-10.4:सीखने के प्रतिफल

तालिका 52

C-10.4 कहानियों और गद्यांशों को (L1 में) सटीकता और प्रवाह के साथ, उचित विरामों और आवाज़ में उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1		• अलग-अलग अक्षर ध्वनियों और दृश्य शब्दों (sight words) को पहचानकर ज्ञात शब्दों वाले छोटे वाक्यों को पढ़ती है	• परिचित शब्दों वाले कुछ वाक्यों को सटीक ढंग से पढ़ती है	• उपयुक्त लय और विराम के साथ छोटे गद्यांशों को सटीक तरीक़े से पढ़ती है	• उपयुक्त लय, विराम और आवाज़ में उतार-चढ़ाव के साथ छोटे गद्यांशों को सटीक और धाराप्रवाह ढंग से पढ़ती है

C-10.5:सीखने के प्रतिफल

तालिका 53

C-10.5 : छोटी कहानियाँ पढ़ती है और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, खुद से ही उनका अर्थ समझती है (L1)

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• "बोल कर पढ़े गए" को सुनती है और शिक्षक द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब देती है	• शिक्षक के साथ "साझा पठन" में भाग लेती है और पाठ के बारे में चर्चा करती है	• शिक्षक के साथ "निर्देशित / मार्गदर्शित पठन" में भाग लेती है और पाठ के बारे में चर्चा करती है	• समान पाठ्य और दृश्य सामग्री वाली पुस्तकों का "स्वतंत्र पठन" शुरू करती है	• दृश्य सामग्री की तुलना में अधिक पाठ्य सामग्री वाली पुस्तकों का "स्वतंत्र पठन" शुरू करती है
2	• चित्र पुस्तकें पढ़ती है और वस्तुओं तथा क्रियाओं की पहचान करती है	• चित्र पुस्तकें पढ़ती है, पात्रों और कथानक की पहचान करती है और कहानी को छोटे-छोटे क्रमों में बताती है	• छोटे सरल texts वाली पुस्तकों को बोलकर पढ़ती है, सटीक अनुक्रम और विस्तार के साथ कहानी का अनुमान लगाने और उसे फ़िर से कहने के लिए दृश्य संकेतों और टेक्स्ट का इस्तेमाल करती है	• कहानी की अपरिचित किताबें पढ़ना शुरू करती है और शिक्षक के मार्गदर्शन से उन्हें समझती है • कथानक और पात्रों की पहचान करती है	• पात्रों, कथानकों, अनुक्रमों और लेखक के दृष्टिकोण को पढ़ती और पहचानती है

C-10.6:सीखने के प्रतिफल

तालिका 54

C-10.6 छोटी कविताएँ पढ़ती है और शब्दों व कल्पना के चुनाव के लिए कविता की सराहना करना शुरू करती है (L1)

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1				• छोटी कविताएँ पढ़ती है और उनका शाब्दिक अर्थ बताती है	• छोटी कविताएँ पढ़ती है और कवि की कल्पना का अनुमान लगाती है

C-10.7:सीखने के प्रतिफल

तालिका 55

C-10.7 : लघु समाचारों, निर्देशों, व्यंजन विधियों और प्रचार सामग्री को पढ़ती-समझती है (L1)

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1			• लिखित सरल निर्देशों के एक छोटे समूह को पढ़ती है और उनका पालन करती है	• खेल खेलने और साथियों के साथ खेलने के लिए सरल निर्देशों को पढ़ती है	• छोटे-छोटे समाचार और प्रचार के पर्चे पढ़ती है और उनकी अन्तर्वस्तु की व्याख्या करती है

C-10.8: सीखने के प्रतिफल

तालिका 56

	A	B	C	D	E
	C-10.8: अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखती है (L1)				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• विभिन्न लेखन उपकरणों का उपयोग करती है मसलन चॉक का टुकड़ा, पेंसिल, रंगीन पेंसिल, रंगने वाली कूँची	• आसानी और प्रवाह के साथ लेखन/रेखांकन उपकरणों का इस्तेमाल करती है			
2		• ऐसे अक्षर लिखना शुरू करती है जिन्हें वे पहचानती है और उनका उपयोग सरल शब्द बनाने के लिए करती है	• सटीक ढंग से अक्षरों को लिखती है और सरल शब्द व वाक्य बनाती है	• श्रुतलेख कार्य में सटीक तरीक़े से 3 या 4 अक्षरों वाले शब्द लिखती है	• श्रुतलेख कार्य में छोटे वाक्य लिखती है
3	• रेखांकन करती है, चित्र बनाती है और अपने रेखांकन के आशय को मौखिक रूप से व्यक्त करती है	• ज़्यादा सटीक तरीक़े से दृश्य रूपों और वस्तुओं को रेखांकित करती है, रंगती है और मौखिक रूप से रेखांकन/चित्र को समझाती है	• रेखांकन करती है/चित्र बनाती है और रेखांकन/चित्र में सरल शब्द/वाक्य जोड़ती है (अपनी आविष्कृत वर्तनी सहित)	• चित्रों का एक क्रम बनाती है और उनके साथ छोटे वाक्य लिखती है	• चित्रों का एक क्रम बनाती है और उनके साथ सटीक ढंग से छोटे वाक्य लिखती है
4				• शब्द और छोटे वाक्य लिखकर चित्र-कार्ड का वर्णन करती है	• चित्र पुस्तक से अनुमान लगाकर एक कहानी लिखती है
5				• सरल प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए सहपाठियों के लिए संक्षिप्त निर्देश लिखती है	• घटनाओं व अनुभवों के छोटे जर्नल और विवरण लिखती है

C-10.9:सीखने के प्रतिफल

तालिका 57

	A	B	C	D	E
	C-10.9 : विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाती है (L1)				
	उम्र 3 से 8				
1	• बोलकर पढ़ी जा रही कहानियों और कविताओं में रुचि दिखाती है	• शिक्षक द्वारा दी गई कई पुस्तकों में से एक को चुनती है और बताती है कि उन्होंने पुस्तक को क्यों चुना	• छोटी चित्र पुस्तकों को ख़ुद चुनती और पढ़ती है, दूसरे बच्चों से पुस्तक के बारे में बात करती है	• पुस्तक चुनने में अपनी पसन्द स्पष्ट करती है, नियमित आवृत्ति पर छोटी पुस्तकें पढ़ती है	• तरह-तरह की कथा और ग़ैर-कथा, दोनों तरह की किताबों में दिलचस्पी दिखाती है और उन्हें पढ़ती है
2	• किताबों का ध्यान रखती है	• किताबों को कक्षा में उनके उचित स्थान पर वापस रखती है			• स्कूल के पुस्तकालय में किताबों की मरम्मत करती है और उन्हें ठीक करती है

CG-11: बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं

C-11.1:सीखने के प्रतिफल

तालिका 58

	A	B	C	D	E
	C-11.1 : ध्वनि जागरूकता विकसित करती है और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाती है और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) में विभाजित करती है				
	उम्र 3 से 8				
1			• तुकबन्दियाँ गाती है	• तुकबन्दी वाले शब्दों और अनुप्रास की पहचान करती है	• तुकबन्दी वाले शब्दों और अनुप्रासों का निर्माण करती है
2			• शब्दांश (syllabic) ध्वनियों की नक़ल और पुनरुत्पादन करती है	• शब्दों में शुरुआत और अन्त के शब्दांशों की पहचान करती है	• शब्दांशों को उनके व्यंजन और स्वर ध्वनियों में तोड़ती है
3				• 2-3 शब्दांशों को मिलाकर सरल शब्द बनाती है	• परिचित शब्द निर्माण के लिए ध्वनियों (स्वर और व्यंजन) को जोड़ती है

C-11.2:सीखने के प्रतिफल

तालिका 59

	A	B	C	D	E
	C-11.2 : लिपि की वर्णमाला के बार-बार दिखने वाले अक्षरों को पहचानती है और इस ज्ञान का इस्तेमाल सरल शब्दों और वाक्यों को पढ़ने-लिखने के लिए करती है				
	उम्र 3 से 8				
1				• अक्षरों को देखकर पहचानना और संगत ध्वनियों से जोड़ना शुरू करती है	• वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानती है
2				• दो-अक्षरों वाले सामान्य शब्दों को पढ़ लेती है जो परिचित और पहचाने अक्षरों से बने होते है	• तीन या चार अक्षरों वाले सामान्य शब्दों को पढ़ लेती है जो परिचित होते हैं • आमतौर पर इस्तेमाल होने वाली चीज़ों, सर्वनामों और जोड़ने वाले शब्दों को दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानती है
3				• अपने परिवेश की चीज़ों के लेबल और अपना नाम, दृश्य शब्दों (sight words) के रूप में पहचानती है	
4				• बोला हुआ सुनकर छोटे शब्द लिख लेती है	

1.1.5 सौन्दर्य बोध और सांस्कृतिक विकास

इस आयु वर्ग के बच्चे न केवल कला और सौन्दर्य की अभिव्यक्ति का आनन्द ले रहे होते हैं, बल्कि वे कला के साथ जुड़ाव के माध्यम से अपनी संवेदी और सूक्ष्म मोटर क्षमताओं (fine motor abilities) का भी विकास कर रहे होते हैं। कलात्मक अभिव्यक्ति, भावनात्मक अभिव्यक्ति और नियमन का भी माध्यम है। कला में बातचीत और काम की मौखिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पैटर्न्स का अवलोकन, पुनरुत्पादन और उनका विस्तार करना, सभी कला रूपों के लिए केन्द्रीय कौशल होता है। इसलिए दृश्य कला, संगीत, गतिविधि और नाटक के माध्यम से कला के साथ जुड़ाव, बुनियादी शिक्षा स्तर पर विकास के सभी पहलुओं के साथ समग्र जुड़ाव है। याद रखना होगा कि विकास के इस स्तर पर कौशल निर्माण की बजाय बच्चे की मुक्त और रचनात्मक अभिव्यक्ति पर अधिक ज़ोर दिया जाना चाहिए।

CG-12: बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीक़े से अभिव्यक्त करते हैं

C-12.1: सीखने के प्रतिफल

तालिका 60

C-12.1 : विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करती है और उनसे खेलती है

← उम्र 3 से 8 →

	A	B	C	D	E
1	• ज़रूरी कला सामग्रियों, उपकरणों और औज़ारों को पकड़ती है	• कला सामग्रियों, औजारों और उपकरणों (मसलन डंडे, बीज, कंकड़, पत्थर, चाक, धागे, पेंसिलें, कूँचियाँ, क्रेयॉन्स, पाउडर, कैंचियाँ) का इस्तेमाल करते हुए विभिन्न प्रकार की पकड़ों का पता लगाती है		• गाढ़े और हल्के अंकनों/चिह्नों/रेखाओं को बनाने के लिए दबाव में बदलाव करने में सक्षम होती है	
2	• दृश्य कलाकृतियों में चिह्न, रेखाएँ, गोंजा-गांजी करते हुए बड़े और छोटे आकार को तथा अन्य द्विआयामी और त्रिआयामी आकृतियों को समझती है		• साथियों, सुगमकर्ताओं और स्थानीय समुदाय के सहयोग से बड़े पैमाने के काम (मसलन फ़र्श पर रंगोली, भित्ति चित्र, मूर्ति) बनाती है	• उपलब्ध जगह या सामग्री के आधार पर ख़ुद के काम को बड़े और छोटे आकारों में मापने में सक्षम होती है (मसलन मिट्टी की एक छोटी गुड़िया, या काग़ज़ की एक बड़ी गुड़िया बनाना)	
3	• सामग्रियों (मसलन मिट्टी और पानी, रेत और पानी, आटा और पानी, पेंट और पानी) को मिलाकर आकृतियाँ और ठप्पे बनाती है	• मिट्टी या आटे जैसी सामग्री को बेलकर और थपथपाकर त्रि-आयामी आकृतियाँ बनाती है	• अपनी व्यवस्था के लिहाज़ से अलग-अलग गाढ़ेपन, रंग और गठन की सामग्रियों को मिलाकर कोलाज बनाती है • विभिन्न प्रकार की प्राप्त सामग्रियों और वस्तुओं को मिलाकर त्रि-आयामी व्यवस्था/संयोजन बनाती है		
4	• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके ठप्पे (imprints) बनाती है		• ब्लॉक, स्टेंसिल, प्राप्त वस्तुओं और प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके सरल पैटर्न बनाती है	• सामग्रियों को विभिन्न आकारों, आकृतियों, बनावटों और रंगों के लिहाज़ से मिलाकर और व्यवस्थित करके पैटर्न बनाती है	• किसी सामग्री के साथ जोड़-तोड़ करके तरह-तरह के गठन बनाती है (मसलन मिट्टी, कपड़ा, काग़ज़, रबड़, लकड़ी)

C-12.2:सीखने के प्रतिफल

तालिका 61

	A	B	C	D	E
	C-12.2 : संगीत, रोल-प्ले, नृत्य और गतिविधियाँ निर्मित करने के लिए अपनी आवाज़, शरीर, स्थानों और तरह-तरह की चीज़ों की खोज करती हैं, उनसे खेलती हैं				
	उम्र 3 से 8				
1	• आवाज़ और शरीर के माध्यम से लय की खोज करती है (ताली बजाती है, थपकी देती है, हाथ हिलाती है, कूदती है, उछलती है, लय में गीत पढ़ती है)	• आवाज़, शरीर या दूसरी चीज़ों के साथ लय खोजते समय तेज़ और धीमी गति को अलग करती है	• आवाज़, शरीर या दूसरे वाद्ययंत्रों के साथ खेलते हुए तेज़, मध्यम और धीमी गति में अन्तर करती है	• धीमी और मध्यम गति में सरल लयबद्ध पैटर्न के साथ खेलती है	• गाने और गति में ताल का अनुसरण करती है और परिचित ताल पैटर्न के आधार पर ख़ुद विविधताओं की खोज करती है
2	• आवाज़, शरीर, वस्तुओं और उपकरणों को बजाकर कई तरह की आवाज़ें पैदा करती है	• रोल-प्ले, एकल या समूह संगीत व्यवस्थाओं, नक़ल आदि में आवाज़, शरीर या वाद्ययंत्रों का उपयोग करके सन्दर्भ/स्थिति के अनुसार विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ पैदा करती है	• अपने गाने और बोलने की आवाज़ के बीच अन्तर की पड़ताल करती है और दोनों का उपयोग मस्ती से करती है • गायन और वादन के बीच अन्तर करती है और दोनों को सुनती है	• आवाज़, शरीर, यंत्रों और चीज़ों का इस्तेमाल करके परिचित गीतों या स्थितियों में ध्वनि सुधार करती है (मसलन किसी गीत पर शरीर के विभिन्न अंगों/उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए ताल देना, ध्वनियों के माध्यम से किसी नाटकीय दृश्य का माहौल बनाना)	
3	• आवाज़ या शरीर का उपयोग करते समय या यंत्रों और वस्तुओं को बजाते हुए आवाज़ (तेज़ और धीमी) और पिच (उच्च और निम्न) समझती है		• विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने, संगीत बनाने, चरित्र विकसित करने और स्थितियाँ बनाने के लिए आवाज़ और पिच का उपयोग करती है	• संगीत, स्थान, सन्दर्भ और स्थिति के मुताबिक आवाज़ और पिच को बदलती है	• आवाज़ या वाद्य यंत्र का इस्तेमाल करके पिच का मिलान करने की कोशिश करती है
4	• दैनिक जीवन की परिस्थितियों में मौन और स्थिरता की खोज करती है	• संगीत, नाटक और गतिविधियों के ज़रिए मौन और स्थिरता के क्षणों से खेलती है		• स्थान, सन्दर्भ और स्थिति के मुताबिक मौन और स्थिरता की अलग-अलग अवधियों की खोज करती है	

C-12.3:सीखने के प्रतिफल

तालिका 62

	A	B	C	D	E
	C-12.3 : कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नए तरीकों की खोज करती है और कल्पनाशीलता के साथ कार्य करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• ख़ुद की खोजों के साथ सम्बन्ध बनाने के लिए अपने परिवेश, स्थानीय संस्कृति और कला के उदाहरणों पर ग़ौर करती है	• कलाओं के सम्बन्ध में अपने विचारों, औज़ारों और काम के तरीक़ों को साझा करती है और परिचित उदाहरणों के आधार पर उनमें बदलाव करती है	• कला के माध्यम से विभिन्न अभिव्यक्तियों, विचारों और भावनाओं की पहचान करती है, इनकी व्याख्या करती है और इन्हें अपनी कलात्मक खोजों में लागू करती है	• ख़ास विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हुए कई दृष्टिकोणों या विविधताओं की खोज करती है (मसलन शरीर, आवाज़, मुखौटे, कठपुतली या गति संयोजनों का इस्तेमाल करके बिल्ली की भूमिका निभाने के कई तरीक़ों के बारे में सोचना) • अपने संसाधनों और कई समाधानों की खोज करते हुए चुनौतियों का अनवरत सामना करती है	
2	• वस्तुओं, लोगों और भावनात्मक अनुभवों को प्रतीक के रूप में दिखाने के लिए तरह-तरह के दृश्य विधानों, शारीरिक गतिविधियों और ध्वनियों का निर्माण करती है	• दृश्य और प्रदर्शन के ज़रिए लोगों, जानवरों, पौधों व चीज़ों आदि की कुछ पहचानने योग्य भौतिक और व्यावहारिक विशेषताओं की नक़ल करती है	• अपने विचार और अनुभव व्यक्त करने के लिए रूपों, रंगों, चरित्रों, ध्वनियों, स्थानों व स्थितियों को कल्पना के ज़रिए जोड़ती है	• कला बनाते हुए और उसे देखते हुए विषयवार ब्योरों, भौतिक सामग्री (बनावट, रंग, आकार और रूप), स्थान और परिस्थिति पर ध्यान देती है	

C-12.4:सीखने के प्रतिफल

तालिका 63

	A	B	C	D	E
	C-12.4 : कला में सहयोगात्मक ढंग से कार्य करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• व्यक्तिगत और समूह में पैदा होने वाली ध्वनि और गति को समझती है	• दोस्तों के साथ साझेदारी में विभिन्न किस्म की बातें, गतियाँ, आवाज़ें और दृश्य कलाएँ उत्पादित करती है	• जोड़े या समूह में खेलते या प्रदर्शन करते समय बातचीत, गति और ध्वनि का समन्वय करने का प्रयास करती है • किसी जगह पर कला को व्यवस्थित करने या उसके प्रदर्शन में साथियों और सुगमकर्ताओं की मदद करती है	• साथी / समूह के साथ तालमेल बिठाने के लिए ख़ुद की आवाज़, पिच और गति को बदलती है	• रोल-प्ले, संगीत, नृत्य और गति के चरणों का प्रदर्शन करते समय उनके क्रम पर ध्यान देती है

C-12.5:सीखने के प्रतिफल

तालिका 64

	A	B	C	D	E
	C-12.5 : कला, स्थानीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों की रचना और अनुभव करते हुए विभिन्न तरह की प्रतिक्रियाएँ संप्रेषित करती है और इनकी सराहना करती है				
	उम्र 3 से 8				
1	• कलाकृतियों के सम्बन्ध में पसन्द, नापसन्द और अन्य विचारों को मौखिक/ ग़ैर-मौखिक रूप से को व्यक्त करती है	• कलाकृतियों के विभिन्न पहलुओं या स्थानीय सांस्कृतिक अभिव्यक्ति पर विचार देती है (मसलन किसी चरित्र की आवाज़ बेहद ऊँची और डरावनी थी)	• विभिन्न कलाकृतियों/व्यवस्थाओं/सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की तुलना करती है और तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ देती है		
2	• कला से सम्बन्धित गतिविधियों के दौरान दूसरों की उपस्थिति को पसन्द करती है	• साथियों के समूह से कला प्रक्रियाओं के दौरान प्रतिक्रियाएँ और विचार साझा करती है	• स्वीकार करती है कि कला में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की निजी प्राथमिकताएँ भिन्न होती है	• कलात्मक विचार और अभिव्यक्ति के सम्बन्ध में बहुत-सी प्रतिक्रियाओं को साझा करती है और प्रतिक्रियाओं में बहुलता की सराहना करती है	

1.1.6 सीखने की सकारात्मक आदतें

मौजूदा शोध बताते हैं कि विकास के जाने-पहचाने क्षेत्रों के साथ-साथ, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में उच्च स्तरीय कार्यकारी कार्यों (executive functions) और स्व-नियमन पर ध्यान देने से स्कूल के लिए बच्चे की तैयारी पर बहुत असर पड़ता है।

CG-13: बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं

C-13.1:सीखने के प्रतिफल

तालिका 65

	A	B	C	D	E
	C-13.1 ध्यान व सुविचारित कर्म: विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, योजना बनाने, ध्यान केन्द्रित करने तथा गतिविधियाँ निर्देशित करने के कौशल हासिल करती है				
	← उम्र 3 से 8 →				
1	• ख़ुद शुरू की गई गतिविधियों पर थोड़े समय के लिए ध्यान केन्द्रित करती है (मसलन पहेली पर काम करना) • ऐसे एक या दो कामों में रुचि बनाए रखती है जो उन्हें व्यस्त रखते हैं (मसलन संवेदी तालिका से 5-10 मिनट खेलती है)	• वयस्कों के संकेतों और मदद से गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करती है, जैसे रुकावट या विचलन के बावजूद थोड़े वक्त के लिए किसी समूह के लिए पढ़ी जाने वाली कहानियों को सुनना) • अपनी रुचि वाले विभिन्न प्रकार के कार्यों पर टिकती है (मसलन नाटक में भूमिका निभाती है और 10 मिनट के लिए किसी इलाके की सीमा बनाती है)	• बढ़ती हुई स्वतंत्रता के साथ चित्रकारी या ब्लॉक निर्माण जैसे कामों व गतिविधियों पर लम्बे समय तक ध्यान केन्द्रित करती है • अपनी रुचि वाले कामों के साथ लम्बे समय तक व्यस्त रहती है (मसलन 20 मिनट तक चित्र बनाना) • वयस्कों द्वारा शुरू किए गए उन कामों में भाग लेना शुरू करती है जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते (मसलन शिक्षक द्वारा शुरू किए गए छोटे समूह में भागीदारी)	• वयस्कों द्वारा शुरू किए गए उन कामों में भाग लेती है जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते (मसलन शिक्षक द्वारा शुरू किए गए छोटे समूह में भागीदारी) • लम्बे समय (20 मिनट) तक लगातार किसी काम में टिकती है	• वयस्कों द्वारा शुरू किए गए उन कामों में भाग लेती है जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते (मसलन शिक्षक द्वारा शुरू किए गए छोटे समूह में भागीदारी) • लम्बे समय (30 मिनट) तक लगातार किसी काम में टिकती है

C-13.2:सीखने के प्रतिफल

तालिका 66

C-13.2 : स्मृति और मानसिक लचीलापन : समुचित कार्यकारी स्मृति, मानसिक लचीलापन (समुचित तरीके से ध्यान बनाए रखने या बदलने के लिए) और आत्म-नियंत्रण (आवेगी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रतिरोध के लिए) विकसित करती है जो संरचित वातावरण में सीखने में उसकी मदद करेगा

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• न दिखने वाले चित्र या किसी कहानी को याद करने या मौखिक रूप से वर्णित करने के ज़रिए स्मृति का अभ्यास करती है • याद करती है कि परिचित परिवेश में चीज़ें कहाँ रखीं हैं (मसलन अलमारी से अतिरिक्त कपड़े निकालना)	• अपनी देखभाल या खेलने के लिए ज़रूरी चीज़ों की तालिका को दोहराती है • स्मृति और मिलान करने के सामान्य खेल खेलती है • सरल कामों को पूरा करने के लिए 2 चरण वाले निर्देशों को याद रखती है और उनका पालन करती है (मसलन "अपने हाथ धोओ, फ़िर नाश्ता तैयार करने में मदद करो या नाश्ता खाओ") • कहानियों या गीतों के साथ होने वाली क्रियाओं को याद रखती है	• बहुत से चरणों वाले निर्देशों को पूरा करने के लिए कई चरणों को क्रमवार याद रखती है (मसलन पहेली पूरा करो, फ़िर से उसे अलमारी पर रखो, और वापस समूह में शामिल हो जाओ) • दी गई गतिविधि के लिए उठाए गए क़दमों के बारे में दूसरे बच्चों को सिखाती है (मसलन दोस्त को बताती है कि नाश्ता करने से पहले हाथ धोने के लिए साबुन का इस्तेमाल कैसे करें) • 5 वाक्यों तक की छोटी कहानियों और गीतों को याद रखती है और सुना सकती है	• याद करती है और तुरन्त सुना सकती है (मसलन एक ही क्रम में दोहराए गए 4 अंक)	• याद कर सकती है और सुना सकती है, लापता चीज़ों की पहचान कर सकती है (मसलन दो समान दृश्यों, जिनमें एक या दो महत्त्वपूर्ण अन्तर हों, का अध्ययन करती है और अन्तर की पहचान करती है)

2	• दिनचर्या में बदलाव के साथ समायोजन करती है • गतिविधियों के बीच बदलाव के संकेतों को पहचानती है • दैनन्दिन कामों में एक काम से दूसरे काम में संक्रमण कर लेती है	• जब कोई चीज़ पहली बार काम नहीं करती है, तो किसी वयस्क की मदद से किसी अन्य नज़रिए को लागू करने की कोशिश करती है और “संज्ञानात्मक लचीलापन” प्रदर्शित करती है (मसलन किसी संरचना पर चढ़ने का पहला प्रयास जब काम नहीं करता है तब पहुँच से बाहर की चीज़ को अन्य तरीके, अन्य औज़ार या अन्य इन्सान के ज़रिये हासिल करने की कोशिश करती है) • ज़रूरत पड़ने पर किसी काम या गतिविधि से दूसरे काम या गतिविधि पर ध्यान बदल देने की क्षमता प्रदर्शित करती है	• खेल या गतिविधि के नए नियमों से अनुकूलित हो जाती है (मसलन पहले रंग और फ़िर आकृति के आधार पर पत्तों की छँटाई) • समाधान या रणनीति खोजने के लिए वयस्कों और दूसरे बच्चों के विचारों पर ध्यान देती है • वयस्कों के ज़्यादा प्रोत्साहन के बिना लचीलेपन और अनुकूलन की क्षमता प्रदर्शित करती है (मसलन खिलौने साझा करना या नई चीज़ें आजमाना) • अलग-अलग गतिविधियों को आज़माने के वयस्कों के सुझावों पर लगातार प्रतिक्रिया देती है	• कक्षा की स्थितियों को अपनाती और उनके अनुकूल बनती है • कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेती है और सुधार के लिए सुझाव लेती है	• सीखने के अनुकूल कक्षा स्थितियों का निर्माण करती है, उन्हें अपनाती है और उनके अनुकूल बनती है • सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती है, सुझावों और प्रतिक्रियाओं का स्वागत करती है
3	• अपनी बारी का इन्तज़ार करती है और वयस्क की मदद से थोड़े समय के लिए लाइन में इन्तज़ार करती है	• किसी दोस्त के व्यवहार या बातचीत से दुखी होने पर वयस्कों की मदद खोजती है • दोस्तों के साथ परेशानी जताने के लिए (काटने या धक्का देने की बजाय) वयस्कों की मदद से शब्दों, संकेतों या इशारों का उपयोग करना शुरू कर देती है • वयस्कों की मदद से आवेगमय व्यवहार को रोकना शुरू करती है (मसलन कहानी सुनते वक्त किसी सवाल का जवाब देने की शुरुआती प्रतिक्रिया को शिक्षक के याद दिलाने पर रोक लेती है)	• अधिक स्वतंत्रता के साथ आवेगों को नियंत्रित करती है (मसलन दौड़ने की बजाय चलती है; झपटने की बजाय खिलौने के लिए अपनी बारी के लिए पूछती है; बीच में बोल पड़ने की बजाय विचार साझा करने के लिए इन्तज़ार करती है) • अपने कामों को बार-बार नियंत्रित करने के लिए रणनीतियों का इस्तेमाल करती है, जैसे शारीरिक दूरी बनाना या कोई दूसरा खिलौना या गतिविधि खोजना	• भावनाओं का प्रबन्धन करती है, अपनी बारी का इन्तज़ार करती है, नियमों का पालन करती है, नियम बनाती है, नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करती है और गतिविधियों में बदलाव के लिए सुझाव देती है	

C-13.3:सीखने के प्रतिफल

तालिका 67

C-13.3: अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण: वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करती है, आश्चर्य करती है और विभिन्न इंद्रियों का इस्तेमाल करते हुए अन्वेषण करती है, वस्तुओं के साथ छेड़-छाड़ करती है, सवाल पूछती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• बगीचे में/बाहर समय बिताने में ख़ुश होती है	• प्राकृतिक वातावरण के प्रति जिज्ञासा और आश्चर्य व्यक्त करती है	• अपनी ख़ुशी और आश्चर्य को व्यक्त करने के लिए रेखांकन करती है, चित्र बनाती है, गाती है और नृत्य करती है	• खेल, संगीत और नृत्य के सहारे दूसरे बच्चों के साथ अपनी खुशी साझा करना पसन्द करती है	• अपनी खुशी को अभिव्यक्त और स्पष्ट करने के लिए भाषा का उपयोग करती है
2	• वयस्कों की मदद से तात्कालिक परिवेश (घर के बाहर) की छान-बीन में उत्सुकता दिखाती है	• वयस्कों की मदद या उसके बिना तात्कालिक परिवेश (घर के बाहर) की छान-बीन में उत्सुकता दिखाती है	• प्रकृति / आस-पास के परिवेश में मौजूद चीज़ों की छान-बीन करने में जिज्ञासा और उत्सुकता दिखाती है	• उत्सुकता दिखाती है और आस-पास के परिवेश की छान-बीन करने की पहल करती है, प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल करती है (किसी वयस्क के निर्देशन में)	• दूसरों के साथ निडरता से लेकिन सम्मानपूर्वक अन्तःक्रिया करती है • उत्सुकता दिखाती है और आस-पास के परिवेश की छान-बीन करने की पहल करती है, प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल ज़िम्मेदारी से करती है

C-13.4:सीखने के प्रतिफल

तालिका 68

C-13.4: कक्षा के नियम : प्रतिनिधित्व (agency) और समझ के साथ नियमों को अपनाती और उनका पालन करती है

उम्र 3 से 8

	A	B	C	D	E
1	• कक्षा नियमों के प्रति वयस्कों के व्यवहार का अवलोकन करती है और उनका अनुसरण करती है	• शिक्षक के संकेतों के साथ कक्षा नियमों का अनुसरण करती है	• कक्षा नियमों का पालन करती है और इसमें दूसरों की मदद करती है • शिक्षकों की मदद से 'स्वयं करें' (Do-it-yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाती है और उनका अनुसरण करती है	• कक्षा नियमों पर चर्चा में भाग लेती है और नियमों के अनुरूप व्यवहार करती है • 'स्वयं करें' (Do-it-yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाती है और उनका अनुसरण करती है	• कक्षा नियम स्थापित करने में भाग लेती है और उनके अनुसार व्यवहार करती है • 'स्वयं करें' (Do-it-yourself - DIY) कक्षा कार्य चार्ट/पोस्टर बनाती है, उन्हें दर्शाती है; ज़िम्मेदारी से उनका अनुसरण करती है

अनुलग्नक 2:
उदाहरणात्मक प्रक्रियाएँ

इस अनुलग्नक में फाउंडेशनल स्टेज के लिए NCF के विभिन्न महत्त्वपूर्ण तत्वों की उदाहरणात्मक प्रक्रियाएँ (Illustrative Practices) दी गई हैं। ये नमूने देश भर के शिक्षकों और अन्य हितधारकों से लिए गए हैं। कक्षा अनुभव की समृद्धि को दर्शाने के लिए इनमें से कुछ दृष्टान्त शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं से लिए गए हैं, जिससे भारत की भाषाई विविधता और भाषाशास्त्रीय विरासत की संपदा की चमक दिख जाए।

हम एक दिन, एक सप्ताह और एक वर्ष के लिए योजना और तैयारी के उदाहरणों के साथ शुरू करते हैं, इसमें वे गतिविधियाँ होंगी जो कक्षा में की जा सकती हैं। हम विभिन्न आयोजनों और मंचों के कुछ उदाहरणों के साथ समाप्त करेंगे जिनका उपयोग शिक्षकों को सक्षम और सशक्त बनाने के लिए किया जा सकता है।

इन्हें इसलिए नहीं चुना गया है कि वे परिपूर्ण हैं, बल्कि इसलिए कि वे इस NCF की भावना के करीब हैं। साथ ही ये विभिन्न सन्दर्भों में हमारी स्कूली शिक्षा व्यवस्था की सम्भावनाओं को प्रदर्शित करते हैं।

1. सीखने के लिए योजना

इस खण्ड में दो प्रकार के दृष्टान्त शामिल हैं - खण्ड 1.1 में पूरे शैक्षणिक वर्ष के लिए शिक्षक की शिक्षण योजना है, जिसमें दर्शाया है कि इसे दैनिक योजना में कैसे शामिल किया जाए; खण्ड 1.2 में भाषा शिक्षण के लिए साप्ताहिक और दैनिक योजनाओं के नमूने हैं - एक ओड़िया में और दूसरा हिन्दी में।

1.1 लीला की योजना

लीला राजस्थान के टोंक के पास एक गाँव के सरकारी प्राथमिक स्कूल में पहली कक्षा के बच्चों को पढ़ाती हैं। इस गाँव के लोग मुख्य रूप से हड़ौती बोलते हैं। इस कक्षा में बच्चों का मिश्रित समूह है, यानी पिछले 3 वर्षों में कुछ बच्चे आँगनवाड़ी जाते रहे, जबकि कुछ के लिए यह किसी भी तरह की स्कूली शिक्षा से पहला परिचय है। वे अपनी शिक्षण योजना बनाते और तैयारी करते समय यह बात ध्यान में रखती हैं।

उनके रिकॉर्ड, वार्षिक योजना, तिमाही योजना, कम अवधि - हफ़्तों, दिनों के लिए नमूना शिक्षण योजनाएँ, और सीखने के प्रतिफल से संबंधित नमूना अवलोकन नीचे दिए गए हैं।

1.1.1 कक्षा 1 के लिए वार्षिक शिक्षण योजना

तालिका 1

उप-डोमेन	सीखने के प्रतिफल
सुनकर समझना और बोलना	1. भाषा की विविध विधाओं जैसे गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप, संवाद, चित्र दृश्य पर चर्चा आदि। 2. ध्यान से एवं धैर्यपूर्वक समझना। 3. परिवेश एवं सन्दर्भ से सम्बन्धित सामग्री को समझना। 4. गति एवं हाव-भाव के अनुसार बोलना। 5. परिचित एवं नवीन परिस्थितियों में सहजता से अपने विचार प्रस्तुत करना। 6. प्रश्न बनाना व पूछना। 7. घर, परिवेश एवं विद्यालय की भाषा में तालमेल बैठाकर अपने अनुभव व्यक्त करना। 8. सुनी हुई बात को अपने शब्दों में कहना। 9. पढ़ी गई सामग्री को अपने शब्दों में कहना। 10. गीत कविता, कहानी को अपने विचारों को अकेले तथा समूह में प्रस्तुत करना। 11. सुने हुए गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप आदि में अपने अनुभव को जोड़कर अपनी बात कहना। 12. अपने अनुभव एवं कल्पनालोक की बातों को सहज ढंग से कहना। 13. सुनी, पढ़ी सामग्री में क्या कौन, कब, कैसे कहाँ जैसे प्रश्न पूछ पाना एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना। 14. कविता, कहानी को अपनी कल्पना से आगे बढ़ाते हुए बोलना। 15. ध्वन्यात्मक शब्दों के साथ खेलने व गढ़ने के अवसर का लाभ उठाना, जैसे अक्कड़ बक्कड़
पढ़कर समझना	1. अनुमान लगाकर पढ़ना एवं अर्थ खोजना। 2. शब्दों और वाक्यों को वर्ण जोड़कर पढ़ने की बजाय इकाई रुप समझकर पढ़ना। 3. अपने परिवेश में उपलब्ध सामग्री का अनुमान लगाकर समझते हुए पढ़ना। 4. परिवेश में उपलब्ध सन्दर्भों, चित्रों व छपी हुई सामग्री को पढ़कर समझना।
लेखन अभिव्यक्ति	1. शब्द और वाक्य को स्पष्ट रुप से लिख सकना। 2. सुनी हुई विषयवस्तु अनुभवों को अपने शब्दों में लिखना। 3. किसी कविता या कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखना। 4. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखना। 5. सुनी हुई विषयवस्तु को यथारुप लिखना। (श्रुतलेख) 6. तार्किक चिन्तन के आधार पर सरल रचनाएँ करना एवं अपनी बात लिखना।
व्यावहारिक व्याकरण	(वास्तविक सन्दर्भ में समझना एवं प्रयोग में लाना।) चन्द्रबिन्दु, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर, 'र' के रूप, पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, लिंग, वचन आदि को पहचानना तथा प्रयोग में लाना।

1.1.2 तिमाही योजना

तालिका 2

<table>
<tr><th>#</th><th>महीना</th><th>विषयवस्तु</th><th>अधिगम उद्देश्</th></tr>
<tr><td>1</td><td>जुलाई</td><td>• आरम्भिक गतिविधियाँ
• मेरा गाँव, हमारा शहर, पक्षी एवं जानवर, जानवर, फल, सब्जी, हमारा शरीर, शरीर के अंग, चित्र पठन
• पुस्तकालय या अन्य सन्दर्भ पुस्तकें (कहानी)</td><td rowspan="3">• सुनकर समझना और समझकर बोलना
  • सुनी हुई सरल छोटी कविता / बालगीत / कहानी को स्पष्ट शब्दों में दोहरा सकें।
  • कविता बाल गीत को लय, गति और हावभाव का तालमेल करते हुए सुना सकें।
• पढ़ना और पढ़कर समझना
  • चित्रों की सहायता से चित्र के नाम की आकृति (शब्द) का पठन कर सकें।
  • चित्र की मदद से परिचित शब्दों को पढ़कर मिलान कर सकें और परिचित शब्दों को स्वतंत्र रूप से (बिना चित्र की सहायता से) पहचान कर सकें एवं पढ़ सकें।
  • शब्दों से सम्बन्धित वर्णों को पढ़ सकें।
  • आ और इ की मात्रा की अवधारणा के साथ चित्र व बिना चित्रों की सहायता से शब्दों को पढ़ सकें।
  • सम्बन्धित तुकबन्दियों को अनुमान लगाकर पढ़ सकें।
• लिखना
  • दिए गए अक्सर आने वाले शब्दों पर पेन्सिल फेर सकें।
  • अक्षर / सरल शब्दों को देखकर लिख सकें।
  • चित्र की मदद से शब्दों को लिख सकें।
  • सीखे गए वर्णों से शब्द बना कर लिख सकें।
• सृजनात्मक अभिव्यक्ति
  • चित्रों में रंग संयोजन कर सकें।
  • अपने मन से परिचित वस्तु का चित्र बना सकें।</td></tr>
<tr><td>2</td><td>अगस्त</td><td>• कविता “सूरज दादा”
• वर्ण पहचान घ र च ल
• वर्ण पहचान अ ब म न
• पुस्तकालय या अन्य सन्दर्भ पुस्तकें</td></tr>
<tr><td>3</td><td>सितम्बर</td><td>• कविता “आसमान पर बादल”
• वर्ण पहचान ज ख आ और आ की मात्रा
• कविता “तितली और कली”
• वर्ण पहचान द त इ और इ की मात्रा
• पुस्तकालय या अन्य सन्दर्भ पुस्तकें</td></tr>
</table>

1.1.3 2 सप्ताहों के लिए गतिविधि योजना

पहले 2 हफ़्तों की शिक्षण योजना बच्चों को कक्षाओं में बैठने की आदत डालने, कक्षा के मानदण्डों का पालन करने, अपने साथियों को जानने और शिक्षक के साथ-साथ स्कूल के माहौल के साथ सहज होने के लिए स्कूल रेडीनेस गतिविधियों पर ध्यान केन्द्रित करेगी। इससे पहले, लीला प्रत्येक सीखने के प्रतिफलों के लिए आकलन संकेतकों को परिभाषित करती हैं ताकि वे कक्षा में प्रत्येक बच्चे के प्रदर्शन का अवलोकन कर सकें और बच्चों की जरूरतों के अनुसार अपनी शिक्षण शैली / फोकस को संरेखित (align) कर सकें।

क) आकलन संकेतकों का एक उदाहरण :

तालिका 3

#	सीखने के प्रतिफल	आकलन संकेतक (स्तर 1< स्तर 2< स्तर 3)		
1	सुनकर समझना और सोचकर बोलना विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/ स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं जैसे- कविता, कहानी सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभव साझा करना|	**अपनी आपसी बातचीत में घर की भाषा का प्रयोग करते हैं।**		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		आपसी बातचीत में घर की भाषा का उपयोग बहुत कम कर पाते हैं	आपसी बातचीत में घर की भाषा का उपयोग थोड़ा कर पाते हैं	आपसी बातचीत में घर की भाषा का उपयोग सहजता से कर पाते हैं
		अपनी आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग करते हैं।		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग बहुत कम या नहीं कर पाते हैं	आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग थोड़ा कर पाते हैं	आपसी बातचीत में स्कूल की भाषा का प्रयोग करते हैं।
		अपनी भाषा में कविता/ कहानी सुना पाते हैं		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		अपनी भाषा में कविता/ कहानी बहुत कम या सुना नहीं पाते हैं	अपनी भाषा में कविता/ कहानी सुनाने का प्रयास करते हैं पर पूरी नहीं सुना पाते हैं	अपनी भाषा में कविता/ कहानी सुना पाते हैं
		स्कूल की भाषा में कविता/ कहानी सुना पाते हैं		
		स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
		नहीं सुना पाते हैं	स्कूल की भाषा में कविता/ कहानी थोड़ा बहुत सुना पाते हैं	स्कूल की भाषा में कविता / कहानी सुना पाते हैं

लीला उन सभी गतिविधियों का सारांश बनाती हैं, जिनकी वह किसी विशेष पाठ के लिए योजना बना रही हैं, ताकि वे जान सकें कि इन दो हफ़्तों में उन्हें किस सामग्री की आवश्यकता होगी।

ख) सप्ताह की योजना का एक उदाहरण :

तालिका 4

गतिविधि	उद्देश्य	अवधि
परिचय	बच्चों से परिचय प्राप्त करना व स्वयं का परिचय देना। बच्चों के बाद परिवारजनों का परिचय देना व लेना। अनौपचारिक बातचीत	शिक्षण व अभ्यास हेतु कालांश (Class-es)-10 +1 कालांश (शनिवार गतिविधि एवं बच्चों के काम के फोटो एवं विडियों शेयरिंग) दिनांक 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16 (2 weeks) 60 Min/Day 20 Min सुनकर समझना और समझकर बोलना 20 Min पठन 20 Min लेखन
बालगीत व कविताएं गाना	छोटे परिवेशीय गीत, बालगीत व कविताएं हाव भाव के साथ गाना।	
कहानी सुनना – सुनाना	बच्चों को मौखिक कहानी सुनाना व सुनना चित्र आधारित कहानियाँ सुनाना व उन पर चर्चा करना।	
हस्त संतुलन	खड़ी आड़ी , घुमावदार डॉटेड लाइन / चित्र पर पेंसिल या रंग फेरना / मिलान करना। स्वतंत्र रूप से चित्र बनाकर उसमें रंग भरना।	
ध्वनि पहचान	शांत बैठकर आस पास हो रही आवाजों को सुनना और बताना। अपने नाम में आने वाली अंतिम ध्वनि की पहचान करना व उस ध्वनि से बनने वाले 2-2 शब्द बताना। अपने नाम में आने वाली ध्वनियों को अक्षरों में तोड़-तोड़ कर बोलना और उनकी आवाजों को गिनते हुए जानना कि उनके नाम में कितनी ध्वनियाँ हैं? इसी प्रकार से अन्य शब्दों को ध्वनियों में तोड़तें हुए पहचान करना।	
अनुमान लगाना	एक कपड़े के नीचे या किसी कपड़े के थैले में रखी कुछ खास वस्तुओं को छू कर अनुमान से उनके नाम बताना। जो छोटे बालगीत और कविताएं कक्षा में गाए जा चुके हैं उन्हें एक शीट पर लिखना और बच्चों की सामने उनके शब्दों पर अंगुली रख-रख कर हमारे द्वारा पढ़ना फिर बच्चों को भी इसी प्रकार से अनुमान के द्वारा कविताएं पढ़ने के लिए प्रेरित करना।	

अब अन्त में, हर दिन से पहले वह सारे दिन के लिए विस्तृत गतिविधि योजना तैयार करती हैं। इस योजना में वह पिछले दिन से टिप्पणियों को शामिल करने का प्रयास करती हैं।

ग) मेरी दैनिक गतिविधि योजना का एक उदाहरण :

तालिका 5

दिन/अवधि	गतिविधियों का विवरण	उपयोग की गई सामग्री	टिप्पणियाँ
दिन 10 60 मिनट	• खेल से शुरुआत "चूहा दौड़ बिल्ली आई नेता नेता चाल बदल" • प्रश्नोत्तर संवाद • कहानी वाचन हाव भाव एवं चित्रों के साथ कहानी सुनाना • प्रमुख शब्द बोर्ड पर लिखना • कहानी से संबंधित प्रश्न पूछना *कहानी में कौन-कौन हैं?* *बंदर कहाँ बैठा हैं ?* *बंदर की पूंछ कैसी हैं?* *पूँछ को झूला किसने समझा ?* *क्या आपने बंदर और गिलहरी कहीं देखे हैं कहाँ ?* • कहानी से संबंधित दो-तीन लाइन बोर्ड पर लिखना फिर हमारे द्वारा अंगुली फेरते हुए पढ़ना। • बच्चों को अंगुली फेरते हुए पढ़ने के अवसर देना। • इसके बाद नीचे दी गई वर्कशीट दी जाए:		Kavita, Ram ने अंगुली फेरते हुए पढ़ने का अच्छा अभ्यास किया और साथ ही किताब पढ़ने को लेकर बेहद उत्सुक लगे। और इच्छा जाहीर की। Kavita ने 1 कहानी पूरी पढ़ी और साथ ही और किताब लाने को कहा। आगामी योजना के साथ-साथ पुस्तकालय से चित्र कथा एवं स्तर एक की किताबों का चयन कर कक्षा पुस्तकालय से परिचय कराते हुए पुन: शुरुआत होगी।

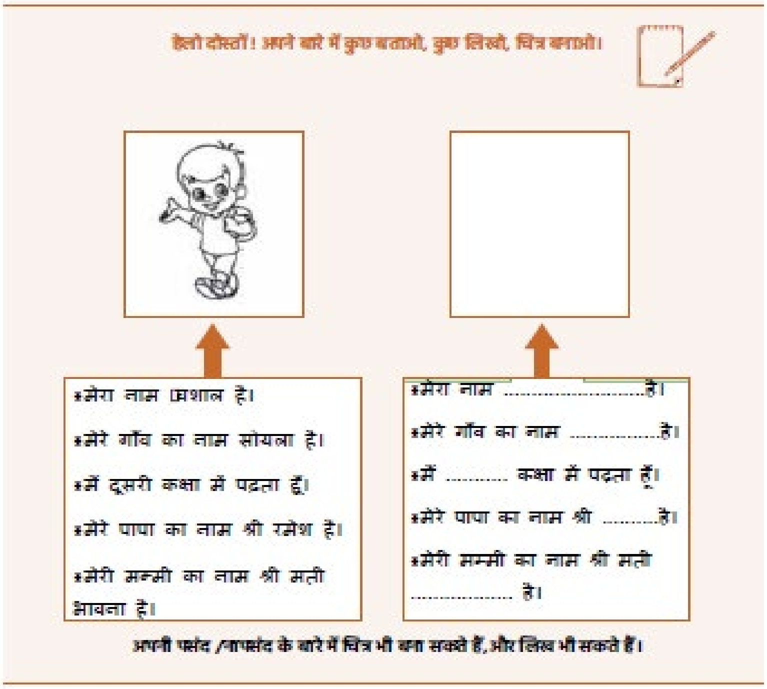

d. Materials: Flashcards, akshara forms in cardboard/sandpaper, games, puzzles and materials for other activities keep language and literacy activities engaging and interesting

e. Audio-Visual Material: With ubiquity of digital devices like smartphones, good quality audio material can be very effective content for early primary grades. Rhymes, stories and other narratives can be a good source of oral language input for children

घ) दैनिक अवलोकन के कुछ उदाहरण :

तालिका 6

#	नाम	मुखर / शर्मीला	भागीदारी / सहभागिता / अन्यमनस्कता	चित्र के साथ अक्षरों की पहचान	हस्त सन्तुलन / स्क्रिबलिंग
5	अमित	मुखर	शामिल रहता है और सहभागिता करता है निर्देशों को याद दिलाने की ज़रूरत है	कुछ	हाँ उचित लेखन तथा एक शब्द और दूसरे शब्द के बीच उचित अन्तर का अभ्यास करने की आवश्यकता है।
13	नीता	मुखर	शामिल रहती है और सहभागिता करती है निर्देशों की याद दिलाने की जरूरत है	कुछ	हाँ समय पर लिखने के लिए और नियमित कार्य करने के लिए गति की आवश्यकता है।
18	रानी	शर्मिली (नया प्रवेश)	शामिल रहती है और सहभागिता करती है	मदद चाहिए	हिन्दी नोटबुक में शब्दों को दो पंक्तियों के बीच लिखने की ज़रूरत है।

1.2 भाषा शिक्षण के लिए साप्ताहिक/दैनिक योजना

ओड़िया और हिन्दी में भाषा शिक्षण के लिए 15 सप्ताह की योजना के उदाहरण नीचे दिए गए हैं। शिक्षक की योजना में साप्ताहिक योजना शामिल होती है, उसके बाद गतिविधियों के कुछ उदाहरणों के साथ एक दिन की योजना होती है।

1.2.1 ओड़िया भाषा शिक्षण की योजना

क) साप्ताहिक योजना

तालिका 1

ଦକ୍ଷତା	ଶିକ୍ଷଣ କାର୍ଯ୍ୟ	୧ମ ଦିବସ	୨ୟ ଦିବସ	୩ୟ ଦିବସ	୪ର୍ଥ ଦିବସ	୫ମ ଦିବସ	୬ଷ୍ଠ ଦିବସ
ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ (୪୦ -୪୫ମିନିଟ୍)	କବିତା ଆବୃତ୍ତି	✓	✓	✓	✓	✓	✓
	ଗଳ୍ପ କଥନ ଓ ଗଳ୍ପ ଆଧାରିତ ଆଲୋଚନା	✓			✓		
	ସାମାଜିକ ଓ ଆବେଗିକ ବିକାଶ(ଖେଳ/ ଶିକ୍ଷଣକାର୍ଯ୍ୟ)	✓			✓		
	ମୌଖିକ ଭାଷା ଆଧାରିତ ଖେଳ ଓ ଓଡିଆ ଶବ୍ଦାବଳୀ ବିକାଶ ପାଇଁ କାର୍ଯ୍ୟ					✓	✓
	ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତିକରୁ ଗଳ୍ପ ପଠନ ଓ ବିସ୍ତୃତ ଆଲୋଚନା (ଶୁଣିକରି ବୁଝିବା)					✓	✓
	ଚିତ୍ର ଓ ଅନୁଭୂତି ଆଧାରିତ କାର୍ଯ୍ୟ		✓	✓			
	ମୌଖିକ ଭାଷା ସମ୍ପର୍କିତ ଲିଖନ	✓	✓	✓	✓	✓	✓
ଡିକୋଡିଂ (୪୦-୪୫ ମିନିଟ୍)	ଧ୍ୱନି ସଚେତନତା (ସପ୍ତାହ ୧ ରୁ ୧୨)	✓	✓	✓	✓	✓	✓
	ବର୍ଣ୍ଣ ଓ ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନଟ କାର୍ଯ୍ୟ	✓	✓	✓	✓		
	ଶବ୍ଦ ଓ ବାକ୍ୟ ପଠନ	✓	✓	✓	✓		
	କାର୍ଯ୍ୟପୁସ୍ତିକାର ବ୍ୟବହାର	✓	✓	✓	✓	✓	✓
	ମାନ ନିର୍ଦ୍ଧାରଣ ଓ ପୁନରାଲୋଚନା					✓	✓
ପଠନ (୪୦-୪୫ ମିନିଟ୍)	ପିଲାଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ବହିର ପୃଷ୍ଠା ଓଲଟାଇବା ଓ ଅଭିନୟ ପଠନ					✓	✓
	ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ପଠନ ନିମନ୍ତେ ପିଲାମାନଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ପର୍ଯ୍ୟାୟ ଭିତ୍ତିକ ଗପ ଓ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ବହି ସହ ପରିଚୟ ଓ ଅଭିନୟ ପଠନ					✓	✓
	ପିଲାଙ୍କୁ ବଡ଼ ବହିରୁ କାହାଣୀ ପଢିକରି ଶୁଣାଇବା ଓ ତା' ବିଷୟରେ ଆଲୋଚନା କରିବା	✓	✓	✓	✓		
	ପଠନ ପୁସ୍ତିକା ସହ ସାଙ୍କେତିକ ଶବ୍ଦ ପଠନ ଓ ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ପଠନ	✓	✓	✓	✓	✓	✓

ख) 7वें सप्ताह के पहले दिन की योजना

तालिका 2

ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ	
ଶିକ୍ଷଣ କାର୍ଯ୍ୟ -ଗଳ୍ପ କଥନ-	**ସମୟ – ୪୦-୪୫ ମିନିଟ**
ପ୍ରସ୍ତୁତି ଓ ସାମଗ୍ରୀ:	ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ପାଇଁ ସୂଚନା:
ଗଳ୍ପ ଓ କବିତା ମାଳା ବହି –"ଗୁଣ୍ଡୁଚି ଖେଳିଲା ଦୋଳି" ବହିରୁ ଗପ ପଢି ଶୁଣାଇବା	• ଗପ କହିବବେଳେ ସ୍ୱରର ଉତ୍ଥାନ ପତନ କରି କହିବେ । • ଗପଟିକୁ ପିଲାଙ୍କ ମାତୃଭାଷାରେ କହି ଶୁଣାଇବେ । • ପିଲାଙ୍କୁ ଗପରେ ଥିବା କଠିନ ଶବ୍ଦର ଅର୍ଥ ବୁଝାଇବେ । • ଗଳ୍ପ ସମ୍ପର୍କରେ ପିଲାଙ୍କ ସହ ଆଲୋଚନା କରିବେ ।
ପ୍ରକ୍ରିୟା :	
• ଶିକ୍ଷକ ପିଲାମନଙ୍କୁ ଅର୍ଦ୍ଧବୃତ୍ତାକାର ରେ ଛିଡା କରାଇବା । • ଶିକ୍ଷକ ମଝିରେ ବସିବେ, ଯେପରି ସମସ୍ତ ପିଲା ତାଙ୍କୁ ଦେଖିପାରୁଥିବେ । • ଶିକ୍ଷକ ଗପଟିକୁ ମନରୁ କହିବେ ,(ବହି ଧରି ପଢିବେ ନହିଁ) । • ଶିକ୍ଷକ କହିବାବେଳେ ଚରିତ୍ର ଯେପରି କହୁଛି, ସେହିପରି ଚରିତ୍ର ଭଳି କହିବେ । ଯଥା -ମାଙ୍କଡ –"ଭଉଣୀ ତଳେ ପଡିଗଲା କି?"ଗୁଣ୍ଡୁଚି -ନା ନା... । • ପିଲାମାନେ ପ୍ରଥମେ ଶୁଣିବେ (୨ ଥର) । • ତାପରେ ପିଲାମାନେ ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ସହ ଅଭିନୟ କରି ଗପଟିକୁ କହିବେ । • ଏହିପରି ୩ /୪ ରାଉଣ୍ଡ ଗଳ୍ପ କଥନ ଚାଲିବ । • ତାପରେ ଶିକ୍ଷକ ଦଳରେ ବିଭକ୍ତ କରିବେ । • ପ୍ରତି ପିଲା ତା'ର ସାଙ୍ଗମାନଙ୍କୁ କହିବ । • ପ୍ରତି ଦଳରେ କହିବ ବେଳେ ଶିକ୍ଷକ ତତ୍ତ୍ୱାବଧାନ କରିବେ । • ଗଳ୍ପରେ ଥିବା ଚିତ୍ର ଆଙ୍କି ରଙ୍ଗ ଦେବେ ।	
ଶିକ୍ଷଣ ପ୍ରକ୍ରିୟାର ସମୀକ୍ଷା: -	
• ପ୍ରତି ପିଲା ଗପଟିକୁ ନିଜ ଭାଷାରେ କହି ପାରିଲେ କି ନାହିଁ ଜାଣିବେ । • ଯେଉଁ ପିଲା କହି ନାହାନ୍ତି, ପରବର୍ତ୍ତୀ ଶ୍ରେଣୀରେ ସେହି ପିଲାଙ୍କୁ ଅଧିକ ସୁଯୋଗ ଓ ଧ୍ୟାନ ଦେବେ ।	

तालिका 3

<table>
<tr><td colspan="2">ଡିକୋଡିଙ୍ଗ</td></tr>
<tr><td>ଶିକ୍ଷଣ କାର୍ଯ୍ୟ : 'ଚ' ବର୍ଣ୍ଣ ଚିହ୍ନଟିକରଣ</td><td>୪୦-୪୫ ମିନିଟ୍</td></tr>
<tr><td>ପ୍ରସ୍ତୁତି ଓ ସାମଗ୍ରୀ</td><td>ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ପାଇଁ ସୂଚନା</td></tr>
<tr><td>• କଳାପଟା, ଚକଖଡ଼ି, କାର୍ଯ୍ୟ ପୁସ୍ତିକା
• 'ଚ' ରୁ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିବା କିଛି ସରଳ ଶବ୍ଦର ସୂଚୀ</td><td>• କାର୍ଯ୍ୟପୁସ୍ତିକାରେ କିପରି କାର୍ଯ୍ୟ କରାଯିବ, ପିଲାମାନଙ୍କୁ ତାହାର ସ୍ପଷ୍ଟ ସୂଚନା ଉଦହରଣ ସହ ଦିଅନ୍ତୁ ।
• ପିଲାଙ୍କୁ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାର ଯଥେଷ୍ଟ ସୁଯୋଗ ଦିଅନ୍ତୁ ।</td></tr>
<tr><td colspan="2">'ଚ' ବର୍ଣ୍ଣ ଚିହ୍ନଟିକରଣ</td></tr>
<tr><td colspan="2">• ଶିକ୍ଷଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭରେ କୌଣସି ଏକ ସ୍ଥାନୀୟ କବିତାକୁ ଭାବଭଙ୍ଗୀ ସହ ଶୁଣାନ୍ତୁ । ଏଥିପାଇଁ ୫-୭ ମିନିଟ୍ ସମୟ ଦିଅନ୍ତୁ ।
• 'ଚ' ରୁ ବନୁଥିବା କିଛି ପରିଚିତ ଶବ୍ଦ ଯେପରି (ଚପଲ)ର ଧ୍ୱନିକୁ ଭାଙ୍ଗି-ଯୋଡ଼ି କୁହନ୍ତୁ । ଉଦାହରଣ - (ଚପଲ - /ଚ/ /ପ/ /ଲ/) (/ଚ/ /ପ/ /ଲ/ - ଚପଲ) ଓ ପିଲାଙ୍କ ଧ୍ୟାନ ପ୍ରଥମ ଧ୍ୱନି ଉପରେ କେନ୍ଦ୍ରିତ କରନ୍ତୁ । ୨-୩ ଟି ଆଞ୍ଚଳିକ ଶବ୍ଦ ସହ ଏହାକୁ କରନ୍ତୁ ।
• 'ଚପଲ' କୁ ବୋର୍ଡ଼ରେ/କଳାପଟାରେ ଲେଖି ତାହାର ପ୍ରଥମ ଧ୍ୱନିର ପ୍ରତୀକ ଉପରେ ଗୋଲ ବୁଲାନ୍ତୁ ।
• ତାପରେ 'ଚ' କୁ କଳାପଟାରେ ବଡ଼ ଆକାରରେ ଲେଖନ୍ତୁ ଓ ୩-୪ ଥର ଏହାର ଧ୍ୱନିକୁ ଉଚ୍ଚାରଣ କରନ୍ତୁ । ପିଲାଙ୍କୁ 'ଚ' ଶବ୍ଦରୁ ଆରମ୍ଭ ହେଉଥିବା କିଛି ଶବ୍ଦ ପଚାରନ୍ତୁ । ଏଥିପାଇଁ ଶ୍ରେଣୀରେ ସେହି ପିଲାଙ୍କୁ ହାତ ଉଠାଇବା ପାଇଁ ମଧ୍ୟ କହିପାରନ୍ତି ଯାହାଙ୍କ ନାମ 'ଚ' ରୁ ଆରମ୍ଭ । ଏହି ଶବ୍ଦଗୁଡ଼ିକ କଳାପଟାରେ ଲେଖନ୍ତୁ ଓ କିଛି ଅନ୍ୟ ପିଲାଙ୍କୁ ଡାକି 'ଚ' ଅକ୍ଷରରେ ଗୋଲ ବୁଲାନ୍ତୁ ।
• ପିଲାଙ୍କୁ ଶ୍ରେଣୀ ଗୃହରେ ପ୍ରଦର୍ଶିତ ଚାର୍ଟ ଓ ଛାପା ସାମଗ୍ରୀ ମଧ୍ୟରୁ 'ଚ' ଖୋଜିବାକୁ କୁହନ୍ତୁ ।
• ତାପରେ ୫-୭ ପିଲାଙ୍କର ଛୋଟ ଦଳ ବନାନ୍ତୁ । ଏକ (କାହାଣୀ) ବା ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକରୁ 'ଚ' ବର୍ଣ୍ଣ ଖୋଜି ଗୋଲ ବୁଲାଇବାକୁ କୁହନ୍ତୁ । ପିଲାମାନେ କାର୍ଯ୍ୟ କରୁଥିବା ସମୟରେ ଶିକ୍ଷକ ବୁଲିବୁଲି ସମସ୍ତଙ୍କୁ ସହାୟତା ପ୍ରଦାନ କରିବେ ।
• କାର୍ଯ୍ୟପୁସ୍ତିକାରୁ ଭିନ୍ନଭିନ୍ନ ଉପାୟରେ 'ଚ' ବର୍ଣ୍ଣ ଲେଖାଇବାର ଅଭ୍ୟାସ କରାନ୍ତୁ । ଯେପରି ନିଜ ଅଙ୍ଗୁଳି, ବାୟୁ, ବାଲି ଦ୍ୱାରା ।</td></tr>
<tr><td>ଲିଖନ</td><td>୧୦ – ୧୫ ମିନିଟ୍</td></tr>
<tr><td>• ସମସ୍ତ ପିଲାଙ୍କୁ କାର୍ଯ୍ୟପୁସ୍ତିକାର କାର୍ଯ୍ୟଫର୍ଦ୍ଦ ସଂଖ୍ୟା (___) କରିବାକୁ କୁହନ୍ତୁ ଆବଶ୍ୟକ ମୁତାବକ ସାହାଯ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରନ୍ତୁ ।</td><td>• ଶିକ୍ଷକ ପିଲାଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟର ନିରୀକ୍ଷଣ ବୁଲିବୁଲି କରିବେ ।</td></tr>
<tr><td colspan="2">ଶିକ୍ଷଣ ପ୍ରକ୍ରିୟାର ସମୀକ୍ଷା :</td></tr>
<tr><td colspan="2">• କ'ଣ ସବୁପିଲାମାନେ କାର୍ଯ୍ୟପୁସ୍ତିକାରେ ଦିଆଯାଇଥିବା କାର୍ଯ୍ୟକୁ କରିଛନ୍ତି ।
• ଯେଉଁ ପିଲାମାନଙ୍କୁ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାରେ ସମସ୍ୟା ହେଲା, ସେମାନଙ୍କୁ ଚିହ୍ନିତ କରି, ସେମାନଙ୍କ ସହ କଥାବାର୍ତ୍ତା ଓ ପ୍ରୋତ୍ସାହନ ଦିଅନ୍ତୁ ।</td></tr>
</table>

1.2.2 हिन्दी भाषा शिक्षण की योजना

क) साप्ताहिक योजना

तालिका 4

सप्ताह			
दिन	मौखिक भाषा विकास एवं सम्बंधित लेखन (25-30 मिनट)	डिकोडिंग एवम सम्बंधित लेखन (40-45 मिनट)	दिन
1	• कविता/बालगीत "तरिया के दरपन" • मौखिक रूप से कहानी सुनाना: कछुआ आयर खरगोश (तरिया के दरपन) • चित्र बनाना	• 'ग' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य: पाठ-37	• बिग बुक से कहानी पढ़कर सुनाना व् सामान्य चर्चा: पांच चिया गिन बाज़ार
2	• कविता/बालगीत (पाठ्यपुस्तक पाठ – 3) • चित्र चार्ट पर चर्चा: पार्क • स्वतंत्र लेखन	• 'ग' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य: पाठ-38	• बिग बुक से कहानी पढ़कर सुनाना व् विस्तृत चर्चा: पांच चिया गिन बाज़ार
3	• कविता/बालगीत (तरिया के दरपन) • चित्र चार्ट पर चर्चा: पार्क • स्वतंत्र लेखन	• 'म' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य: पाठ-39	• बिग बुक से साझा पठन: पांच चिया गिन बाज़ार
4	• कविता/गाना: जूँ (कविता पोस्टर) • कहानी पढ़कर सुनाना (पुस्तकालय की किताबें) • साझा लेखन	• 'म' वर्ण पर कार्य • डिकोडिंग का खेल • अभ्यास पुस्तिका पर कार्य: पाठ-40	• लोगोग्राफिक पठन: बिग बुक (पांच चिया गिन बाज़ार)
5	• कविता/गाना: जूँ (कविता पोस्टर) • सामाजिक एवम भावनात्मक विकास की गतिविधि – 7 • कविता में आए मुख्य शब्दों को लिखना	• अभ्यास पुस्तिका पर कार्य: पाठ-41(साप्ताहिक पुनराव्रत्ति) • डिकोडिंग का खेल	• बच्चों को कहानी की किताबें उलटने-पलटने के लिए देना और उन पर चर्चा करना
6	• कविता/बालगीत (तरिया के दरपन) • मौखिक खेल गतिविधि – 5: अजीब कहानी हमने बनाई • पाठ्यपुस्तक से गतिविधि	• अभ्यास पुस्तिका – 'मैंने सीख लिया-1' (साप्ताहिक आकलन) • सीखने में पीछे छूटे बच्चों के साथ योजनाबद्ध तरीके से समूह में कार्य)	• बच्चों को कहानी की किताबें उलटने-पलटने के लिए देना और उन पर चर्चा करना
अभ्यास पुस्तिका में सप्ताह के अंत में दिए गए 'स्वतंत्र कार्य' पत्रक पर कार्य.			

ख) सप्ताह 7 के पहले दिन की योजना

खण्ड – 1

कहानी सुनकर समझना और सरल प्रश्नों के उत्तर देना।

तालिका 5

<table>
<tr><th colspan="2">मौखिक भाषा (25-30 मिनट)</th></tr>
<tr><td>तैयारी और सामग्री</td><td>शिक्षक के लिए मुख्य बातें</td></tr>
<tr><td>• अद्दक – बद्दक (तरिया के दरपन)
• कहानी – ‘कछुआ और खरगोश’ (तरिया के दरपन)
• कहानी पर खुले और बंद छोर के प्रश्नों की सूची पहले से तैयार रखे</td><td>• सभी बच्चों को गतिविधि में शामिल करें
• बच्चों को अपनी भाषा में अलग अलग श्रेणियों से जुड़े नामों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें
• कक्षा का माहौल रोचक बनाये रखें</td></tr>
<tr><th colspan="2">कविता पर कार्य: अद्दक – बद्दक</th></tr>
<tr><td colspan="2">• शिक्षक पहले बच्चों को कविता लय के साथ गाकर सुनाएं|
• शिक्षक कविता गाएं व् बच्चों को साथ दोहराने के लिए कहें|
• ऐसा 2-3 बार करें, ताकि बच्चे कविता की लय और शब्दों को अच्छे से पकड़ पाएं|
• सुनाई गयी कविता के विषय से जुडी कोई और कविता को याद दिलाएं और उन्हें सुनाने को कहें| अगर कोई ऐसी कविता नहीं है तो पिछली सुनी हुई कविता उनसे सुने|</td></tr>
<tr><th colspan="2">मौखिक कहानी सुनाना</th></tr>
<tr><td colspan="2">• अब बच्चों को गोल घेरे में बैठाएं और शिक्षक स्वयं भी बच्चों के साथ बैठ जायें और कहें – आज मैं आप सभी को एक कहानी सुनाऊंगा/सुनाउंगी, जिसका नाम है – ‘कछुआ और खरगोश’. अब बच्चों से कहानी के नाम से अनुमान लगाने के लिए कहें, जैसे – बच्चों के अनुसार कहानी में कौन-कौन होगा? क्या हुआ होगा? आदि|
• अब शिक्षक ‘कछुआ और खरगोश’ कहानी को बच्चो को आवाज़ में उतार-चढाव और हाव-भाव का उपयोग करते हुए कहानी मौखिक रूप से सुनाए|
• कहानी सुनाते समय अधिक चर्चा करने से बचें. बीच-बीच में 1-2 अनुमान लगाने वाले प्रश्नों को पूछकर यह सुनिश्चित करें कि बच्चों का पूरा ध्यान सुनने पर है या नहीं| जैसे – क्या खरगोश जीत जायेगा? खरगोश क्यों बीच में रुका होगा? अब कछुआ क्या करेगा? आदि|
• कहानी सुनाने के दौरान यदि कोई कठिन या अनजान शब्द आता है तो बच्चों को उनका अर्थ सन्दर्भ के साथ समझाएं, जैसे – जीत, गति, रेस आदि. कहानी सुनाते समय या चर्चा के लिए छत्तीसगढ़ी का ही प्रयोग करें|
• कहानी सुनाने के बाद बच्चों से कहानी से सम्बंधित बंद छोर (तथ्यात्मक) और खुले छोर (उच्च स्तरीय चिंतन) दोनों तरह के प्रश्न पूछें. जैसे – कहानी में कौन-कौन था? दौड़ लगाने की बात किसने की थी? दौड़ में जीत किसकी हुई? अगर खरगोश काम नहीं करता तो कौन दौड़ जीतता? कहानी में कछुआ की जगह अगर लोमड़ी होती तो कौन दौड़ जीतता? इस कहानी को आगे कैसे बढ़ाया जा सकता है? आदि|</td></tr>
</table>

लेखन कार्य
• सुनी गयी कहानी पर बच्चों को चित्र बनाने को कहें| • बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र सभी को दिखाने और उसके बारे में बताने को कहें|
शिक्षण प्रक्रिया की समीक्षा
• क्या सभी बच्चों ने इस गतिविधि में प्रतिभाग किया? • यदि नहीं, तो उन बच्चों को पहचान कर, अगले खंड में उन्हें थोडें और मौके दें और उन्हें प्रतिभाग करने के लिए प्रोत्साहित करें|

खण्ड – 2

'ग' वर्ण पहचानना और लिख पाना

तालिका 6

डिकोडिंग (40-45 मिनट)	
तैयारी और सामग्री	**शिक्षक के लिए मुख्य बातें**
• बोर्ड, चाक, बच्चों का नाम चार्ट| • 'ग' से शुरू होने वाले कुछ सरल शब्दों की सूची बनाकर रख लें|	• अभ्यास पुस्तिका पर कार्य करने के लिए बच्चों को उदाहरण सहित निर्देश दें| • बच्चों को आपस में कार्य करने के पर्याप्त मौके दें|
'ग' वर्ण की पहचान	
• कक्षा की शुरुआत स्थानीय कविता या गीत को हाव-भाव के साथ गाकर करें. इसमें सभी बच्चों को हिस्सा लेने के लिए उनका प्रोत्साहन करें. इस खेल गतिविधि के लिए 5-7 मिनट का ही समय दें| • बच्चों को गोल घेरे में बिठाएं और शिक्षक स्वयं भी बच्चों के साथ बैठ जायें| • शिक्षक बच्चों के साथ किसी परिचित शब्द (जैसे – गमला) को मौखिक रूप से तोड़कर–जोड़कर बोलें, जैसे – (गमला – 'ग', 'म', 'ला') और ('ग', 'म', 'ला' - गमला). अब बच्चों से शब्द की पहली आवाज़ ('ग') पहचानने को कहें. इस प्रक्रिया को 3-4 सरल एवम परिचित शब्दों के साथ करें| • अब 'गमला' शब्द को बोर्ड पर लिखें और उसकी पहली आवाज़ के प्रतीक ('ग') पर घेरा लगाएं और बच्चों को 'ग' का उच्चारण करके बताएं| • फिर बच्चों को 'ग' वर्ण का कार्ड दिखाएं और 3-4 बार 'ग' वर्ण का उच्चारण करें. अब बच्चों से 'ग' वर्ण से शुरू होने वाले अन्य शब्द या नाम बताने को कहें और आप उन्हें बोर्ड पर लिखते जायें, जैसे – गमला, गरमी, गधा, गला आदि. शिक्षक लिखे हुए सभी शब्दों को बच्चों के साथ मिलकर पढ़ें और उनकी पहली आवाज़ के प्रतीक 'ग' वर्ण पर गोला लगवाएं| • बच्चों को 'ग' वर्ण कक्षा में प्रदर्शित सामग्री और पाठ्यपुस्तक से ढूंढकर बताने को कहें. शिक्षक पाठ्यपुस्तक में 'ग' वर्ण पर गोला लगाने को भी कह सकते हैं| • बच्चों को डिकोडिंग के खेल के माध्यम से 'ग' वर्ण लिखने का अभ्यास करवाएं, जैसे – सभी बच्चों को गोल घेरे में खड़े होने को कहें. अब शिक्षक हवा में ऊँगली से 'ग' वर्ण लिखें और सभी बच्चों को दोहराने के लिए कहें| अब यही प्रक्रिया अलग-अलग प्रकार से करें और करवाएं जैसे – 'ग' को पैर से, सिर से, कंधे से, कमर से, कोहनी से, घुटने से, ज़मीन पर चलकर आदि लिखने का प्रयास करवाएं| • अंत में, 'ग' वर्ण लेखन से सम्बंधित अभ्यास कार्य को अभ्यास पुस्तिका में पूरा करवाएं| • सभी बच्चों को अभ्यास पुस्तिका से पाठ – 37 पर कार्य करने को कहें और आव्श्यकता अनुसार उनकी सहायता करें| • आप बच्चों के कार्य का अवलोकन घूम-घूमकर करें|	

शिक्षण प्रक्रिया की समीक्षा
• क्या सभी बच्चों ने अभ्यास पुस्तिका का कार्य पूरी तरह से किया है? • जिन बच्चों को कार्य करने में परेशानी हो रही है, उनकी पहचान करें| उने बातचीत करें और कार्य पूरा करने के लिए प्रोत्साहन दें|

खण्ड – 3

बिगबुक की कहानी सुनकर समझना

तालिका 7

पठन (15-20 मिनट)	
तैयारी और सामग्री	**शिक्षक के लिए मुख्य बातें**
• बिग बुक: पाँच चिया गिन बाज़ार • शिक्षक बिग बुक की कहानी को पहले से पढ़ लें	• सभी बच्चों को गतिविधि में शामिल करें| • सभी बच्चों की बातों को ध्यान से सुनें और सकारात्मक प्रतिक्रिया दें|
बिगबुक पर सामान्य चर्चा	
• कालांश की शुरुआत छोटी कविता से करें. बच्चों को चलने-फिरने/उठने-बैठने का मौक दें| • बिगबुक का मुख्य प्रष्ठ सभी बच्चों को दिखाएं और बिगबुक के मुख्य पृष्ठ में दिख रहे चित्र और कहानी के शीर्षक के बारे में बातचीत करने एवम अनुमान लगाने को कहें| • बिगबुक के सभी पृष्ठों को एक-एक करके पलटते जायें और बच्चों से पृष्ठों पर बने चित्रों के आधार पर कहानी का अनुमान लगाने को कहें| बिगबुक का आदर्श रूप से पठन कम से कम 2-3 बार करें| • बच्चों को यह भी समझने का मौक़ा दें कि इस किताब के हर पृष्ठ पर जो चीत्र बने हैं, वे कहानी में क्या हो रहा है, उससे सम्बंधित है. अंत में, बच्चों ने चित्रों को देखकर जो अनुमान लगाए गए थे, उन पर बातचीत करें|	
शिक्षण प्रक्रिया की समीक्षा	
• क्या सभी बच्चों ने कहानी समझी है? • यदि नहीं, तो ऐसे बच्चों की पहचान करें, तब उन पर थोड़ा अधिक ध्यान दें|	

दिवस 2,3 और 4 पर दिवसवार योजना के अनुसार इसी तरह कार्य करें।

2. कक्षा-कक्ष में

इस खण्ड में कक्षा-कक्ष में चल रहे दृश्य को प्रस्तुत किया गया है। हम उस दिन का वर्णन करने वाली एक शिक्षक पत्रिका के एक अंश से शुरू करते हैं और फिर आगे बढ़ते हैं कि शिक्षक विभिन्न गतिविधियों को कैसे चुनते और संचालित करते हैं।

2.1 शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध : दीपा की डायरी

यह नोट एक शिक्षिका दीपा की डायरी से है। यह उन तरीक़ों पर प्रकाश डालता है जिसमें एक शिक्षिका अपनी कक्षा में सीखने की जगह बनाती व बच्चों का लालन-पालन करती है। वह पालन-पोषण करने वाली, शिक्षिका, परामर्शदाता और मित्र जैसी कई भूमिकाएँ निभाती है।

----

29 जुलाई 2014

आज वही दिन था, जब मुझे लगा कि एक शिक्षक के पास कम से कम 4 जोड़ी हाथ और 3 जोड़ी आँखें होनी चाहिए! दिन की शुरुआत हमेशा की तरह बच्चों के साथ एक गोल घेरे में आकर गाने के साथ हुई थी। मैंने आरम्भिक संख्यात्मक गतिविधियों को जारी रखने की योजना बनाई थी जो हमने कल ब्लॉकों के साथ की थी। यह हिट थी, बच्चों ने इसे पूरी तरह से पसन्द किया और चूँकि यह उनकी इस बारे में यादें ताज़ा थीं, इसलिए मुझे अगले स्तर की अवधारणाओं को पढ़ाने के लिए इसे जारी रखने की उम्मीद थी। जैसे ही हम अपने सर्कल टाइम के लिए तैयार होने वाले थे, मैंने देखा कि अरुण बाहर निकल रहा है और अपने मुँह के बल गिर गया है। मैं उसकी तरफ़ दौड़ी और उसे उठा लिया। वह फूट-फूट कर रोने लगा था। उसकी कुहनी छिल गई थी और खून बहने लगा था। उसने मुझे कसकर पकड़ रखा था। मैंने उसे अपनी बाँहों में उठाया, उसे शान्त करने की कोशिश की और घाव को साफ़ करने और मरहम लगाने के लिए उसे अन्दर ले गई। मैंने बड़े बच्चों में से एक, लक्ष्मी से कक्षा में रखे पानी के बर्तन से थोड़ा पानी लाने के लिए कहा, ताकि उसे पानी पिला सकूँ। प्राथमिक चिकित्सा पेटी अलमारी में रखी थी। मैंने अरुण को नीचे बिठाया, प्राथमिक चिकित्सा किट ली, उसके घाव को ध्यान से साफ़ किया, पट्टी बाँधी और उसे अपनी गोद में बिठा लिया। आख़िरकार उसने रोना बन्द कर दिया। दूसरे बच्चे कनखियों से मुझे देख रहे थे। मैंने मन-ही-मन सोचा, आज का दिन चला गया-कक्षा आज नहीं चल सकेगी। फिर भी मैंने कोशिश की। अरूण को सँभालते हुए, मैंने जिस गतिविधि की योजना कक्षा के लिए बनाई थी, उसके लिए विद्यार्थियों को वापस बुलाया। मुझे आश्चर्य हुआ। बहुत जल्दी प्रतिक्रिया देते हुए वे अपने समूहों में वापस चले गए। उन्होंने विभिन्न प्रकार और ब्लॉक के रंगों को वर्गीकृत करना शुरू कर दिया। अरुण अभी भी मेरी बाँहों में था, मैं उनके बीच जाकर बैठ गई, और उन्हें रंगों के अँग्रेज़ी नामों से परिचित कराना शुरू कर दिया। हमने चार रंगों के नाम सीखे - लाल, पीला, नीला, हरा। अरुण अब पहले से अधिक शान्त था और मेरे पास से जाने के लिए तैयार था। मैंने उसे टॉय कॉर्नर के पास बैठाया। मैं सर्कल टाइम एक्टिविटी (जो अन्तहीन की तरह महसूस हो रही थी) को समाप्त करने वाली थी, तभी मैंने देखा कि हर्ष और शोभा, लाल ब्लॉक को किस ढेर पर जाना चाहिए, इस पर बहस कर रहे हैं। मैं रुक गई और इन्तजार करने लगी कि वे इसे आपस में सुलझा लें। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैंने थोड़ी देर बाद बीच-बचाव किया और उनसे पूछा कि क्या समस्या है। जब दोनों एक साथ बोलने लगे तो मैंने मुस्कराते हुए उन्हें रोका और कहा, 'प्लीज़, यह अच्छा नहीं होगा कि एक बार में एक ही बच्चा बोले?' मैंने उन्हें लाल और हरे रंग के ब्लॉक दिखाए और उनके रंग फिर से दोहराए। जिसकी तरफ़ मैंने इशारा किया, उन्होंने उन ब्लॉकों के रंगों को दोहराया।

इस डायरी प्रविष्टि से कुछ विचार :

क) अरुण के गिरने पर दीपा को उसकी माँ बनना पड़ा। उसे उसकी शारीरिक और भावनात्मक ज़रूरतों का भी ख़्याल रखना था। बच्चे बहुत चौकस और संवेदनशील होते हैं। उन्होंने जो कुछ हुआ था, उसके प्रति उसकी प्रतिक्रिया देखी और देखा कि वह उनकी परवाह करती है। इससे शिक्षक के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना पैदा होती है। (उन्होंने अपनी गतिविधि में वापस आने के लिए उसके निर्देशों का जवाब दिया।)

ख) घाव को साफ़ करने की प्रक्रिया भी बच्चों के लिए एक महत्त्वपूर्ण सीख है। कच्चे घाव से बाहर से आने वाली गन्दगी और कीटाणुओं को रोकने के लिए घावों को अन्दर से बाहर तक साफ़ करने की ज़रूरत होती है। दीपा को अरुण के घाव को सही तरीक़े से साफ़ करते हुए देखकर बच्चे एक महत्त्वपूर्ण कौशल से परिचित हुए।

ग) बेशक, उसे एक शिक्षिका भी रहना था! उसने पिछले दिन शुरू की गई गतिविधि को जारी रखा, नए आयामों का निर्माण करने के साथ-साथ पिछले वाले को मज़बूत किया। एक शिक्षण दृष्टिकोण से अनुक्रमण पर ध्यान देना और ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ना महत्त्वपूर्ण है।

घ) हर्ष और शोभा को अपने मुद्दे को सुलझाने के लिए समय देकर, वह उन्हें अपने दम पर चीज़ों को समझने का मौक़ा दे रही थी, यह बच्चों में स्वायत्तता विकसित करने के लिए दीपा की एक महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रिया थी। जब उसने देखा कि चीज़ें आगे बढ़ रही हैं तो उसने बच्चों के लिए एक सुगम विकल्प भी सुझाया। दीपा ने यह भी सुनिश्चित किया कि एक बार में एक ही बच्चा बोले। इससे दो मक़सद पूरे हुए : एक, उसने बच्चों को अपनी बारी का इन्तजार करना सिखाया और दूसरा, वह उनकी भाषा दक्षताओं का आकलन करने में सक्षम थी। इसलिए, आकलन के एक तत्व को बातचीत में एकीकृत किया गया। दीपा ने बच्चों को रंगों के नाम स्पष्ट करने के लिए व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया।

2.2 खेल के माध्यम से सीखना : कमल का किचन कॉर्नर

कमल को खाना बनाना बहुत पसन्द है और वे चाहते हैं कि खाना पकाने के लिए जो प्यार उनमें है, वही प्यार बच्चों में भी विकसित हो! इसलिए उन्होंने सचेत रूप से 3-6 वर्षीय बच्चों की अपनी कक्षा के साथ एक गतिविधि की योजना बनाई, जिसे अवसर मिलने पर किया जाना था। उन्होंने संक्षेप में इस सारी गतिविधि को साझा किया है।

सीता बहुत शर्मीली लड़की है और आम-तौर पर अपने-आप तक ही सीमित रहती है। एक दिन, वह उदास चेहरे के साथ स्कूल आई, उसे कुछ भी करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। कुछ देर उसे देखने के बाद कारण जानने के लिए मैं उसके पास गया। सीता धीरे-धीरे मेरे साथ अपनी भावनाएँ साझा करने लगी। उसने बताया कि उसकी माँ की तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए वह रसोई में उसकी मदद करना चाहती थी, लेकिन उसकी माँ ने उसे अपने पास से दूर जाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि उसके लिए आग, धारदार चाकुओं और खाना पकाने के गर्म बर्तनों के आस-पास रहना बहुत ख़तरनाक था। मैंने सोचा, बच्चों को 'किचन कॉर्नर' से परिचित कराने का आज सही दिन है।

2.2.1 शिक्षण योजना और आकलन

नीचे दी गई गतिविधियाँ बच्चों को एक गोले में बैठाकर की गईं। कक्षा की संख्या-सीमा 24 है; जिनमें से 4-4 बच्चों को एक-एक गतिविधि दी गई। ये गतिविधियाँ मौखिक, तार्किक, दृश्य-संबंधी, शारीरिक गतिसंवेदी, अन्तर्वैयक्तिक (interpersonal), अंतरावैयक्तिक (intrapersonal) और संगीतात्मक जैसी कई तरह की बुद्धिमत्ता को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं। इस गतिविधि

के लिए छह रसोई सेट और दाल, राजमा, चना, मूँगफली (कोई अन्य मोटा अनाज), सब्ज़ियाँ, पानी, नमक, चीनी जैसी खाना पकाने की सामग्रियों की आवश्यकता होती है।

क) समूह गतिविधि 1 : दाल पकाने का अभिनय करना

बच्चों के लिए निर्देश: एक छोटा भगोना लें और उसे अपने सामने खिलौने के चूल्हे पर रखें। अब भगोने में एक कप दाल डालें। दाल को बाएँ से दाएँ सावधानी से चलाने के लिए करछुल (स्पैचुला) का प्रयोग करें, सुनिश्चित करें कि यह गिरे नहीं।

साथ में गाएँ :

भूनो, भूनो, भूनो दाल

भूनो, भूनो, भूनो चना

भूनो तब तक जब तक भुन ना जाए

आकलन : देखें कि क्या बच्चा उचित सन्तुलन के साथ तल रहा है। दाल नहीं फैलनी चाहिए। यदि आवश्यक हो तो बच्चे को दोहराने के लिए कहें। देखें कि क्या बच्चा भगोना, भुनना और करछुल जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

ख) समूह गतिविधि 2 : रोटी बेलने का अभिनय करना

बच्चों के लिए निर्देश: लोई से अपनी हथेलियों के बीच गोल-गोल लड्डू बनाकर चपाती के पटे पर रख दीजिए। इसे बेलन से बेल लें। गोल-गोल चपाती बना लीजिए।

"रोटी चपाती रोल रोल

मम्मा की बिन्दी गोल गोल

पापा का पैसा गोल गोल

दादू का चश्मा गोल गोल

...सारी दुनिया गोल गोल"

(परिचित वस्तुओं के साथ गोल आकार का परिचय)

आकलन: चपाती के आकार और फैलाव को देखें। जाँचें कि क्या बच्चा चीज़ों को साफ-सुथरा रख सकता है; हालाँकि यह वास्तव में अपेक्षित नहीं है, इसके अपवाद हो सकते हैं। देखें कि क्या बच्चा कविता में आए नए शब्दों को याद कर सकता है।

ग) समूह गतिविधि 3 : निश्चित मात्रा में दाल डालना

बच्चों के लिए निर्देश: कण्टेनर को टेबल पर रखें। कण्टेनर पर निशान देखें। अंकों की संख्या गिनें। तीन अँगुलियों की सहायता से दाल को नीचे से कण्टेनर के पहले निशान तक डालें। इसे एक अलग कण्टेनर में रख दें। अब दाल को दूसरे निशान तक डालें।

डालो, डालो, डालो अनाज
निशान तक भरो इसे

...

आकलन: देखें कि क्या बच्चा दाल को एक कण्टेनर से दूसरे कण्टेनर में स्थानान्तरित कर सकता है। जाँचें कि दाल दिए गए निशान से ऊपर है या नहीं। देखें कि क्या बच्चा मात्राओं की तुलना कर सकता है (प्रत्येक मामले में कम या ज़्यादा)। देखें कि क्या बच्चा डालना और अनाज जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

घ) समूह गतिविधि 4: चना, राजमा और मूँगफली जैसे अनाजों को छाँटना

बच्चे निगल न पाएँ, ऐसा मोटा अनाज चुनें। बच्चों को केवल तीन अँगुलियों का उपयोग करके मिश्रित अनाज को अलग-अलग कटोरे में छाँटना चाहिए। बालगीत इन सभी गतिविधियों का हिस्सा हो सकते हैं। उपलब्ध बालगीतों का प्रयोग करें या ऊपर बताए अनुसार सरल बालगीत बनाएँ। बच्चों को धुन के साथ गाना पसन्द होता है।

बच्चों के लिए निर्देश: बच्चों, तुम्हें तीन तरह के अनाज दिए गए हैं। वे एक-दूसरे से अलग दिखते हैं। ये हैं चना, राजमा और मूँगफली। अब आप इन्हें अलग करके एक अलग बर्तन में निकाल लें।

(बच्चे समानता और अन्तर की अवधारणा को सीखेंगे। यह गतिविधि उनकी एकाग्रता में सुधार करने में भी मदद करती है।)

आकलन: देखें कि क्या बच्चा समान अनाज की पहचान कर सकता है। जाँचें कि क्या बच्चा अलग किए गए अनाज को अपने सम्बन्धित कण्टेनरों में स्थानान्तरित कर सकता है। देखें कि क्या बच्चा अनाज, चना, राजमा,सूखी मटर और मूँगफली जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

ङ) समूह गतिविधि 5: सब्जियों से खेलना

बच्चे सब्जियाँ लेंगे, उन्हें धोएँगे और कपड़े से पोछेंगे। मटर की फली छीलना, हाथ से फलियों को तोड़ना और एक गाजर को एक कुन्द छिलनी से छीलना गतिविधि में शामिल किया जा सकता है।

बच्चों के लिए निर्देश: बच्चों को सब्जियाँ पकाने से पहले उन्हें धोना, पोंछना और काटना चाहिए। मज़बूत बनने के लिए खूब सारी सब्जियाँ खाएँ। सब्जियाँ हमें तदुरुस्त रखती हैं। मटर की फली लें और उन्हें छील लें। मटर को एक-एक करके निकाल लें। इन्हें कटोरे में रखे पानी से धो लें। फिर बीन्स लें और उन्हें धो लें। अपनी पहली तीन अँगुलियों का उपयोग करके बीन्स को तोड़ लें। सभी टुकड़े एक ही आकार के होने चाहिए। गाजर लें, धोकर पोछ लें। छिलनी से छीलें। छिलनी का इस्तेमाल सावधानी से करें।

बाज़ार जाओ, गाजर ख़रीदो

गाजर धोओ, गाजर पोंछो

गाजर छीलो, गाजर खाओ

कैसा इसका स्वाद?

गाजर मीठी और कुरकुरी सेहतमन्द

रोज एक गाजर खाओ डॉक्टर को रक्खो दूर

देखें कि क्या बच्चा फली को छील सकता है और सब्जियों को लगभग समान आकार में तोड़ सकता है। जाँचें कि क्या बच्चा गाजर छील सकता है। देखें कि क्या बच्चा फली, बीन्स, गाजर, धोने, पोंछने और छिलनी जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

च) समूह गतिविधि 6: मीठा, नमकीन और खट्टा

मेज़ पर चीनी व नमक के कटोरे और नींबू का एक टुकड़ा रखा जाता है। पानी का एक मग, और तीन गिलास दिए जाते हैं।

बच्चों के लिए निर्देश: छोटे टोंटीदार पात्र (beakers) का प्रयोग कर तीन पारदर्शी गिलासों में पानी डालें। पहले गिलास में एक चम्मच चीनी डालें और मिलाएँ। देखें कि चीनी का क्या होता है। घुलने के बाद पानी का स्वाद चखें। दूसरे गिलास में एक चम्मच नमक डालें और मिलाएँ। ग़ौर कीजिए कि नमक का क्या होता है। घुलने के बाद पानी का स्वाद चखें। तीसरे गिलास में नींबू का टुकड़ा निचोड़ें और मिलाएँ। देखें कि नींबू की बूँदों का क्या होता है। घुलने के बाद पानी का स्वाद चखें। अब, नीचे दिए गए सवालों का जवाब दीजिए –

कौन सा तेज़ी से घुलता है, चीनी, नमक या नींबू?

पहले गिलास में पानी का स्वाद कैसा था?

दूसरे गिलास में पानी का स्वाद कैसा था?

तीसरे गिलास में पानी का स्वाद कैसा था?

(बच्चे पानी डालना और सन्तुलन बनाना सीखेंगे। वे पानी में नमक, चीनी और चूने को घुलते हुए देखते हैं, और एक निष्कर्ष पर आते हैं। वे स्वाद से अवगत हो जाते हैं।)

आकलन: देखें कि क्या बच्चा प्रत्येक घोल के स्वाद को पहचानने में सक्षम है। जाँचें कि क्या बच्चा यह देख सकता है कि पहले क्या घुला। देखें कि क्या बच्चा नमक, चीनी, नींबू और निचोड़ जैसे नए शब्द याद कर सकता है।

सत्र के आख़िर में सीता के साथ-साथ सभी बच्चे बहुत खुश थे। मैं भी खुश था क्योंकि मैं अपने सभी बच्चों के लिए रसोई को सकारात्मक तरीक़े से पेश करने में सक्षम था।

2.3 कक्षा-कक्षीय गतिविधियाँ

2.3.1 कहानी सुनाना (कन्नड़)

ನಾನು 3-6 ವರ್ಷದ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕಲಿಸುತ್ತೇನೆ. ನನ್ನ ಮಕ್ಕಳು ಕಥೆಗಳನ್ನು ಬಹಳ ಇಷ್ಟ ಪಡುತ್ತಾರೆ. ಅದರಲ್ಲೂ ಪ್ರಾಣಿ, ಪಕ್ಷಿಗಳ ಕಾಲ್ಪನಿಕ ಕಥೆಗಳೆಂದರೆ ಅವರಿಗೆ ತುಂಬಾ ಇಷ್ಟ. ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಪ್ರತಿದಿನ ನನ್ನ ಪೂರ್ವ ಪ್ರಾಥಮಿಕ ತರಗತಿಯ 20 ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಗಮನದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ವಿಷಯವಾರು ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುತ್ತೇನೆ. 'ಪಕ್ಷಿಗಳು' ಥೀಮ್ ಅಡಿಯಲ್ಲಿ "ಕಾಗೆಯ ಉಪಾಯ" ಎನ್ನುವ ಕಥೆಯನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಮೌಖಿಕವಾಗಿ ಹೇಳಲು ಮೊದಲು ನಾನು ತಯಾರಿಯಾಗುತ್ತೇನೆ. ಅಂದರೆ ಮಿಂಚು ಪಟ್ಟಿಗಳು, ಚಿತ್ರಪಟಗಳು, ಪಕ್ಷಿಯ ಮಾದರಿಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಿಕೊಂಡು ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುತ್ತೇನೆ. ಕಥೆ ಹೇಳುವ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಮಕ್ಕಳು ಒಳಗೊಳ್ಳಲು ವ್ಯವಸ್ಥಿತ ಆಸನ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಮಾಡಿಕೊಂಡು, ಅನೌಪಚಾರಿಕ ಮಾತುಕತೆಯ ಮೂಲಕ ಉತ್ತೇಜಿತ ವಾತವರಣವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ಮಕ್ಕಳ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಕೇಂದ್ರೀಕರಿಸಲು ಚಪ್ಪಾಳೆ ತಟ್ಟುವ, ಜಿಗಿಯುವ, ಕುಣಿಯುವ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಸುತ್ತೇನೆ. ನಂತರ ಕೆಲವು ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕೇಳುತ್ತೇನೆ. ಅವುಗಳೆಂದರೆ, ಮಕ್ಕಳೇ, "ನಿಮಗೆ ಕಥೆಗಳೆಂದರೆ ಇಷ್ಟನಾ?", "ನಿಮ್ಮ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ಕಥೆಗಳನ್ನು ಯಾರು ಯಾರು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ?", "ಯಾರಾದರು ಒಂದು ಕಥೆ ಹೇಳಬಲ್ಲಿರಾ?" ಹೀಗೆ ಮುಂದುವರೆಯುತ್ತದೆ. ನಾನು ಈ ಹಿಂದೆ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ನಾನು ಹೇಳಿದ್ದ ಕಥೆಗಳನ್ನು ಹೇಳುವಂತೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವನು. ನಂತರ, ಮಕ್ಕಳೇ, ನಿಮಗೆಲ್ಲ ಇಂದು ನಾನು ಒಂದು ಹೊಸ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುತ್ತೇನೆ ಎಂದು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುತ್ತೇನೆ. ಮೊದಲು ಕಥೆಯ ಹೆಸರು, ಸಂದರ್ಭವನ್ನು ವಿವರಿಸಿ, ಅದರಲ್ಲಿ ಬರುವ ಪಾತ್ರಗಳನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸುತ್ತೇನೆ. ನಂತರ ಮಕ್ಕಳು ಕಾಲ್ಪನಿಕವಾಗಿ ಊಹಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಸಹಾಯವಾಗುವಂತೆ ಧ್ವನಿಯಲ್ಲಿ ಏರಿಳಿತಗಳು, ಪಾತ್ರಕ್ಕೆ ತಕ್ಕ ಹಾವಭಾವಗಳೊಂದಿಗೆ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುವೆನು,

ಜೊತೆಗೆ ಮುಕ್ತ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಕೇಳುತ್ತಾ ಮಕ್ಕಳು ಆಲೋಚಿಸಲು, ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು, ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಿಸಲು ಅವಕಾಶ ಕೊಡುತ್ತಾ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕಥೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತೇನೆ. ಉದಾ: "ಮಕ್ಕಳೇ ಕಾಗೆ ನೀರಿಗಾಗಿ ಎಲ್ಲೆಲ್ಲಿ ತಿರುಗಿತು?", "ಕಾಗೆಗೆ ನೀರು ಸಿಕ್ಕಿತೇ?", "ಕಾಗೆ ಹೂಜಿಯಲ್ಲಿನ ನೀರು ಕುಡಿಯಲು ಏನು ಮಾಡಿತು?" ಹೀಗೆ ಹಲವಾರು ಪ್ರಶ್ನೆಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳ ಮುಂದಿಡುತ್ತೇನೆ . ಕಥೆ ಹೇಳಿದ ನಂತರ ಪುನರಾವರ್ತಿತ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳೊಂದಿಗೆ ಕಥೆಯನ್ನು ಪುನಃ ಹೇಳುವೆನು. ಕಥೆಯನ್ನು ಈ ಒಂದೇ ಪದ್ಧತಿಯಿಂದಲ್ಲದೇ ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಓದುವುದು, ಚಿತ್ರಪಟಗಳ ಸರಣಿ ಕಾರ್ಡುಗಳ ಬಳಸಿ ಹೇಳುವುದು, ಹಾಗೆಯೇ ಪಾತ್ರಾಭಿನಯ, ಪ್ರಶ್ನೆಗಳು, ನಾಟಕೀಕರಣ ಹೀಗೆ ವಿಭಿನ್ನ ಪದ್ಧತಿಗಳ ಮೂಲಕ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುವುದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಆಲಿಸುವ, ಗ್ರಹಿಸುವ, ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಸುವ, ಭಾಷಾ ಕೌಶಲ್ಯಗಳ ಜೊತೆಗೆ ಕ್ರಿಯಾತ್ಮಕ, ಕಾಲ್ಪನಿಕ, ಸಮಸ್ಯೆ ಪರಿಹಾರದಂತಹ ಕೌಶಲ್ಯಗಳು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯಾಗುತ್ತವೆ.

2.3.2 मार्गदर्शित खेल (कन्नड़)

ಮಕ್ಕಳು ಆಟಗಳನ್ನು ತುಂಬಾ ಇಷ್ಟಪಡುತ್ತಾರೆ. ನಮ್ಮ ಶಾಲೆಗೆ ಬರುವ ಬಹುತೇಕ ಮಕ್ಕಳು ಸಾಮನ್ಯವಾಗಿ ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿಯೇ ವಾಸವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ಇವರ ಪಾಲಕರು ಕೃಷಿ ಕೆಲಸವನ್ನೇ ಮಾಡುವವರು, ಹಾಗಾಗಿ ಅಂಗನವಾಡಿ ಕಾರ್ಯಕರ್ತೆ / ಶಿಕ್ಷಕಿಯಾದ ನಾನು ನನ್ನ ಅಂಗನವಾಡಿ ಕೇಂದ್ರಕ್ಕೆ ಬರುವ 3 - 6 ವರ್ಷದ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕೃಷಿ ಮತ್ತು ಕೃಷಿ ಸಾಮಗ್ರಿಗಳ ಕುರಿತು ತಿಳಿಸಲು ಅನೇಕ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳನ್ನು ಮಾಡುವೆನು, ಆದರಲ್ಲಿ ಮಾರ್ಗದರ್ಶಿತ ಆಟವು ಒಂದಾಗಿದೆ . ಈ ಆಟಗಳನ್ನು ಆಡಿಸುವುದರ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ದೈಹಿಕ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಅವಕಾಶ ದೊರೆಯುವುದು ಹಾಗೂ ಆಟದ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಅವರು ಅರಿಯುವರು, ಹಾಗಾಗಿ ನಾನು ಮುಂಚಿತವಾಗಿಯೇ ಪೂರ್ವ ತಯಾರಿಯ ಭಾಗವಾಗಿ ಕೃಷಿಗೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಆಟಿಕೆ ಸಾಮಗ್ರಿಗಳನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳುವೆನು, ಆಟದ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ವೃತ್ತಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಿಸುವೆನು. ಒಂದು ಚಿಕ್ಕ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ಮಾಡಿಸುವುದರ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳ ಗಮನವನ್ನು ನನ್ನ ಕಡೆಗೆ ಸೆಳೆಯುವೆನು. ಉದಾ: ಚಪ್ಪಾಳೆ ತಟ್ಟುವುದು, ಚಿಟಕಿ ಹೊಡೆಯುವುದು ಇತ್ಯಾದಿ. ನಂತರ ಆಟದ ಸಾಮಾನುಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಆಟ ಆಡುವ ವಿಧಾನವನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತಿಳಿಸುತ್ತಾ ಒಂದು ಬಾರಿ ಪ್ರಾಯೋಗಿಕವಾಗಿ ಆಟ ಆಡಿ ತೋರಿಸುವೆನು, ಮಕ್ಕಳಿಕೆ ಆಟ ಆಡಲು ಅವಕಾಶ ಒದಗಿಸುವೆನು, ಈ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಸ್ಪಷ್ಟ ಸೂಚನೆಯನ್ನು ನೀಡುವೆನು, ಉದಾ: ಒಬ್ಬರಿಗೊಬ್ಬರು ತಳ್ಳಬಾರದು, ಜಗ್ಗಬಾರದು, ಹಾಗೂ ಆಟದ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸಬೇಕು ಇತ್ಯಾದಿ. ನಂತರ ಕಂಜೀರಾವನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಂಡು, ಮಕ್ಕಳೇ , "ನಾನು ಕಂಜೀರಾವನ್ನು ಬಾರಿಸುವುದನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವವರೆಗೆ ನೀವು ಓಡುತ್ತಾ ಇರಬೇಕು, ಬಾರಿಸುವುದನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವಾಗ ನೀಡುವ ಸೂಚನೆಯಂತೆ ನೀವು ಆಯಾ ಕೃಷಿ ಸಾಮಗ್ರಿ ಬಳಸಿ ಅಭಿನಯ ಮಾಡಬೇಕು" ಎಂದು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತಿಳಿಸುವೆನು. ಕಂಜೀರಾ ಬಾರಿಸುವುದನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸುವಾಗ 'ತೊಗರೆ ಕೊಯ್ಯುವುದು', 'ಬಿತ್ತುವುದು' , 'ನೇಗಿಲು ಹೊಡೆಯುವುದು' ಇತ್ಯಾದಿ ಸೂಚನೆ ನೀಡುತ್ತೇನೆ . ಆಗ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಕೃಷಿ ಸಾಮಾಗ್ರಿ ಬಳಸಿ ಮಕ್ಕಳು ಆಬಿನಯಿಸುವರು. ಇದೇ ರೀತಿಯಾಗಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಆಸಕ್ತಿಯಿರುವವರೆಗೆ (10 ರಿಂದ 15 ನಿಮಿಷಗಳು) ಆಟವನ್ನು ಆಡಿಸುವೆನು, ಎಲ್ಲಾ ಮಕ್ಕಳು ಆಟದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವೆನು. ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ ಆಯಾ ಥೀಮ್ ಗಳ ಸಾಮಗ್ರಿಗಳನ್ನು ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಹಲವಾರು ಆಟಗಳನ್ನು ಆಡಿಸುವೆನು.

2.3.3 गीत पर अभिनय करना (कन्नड़)

ನಾನು 3-6 ವರ್ಷದ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಕಲಿಸುತ್ತೇನೆ. ನನ್ನ ಅಂಗನವಾಡಿಗೆ ಬರುವ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪ್ರತಿದಿನ ಬೇರೆ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಹಾಡನ್ನು ಹಾಡಿಸುತ್ತೇನೆ, ಆ ಹಾಡನ್ನು ಮೊದಲು ನಾನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಅರ್ಥೈಸಿಕೊಂಡು, ಅಭಿನಯದೊಂದಿಗೆ, ರಾಗಬದ್ಧವಾಗಿ ಹಾಡಲು ತಯಾರಿಯಾಗುತ್ತೇನೆ. ಅಂದರೆ ಮಿಂಚು ಪಟ್ಟಿಗಳು, ಚಿತ್ರಪಟಗಳು, ಮಾದರಿಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಿಕೊಂಡು ಸಿದ್ಧವಾಗಿರುತ್ತೇನೆ. ಹಾಡನ್ನು ಹಾಡಿಸುವ ಮೊದಲು ಎಲ್ಲಾ ಮಕ್ಕಳು ವೃತ್ತಾಕಾರದಲ್ಲಿ ನಿಲ್ಲಲು ಸೂಚನೆ ನೀಡುತ್ತೇನೆ. ಆರಂಭಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳಾದ' ಚಪ್ಪಾಳೆ ತಟ್ಟಿಸುವುದು', 'ಹೋಯಿ ಹೋಯ್' ಹೇಳಿಸುವುದನ್ನು ಮಾಡಿ ಅವರ ಗಮನವನ್ನು ಕೇಂದ್ರೀಕರಿಸುತ್ತೇನೆ. ನಂತರ ಮಕ್ಕಳೇ, "ನಿಮಗೆ ಹಾಡುಗಳೆಂದರೆ ಇಷ್ಟಾನಾ?" ಎಂದು ಕೇಳಿ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಇಷ್ಟವಾದ, ಅವರಿಗೆ ಬರುವ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹಾಡಲು ಪ್ರೇರೇಪಿಸುವೆನು. ಹಾಡು

ಹಾಡಿದ ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಚಪ್ಪಾಳೆ ತಟ್ಟುವ ಮೂಲಕ ಅಭಿನಂದಿಸುತ್ತೇನೆ. ನಂತರ ಮಕ್ಕಳೇ, 'ಇದುವರೆಗೂ ನೀವೆಲ್ಲಾ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹಾಡಿದ್ದೀರಲ್ಲವೇ ಈಗ ನಾನು ನಿಮಗೆ ಒಂದು ಹೊಸ ಹಾಡನ್ನು ಹಾಡಿಸುವೆ. ನೀವು ಗಮನವಿಟ್ಟು ಕೇಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು' ಎಂದು ಸೂಚಿಸುತ್ತೇನೆ. ನಾನು ಹಾಡನ್ನು ರಾಗಬದ್ಧವಾಗಿ ಹಾಡುತ್ತೇನೆ. ನಂತರ ನನ್ನೊಟ್ಟಿಗೆ ಹಾಡುವಂತೆ ಹೇಳುತ್ತೇನೆ. ಹಾಗೆಯೇ ಮುಂದುವರೆದು ಅಭಿನಯದ ಮೂಲಕ ಮಕ್ಕಳು ಹಾಡು ಹಾಡಲು ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವೆನು. ಆ ಹಾಡಿನಲ್ಲಿ ಬರುವ ಹೊಸ ಪದಗಳನ್ನು, ಪ್ರಾಸ ಪದಗಳನ್ನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪರಿಚಯಿಸುತ್ತೇನೆ. ಈ ಹಾಡನ್ನು ಮನೆಯಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಪಾಲಕರ ಮುಂದೆ ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವಂತೆ ತಿಳಿಸುವೆನು. ಈ ರೀತಿ ಹಾಡುಗಳನ್ನು ಹಾಡಿಸುವದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಭಾಷಾ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಭಾಗವಾಗಿ ಆಲಿಸುವ, ಮಾತನಾಡುವ ಕೌಶಲ್ಯಗಳು ಬೆಳೆಸಲು ಈ ಮೂಲಕ ಅವಕಾಶಗಳನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಡುತ್ತೇನೆ.

2.3.4 पैटर् (असमिया)

শিক্ষকে শ্ৰেণীকোঠালৈ মেখেলা বা গামোচা দৰে বোৱা কাপোৰ আনিব পাৰে। শিশুসকলক ইয়াক স্পৰ্শ কৰি, অনুভৱ কৰিবলৈ আৰু কাপোৰটো অন্বেষণ কৰাৰ সুযোগ দিব পাৰি। শিক্ষকে ইয়াক প্ৰদৰ্শনত ৰাখি এনেধৰণৰ প্ৰশ্ন সুধিব পাৰে: তোমালোকে কি কি দেখিছা ? তোমালোকে আৰ্হিবোৰ (patterns) দেখিছা নে? তোমালোকে এই আৰ্হিবোৰ আগতে দেখিছা নেকি? আমি আমাৰ চাৰিওফালে একে ধৰণৰ আৰ্হি দেখিব পাৰোনে? তোমালোকে এনে কিছুমান বস্তুৰ নাম দিব পাৰিবানে য'ত আমি এনে ধৰণৰ আৰ্হি দেখিছোঁ?

শিক্ষকজনে বৰ্ণনা কৰিছে যে সকলো শিশুৱে কিছুমান এনে ধৰণৰ আৰ্হি প্ৰস্তুত কৰিব। শিক্ষকে কাগজৰ কিছুমান পটি বিতৰণ কৰে। শিশুৱে তেওঁলোকৰ কাপোৰত বিচৰা ডিজাইনৰ বাবে পাত বা কাটি লোৱা পাচলি (যেনে ভেণ্ডি, আলু, পিয়াঁজ আদি) ব্যৱহাৰ কৰি কাগজৰ পটিত বিভিন্ন আৰ্হি প্ৰস্তুত কৰিব পাৰে। শিক্ষকে তেতিয়া এখন ডাঙৰ বাতৰি কাকতত পটিবোৰ আঠা লগাব পাৰে আৰু ইয়াক প্ৰতিটো শিশুৱে মেখেলা বা গামোচা ৰ দৰে বা আনকি কোটৰ দৰে মেৰিয়াই ল'ব পাৰে।

শিশুসকলক সুধিব পাৰি কোনে এনে কাপোৰ তৈয়াৰ কৰে। যদি শিশুৱে কয় যে এগৰাকী মহিলা শিপিনী, শিক্ষকে কেৱল মহিলাই কিয় বয়ন কৰে বা আমি পুৰুষসকলক কাপোৰ বোৱা ও দেখিবলৈ পাওঁ নে নাই সেই বিষয়ে আলোচনা কৰাৰ এই শিক্ষণীয় সুযোগটো ল'ব পাৰে?

2.3.5 कहानी सुनाना (असमिया)

শিক্ষকে কাহিনী কোৱা ৰ বাবে কিছুমান ছবি বা ফ্লেছ কাৰ্ড বয়্ৱহাৰ কৰিব।

জুপি এজনী ৩ বছৰীয়া শিশু । তাই বিহু নাচি ভাল পাই আৰু বহাগ বিহুত নাচিবলৈ আগ্ৰহেৰে অপেক্ষা কৰি আছে। যেতিয়া দিনটো আহিল, বৰষুণ আৰম্ভ হ'ল। তাই বৰ হতাশ হৈছিল। তাই তাইৰ মাকক সুধিলে, "মা, আজি কিয় বৰষুণ দি আছে?। মই মোৰ বন্ধুৰ সৈতে কেনেকৈ গৈ নাচিম? তাইৰ মাকে ক'লে, "জুপি, তুমি একেবাৰে চিন্তা কৰিব নালাগে। আমি আমাৰ বাৰাণ্ডাত নাচিব পাৰোঁ নহয় । আহা আমি তোমাৰ বন্ধুবৰ্গৰ ঘৰলৈ যাওঁ। ছাতিটো ল'বলৈ নাপাহৰিবা "। জুপি আৰু তাইৰ মাকে তাইৰ তিনিজনী বন্ধুক তাইৰ ঘৰলৈ নিমন্তণ কৰে। তেওঁলোকে গোটেই দিনটো বিহু নাচে। গোটেই কেইজনী ভাগৰি পৰে। তাৰ পিছত জুপিৰ মাকে লুচি-ভাজিৰ প্লেট লৈ উপস্থিত হয়।জুপীয়ে ফুৰ্তিত জঁপিয়াই পৰে ।

শিক্ষকে প্ৰশ্ন সুধিব পাৰে যেনে:

- কোনে বিহু নাচি ভাল পায়?
- আমি কেনেকৈ বিহু নাচিম? কোনোবাই মোক দেখুৱাব পাৰিবনে কেনেকৈ বিহু নাচিব লাগে?
- আমি বিহুত কি কৰোঁ?
- বৰষুণ হোৱাৰ সময়ত তাই কিয় দুখত আছিল?
- বৰষুণৰ সময়ত আমি ছাতি কিয় বয়্ৱহাৰ কৰোঁ? কোনোবাই বৰষুণত তিতিবলৈ ভাল পায় নেকি?
- যেতিয়া আমি বৰষুণত বাহিৰলৈ যাওঁ তেতিয়া কি হয়?

শিক্ষকে শিশুৱে দিয়া উত্তৰৰ ওপৰত আধাৰ কৰি কথোপকথন টো সম্প্ৰসাৰিত কৰিব পাৰে।

2.3.6 गीत, नृत्य गतिविधि (गुजराती)

ગીતો અને નૃત્યો દ્વારા બાળકોનો સર્વાંગી વિકાસ પ્રોત્સાહિત થાય તે માટે વિવિધ પ્રવૃતિઓ નીચે ઉદાહરણ તરીકે આપેલ છે. આ પ્રવૃતિઓ વિવિધ ક્ષમતાઓ અને અભ્યાસક્રમના હેતુઓને પરિપૂર્ણ કરવામાં મદદરૂપ રહેશે.

પ્રવૃતિનું નામ: ગીત, સંગીત અને નૃત્ય

સમય: ૪૫ મીનીટ

સાધનસામગ્રી: ખંજરી અથવા ઢોલક

a. તાલની રમત (૫ મીનીટ);
પદ્ધતિ: રમનાર બાળકોને અર્ધગોળમાં બેસાડવા. એક રમનાર/બાળક ખંજરી કે ઢોલક દ્વારા તાલ આપશે જે તાલ પ્રમાણે બહેન રમાડનાર દૈનિક ક્રિયાઓ જેવી કે બ્રશ કરવુ, નહાવું, સાબુ ઘસવો, માથું ઓળવું, નખ કાપવા વગેરે જેવી ક્રિયાઓ નો અભિનય કરશે. રમનાર બાળકો પણ જોઇને તે પ્રમાણે કરશે. દરેક ક્રિયા પછી રમનાર બાળકોને તે પ્રમાણે કરવા કહેવું.

b. વરસાદ તાળી (૩ મીનીટ)
પદ્ધતિ: રમનાર બાળકોને અર્ધગોળમાં ઉભા રાખવા. એક વાર બહેન કરી બતાવશે. એક બોલે એટલે એક આગળીથી તાળી પાડવી, બે બોલે તો બે આગળીથી આમ પાંચેય આગળી સુધી તાળી પાડવી, પછી પાછા કરતા ૫,૪,૩, ૨, ૧ બોલી એમ એક આગળીની તાળી સુધી પહોંચવું. બધા સાથે કરે તો પાણીના ટીપા પડતા હોય તેવો અવાજ આવે

c. મુક્ત ડાન્સ (૭ મીનીટ)
પદ્ધતિ : શિક્ષક ખંજરી અથવા ઢોલક પર તાલ મધ્ય રીતે વગાડશે જેના તાલ ઉપર સૌ બાળકો તેમની મરજી મુજબ ડાન્સ કરશે. તાલ ને ઝડપી, ધીમું કરતું જવું. તે મુજબ ડાન્સ ની ગતિ પણ ઝડપી ધીમી થશે.

d. અભિનય ગીત (૧૦ મીનીટ)

પદ્ધતિ : દરેક બાળકો ને વર્તુળમાં ઉભા રાખી શિક્ષકે ગીતની અભિનય સાથે રજુઆત કરવી. તે મુજબ બાળકો એ પણ ગીત ગાઇને અભિનય કરવાનો રહેશે.

ગીત: મુંબઈથી ગાડી આવી રે ઓ રસિયા રાજા

એક ગાડીને આગળ હાંકો રે ઓ રસિયા રાજા, મુંબઈથી...

એક ગાડીને ઉભી રાખો રે, મુંબઈથી....

એક ગાડીને પાછળ હાંકો રે ઓ રસિયા રાજા, મુંબઈથી...

એક ગાડીને બેસાડી દો રે ઓ રસિયા રાજા, મુંબઈથી....

એક ગાડીને ઉભી કરો રે ઓ રસિયા રહ્યા, મુંબઈથી...

એક ગાડીને ગોળ ફેરવો રે ઓ રસિયા રાજા, મુંબઈથી ...

(જુદી જુદી ક્રિયા ઉમેરવી)

2.4 भाषा शिक्षण के माध्यम से 6-7 साल की उम्र के लिए सीखने की सकारात्मक आदतें

सकारात्मक सीखने की आदतों से सम्बन्धित कौशल, विशेष रूप से शुरुआती ग्रेड्स में सबसे अच्छा तब प्राप्त होता है जब कक्षा में विभिन्न विषयों की शिक्षण पद्धति के रूप में शामिल किया जाता है। इसके लिए नीचे सुझाई गई कुछ रणनीतियों को सभी शैक्षणिक विषयों की पाठ योजनाओं में शामिल किया जा सकता है। नीचे दी गई पाठ योजना भाषा के पाठ का एक उदाहरण है, जिसे बच्चों को पाठ के दौरान अधिक ध्यान केन्द्रित करने और ध्यान देने में मदद करने के लिए संरचित किया जा सकता है।

2.4.1 सीखने के प्रतिफल और आकलन संकेतक:

तालिका 1

सीखने के प्रतिफल	आकलन संकेतक
1. कक्षा में शिक्षक और साथियों के साथ बातचीत पर ध्यान केन्द्रित करता है	1. बातचीत की सामग्री को याद करने में सक्षम और समझ बढ़ाने के लिए सवाल पूछना
2. किसी दिए गए कार्य को अन्त तक पूरा करना और पूरा करने की दक्षता	2. किसी दिए गए गतिविधि को बिना विचलित हुए निर्धारित समय में पूरा करने में सक्षम
3. ऑडियो इनपुट को सुनने और ख़ुद को उससे जोड़ने में सक्षम	3. किसी दी गई कहानी को सुनने, समझने और सोचने में सक्षम

कक्षा में ध्यान के सन्दर्भ में विचार किया गया है :

क) ऑडियो इनपुट (निर्देश, कहानी, बातचीत) पर ध्यान देना।

ख) किसी के कार्यों पर ध्यान देना।

दिन को पढ़ने/लिखने की गतिविधि का कॉर्नर, सर्कल टाइम, भाषा के खेल, निर्देश, व्यक्तिगत कार्य और शिक्षक द्वारा पुस्तक पढ़ने में विभाजित किया गया है। नीचे दी गई पाठ योजना इस बात का सूचक है कि कैसे गतिविधियों को संरचित किया जा सकता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बच्चे गतिविधियों में शामिल हों और समूह गतिविधियों पर ध्यान भी केन्द्रित करें।

क) सारांश

तालिका 2

#	गतिविधि	अवधि	उद्देश्य	सामग्री
1	उपस्थिति अंकन	5 मिनट	लिखित भाषा पर ध्यान देना, और उससे जुड़ना	कक्षा की दीवार पर उपस्थिति चार्ट लगाना और मार्क करना
2	पढ़ने और लिखने का कॉर्नर टाइम	15 मिनट	बच्चों को कक्षा के वातावरण में लाकर उन्हें बाहरी दुनिया के विकर्षणों से दूर कक्षा में अपना ध्यान केन्द्रित करने में मदद करना	रीडिंग कॉर्नर (किताबें) और राइटिंग कॉर्नर (काग़ज़ात, रंगीन क्रेयॉन, पेंसिल, स्केच पेन आदि)
3	सर्कल टाइम – मूलाक्षर 'म' के निर्देश की ओर एक क़दम	15 मिनट	सुनना, दूसरे क्या कह रहे हैं उस पर ध्यान देना, यह जानने पर ध्यान देना कि कब किसी की बारी आने वाली है ज़ोनिंग आउट करने के बजाय गतिविधि पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है	गेंद
4	छोटे समूहों में भाषा के खेल - शब्दों में 'म' ध्वनि खोजें	30 मिनट	ऑडियो और फिजिकल मूवमेण्ट का समन्वय। श्रवण इनपुट के साथ-साथ स्वयं पर भी ध्यान दें।	तीन पेपर कप और तीन कंचे
5	शारीरिक खेल और गीत	10 मिनट	ऑडियो और फिजिकल मूवमेंट का समन्वय श्रवण इनपुट के साथ-साथ स्वयं पर भी ध्यान दें	कोई नहीं
6	पुस्तक पठन – नीना आणि मांजर	20 मिनट	कहानी पर ध्यान देना और सक्रिय सुनना	किताब – नीना आणि मांजर

ख) गतिविधियों का विवरण

i. शिक्षक उपस्थिति दर्ज करने के बजाय सामान्य उपस्थिति पत्रक (common attendance sheet) पर अपने नाम से हस्ताक्षर करें। बच्चे अपना नाम खोजने के लिए उपस्थिति पत्रक से पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और फिर उसके सामने अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं। यह गतिविधि बच्चों को लिखित सामग्री पर अपना ध्यान केन्द्रित करने और उसके साथ जुड़ने में मदद करती है।

आकलन के मानदण्ड :

- बच्चे बिना चूके या हर बार याद दिलाए बिना अपने नाम के आगे अपनी उपस्थिति लगा सकते हैं।
- बच्चे अन्य नामों की सूची से अपना नाम पहचान सकते हैं।

ii. जब बच्चे कक्षा में आते हैं, तब वे विचलित अवस्था में होते हैं। दो कॉर्नर्स (पठन और लेखन) में से एक में स्थिर होने की आदत से उन्हें कक्षा के काम पर अपना ध्यान केन्द्रित करने और बाहरी विकर्षणों को दूर रखने में मदद करती है। बच्चों में प्रिण्ट जागरूकता विकसित करने के लिए यह एक अच्छा अभ्यास है।
आकलन के मानदण्ड :

- बच्चे जब पठन-लेखन कॉर्नर में बैठ जाते हैं तो शान्त हो जाते हैं और किताब पढ़ना, चित्र बनाना या कुछ लिखना शुरू कर देते हैं।
- वे एक-दूसरे से कम बात करते हैं और अपने द्वारा चुनी गई गतिविधि पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं।
- बच्चे सर्कल टाइम में पढ़ने और लिखने (अप्रत्याशित साक्षरता) की दिशा में पहला कदम उठाते हैं।

iii. शिक्षक मूलाक्षर 'म' की ध्वनि के फिर से दोहराने के एक खेल आयोजित करता है। शिक्षक 'म' की ध्वनि वाला एक शब्द कहता है और गेंद को किसी बच्चे की ओर फेंकता है। गेंद पाने वाला बच्चा शब्द को दोहराता है और 'म' ध्वनि वाला ही एक नया शब्द कहता है। इसके बाद, गेंद दूसरे बच्चे की ओर फेंकी जाती है। चूँकि घुमावों का कोई निश्चित क्रम नहीं है, सभी बच्चों को सतर्क रहना और खेल से जुड़ना चाहिए, ऐसा न हो कि वे अपनी बारी से चूक जाएँ। उन्हें कहे जा रहे शब्दों पर भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि उन्हें अन्तिम शब्द को दोहराना होगा। इससे उन्हें अपनी बारी खत्म होने के बाद मानसिक रूप से साइन आउट करने के बजाय खेल की पूरी अवधि में गतिविधि पर अपना ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलती है। इस प्रकार, बच्चे 'म' की ध्वनि को डिकोड कर सकते हैं और उन शब्दों को बता सकते हैं जिनमें 'म' ध्वनि होती है।
आकलन के मानदण्ड :

- गेंद पर नज़र रखते हैं और ध्यान देते हैं कि किसकी बारी है।
- सक्रिय रूप से सुनता है और खेल में कहे जा रहे शब्दों को याद रखता है।
- विभिन्न ध्वनियों (ध्वनि सम्बन्धी जागरूकता) के बीच अन्तर कर सकते हैं।

iv. बच्चे जोड़े में बैठते हैं। प्रत्येक जोड़ी को तीन पेपर कप और तीन कंचे दिए जाते हैं। काग़ज़ के कपों को पहले, मध्य और आख़िरी के रूप में एक पंक्ति में व्यवस्थित किया जाता है, और दोनों बच्चे कप के एक ही तरफ़ बैठते हैं। एक बच्चा एक शब्द कहता है जिसमें 'म' ध्वनि होती है। दूसरा बच्चा कंचे को पहले, मध्य या आखिरी प्याले में इस आधार पर रखता है कि शब्द में 'म' की आवाज़ कहाँ सुनाई देती है। उदाहरण के लिए 'कमळ' शब्द के लिए बच्चे को बीच के प्याले में कंचे लगाना चाहिए। मामा शब्द के लिए बच्चे को पहले प्याले में एक और आखिरी प्याले में एक कंचे रखना चाहिए।
आकलन के मानदण्ड :

- शब्द को ध्यान से सुनते हैं०, विशिष्ट ध्वनि के स्थान की पहचान कर सकते हैं ०और उसके अनुसार कंचे को रख सकते हैं।
- विभिन्न ध्वनियों (ध्वनि सम्बन्धी जागरूकता) के बीच अन्तर कर सकते हैं।

v. शिक्षक बच्चों को 'तळ्यात-मळ्यात' के खेल में शामिल करता है। बच्चे एक घेरे में खड़े होते हैं और हाथ पकड़ते हैं। जब शिक्षक 'तळ्यात' कहते हैं, तो बच्चे अन्दर की ओर कूदते हैं, और जब शिक्षक 'मळ्यात' कहते हैं, तो वे बाहर की ओर कूदते हैं। बच्चे को शिक्षक द्वारा कहे जा रहे विशिष्ट शब्द पर ध्यान देकर हैं उसके अनुसार कार्य करना होगा। जब तक वे ध्यान नहीं देते वे खेल को जारी रखने में असमर्थ होते हैं।
शिक्षक बच्चों को ज्ञात कविता के शब्दों को गाए बिना क्रिया करता है, बच्चे क्रियाओं को देखते हैं और कविता गाते हैं। कक्षा में नियमित अन्तराल पर शारीरिक गतिविधि बच्चों का ध्यान आगे आने वाली गतिविधियों में बढ़ाने में मदद करती है।
आकलन के मानदण्ड: ऑडियो और शारीरिक क्रियाओं को एक साथ समन्वयित करता है।

vi. अनुवर्ती गतिविधि के रूप में, शिक्षक बच्चों को कोई भी उपयुक्त कहानी ज़ोर से पढ़ने के लिए कह सकती है। वह बच्चों को चित्र दिखा सकती है, कहानी के बारे में सवाल पूछ सकती है और बच्चों को आगे की घटनाओं का अनुमान लगाने के लिए कह सकती है।
आकलन के मानदण्ड :

- कहानी को आखिर तक समझते हैं ।
- पूछे गए सवालों के जवाब कहानी से जोड़ सकते हैं।
- कहानी किस दिशा में ले जाएगी, इसके बारे में अनुमान लगा सकते हैं।

2.5 आसपास के जानवरों के माध्यम से गणित सीखना

तारकेश्वर में इस ग्रामीण स्कूल के आसपास का समुदाय कई जानवरों और पक्षियों को आश्रय देता है, विशेष रूप से जिन्हें पालतू या घरेलू जानवरों के रूप में पाला जाता है। समुदाय के परिवार इन जानवरों को खाना और जगह देकर उनकी देखभाल करते हैं। अन्य जानवर भी मानव आवास के निकट रहते हैं।

शिक्षिका बरसा अपनी शिक्षण प्रक्रिया में इसका व्यापक रूप से उपयोग करती हैं। यहाँ 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए उनके द्वारा बनाई गई शिक्षण योजनाओं का एक नमूना है। जबकि यह योजना अधिगम के अन्य प्रतिफलों को प्राप्त करती है; यहाँ आसानी के लिए संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र से सम्बन्धित और इसके भीतर गणितीय समझ व दक्षताओं को विकसित करने के पाठ्यचर्या के उद्देश्य को इस उदाहरण में रेखांकित किया गया है।

एक चरवाहे की कहानी सुनाइए। जो कुछ इस तरह है :

"बहुत-बहुत समय पहले की बात है, तारकेश्वर में एक चरवाहा परिवार रहता था। उनके पास बहुत सारी गायें थीं। हर दिन दोपहर में देबंशी और दीपांदन उन्हें चराने जाते थे। वे मन्दिर की गली से गुजरते हुए गाँव के बाहर के जंगल में जाते और देर शाम को सभी गायों को इकट्ठा करके लौट आते।

एक दिन, देबंशी अचानक सोचने लगी... अगर कोई गाय गुम हो गई या खो गई, तो हमें कैसे पता चलेगा। वह परेशान थी। वह सोचने लगी कि क्या किया जाए। अपनी इस परेशानी को उसने अपने भाई को भी बताया। वे उस समय तक कोई संख्या या गिनती नहीं जानते थे।

जब उन्होंने इसे अपने पड़ोसी बाल्मीकि बताया, तो उन्होंने एक योजना सुझाई। बाल्मीकि ने कहा कि उनके दरवाज़े से निकलने वाली प्रत्येक गाय के लिए एक बोरी में एक कंकड़ डालें और जब वे चरकर घर लौटती हैं और जब प्रत्येक गाय उनके द्वार में प्रवेश करती है, तो उसी बोरे में से एक कंकड़ निकाल लें। इस तरह आप जान पाएँगे कि क्या सभी गायें वापस आ गई हैं। देबंशी और दीपंजन अभी भी हैरान थे, क्योंकि उन्हें समझ नहीं आया कि यह कैसे काम करता है। बच्चों, क्या आप समझ गए कि बाल्मीकि की योजना कैसी है, क्या यह गायें वापस आईं हैं या नहीं पता लगाने में मदद करती है या नहीं?

देबंशी और दीपांजन इस विचार को आजमाना चाहते थे और देखना चाहते थे कि यह कैसे होता है। अगले दिन उन्होंने ठीक वैसा ही किया जैसा बाल्मीकि ने सुझाया था। जैसे ही एक-एक गाय दरवाजे से निकली, उन्होंने बोरी के अन्दर एक-एक कंकड़ डालना शुरु कर दिया। जब वे लौटे, तो उन्होंने दरवाजे में प्रवेश करने वाली प्रत्येक गाय के लिए एक कंकड़ निकाला। अचानक, वे समझ गए कि यह कैसे काम करता है और बहुत खुश थे। उस शाम उन्होंने बाल्मीकि को धन्यवाद दिया और उन्हें कृतज्ञता के रूप में चावल और दूध से बनी खीर भेंट की।

बच्चों को व्यस्त रखने के लिए कथन को प्रश्नों के साथ जोड़कर प्रस्तुत करें।

कहानी के अन्त में बच्चों को एक गतिविधि में शामिल करें। एक कंचों भरा और एक खाली डिब्बा लें। जैसे ही बच्चे बाहर जाते हैं, वे पहले डिब्बे से एक कंचा उठाते हैं और दूसरे डिब्बे में डालते हैं। जैसे ही वे वापस अन्दर आते हैं, वे दूसरे डिब्बे से एक कंचा उठाते हैं और उसे पहले वाले बक्से में वापस रख देते हैं।

नोट : हमें बच्चों से तुरन्त प्रतिक्रिया नहीं भी मिल सकती है। यह देखने और सोचने के अवसर प्रदान करने के बारे में अधिक है। अधपके निर्देश ज़्यादा मदद नहीं करते हैं।

अगले दिन, इसी कहानी वहीं से शुरू करें, जहाँ वह छूटी थी। कुछ इस तरह :

"देबंशी और दीपंजन गायों के झुण्ड पर नज़र रखने के नए तरीक़े से खुश हैं। एक दिन जब वे शाम को गायें चराकर लौटे और जब एक-एक गाय अन्दर जाने लगी तो उन्होंने बोरी से एक-एक कंकड़ निकालना शुरू कर दिया। लेकिन वे हैरान और परेशान थे। दो कंकड़ अभी भी बचे थे लेकिन उन्हें बाहर कोई गाय नहीं दिखाई दी। बच्चों, आपको क्या लगता है कि देबंशी और दीपंजन हैरान और परेशान क्यों थे? इसका क्या मतलब है? किसी और दिन, बोरी खाली थी, क्योंकि सभी कंकड़ निकाल दिए गए थे। लेकिन फिर भी एक गाय बाहर थी। इसका क्या मतलब है, बच्चो? क्या यह सम्भव है?"

अगले दिन, जितनी बच्चों की संख्या है, फ़र्श से सटे बोर्ड पर उतने लकीरें खींचे। बच्चों से कहे कि हर दिन जब वे कक्षा में आए, तब एक लकीर उस पर खींचा करें।

कुछ महीनों बाद बच्चों से यह पूछें और इसका पालन करें, "आज हम केवल बोर्ड को देखकर पता लगा सकते हैं कि कुछ बच्चे स्कूल आए हैं और कुछ स्कूल नहीं आए हैं। अगर हम यह जानना चाहते हैं कि कौन स्कूल आए हैं और कौन-कौन नहीं आए तो हमें क्या कर सकते हैं?

2.6 कक्षा 2 में गणित के लिए समूहवार अलग-अलग सीखना (Differentiated Learning)

उत्पल मोरीगाँव में दूसरी कक्षा के बच्चों को पढ़ाते हैं। वह बच्चों के लिए जोड़ और घटाव से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं, अवधारणाओं व पैटर्न को शामिल करने, तलाशने एवं खोजने के लिए विभिन्न परिदृश्यों, सन्दर्भों व अवसरों को प्रस्तुत करते रहे हैं। कुछ दिनों के अवलोकन के बाद अपनी बातचीत के दौरान उन्होंने देखा कि बच्चे अलग-अलग स्तरों और स्थितियों पर थे। उत्पल ने अपने अवलोकनों के आधार पर कक्षा को कुछ समूहों में विभाजित किया है।

2.6.1 समूह क

प्रियोम, आसीन और ताशी अभी भी संख्याओं के नाम और दो अंकों की संख्याओं की गिनती में महारत हासिल करना सीख रहे हैं। इससे उन्हें दो अंकों की संख्या वाले बुनियादी गणित करते समय भी परेशानी होती है। आसिन को घटाव के अर्थ के बारे में कुछ और जानकारी की आवश्यकता है। दीपशिका गिनती में काफ़ी सहज है, लेकिन फिर भी जोड़ना और घटाना सीख रही है।

इस समूह के लिए उत्पल ने नीचे दी गई गतिविधियों की योजना बनाई :

क) संख्या कार्ड गतिविधि: इसे जोड़ियों में किया जाना चाहिए, जहाँ संख्या कार्ड (संख्या 1-20) पर एक पैटर्न होता है। कार्ड को मिलाकर 2 बच्चों में बाँट दें। हमारे पास बीच में रखी साधारण वस्तुओं का एक साझा ज़ख़ीरा भी है (बटन, बीज आदि)। कार्ड को बगल में रखी गई वस्तुओं की संख्या के बगल में सीधा रखा जाता है, जहाँ वस्तु और कार्ड पर छपी संख्या समान होती हैं। अपनी हरेक बारी पर खिलाड़ी को अपने पास के कार्ड्स में से एक कार्ड को चुनकर बीच के ढेर पर रखकर कार्ड से मिलान वाली संख्याओं की वस्तुओं को मिलाना या निकालना होगा। इसलिए, हर बार उन्हें यह देखना होगा कि कितनी वस्तुओं को मिलाना/निकालना है, मतलब कि उन्हें अन्तर जानना होगा।

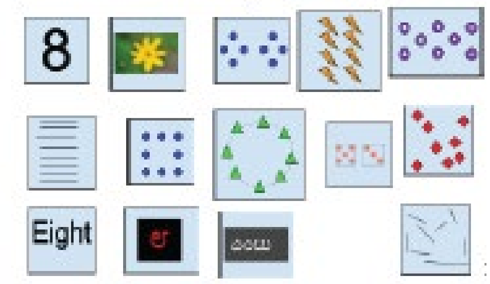

ख) 1, 2, 3, ... 100 की गिनती करना और 10, 20, 30 की गिनती छोड़ना, इस गतिविधि को उल्टे और सीधे दोनों ओर से किया जा सकता है, इस प्रक्रिया में बच्चे एक-दूसरे को सही कर सकते हैं।

ग) घटाव के अर्थ पर ज़ोर देने और जोड़ के साथ सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए :

बच्चों के गिनने योग्य कुछ वस्तुओं (मान लीजिए 10 बटनों) को रखा जाता है। अब मान लीजिए, जैसे ही आसीन अपनी आँखें बन्द करती है, ताशी कुछ वस्तुओं को अपने हाथ में छिपा लेती है (जैसे 4 बटन) और अपना हाथ पीछे कर लेती है। जब आसीन अपनी आँखें खोलती है, तो उसे बताना होगा कि ताशी ने कितनी वस्तुएँ उठाई हैं। शिक्षक पहले इसे प्रदर्शित कर सकता है, और नीचे दिए गए सवाल पूछ सकता है :

केस 1: उत्पल अपनी आँखें बन्द करते हैं, और आसीन बटन उठाती और छुपाती है। इसके बाद, उत्पल अनुमान लगाते हैं कि आसीन के पास कितने बटन हैं।

i. मैं यह कैसे बता पाया? क्या यह कोई जादू की ट्रिक है?

केस 2 : अगले दौर में आसीन अपनी आँखें बन्द कर लेती है और टीचर बटन उठाकर छुपा देता है। इसके बाद, आसीन अनुमान लगाती है कि उत्पल के पास कितने बटन हैं।

i. क्या आप आसीन से सहमत हैं?

ii. आपको क्यों लगता है कि 4 बटन छिपे हुए हैं?

iii. आपको कैसे पता चला?

iv. क्या आप सभी सहमत हैं कि मेरे हाथ में 4 कंचे हैं? क्या आपको यकीन है?

v. हम कैसे पता लगा सकते हैं?

vi. क्या आपका कोई सवाल है?

ऐसे प्रश्न/संकेत महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि वे उत्पल को बच्चों की चिंतन प्रक्रिया का आकलन करने में मदद करेंगे, और उन्हें सोचने, स्पष्ट करने और व्यक्त करने के अवसर प्रदान करेंगे। धीरे-धीरे, वस्तुओं की संख्या बढ़ाई जा सकती है। (ज़मीन पर मौजूद 6 वस्तुओं से 10 तक गिनना और 10 से 4 वस्तुओं को उठाकर वापस गिनना जैसी गतिविधि की जा सकती है।)

2.6.2 समूह ख

हालाँकि त्सेवांग, जावेद और तोशीली इसका अर्थ समझते हैं, लेकिन उन्हें अभी भी औपचारिक प्रतीकात्मक निरूपण को समझना/आत्मसात करना बाकी है (अर्थात, 4 पेंसिल एवं 3 और पेंसिल, बराबर है / वही संख्या है / है 7 पेंसिल => 4 +3 = 7)।

इस समूह के लिए जोड़ के माध्यम से घटाव के लिए वास्तविक जीवन की परिस्थितियाँ उत्पल द्वारा दी जाती है।

क) समस्या : रिंटू और पिंकी के पास कुल मिलाकर 14 सीपियाँ हैं। रिंटू का कहना है कि उसके पास 5 सीपियाँ हैं। क्या हम बता सकते हैं कि पिंकी के पास कितनी सीपियाँ हैं?

ख) समस्या : सतपिदा के पास 3 नींबू हैं, लेकिन सभी के लिए नींबू पानी बनाने के लिए उसे कुल 10 नींबू की आवश्यकता होगी। उसे बाज़ार से और कितने नींबू लाने चाहिए?

ग) समस्या : 13+___=29

घ) समस्या : ___+45 = 59

ङ) सरल ग्रिड जोड़ पहेली जैसे:

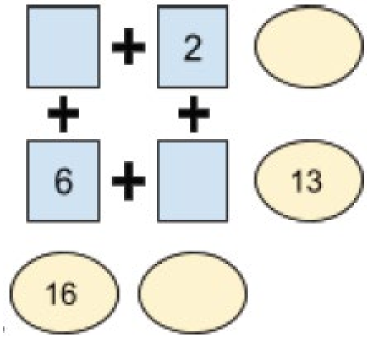

च) उत्पल ने समझा कि वे छोटी संख्याओं के साथ सरल घटाव के इबारती सवालों (word problems) को हल कर सकते हैं और उनसे सम्बन्धित प्रतीकात्मक संकेतन दिखाने के लिए संवाद करते हैं। वे उन उदाहरणों/परिदृश्यों का उपयोग करते हैं जो उन्होंने पहले काम में लिए थे।

छ) अपनी बातचीत के दौरान, उन्होंने पाया कि स्थानीय मान (place value) की समझ अभी भी पर्याप्त नहीं थी, और त्सेवांग कभी-कभी बड़ी और छोटी संख्याओं की पहचान करने में चूक जाता था। उत्पल ने 10 से स्किप काउंटिंग खेलने का सुझाव दिया और बच्चों को यह देखने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की कि प्रत्येक संख्या नाम का क्या अर्थ है, चालीस और आठ यानी 40 + 8 ही अड़तालीस है।

ज) 1-100 नम्बर चार्ट का उपयोग करके एक गतिविधि/खेल दिया गया था : संख्या चार्ट पर कुछ खजाने (वस्तुओं) को यादृच्छिक रूप से (randomly) रखा जाता है। प्रत्येक खिलाड़ी के मोहरे को चार्ट पर अलग-अलग स्थानों पर बेतरतीब ढंग से रखा जाता है। प्रत्येक मोड़ पर एक खिलाड़ी या तो +1, -1, +10 या -10 कर सकता है (चलते समय उन्हें अपनी पसन्द को ज़ोर से कहना होगा)। उद्देश्य क़ीमती वस्तुओं की अधिकतम संख्या एकत्र करना है।

झ) उत्पल ने महसूस किया कि स्थानीय मान प्रणाली (place value system) को ग्रहण करने के लिए पर्याप्त समय तक पूरी कक्षा को खेल के साथ जोड़ना बेहतर था। उनके पास कुछ विचार थे - शुरू करने के लिए, टूथपिक्स, फिर flats-longs-units और फिर एक्सप्लोडिंग डॉट्स विधि का उपयोग करें; उन्होंने सोचा कि इस पर बाद में सोचकर योजना बनाएंगे।

2.6.3 समूह ग

कबीर, प्रोनोई और रिधिमा अलग-अलग हालातों में अपने खुद के तरीक़ों का इस्तेमाल करके जोड़ और घटाव का सामना कर सकते हैं, पहचान सकते हैं और काम में ले सकते हैं। वे मुख्य रूप से 10s तक स्किप काउंटिंग का उपयोग कर रहे हैं और 1s के साथ काउंटिंग ऑन/बैक कर रहे हैं, यानी, संख्याओं को दहाई और इकाई में तोड़ रहे हैं और संक्रियाएँ कर रहे हैं। प्रोनोई इबारती सवालों को समझने में थोड़ा संघर्ष करता है, लेकिन जब उत्पल उसे समझने में मदद करते हैं, तो वह समस्या का समाधान कर सकता है। बच्चे 20 तक की संख्या वाली समस्याओं के लिए मानसिक गणना करने में भी सक्षम होते हैं, लेकिन कभी-कभी बड़ी संख्या में वे चूक जाते हैं।

इस समूह के लिए उत्पल ने योजना बनाई कि :

क) 2s, 5s और 3s तक स्किप काउंटिंग (समूह कार्य)। ('क्या आपको लगता है कि 46 नम्बर 2s की स्किप काउंटिंग में आता है? क्यों/क्यों नहीं? आप कैसे जानते हैं?' जैसे सवालात 2s और 5s के लिए भी पूछे जा सकते हैं)।

ख) समझने के कौशल का आकलन करने के लिए उत्पल ने प्रोनोई को एक छोटी कहानी पढ़ने और अपने शब्दों में सुनाने के लिए कहा।

ग) संख्या लचीलेपन और संख्या समझ में सुधार के लिए सवालों के साथ कस्टम वर्कशीट।

2.6.4 समूह घ

खिरेन और मुमताज ने संक्रियाएँ करते समय और कभी-कभी मानसिक रूप से अन्तरिम गणना करते समय लचीले ढंग से संख्याओं का उपयोग करना शुरू कर दिया है।

उनके लिए उत्पल ने सोचा:

Predict what the answer will be based on the previous one. Verify your answer. Try to explain what your approach was / how you thought.

38 - 12 = ___
38 - 11 = ___
38 - 10 = ___
38 - 9 = ___
39 - 9 = ___
40 - 9 = ___

64 - 27 = ___
65 - 26 = ___
66 - 25 = ___

46 - 23 = ___
45 - 24 = ___
44 - 25 = ___

86 - 61 = ___
85 - 60 = ___
84 - 59 = ___

93 - 51 = ___
94 - 52 = ___
95 - 53 = ___

88 - 23 = ___
88 - 33 = ___
88 - 43 = ___

73 - 25 = ___
73 - 30 = ___
73 - 35 = ___
73 - 40 = ___

89 - 5 = ___
39 - 25 = ___
99 - 55 = ___
69 - 15 = ___

31 - 9 = ___
71 - 29 = ___
21 - 19 = ___
71 - 49 = ___

Khiren and Momtaz have started using numbers flexibly while performing operations and also sometimes doing interim calculations mentally. Utpal bhaiya has thought of:

1. Addition and Subtraction chart to observe patterns and relationships, questions like ___ -

क) पैटर्न और सम्बन्धों को देखने के लिए जोड़ और घटाव चार्ट में कुछ इस प्रकार के प्रश्न ___ - ___ = 18।

ख) पहेली के सरल संस्करण जैसे ग्रिड घटाव, संख्या टावर और Cryptarithms।

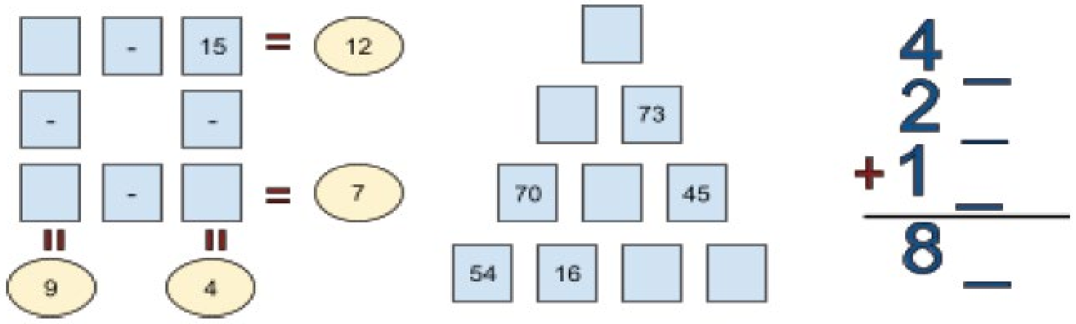

ग) स्थानीय मान का उपयोग करके दाएँ से बाएँ घटाव की मानक विधि का परिचय दें, अर्थात, यदि आवश्यक हो तो उधार लेना (स्थानीय मान की अवधारणा संबंधित गतिविधियों पर पूरे कक्षा सत्र के बाद)।

उत्पल ने उन गतिविधियों का एक अच्छा मिश्रण रखने की कोशिश की है जो बच्चे व्यक्तिगत रूप से, जोड़े में या छोटे समूहों में कर सकते हैं/सीख सकते हैं। वे लचीले ढंग से समूहों में सहायता करने, बातचीत/संवाद करने और उन गतिविधियों का नेतृत्व करने के लिए आगे बढ़ते रहते हैं, जिनमें उनकी आवश्यकता होती है। उन्होंने घटाव के अर्थ और संक्रिया पर जोर देने से पहले, घटाव की मानक विधि प्रस्तुत करने को रोका हुआ है। उन्होंने अवधारणात्मक समझ, जो कि ठोस अनुभवों से शुरू करके अभिव्यक्ति, वर्णन और प्रतीकात्मक निरूपण तक जाती है, का उपयोग करने के लिए विभिन्न स्थितियों, परिदृश्यों व समस्याओं से उनका परिचय करवाया। उन्होंने सोचा, एक बार जब बच्चे घटाव की एक पुख्ता समझ बना लेते हैं और विभिन्न सन्दर्भों में उसे लागू करने के लिए लचीले ढंग से संख्याओं का उपयोग कर सकते हैं, तब वे मानक विधि को बेहतर ढंग से समझने और हासिल करने में सक्षम होंगे। सत्र के बाद जब वह विचार कर रहे थे, तब उन्होंने महसूस किया कि कुछ हफ्तों के बाद मुद्रा, सिक्कों और नोटों का उपयोग करके

बाज़ार के अनुभव इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का बेहतर तरीक़ा होगा।

नोट : कोई समूह निश्चित नहीं है। शिक्षक समूह को गतिशील रूप से इस आधार पर चुनता-बदलता है कि बच्चे वर्तमान में कहाँ हैं और नियोजित कार्य / समस्या / गतिविधि की उपयुक्तता क्या है।

उपरोक्त गतिविधियों में शामिल सीखने के प्रतिफलों का सारांश।

क) बढ़ती हुई संख्या रेखा पर या ब्लॉक्स/चित्रों पर 2s या 3s में स्किप काउंटिंग प्रदर्शित करना।

ख) दहाई और इकाई के समूहों में स्थानीय मान का उपयोग करके निन्यानवे तक की संख्याओं के लिए भारतीय numerals को पढ़ना और लिखना।

ग) 99 तक 10s, 20s, 30s के समूहों में गिनना।

घ) विभिन्न पैटर्न्स में समान मात्रा के प्रतीकों या बिन्दुओं का उपयोग करना।

ङ) लचीली रणनीतियों का उपयोग करना और संख्याओं के संयोजन (साथ जोड़ना) और वियोजन (set से निकालना) के combinations प्राप्त करना।

च) स्थानीय मान अवधारणा का उपयोग करते हुए दो संख्याओं को जोड़ना (योगफल 99 से अधिक नहीं) और उन्हें सरल दैनिक जीवन की समस्याओं / स्थितियों को हल करने के लिए लागू करना ।

छ) स्थानीय मान का उपयोग करके 99 तक की दो संख्याओं को घटाना और उन्हें दैनिक जीवन की सरल समस्याओं/स्थितियों को हल करने के लिए लागू करना।

ज) संख्याओं के जोड़ और घटाव के बीच सम्बन्धों को सीखना और लागू करना।

झ) एक परिचित स्थिति/सन्दर्भ में समस्याओं को हल करने के लिए उपयुक्त संक्रिया (जोड़ या घटाव) की पहचान करना।

ञ) 100 रुपये तक की राशि बनाने के लिए नोट और सिक्के जोड़ना।

ट) कई चरणों (एक बार में 8 से 9 निर्देश) वाले निर्देशों का पालन करना।

ठ) एक विषय के बारे में चर्चा में शामिल होना और प्रश्नों को उठाना, उनका जवाब देना।

ड) वयस्कों द्वारा शुरू किए गए कार्यों में भाग लेना जो उनकी रुचियों पर आधारित नहीं होते हैं (उदाहरण के लिए, शिक्षक के नेतृत्व वाले छोटे समूह में भाग लेना)।

ढ) लम्बे समय तक (30 मिनट) किसी कार्य के साथ जुड़ाव बनाए रखना।

ण) विभिन्न गतिविधियों को आज़माने के लिए वयस्कों के सुझावों का लगातार जवाब देना।

त) समाधान या रणनीति खोजने में वयस्कों और अन्य बच्चों के कल्पनाओं पर विचार करना।

2.7 मेरे शरीर पर बातचीत (तमिल)

நோக்கங்கள்:

இந்த செயல்பாடுகள் குழந்தைகளில் பின்வரும் கற்றல் திறன்களை மேம்படுத்துவதை நோக்கமாகக் கொண்டுள்ளன:

- ராகத்துடன் எளிய பாடல்களைக் கேட்டல் , குழுவாக நயத்துடன் பாடி மகிழ்தல்.
- பாடல்களைக் கவனத்துடன் கருத்தூன்றிக் கேட்டுப் புரிந்துகொள்ளுதல்.
- கேட்ட/படித்த பாடல்களிலிருந்து கேட்கப்படும் எளிய வினாக்களுக்கு முழுமையான சொற்றொடரில் விடை கூறுதல்
- கேட்டவற்றுடன் தன் அனுபவங்களைத் தொடர்புபடுத்திப் பேசுதல்
- எளிய சந்தப்பாடல்களை இசையுடன் படித்தல்

செயல்பாடு 1: முன்னறிவோடு தொடர்புபடுத்துதல்

ஆசிரியர் மாணவர்களின் உடல் உறுப்புகள் குறித்த முன்னறிவைச் சோதிக்கும் வகையில் எளிய கேள்விகளைக் கேட்டுப் பதில்களைப் பெறுதல்.

கண்ணால் நானும் பார்க்கிறேன்	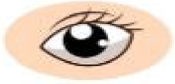
காதால் நானும் கேட்கிறேன்	
மூக்கால் நானும் முகர்கிறேன்	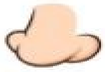
நாக்கால் நானும் சுவைக்கிறேன்	
பல்லால் நானும் கடிக்கிறேன்	
வாயால் நானும் உண்கிறேன்	
கையால் நானும் எழுதுகிறேன்	

காலால் நானும் நடக்கிறேன்	
வாயால் நானும் பேசுகிறேன்	

நம் உடலில் உள்ள உறுப்புகள் யாவை? அவை எங்கெங்கே உள்ளன? (மாணவர்களை உடலுறுப்புகளின் பெயர்களைச் சொல்லவைப்பதோடு அவ்வுறுப்புகளைச் சுட்டிக்காட்டவும் செய்யவும்)

இந்த உடலுறுப்பின் பெயர் என்ன ? இது எதற்குப் பயன்படுகிறது?

செயல்பாடு 2:

ஆசிரியர் எளிய கேள்வி-பதில்கள் மூலம் 'என் உடல்' பாடலின் ஒவ்வொரு வரியையும் அறிமுகம் மாணவர்களிடையே அறிமுகம் செய்வார்.

- ஆசிரியர்: கண்ணால் நாம் என்ன செய்வோம்?
- மாணவர்: பார்ப்போம்.
- ஆசிரியர்: கண்ணால் நாமும் பார்க்கிறோம் (பாடல் வரி)
- ஆசிரியர்: காதால் நாம் என்ன செய்வோம்?
- மாணவர்: கேட்கிறோம்.
- ஆசிரியர்: காதால் நாமும் கேட்கிறோம் (பாடல் வரி)

இதே போன்று ஒவ்வொரு வரியையும் அறிமுகப்படுத்தியபின் ஆசிரியர் பாடிக்காட்ட ஆரம்பிப்பார்.

செயல்பாடு: 3 - ஆசிரியர் உடல்மொழியுடன் பாடிக்காட்டுதல்

பாடலின் ஒவ்வொரு வரியையும் தகுந்த ஏற்ற இறக்கங்களோடும் உரிய உடல் மொழியோடும் ஆசிரியர் ஓரிரு முறை பாடிக்காட்டி மாணவர்களைக் கவனிக்கச் செய்வார்.

நாம் எந்த உடல் உறுப்பால் பார்க்கிறோம்?

நாம் எந்த உடல் உறுப்பால் கேட்கிறோம் ?

மாணவர்கள் நன்கு கவனித்துப் பாடலை உள்வாங்கியபின் ஆசிரியர் மாணவர்களைப் பின்தொடர்ந்து பாடச் செய்வார். மாணவர்கள் ஆசிரியரைப் பின்தொடர்ந்து உரிய சந்தத்துடன் பாடுவார்கள்.

செயல்பாடு: 4 - ஆசிரியர் உடல்மொழியுடன் பாடிக்காட்டுதல்

ஆசிரியர் ஒவ்வொரு உடலுறுப்பையும் சுட்டிக்காட்டி அதற்குரிய பாடல்வரியை மாணவர்களைப் பாடிக்காட்டச் செய்தல்.

ஆசிரியர் கண், காது, மூக்கு முதலிய உறுப்புகளை தன் சுட்டுவிரலால் சுட்டிக்காட்டியபின் அதற்குரிய பாடல்வரியை மாணவர்களைப் பாடச்செய்தல்.

செயல்பாடு: 5 – மாணவர்களைக் குழுவாகப் பாடவைத்தல்

படங்களுடன் பாடல்வரிகள் அடங்கிய தாள்களை மாணவர்களிடையே அளித்து ஆண்/ பெண்/ முதல் குழு/ இரண்டாம் குழு என மாறி மாறி பாடல் வரிகளை மாற்றி ஆசிரியர் மாணவர்களைப் பாடவைப்பார்.

கரும்பலகை: ஆசிரியர் உடல் உறுப்புகளின் பெயர்களை கரும்பலகையில் எழுதிக்காட்டி மாணவர்களை வாசிக்கச் செய்வார்.

செயல்பாடு: 6 – உடல் உறுப்புகளின் படங்களைக் காண்பித்துப் பாடவைத்தல் / பாடல்வரிகளை மாற்றிப்பாடுதல்.

ஆசிரியர் கண், காது, மூக்கு முதலிய உடல் உறுப்புகளின் படங்களை மாணவர்களிடையே காண்பித்து அதற்குரிய பாடல் வரிகளை மாணவர்களைப் பாடவைப்பார். மேலும் சிறு சிறு வினாக்களை எழுப்பி உரையாடுவார்.

கரும்பலகை: உடல் உறுப்புச் செயல்பாடுகளுக்குரிய வினைச் சொற்களைக் கரும்பலகையில் எழுதி மாணவர்களை ஆசிரியர் வாசிக்கச் செய்வார்.

பாடல்வரிகளை மாற்றிப்பாடுவதற்கான மாதிரி வரிகளை ஆசிரியர் வழங்கி மாணவர்களை பாடல்வரிகளை மாற்றிப்பாடவைப்பார்.

செயல்பாடு: 7 – மதிப்பிடுதல்

a) பாடலின் அடிப்படையில் வாய்வழி கேள்விகள் கேட்பது

எடுத்துக்காட்டு: உணவை சுவைக்க நீங்கள் எதைப் பயன்படுத்துகிறீர்கள்?

உங்கள் கால்களைக் கொண்டு என்ன செய்வீர்கள்?

b) மாணவரின் அன்றாட வாழ்க்கையுடன் தொடர்புடைய வாய்வழி கேள்விகளைக் கேட்பது

எடுத்துக்காட்டு: உங்கள் கைகளால் நீங்கள் செய்யும் பல்வேறு விஷயங்கள் என்ன?

உங்கள் குடும்ப உறுப்பினர்கள் தங்கள் கைகளால் என்ன செய்கிறார்கள்?

c) தனித்தனியாக பாடலைப் பாடுவது. மதிப்பீட்டு அளவுருக்கள் பின்வருமாறு:

மாணவர் பெயர்	குரல் ஏற்ற இறக்கம்	உடல் அசைவு	உச்சரிப்பு

d) பாடலில் ஒத்த ஓசையுடைய சொற்களை கண்டறிதல். அது போன்ற சொற்களை உருவாக்குதல

2.8 दृश्य कलाओं (Visual Arts) के लिए शिक्षण योजना (आयु 7-8)

2.8.1 सीखने के प्रतिफल

तालिका 1

सीखने के प्रतिफल	आकलन संकेतक
1. प्रतिरूपों, रंगों और डिज़ाइनों का प्रतिनिधित्व करने के लिए पर्यावरण का अवलोकन करते हैं।	रंगों, उनकी छवियों और उनके नामों को उनके आस-पास की वस्तुओं और दर्शनीय स्थलों से जोड़ते हैं बाजार में रंगों का अवलोकन, तुलना, मिलान।
2. कलाकृतियाँ बनाते और देखते समय दृश्य और विषयगत विवरणों पर ध्यान देते हैं।	कोलॅाज के लिए सामग्री का चयन करते समय पैटर्न, रंग और उस छवि के आधार पर चुनाव करते हैं जिसका वे प्रतिनिधित्व करना चाहते हैं।
3. विभिन्न सामग्रियों को कोलॅाज करके विभिन्न प्रकार की बनावट बनाते हैं (6-7 वर्ष की आयु से लागू)	कोलॅाज में कपड़े, काग़ज़, प्लास्टिक के रैपर, पत्रिकाओं के टुकड़े आदि को एक साथ रखते हैं।
4. विभिन्न पैटर्न्स को संयोजित करने और बनाने के लिए नवीन तरीक़ों का उपयोग करते हैं (6-7 वर्ष की आयु से लागू)	विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करके एक ही रंग के अलग-अलग बनावट बनाते हैं संरचित तरीके से दो या तीन सामग्री कोलॅाज करके दृश्य पैटर्न बनाते हैं।

2.8.2 संबंध और कड़ियाँ (Connections and Linkages)

क) तीसरे और चौथे सीखने के प्रतिफल 6-7 साल की उम्र से लागू होते हैं और कोलॅाज गतिविधियों की नींव बन जाते हैं। हालाँकि, 7-8 वर्ष के आयु वर्ग में बच्चों को सामग्री के अधिक विस्तृत अन्वेषण की ओर ले जाया जाता है और वे जो विकल्प चुनते हैं, वह सीखने के प्रतिफल 1 और सीखने के प्रतिफल 2 में अपेक्षित हैं। उन्हें और अधिक पुनरावृत्तियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

ख) इन सीखने के परिणामों को संवेदी अनुभवों से सम्बन्धित भाषा और शब्दावली विकास से भी जोड़ा जा सकता है।

2.8.3 निर्देशात्मक रणनीति

कक्षा की गतिविधियों के अलावा, इस पाठ को स्थानीय बाज़ार में एक क्षेत्र-दौरे और विभिन्न प्रकार के कपड़े-लत्ते इकट्ठा करने के लिए गृहकार्य द्वारा भी बढ़ाया जा सकता है।

2.8.4 विषयवस्तु

क) इस सामग्री का औचित्य हमारी ज़िन्दगी के सभी पहलुओं पर विस्तार पर अधिक ध्यान देने के साथ ही उसमें मौजूद कई रंगों की खोज जारी रखने पर आधारित है। यह बच्चे को दिन के हर पल, आस-पास की वस्तुओं, सड़क पर लोगों आदि का अवलोकन करवाता है।

ख) बच्चे विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग करके कोलॅाज का भी पता लगाएँगे।

ग) नज़दीकी बाज़ार की यात्रा बच्चों को विभिन्न प्रकार की सामग्रियों और रंगों की एक सुखद खोज पर ले जाएगी।

घ) इस्तेमाल की गई सामग्री - काग़ज़, पेंसिल, रबड़, क्रेयॉन, फूल, पंखुड़ी, कंकड़, रंगीन चॉक।

2.8.5 शिक्षण योजना और आकलन

इस पाठ योजना में हर दिन 60 मिनट के लिए, दो दिनों तक चलने वाली गतिविधियाँ शामिल हैं।

क) पहला दिन : स्थानीय बाजार की फील्ड ट्रिप और कोलाज से परिचय

बच्चों को पास के किसी भी चालू व जीवन्त बाजार में ले जाया जा सकता है, जहाँ वे अवलोकन करेंगे, नोट्स लेंगे और विभिन्न चीज़ों के चित्र बनाएँगे और व्यस्त बाज़ार में रंगों का खेल देख सकते हैं। बच्चों को वस्तुओं और सामग्रियों की बनावट को देखने/कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

आकलन के मानदण्ड :

- रंगों, उनकी तथा नामों को अपने आस-पास की वस्तुओं और दर्शनीय स्थलों से जोड़ना
- बाजार में रंगों का अवलोकन, तुलना, मिलान

फील्ड ट्रिप के बाद, बच्चों को कोलाज गतिविधि से परिचित कराया जाता है जो वे अगले पाठ में करेंगे, जिसके लिए उन्हें तैयारी करने की आवश्यकता है।

बच्चों को कुछ चित्र बनाने या उसकी योजना बनाने के लिए कहा जा सकता है कि वे किस तरह की कलाकृति बनाएँगे, और विभिन्न सामग्रियों, रंगों और बनावटों का इस्तेमाल कोलॉज बनाने के लिए करना चाहेंगे।

उन्हें खाली जगह छोड़कर बोल्ड चित्र बनाने के लिए कहें, जिसमें कोलॉज बनाने के लिए काग़ज़, कपड़े और अन्य सामग्री चिपकाई जा सके। अगले पाठ में कोलॉज में बनाना जारी रखने के लिए उन्हें चित्र सुरक्षित रखने के लिए कहिए।

आकलन के मानदण्ड :

- भावों-विचारों को चित्रित करना
- कोलाज बनाने की प्रक्रिया में सामग्री की कल्पना कर उसके अनुसार चित्रों को बदलाव करना

बच्चों को अपने कोलाज के लिए आस-पास विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का पता लगाने के लिए कहा जा सकता है। चयन के लिए मानदण्ड, रंग, बनावट और काग़ज़/कार्डबोर्ड पर चिपकाने के लिए उपयुक्तता पर आधारित होना चाहिए। उन्हें कुछ उदाहरण दें जैसे पुराने समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में चित्रों से रंगों के टुकड़े फाड़ना, रंगीन खाद्य रैपर इकट्ठा करना और उन्हें उपयोग के लिए साफ़ करना, एक दर्ज़ी या अपने घर से बेकार कपड़े टुकड़े इकट्ठा करना आदि। उन्हें अपने भाई-बहनों, दोस्तों और परिवार के सदस्यों से मदद लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। उन्हें अगले पाठ में अपनी सामग्री लाने के लिए कहा जाना चाहिए।

आकलन के मानदण्ड :

- बच्चे स्कूल के समय के बाद, घर जाते समय, घर पर और समुदाय से विभिन्न प्रकार की सामग्री एकत्र करते हैं।
- बच्चे एकत्रित सामग्री को अगले पाठ में इस्तेमाल करते हैं।

ख) दूसरा दिन : कोलाज गतिविधि

कक्षा में सभी को समूहों में बैठाया जाता है ताकि कैंची और गोंद दिया जा सके।

उन्हें अपने चित्रों को फिर से देखने और अपनी सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए कहा जा सकता है। सभी बच्चों को अपनी सामग्री और विचारों को अपने सहपाठियों के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

बच्चे अपनी व्यक्तिगत कलाकृतियों पर काम करते हैं, लेकिन समूह में अपनी सामग्री और उपकरण साझा करते हैं। उन्हें एक-दूसरे के काम का अवलोकन करने, नए विचारों, विधियों की खोज करने और एक-दूसरे से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

बच्चों से बातचीत की शुरुआत कुछ इस प्रकार की जा सकती है :

- आपके पास पीले रंग की कई अलग-अलग छटाएँ हैं। आपने इन्हें कहाँ से इकट्ठा किया?
- क्या आप मुझे इस बारे में कुछ बता सकते हैं कि आप अपनी कलाकृति में कैसे रंग भरेंगे?
- क्या आप मुझे उस पैटर्न के बारे में और बता सकते हैं जो आप बना रहे हैं? क्या आपने इसे कहीं देखा है, या आपने इसकी कल्पना की है?
- ऐसा लगता है कि आपके मित्र को यहाँ कुछ गहरे रंगों की ज़रूरत है ; क्या आप उसे कुछ गहरे रंग खोजने में मदद कर पाएँगे?

आकलन के मानदण्ड :

बच्चों से बातचीत की शुरुआत कुछ इस प्रकार की जा सकती है :

- अपने कोलाज में कपड़े, काग़ज़, प्लास्टिक के रैपर, पत्रिकाओं के टुकड़े आदि का मिलान करें
- कोलाज बनाते समय रंगों, छायाओं, पैटर्न और बनावट में भिन्नता पर ध्यान देना
- विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करके एक ही रंग की अलग-अलग बनावट बनाना
- संरचित तरीक़े से दो या तीन सामग्रियों का कोलाज बनाकर दृश्य पैटर्न बनाना
- सामग्री को समायोजित करने के लिए मूल ड्राइंग में संशोधन और सुधार करना
- कलाकृतियों के माध्यम से रोज़मर्रा की वस्तुओं और उनके परिवेश के साथ जुड़ाव बनाना

बच्चों को अपने कार्यक्षेत्र को खाली करने और सामग्री को व्यवस्थित तरीक़े से वापस रखने के लिए कहा जाता है। जल्दी खत्म करने वालों से अपने साथियों की मदद करने के लिए कहा जाता है। बच्चों को अपने पूरे किए गए कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए कहा जाता है, ताकि हर कोई उन्हें देख सके।

कार्यों की सराहना करने और उनके सीखे गए को साझा करने के लिए एक छोटी-सी समापन चर्चा शुरू की गई है।

आकलन के मानदण्ड :

- बच्चे रंग और बनावट के विवरण के साथ-साथ अपने साथियों की कलाकृतियों में प्रयुक्त सामग्री चुनाव को समझते हैं।
- बच्चे काम करने की प्रक्रिया के माध्यम से खोजे गए तरीक़ों को समझते हैं और साझा करते हैं।
- बच्चे प्राप्त सहायता की सराहना करते हैं या काम करते समय अपनी समस्याओं और चुनौतियों को व्यक्त करते हैं।

2.9 3 से 5 साल की उम्र के लिए विविधता का परिचय

गतिविधियों का यह सेट उन बच्चों के लिए है, जिनके घर की भाषा हिन्दी है:

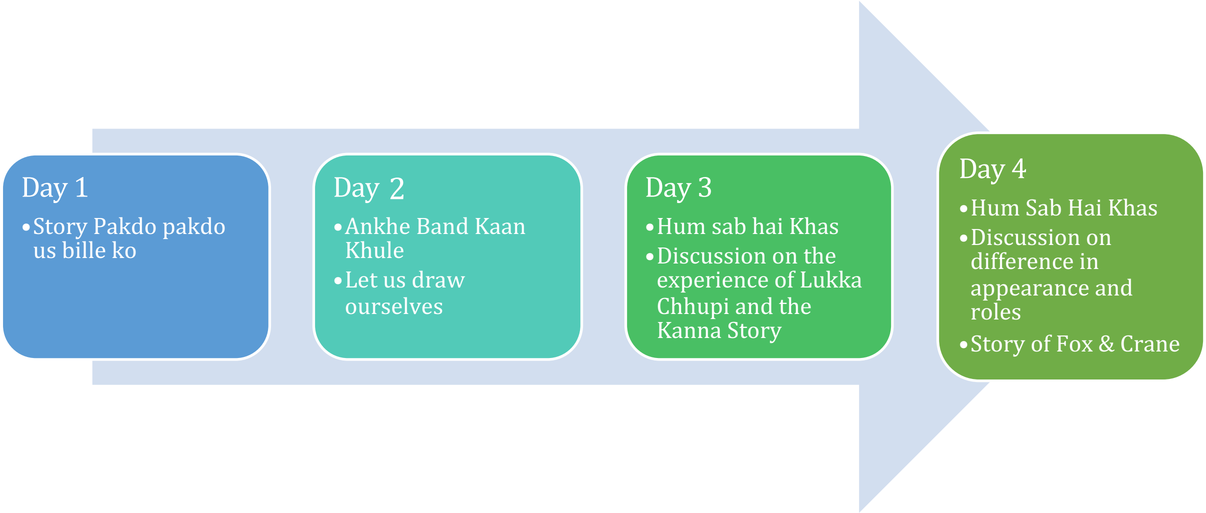

2.9.1 पहला दिन

व्हीलचेयर में एक उत्साही लड़की डिप-डिप की यह कहानी विकलांगता को सामान्य करती है।

क) गतिविधि - कहानी- उड़ने के लिए पंख/उड़ चली (20-25 मिनट)

टीचर : ठीक है बच्चों, चलिए उस लड़की के बारे में एक कहानी पढ़ते हैं, जिसने व्हीलचेयर पर अपनी गाड़ी में रोमांच का अनुभव किया था।

कापी नाम की बिल्ली खो गई है और डिप डिप उसे खोजने में अपनी दोस्त मिमो को मदद करना चाहती है। वह कापी की तलाश में उत्साहपूर्वक अपनी व्हीलचेयर पर घूमती है। डिप डिप हर जगह देखती है, जब तक कि अन्त में वह कापी को एक पेड़ के ऊपर नहीं पाती। लेकिन डिप डिप को फुसलाने के लिए एक शरारती बिल्ली से भी ज़्यादा वक्त लगता है और वह इस बात को नहीं भूलेगी कि वह व्हीलचेयर में है।

एक आम लेकिन ख़ास लड़की की कहानी बताने वाली किताब काफ़ी हौसला देने वाली है। हालाँकि व्हीलचेयर में वह अपने जीवन का प्रबन्धन कर सकती है। उसे आपकी मदद की ज़रूरत है, लेकिन उतनी ही जितना किसी और बच्चे हो सकती है।

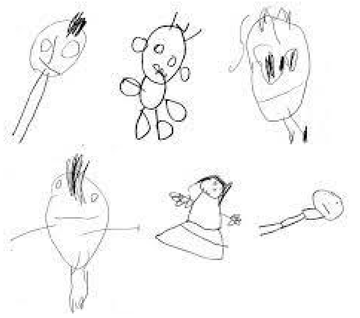

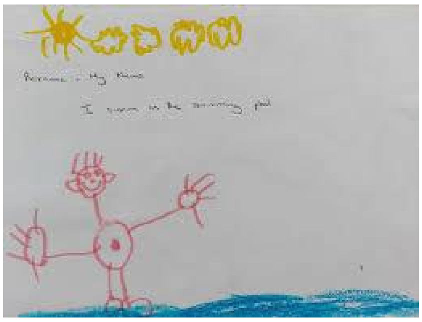

इस पूरी कहानी का सस्वर पाठ इस लिंक पर मिलेगा - https://www.youtube.com/watch?v=HPzK3ooyJ2A

टीचर : डिप डिप को क्या मज़ा आया !! क्या आप सभी ने कभी ऐसा मज़ा किया है?

बच्चा बी : एक बार जब मैं एक मुर्गी का पीछा कर रहा था।

बच्चा सी : जब भी हम पकड़म-पकड़ाई खेलते हैं।

टीचर : हाँ, चलो कल एक खास तरह की पकड़म-पकड़ाई खेलते हैं। क्या आपने आँख-मिचौली खेली है? हमें बारी-बारी से अपनी आँखों पर पट्टी बाँधनी होगी और अन्य खिलाड़ियों को पकड़ना होगा।

2.9.2 दूसरा दिन

क) गतिविधि 1 - आँखें बन्द-कान खुले (40-45 मिनट)

आँख-मिचौली बच्चों के बीच एक पुराना और लोकप्रिय मैदानी खेल (outdoor game) है। इस खेल मे, एक बच्चा जो 'खोजने वाला' होता है, उसकी आँखों पर कपड़े के टुकड़े से पट्टी बाँधी जाती है और उसे सभी बच्चों के बीच से एक बच्चे को पकड़ना होता है। अन्य सभी बच्चे तितर-बितर हो जाते हैं और 'खोजने वाले' का पीछा करने और उन्हें पकड़ने के लिए शोर मचाते हैं। जैसे ही वह किसी दूसरे खिलाड़ी को पकड़ लेता है, 'खोजने वाले' की बारी समाप्त हो जाती है। अब, यह दूसरा खिलाड़ी 'खोजने वाला' बन जाता है और खेल तब तक जारी रहता है जब तक कि हर कोई खेल को समाप्त करने का निर्णय नहीं ले लेता।

यह खेल संवेदी कौशल और सतर्कता विकसित करने में मदद करता है। 'साधक' को सुनाई देने वाली ध्वनियों के आधार पर अन्तर का निर्णय करना चाहिए।

विविधता : बच्चे एक-पैर वाली दौड़ भी खेल सकते हैं; एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए एक पैर पर कूदना।

ख) गतिविधि 2 - आइए हम स्वयं का चित्र बनाएँ (15-20 मिनट)

शिक्षक बच्चों को काग़ज़ और क्रेयॉन वितरित करता है।

शिक्षक : अब बच्चे कल्पना करें कि हम कैसे दिखते हैं, आइए आँखों पर पट्टी बांधे हुए अपना चित्र बनाते हैं।

बच्चे पहली कक्षा में हैं, उनके चित्र बहुत ज़्यादा परिष्कृत नहीं हैं, लेकिन पेंसिल, क्रेयॉन या पेंटब्रश पकड़ते समय उन्हें अच्छा नियंत्रण विकसित करना चाहिए था। वे कुछ इस प्रकार से रेखाएँ खींच सकते हैं:

चित्र किसी भी आकार या संरचना का हो सकता है। जब बच्चे अपने रेखाचित्र बना रहे हों, शिक्षक को प्रत्येक मेज पर जाना चाहिए। उसे चित्र ए या बी जैसा कुछ मिल सकता है। शिक्षक बच्चों से बात करेगा और बच्चे चित्र के बारे में जो कुछ भी समझाएंगे, उसे वह लिखेगा। उनकी व्याख्या जानने के लिए 'ओह, यह अच्छा है, आपने यहाँ क्या बनाया है, राहुल?' 'वाह, रज़िया, क्या यह आप चित्र में हैं? आँखें बन्द करते हुए आप क्या महसूस कर रहे थे?' जैसे सवाल भी पूछ सकता है।

शिक्षक को तब बच्चों से एक-दूसरे के काम को देखने के लिए कहना चाहिए और सराहना करनी चाहिए कि उन्होंने ख़ुद को कैसे बनाया है।

शिक्षिका को गतिविधि को मोटेतौर पर उसके द्वारा तय किए गए समय में समाप्त कर देना चाहिए। यदि कोई बच्चा अधिक चित्र बनाने पर ज़ोर देता है, तो वह अपने पोर्टफ़ोलियो में शीट रख सकती है, और उन्हें अपने खाली समय में इसे खत्म करने के लिए कह सकती है। इस तरह से शिक्षिका अलग-अलग गति से काम करने वाले सभी बच्चों को अलग-अलग समय प्रदान कर सकती है।

2.9.3 तीसरा दिन

क) गतिविधि 1 - दिखावे और विभिन्न भूमिकाओं में अन्तर पर चर्चा। लोमड़ी और सारस की कहानी (पंचतंत्र)। एक दिन, एक लोमड़ी ने अपने घर पर एक सारस को रात के खाने के लिए आमंत्रित किया। सारस निमंत्रण पाकर खुश हुआ और तुरन्त सहमत हो गया। लोमड़ी रसोई से बाहर आई और दो चपटी तश्तरियों में खीर परोस लाई। परोसकर वह खुद भी खीर का आनन्द लेने बैठ गई। सारस अपनी लम्बी चोंच के कारण खीर नहीं पी सकता था। लोमड़ी ने अपनी खीर चाट डाली और सारस देखता रह गया।
अगले दिन, सारस ने लोमड़ी को रात के खाने पर आमंत्रित किया। बगुले ने खीर से भरे दो जग लाकर रखे। जग की लम्बी सँकरी गर्दन थी। न तो लोमड़ी जग में अपना थूथन डाल सकती थी और न ही उसकी जीभ नीचे तक पहुँच पा रही थी। लोमड़ी भूखी घर लौट आई।

पूरी कहानी यहाँ उपलब्ध है: https://www.youtube.com/watch?v=v5-kJSy6Yw8&ab_channel=KiddaTV दोनों दिन, दोनों दोस्त एक-दूसरे के घरों से भूखे-प्यासे लौटते थे क्योंकि उन्हें एक-दूसरे की खास व्यवस्था पसन्द नहीं आयी थी।

शिक्षक : देखो बच्चों, हम सब एक जैसे हैं फिर भी अलग हैं। हममें से किसी की आँखें भूरी हैं, किसी की काली, किसी के घुँघराले बाल, किसी के सीधे, किसी के लम्बे, किसी के छोटे। हमें ख़ुद को और अपने दोस्तों को, वे जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करना चाहिए।

3. सीखने को समझना

विभिन्न शिक्षक अपने बच्चों के सीखने को समझने और आगे बढ़ाने के लिए कक्षा में आकलन का उपयोग कैसे कर रहे हैं, इस अनुभाग में इसके नमूने दिए गए हैं।

3.1 भाषा के लिए वर्कशीट का उपयोग करना, 7-8 की उम्र के लिए

एक भाषा शिक्षक के रूप में पढ़ने और लिखने में बच्चों की धाराप्रवाहिता विकसित करने में मदद करना पाठ्यचर्या का एक मुख्य उद्देश् है। मैं जिस कक्षा 2 (7-8 वर्ष के बच्चों) को पढ़ाता हूँ, उन्हें किसी चित्र या चित्रों के अनुक्रम का वर्णन करने के लिए छोटे वाक्य लिखने में सक्षम होना चाहिए।

वे किस तरह अपना कार्य कर रहे हैं (इस मामले में, एक वर्कशीट पर काम करना) मुझे इस बात का स्पष्ट प्रमाण देता है कि वे कहाँ हैं और मुझे उनकी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए क्या करने की आवश्यकता है। यहाँ मेरी कक्षा 2 कक्षा के एक बच्चे नीरज के जरिए ऐसे काम का उदाहरण दिया गया है।

इससे ऐसी कई बातें निकलकर आती हैं, जिनकी मैं व्याख्या कर सकता हूँ। उदाहरणार्थ: वह वर्णनात्मक भाषा का उपयोग करने का प्रयास करता है; उसकी वर्तनी अधिकांश शब्दों के लिए सही है, जिन्हें ध्वन्यात्मक रूप से सुना जा सकता है और वह कई दृष्ट शब्दों पर अपना नियंत्रण दिखाता है। वह वाक्य लिखते समय चित्र/विषय पर ही बना रहता है, बड़े अक्षरों (capital letters) का उपयोग करता है और सभी वाक्यों के आख़िर में विराम चिह्न का इस्तेमाल करता, 'a' वर्ण का स्थान निर्धारण के साथ प्रयोग करता है। दिए गए चित्र के बारे में नीरज का बहुत कुछ कहना है, लेकिन उसने बिना विविधता के एक सूची रूप में लिखा है।

इसी के आधार पर मुझे नीरज को कई तरह से ढाँढस बंधाना है। उदाहरणार्थ, मुझे उसके लेखन को अधिक रोचक बनाने के लिए 'दर्शकों या पाठकों' की भावना विकसित करने में मदद करने की आवश्यकता है, जैसे मैं यह क्यों और किसके लिए लिख रहा हूँ।

मुझे उसके दो छोटे वाक्यों को एक लम्बे वाक्य में संयोजित करने, नामों को सर्वनामों से बदलने और a/an जैसे आर्टिकल्स के उपयुक्त उपयोग पर काम करने की आवश्यकता है। मुझे उसे 'यह क्रिया कहाँ हो रही है, चित्र में क्या हो रहा है' जैसे प्रश्न पूछकर चित्र के और अधिक पहलुओं के बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

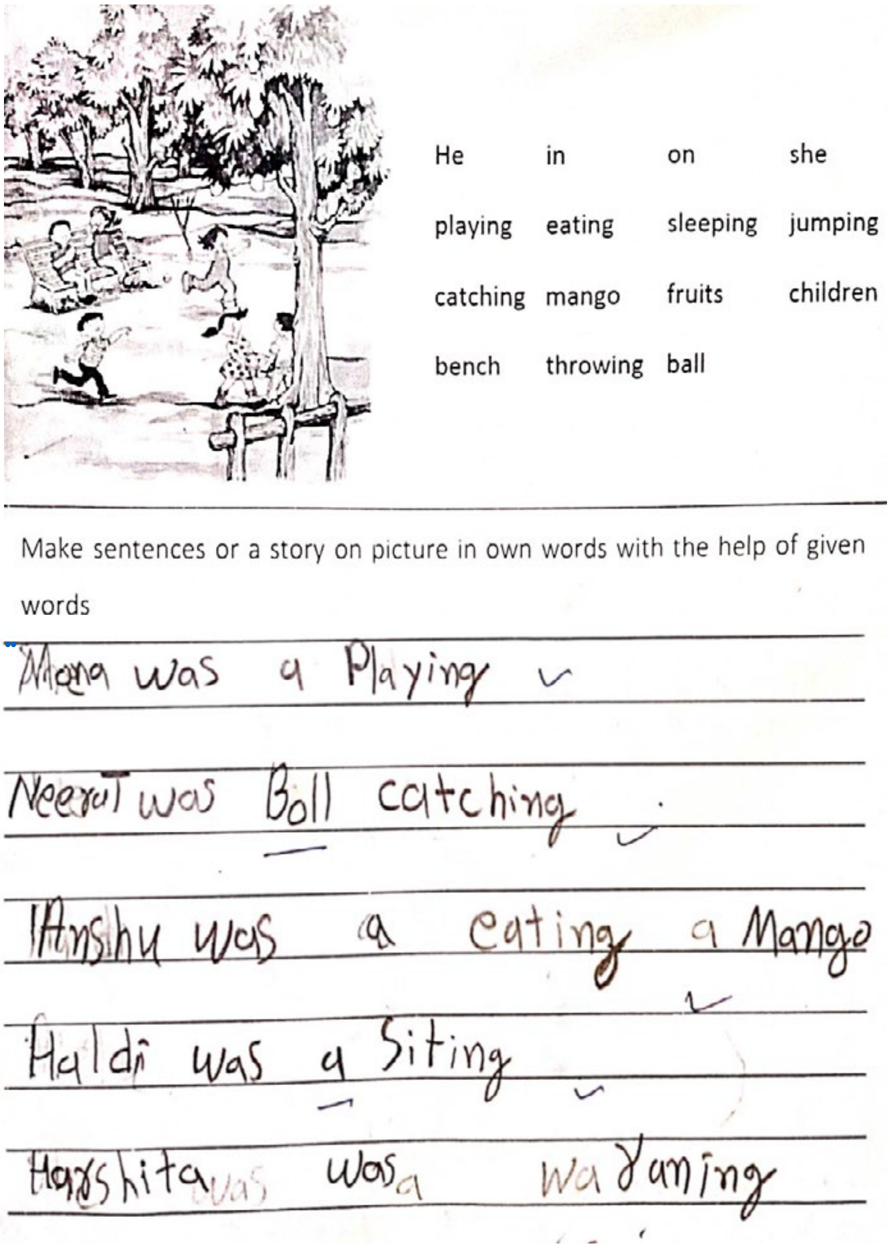

3.2 भाषा का आकलन नमूना, 7-8 वर्षों की उम्र के लिए

मैं अपने कक्षा 2 (7-8 वर्षीय) विद्यार्थियों के साथ अंग्रेज़ी पर अपने काम में बहुत सारी वर्कशीटों का उपयोग करता हूँ। ऐसे ही एक वर्कशीट में बच्चों को कोई चित्र बनाना और कुछ वाक्यों में उसका वर्णन करना शामिल था। मैथ्यू की प्रतिक्रिया निम्नलिखित है

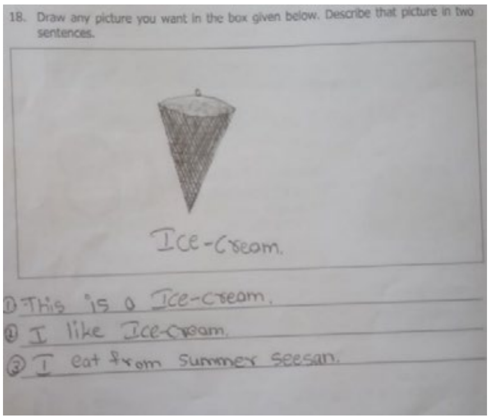

इस कार्य के लिए प्रत्येक अधिगम प्रतिफलों के प्रति प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया है और नीचे तालिका में प्रस्तुत किया गया है। जैसा कि इस आकलन में व्याख्या की गई, मैंने मैथ्यू की सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कुछ गतिविधियों और अगले कदमों की भी योजना बनाई।

तालिका 1

<table>
<tr><th>#.</th><th>सीखने के प्रतिफल</th><th>प्राप्ति
(प्राप्त/आगे मदद की ज़रूरत है)</th><th>कारण (Justification)</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>निर्देशों को सुनता है और चित्र बनाता है</td><td>प्राप्त</td><td>मैथ्यू ने निर्देशों में बताया गया या शिक्षक द्वारा समझाया गया एक चित्र बनाया है.</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>सरल, छोटे वाक्य बनाता और लिखता है</td><td>प्राप्त</td><td>मैथ्यू सुसंगत, सार्थक और अभिव्यंजक वाक्य लिखने में सक्षम है, हालाँकि उनमें कुछ गलतियाँ हैं। वाक्यों में शब्दों के बीच उचित अन्तराल होता है, एक बड़े अक्षर (capital letter) से शुरू होता है और एक पूर्ण विराम के साथ समाप्त होता है।</td></tr>
<tr><td>3</td><td>लिंग से सम्बन्धित सर्वनामों जैसे ‘his/ her/, ‘he/ she’, ‘it’ और ‘this/that’, ‘here/there’ ‘these/ those’ आदि अन्य सर्वनामों का उपयोग करता है</td><td>प्राप्त</td><td>मैथ्यू ने वाक्य में ‘I’ और ‘This’ का उचित प्रयोग किया है।</td></tr>
<tr><td>4</td><td>‘before’, ‘between’’ आदि जैसे पूर्वसर्गों का उपयोग करता है</td><td>मदद की ज़रूरत है</td><td>मैथ्यू ने तीसरे वाक्य में ‘from’ पूर्वसर्ग का ग़लत इस्तेमाल किया है।</td></tr>
<tr><td colspan="4">सारांश</td></tr>
<tr><td colspan="2">बच्चा क्या जानता/ कर सकता</td><td colspan="2">विचारों को अर्थपूर्ण ढंग से व्यक्त करता है और विचारों को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करता है।

पसन्द-नापसन्द ज़ाहिर करता है

अंग्रेज़ी में घोषणात्मक वाक्यों के लिए उपयुक्त वाक्य संरचना का उपयोग करता है।</td></tr>
<tr><td colspan="2">बच्चा क्या नहीं जानता/नहीं कर सकता</td><td colspan="2">बड़े व छोटे अक्षरों (capital and small letters) के प्रयोग में लगातार अन्तर करने और सामान्य व विशिष्ट संज्ञाओं के बीच अन्तर करने में असमर्थ है।

स्वर और व्यंजन के पहले ‘a’ और ‘an’ और के प्रयोग में अन्तर नहीं कर पाता।

उपयुक्त पूर्वसर्गों में मदद की ज़रूरत है, जैसे “from” का उपयोग करना।

कभी-कभी आविष्कृत वर्तनी का उपयोग करता है, उदाहरण के लिए ‘seeson’।</td></tr>
<tr><td colspan="4">अगले क़दम :

निर्धारित करें कि क्या मैथ्यू को सामान्य और विशिष्ट संज्ञाओं की समझ है, क्या वह सामान्य और विशिष्ट संज्ञाओं को बड़े अक्षर से लिखने की समझ है। उसे अतिरिक्त वर्कशीट देकर उसके द्वारा किए गए कुछ और कार्यों का विश्लेषण करें।

मौखिक रूप में विचार व्यक्त करने के लिए उसे प्रोत्साहित करने के लिए चित्र पुस्तकों का अधिक उपयोग करें। उसे अपनी नोटबुक में लिखने के लिए प्रेरित करें और जहाँ भी आवश्यक हो, आवश्यक सहायता प्रदान करें।

उचित रूप से उपयोग करने के नियमों को समझने में उनकी सहायता के लिए “a”, “an”, and “the” के उपयोग वाले विशिष्ट उदाहरणों पर चर्चा करें। आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले पूर्वसर्गों को संशोधित करें।</td></tr>
</table>

3.3 गणित के लिए आकलन नमूना, उम्र 7-8 के लिए

मेरे बच्चों को मात्राओं, आकृतियों व मापों के माध्यम से दुनिया को पहचानने के लिए गणितीय समझ और दक्षताओं को विकसित करने की आवश्यकता है। इसमें लचीली रणनीतियों का उपयोग करके 2 अंकों की संख्याओं का आसानी से जोड़ और घटाव करने की दक्षता शामिल है। मेरी कक्षा 7 (7-8 वर्ष के बच्चों) में मैंने एक समस्या पर काम किया, जिसमें हासिल लेना और दहाई के स्थान सेउधार लेना शामिल था।

संजीव ने इस तरह उत्तर दिया: 63 - 44 = 21

इस प्रतिक्रिया का विश्लेषण नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत किया गया है। मैंने बच्चे की सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कुछ गतिविधियों और अगले कदमों की भी योजना बनाई।

तालिका 1

#	सीखने के प्रतिफल	प्राप्ति (प्राप्त/आगे मदद की ज़रूरत है)	कारण (Justification)
1.	दो अंकों की संख्याओं को लिखने और तुलना करने में स्थानीय मान का उपयोग करता है।	मदद की ज़रूरत है	ऐसा लगता है कि संजीव ने दहाई और इकाइयों को लिखित रूप में सही ढंग से दर्शाया है, लेकिन हल करते समय स्थानीय मान की समझ विकसित नहीं की है। बच्चे ने यह महसूस नहीं किया है कि 63 का इकाई स्थान 44 के इकाई के स्थान से कम है।
2.	दो अंकों की संख्याओं के घटाव पर आधारित सरल प्रश्नों को हल करता है।	मदद की ज़रूरत है	ऐसा लगता है कि संजीव ने दो एक-अंकीय संख्याओं के बीच के अन्तर को याद कर लिया है, लेकिन यह नहीं समझ पाया कि घटाव में कैरी-ओवर की समस्याओं को कैसे किया जाए।

सारांश	
बच्चा क्या जानता/ कर सकता	जानता है कि घटाव का परिणाम एक संख्या है जो दी गई दो संख्याओं के मूल्यों से कम है। ऐसा लगता है कि उसने दो अंकों की संख्या के दहाई और इकाई के स्थानों को सही ढंग से दर्शाया है। ऐसा लगता है कि दो एक-अंकीय संख्याओं के बीच के अन्तर को उसने याद कर लिया है।
बच्चा क्या नहीं जानता/नहीं कर सकता	यह समझ में नहीं आया कि कैरी ओवर तभी निष्पादित किया जाना चाहिए जब बड़ी संख्या का इकाई स्थान छोटी संख्या के इकाई स्थान से कम हो। उसने यह सत्यापित नहीं किया है कि अन्तर और छोटी संख्या का योग बड़ी संख्या होता है।
संजीव के सीखने के लिए आगे के क़दम : • ठोस सामग्री के माध्यम से हासिल लेने और उधार लेने की समस्याओं का चित्रण करें। • एकल अंकों के घटाव को फिर से देखें, और फिर धीरे-धीरे दोहरे अंकों के सवाल की ओर बढ़ें। • उसे जोड़ और घटाव का उपयोग करके सरल समस्याएँ बनाने के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हें हल करने का प्रयास करने दें। • उसे मोना के साथ काम करने को कहें, उन्हें जोड़ और घटाव कार्यपत्रकों को हल करने के सहयोगी कार्य दें।	

3.4 शिक्षक का वर्णनात्मक सारांश, 5-6 वर्षों की उम्र के लिए

तालिका 1

बच्चे की प्रोफाइल	
बच्चे का नाम	सुरुचि
कक्षा	एलकेजी (अब वह यूकेजी में है)
अनुक्रम	XX XX XXXX
लिंग	स्त्री
जन्मतिथि	DD MM YYYY
माता का नाम	गीता दास
पिता का नाम	विजय दास
घर का पता	क, ख ग...
सम्पर्क नम्बर	
भाई-बहन	कोई नहीं
प्रगति का सारांश : बच्चे की विशेष रुचियाँ और प्रतिभाएँ - सुरुचि एक शान्त और शर्मीला बच्ची है। वह घर पर अपने भाई-बहनों के साथ खेलना और कार्टून देखना पसन्द करती है। उसे घर की सामग्री जैसे गुड़िया, सेट आदि से खेलने में आनन्द आता है। जिन क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है - सुरुचि परिवार में सबसे छोटी है और इसलिए परिवार के अन्य सभी सदस्य उसे लाड़-प्यार करते हैं। वह स्वभाव से थोड़ी जिद्दी है और उसे भावनाओं के नियमन में समर्थन की आवश्यकता होती है। जो उसका सामान ले जाते हैं, उन्हें वह कभी-कभी काट भी लेती है।	
प्रगति का विवरण :	
विकास का क्षेत्र	बच्चे का विकास
सामान्य व्यवहार	सुरुचि बहुत ही शान्त, चुप रहने वाली, जो बहुत समय लेकर लोगों के साथ घुलती मिलती है | वह काफी समय लेकर लोगों के साथ सहज होती है और सहज होने के बाद कुछ कुछ बातें साझा करती है। कक्षा में भी वह प्रतिभाग करती है और प्रश्नों के जवाब देती है। शुरुआत में जब वह मम्मी के साथ आती थी तो ही सहज हो पाती थी वरना वह एक शब्द भी नहीं बोलती थी। घुलने- मिलने के बाद मानवी शायद छोटे समूहों में शायद सहज हो पाएगी लेकिन अगर उसकी मन कि इच्छा पूरी न हो तो वह झगड़ा कर लेगी । अपनी बातों को रखने के लिए उसे अभी भी मदद की ज़रूरत पड़ती है।
परिवार	सुरुचि एक संयुक्त परिवार में रहती है, उसके परिवार में उसके माता, पिता, दादा, दादी, ताऊ, ताई, 2 सगी बहनें है और कजिन हैं। मानवी के दादा, पिता जी, ताऊ सभी लोग कृषि और कम्पनी में काम करने जाते हैं। मानवी की माता, दादी और अन्य सदस्य घर का काम करते हैं, इन्होंने घर पर जानवर भी पाल रखे है। अंशिका अपने परिवार के साथ दुर्गापुर में एक पक्के मकान में रहती है। जिसमें 2, 3 कमरे, किचन आदि बने हैं।

शारीरिक विकास	सुरुचि का शारीरिक विकास अपनी उम्र के अनुसार हो रहा है। उसकी फाइन मोटर स्किल अभी विकसित हो रही हैं, वह अच्छे से पेंसिल पकड़ पाती है और चित्र में दी गई बाउंड्री के भीतर रंग भरने की कोशिश करती है। ग्रॉस मोटर स्किल भी विकसित हो रही है, सन्तुलन वाली गतिविधियों में सुरुचि को अभी और अभ्यास की ज़रूरत है। वह धैर्य के साथ गतिविधियों को करने की कोशिश करती है। सरल गतिविधियों को बहुत ही आसानी से कर लेती है, किन्तु जहाँ भी एक से अधिक कार्य होते हैं, उसमें वह थोड़ा-सा अटक जाती है।
सामाजिक-भावनात्मक विकास	सुरुचि चुपचाप शान्त अपनी दुनिया में खोए रहती है, वह किसी-न-किसी चीज़ से खेलती रहती है। वह लोगों के साथ बहुत समय लेकर घुलती मिलती है और फिर सहज हो कर कुछ कुछ बातें शुरू करती है। वह बहुत ध्यान से बातें सुनती है, समझती है और पर उन पर प्रतिक्रिया अपने अनुसार ही देती है। जब वह आपसे पूरी तरह सहज हो जाएगी तब वह आपसे कुछ-कुछ शब्दों में बातें कहेगी। विजिट के दौरान भी वह बातें सुनती है और जब कुछ पूछो तो सहज होने पर ही कुछ जवाब देती है।
संज्ञानात्मक विकास	सुरुचि के सीखने के कौशल उम्र अनुसार विकसित हो रहे हैं, वह धीरे धीरे समय लेकर चीज़ों को सीख लेती है ! कौशल की बात की जाए तो वह अभी बोलती नहीं है इसलिए इसका आकलन अभी सही से नहीं हो पाया है। जिस दिन वह बोलती है उस दिन वह काफ़ी बेहतर तरीक़े से बताती है लेकिन जब उससे कार्य करवाया जाता है तब यदि उसका मूड नहीं है तो वह कुछ नहीं बताती है। अक्षरों को सही बनावट में लिखने के लिए अभी और अभ्यास की जरुरत है।
भाषा का विकास	सुरुचि का भाषाई विकास उम्र अनुसार सही है, वह अपने घरवालों के साथ पूरे वाक्यों में अपनी बातें बोल पाती है। कविता को लय और हाव भाव के साथ थोडा मदद से गा लेती है। अपनी बातें स्पष्टता से बोल पाती है, घर में घरवालों से काफ़ी खुलकर बात करती है बिना झिझक उन्हें पूछ भी लेती है। अभी वह स्कूल में किसी से ज्यादा बात नहीं करती है बस कक्षा में खिलौने, किताबें जैसी सभी चीज़ों से खेलती है।
सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास	सुरुचि को चित्र बनाने,चीज़ों और खिलौनों को सजाने तथा रचनात्मकता वाले कार्यों जैसे क्ले मॉडलिंग आदि का काफी शौक है। उससे चीज़ों को बनाने, सही से रखने आदि में मज़ा आता है ।
सत्र-वार प्रगति रिकॉर्ड	
जुलाई - सितम्बर	...
अक्तूबर - मार्च	सुरुचि शुरुआत में बात नहीं करती थी, वह कक्षा में किसी से भी बात नहीं करती थी। वह अपनी दुनिया में खोई रहती थी, बच्चों को देखकर कभी-कभी गतिविधि में प्रतिभाग करती थी। वह शान्त थी तो सभी उसे पसन्द करते थे। यहाँ तक कि टॉयलेट आदि के लिए भी नहीं बोलती थी, वह पूरे दिन बिना टॉयलेट किए रहती थी। धीरे धीरे उसे कक्षा में अपना नाम बोलने, उपस्थिति के दौरान हाँ/ न आदि में जवाब देने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। अब वह कविता भी सुनाने लगी है किन्तु अभी भी वह केवल 'हाथी राजा' को ही जल्दी से सुना कर बैठ जाती है, किन्तु कक्षा में अब वह सभी गतिविधियों में प्रतिभाग करती है और खुश हो कर अपनी बातें बताती है।
अन्तिम सत्र - संचयी आकलन (Cumulative Assess-ment)	सुरुचि शान्त और अपनी दुनिया में खुश रहने वाली बच्ची है। कक्षा में ध्यान से बातें सुनती है, कक्षा में उसे जोड़े रखने के लिए बीच-बीच में पूछना पड़ता है। चित्र बनाना, रंग करना और ब्लॉक्स से खेलना उसे पसन्द है। अपनी बातें समूह में रखने लगी है और स्वयं से पहल करने लगी है। पठन पाठन - अपने परिवार, कक्षा के बारे में बता पाती है। कविताओं को हाव-भाव के साथ स्वयं से सुना पाती है।थीम आधारित चीज़ों जैसे फलों, सब्जियों, जानवरों, दिनों, महीनों के नाम भी बता पाती है। अपने नाम को अँग्रेज़ी में पहचान कर मदद के साथ लिख पाती है। कहानी सुनना पसन्द करती है और चित्रों के माध्यम से किताबों को पढ़ती है। शब्दों में उसके पहले अक्षर और उसमें आने वाले अक्षरों की ध्वनियों को सुनकर बता पाती है। वर्कशीट में सुन कर स्वयं से मिलान कर पाती है, वर्गीकरणऔर तुलना के कौशलों को कर पाती है। ट्रेसिंग का कार्य और रंगों को दिए गए चित्र के भीतर भर पाती है। गणित में 20 तक मौखिक रूप से, 10 तक के अंकों की पहचान और 5 तक के अंकों का सह सम्बन्ध कर पाती है। अँग्रेज़ी के अक्षरों को क्रम में सुना पाती है और बड़ी वर्तनी के अक्षर (uppercase letters) को पहचान भी पाती है।

कक्षा आकलन के दौरान - नमूना

तालिका 2

डोमेन : भाषा, संज्ञानात्मक, रचनात्मक		
#	मौखिक	सुरुचि
1	परिचय - नाम, वर्ग, परिवार, भावनाएँ	हाँ, स्कूल और घर के बारे में जानती है
2	पसन्दीदा चीज़ें - मुझे पसन्द हैं	गोभी, अध्ययन, गुब्बारा खेल, बुलबुला शूट
3	कम-से-कम 3-4 हिन्दी कविता गाएँ	2,3 हाथी, मछली जल, आलू कचालू
4	1-2 अँग्रेज़ी कविता गाएँ	2 जॉनी, ट्विंकल
5	अँग्रेज़ी में अपने नाम की पहचान करने में सक्षम	हाँ
6	अँग्रेज़ी में अपना नाम लिखने में सक्षम	नहीं
7	हिन्दी में अपने नाम की पहचान करने में सक्षम	नहीं
8	हिन्दी में अपना नाम लिखने में सक्षम	नहीं
9	पुस्तक का उन्मुखीकरण	हाँ
10	पसन्दीदा किताब	छोटा चूहा और बड़ा शेर
11	चित्रों के माध्यम से कहानी सुनाना	हाँ, केवल चित्र पढ़ना
12	पाठ पर उँगलियाँ फेरते हुए कहानी का वर्णन करना	नहीं
13	कहानी और मुख्य पात्र को सार रूप में बताने में सक्षम	नहीं
14	कहानी से प्रश्न के उत्तर बताने में सक्षम	हाँ
15	कहानी/घटना के कम-से-कम 4,5 चित्र अनुक्रमण	नहीं
16	प्रत्येक चार्ट से हिन्दी और अँग्रेज़ी में चित्र पहचान, कम से कम 10 चार्ट	फल, सब्जियाँ, जानवर, रंग
17	खेल कविता, कहानी को पूरा करें	हाँ, वर्णमाला, गिनती, सप्ताह के दिन, कविताएँ
18	ध्वनि पहचान - प्रारम्भिक और पाठ्यक्रम	हाँ
19	अँग्रेज़ी चार्ट वर्णमाला क्रम में पढ़ने में सक्षम	
20	हिन्दी चार्ट अक्षर को क्रम से पढ़ने में सक्षम	
21	चार्ट संख्याओं को क्रम से पढ़ने में सक्षम	
22	अक्षरों को क्रम से याद करने में सक्षम	हाँ

23	मौखिक रूप से 20 तक गिनने में सक्षम	हाँ
24	कम-से-कम 5 तक अर्थपूर्ण रूप से गिनने में सक्षम	हाँ
25	गणित-पूर्व अवधारणाएँ जैसे बड़ी, छोटी, लम्बी, छोटी, छँटाई, समूहीकरण, भारी - हल्का, पैटर्न, कम या ज़्यादा	हाँ
26	मुद्रा पहचानना	

4. शिक्षक को सक्षम बनाना

इस खण्ड में - क्षमता संवर्द्धन के विभिन्न तरीक़ों के माध्यम से शिक्षकों को सक्षम बनाने के कुछ उदाहरण दिए गए हैं। शिक्षक का पेशेवर विकास प्रासंगिक होना चाहिए ताकि शिक्षकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। जैसा कि इस अनुलग्नक के अन्य भागों के साथ है, यह केवल कुछ सम्भावित उदाहरण हैं, व्यापक या निर्देशात्मक विवरण नहीं है।

4.1 शिक्षक संगोष्ठियाँ

शिक्षक संगोष्ठी सतत पेशेवर विकास के तरीक़ों में से एक है। यह शिक्षकों के लिए अपने अनुभव और कार्यों को अपने साथियों के साथ साझा करने का एक अवसर है। यह उनके आत्मविश्वास का निर्माण करता है, उनके स्वयं के अभ्यास को बेहतर बनाने में मदद करता है और उन्हें नए कार्यों को सीखने में मदद करता है।

यह ब्लॉक या ज़िला स्तर पर वार्षिक या द्विवार्षिक रूप से आयोजित किया जाने वाला एक दिवसीय कार्यक्रम हो सकता है। ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन करने की प्रक्रिया के उदाहरण के तौर पर कम-से-कम तीन महीने पहले संगोष्ठी की घोषणा की जानी चाहिए। इसके बाद शिक्षकों को निमंत्रण भेजने की आवश्यकता होगी, उसके बाद समीक्षा व गुणवत्ता और प्रासंगिकता के आधार पर प्रस्तावों को अन्तिम रूप देना होगा। संगोष्ठी को अलग-अलग विषयों में विभाजित किया जा सकता है, विषय में प्रत्येक उप-विषय के लिए प्रस्तुतियों और चर्चाओं को एक साथ जोड़ा जा सकता है और प्रत्येक विषय पर एक संचालक संचालन कर सकता है।

शिक्षक महत्त्वपूर्ण विषयों पर तैयारी करके पर्चा प्रस्तुत कर सकते हैं जैसे :

क) बुनियादी स्तर पर बच्चों के लिए एक विशिष्ट दिन के लिए प्रभावी योजना

ख) स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री और शिक्षक द्वारा विकसित सामग्री का प्रभावी ढंग से उपयोग करना

ग) साक्षरता-पूर्व संख्या-पूर्व कौशल, प्रारम्भिक साक्षरता या प्रारम्भिक संख्या ज्ञान सीखना-सिखाना

घ) अभिभावक/समुदाय की भागीदारी कैसे बढ़ाएँ

4.2 शिक्षक मेला

शिक्षक मेला एक दिवसीय आयोजन है, जहाँ शिक्षक सीखने व सिखाने पर जीवन्त और रोमांचक प्रदर्शन सत्रों की एक शृंखला में भाग लेते हैं। इन सत्रों में शिक्षक अपने द्वारा निर्मित कार्यों और सीखने-सिखाने की सामग्री को प्रदर्शित करते और समझाते हैं। शिक्षक मेला का उपयोग शिक्षक अभ्यासों को प्रदर्शित करने के लिए किया जा सकता है, उदाहरण के लिए नाटक, बातचीत, कहानी, गीत, कला, शिल्प, या साक्षरता-पूर्व और संख्या-पूर्व कार्य आदि।

एक दिवसीय मेले के सम्भावित डिज़ाइन में विभिन्न विषयों वाले एक-एक घण्टे के चार सत्र शामिल हो सकते हैं, जिन्हें दिन में चार बार दोहराया जा सकता है। प्रत्येक सत्र में दो शिक्षक सुगमकर्ता हो सकते हैं। 30-40 शिक्षकों का एक समूह एक सत्र से दूसरे सत्र में जा सकता है।

तालिका 1

सुबह 9:30 से 10:45	प्रतिभागी पंजीकरण			
सुबह 10:45 से 11:45	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर
सुबह 11:45 से दोपहर 12:45	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ
दोपहर 12:45 से 1:45	मध्याह्न भोजन			
दोपहर 1:45 से 2:45	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता
दोपहर 2:45 से 3:45	स्क्रिबलिंग, रंग, समूह, समानता और भिन्नता	कहानियाँ, कविताएँ, गीत, पहेलियाँ	पैटर्न, आकार, मिलान, बड़ा-छोटा, मोटा-पतला, निकट-दूर	खेल, पेंटिंग, शिल्प संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ
दोपहर 3:45 से 4:30	पैनल चर्चा और समापन			

जो शिक्षक अभ्यासों का प्रदर्शन करते हैं व सामग्री साझा करते हैं, वे प्रतिक्रिया हासिल कर सकते हैं और अन्य शिक्षक इन बेहतर अभ्यासों को देखकर सीख सकते हैं। हमेशा की तरह, इस तरह की शिक्षाओं को समूह और ब्लॉक स्तरों पर बैठकों और अकादमिक पदाधिकारियों द्वारा व्यवस्थित मंच स्थापित कर विभिन्न तरीक़ों और मंचों के माध्यम से सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

4.3 विकेन्द्रीकृत सतत शिक्षक पेशेवर विकास

प्रभावी शिक्षक पेशेवर विकास को प्रासंगिक, निरन्तर और शिक्षकों की विशिष्ट ज़रूरतों को पूरा करने वाला होना आवश्यक है। मूल भावना (true spirit) में ऐसा होने के लिए, इस तरह के पेशेवर विकास को यथासम्भव शिक्षकों के अनुरूप निर्मित और संचालित की जाने की आवश्यकता है।

चूँकि स्कूली शिक्षा की संरचना और संगठन अलग-अलग राज्यों में भिन्न है, यह पूरे देश में विकेन्द्रीकृत है। इसलिए ऐसा करने के लिए इस तरह की संरचनाओं और उसके कार्मिकों का पूरी तरह से लाभ उठाया जा सकता है।

यह उदाहरण राजस्थान में मौजूदा संरचना का एक नमूने के रूप में उपयोग करता है और शिक्षक पेशेवर विकास की प्रक्रिया को दिखाता है, जो कुछ हिस्सों में विभाग और ग़ैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से हो रहा है।

राजस्थान की स्कूली शिक्षा प्रणाली में पंचायत स्तर पर उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों में से एक को पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) नियुक्त किया गया। उस पंचायत के सभी स्कूल एक पंचायत एकीकृत शिक्षा क्लस्टर बनाते हैं और PEEO प्रशासनिक, वित्तीय, अभिसरण प्रक्रियाओं के प्रबन्धन के साथ-साथ इन स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित करने के लिए नोडल व्यक्ति के रूप में कार्य करता है। इसलिए इन PEEO का ध्यान न केवल परिचालन दक्षता पर है, बल्कि यह

भी सुनिश्चित करना है कि सीखने-सिखाने की गुणवत्ता में समय के साथ और बड़े पैमाने पर सुधार हो। प्रत्येक ब्लॉक में औसतन 30 PEEO हैं, प्रत्येक PEEO 5-8 स्कूलों यानी 35-45 शिक्षकों का समन्वय करता है।

इनमें से कई पंचायतों में, शिक्षकों को सहयोग प्रदान करने के लिए सभी शिक्षकों की मासिक कार्यशालाएँ, विशिष्ट शिक्षकों के लिए स्कूल-आधारित मंच और इच्छुक शिक्षकों के लिए क्षमता संवर्द्धन के अन्य स्वैच्छिक तरीक़े शामिल हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, ये सम्बन्धित PEEO द्वारा भागीदार (ग़ैर-सरकारी) संगठनों और अन्य व्यक्तियों के सहयोग से पंचायत स्तर पर निर्मित और संचालित किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक पंचायत में :

क) मासिक कार्यशाला

शुरुआती कक्षा के शिक्षकों के लिए हर महीने दो एक दिवसीय कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं, आरंभिक भाषा और गणित दोनों विषयों के लिए एक-एक। ये कार्यशालाएँ शिक्षकों को विषयवस्तु और शिक्षण-अधिगम सामग्री प्रदान करती हैं, जिसका उपयोग वे सीधे अपनी कक्षाओं में कर सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके बच्चे बुनियादी प्राथमिक स्तर की दक्षता प्राप्त कर सकें।

ख) निरन्तर मंच

उस माह की कार्यशाला में ली गई विषयवस्तु पर सुनियोजित फॉलो-अप स्कूल विज़िट्स। सहयोगी संगठन के संदर्भ व्यक्ति (Resource person) प्रासंगिक शिक्षण-अधिगम सामग्री और कार्यपत्रकों (worksheets) के साथ अपने उपयोग को प्रदर्शित करने के साथ-साथ बच्चों के सीखने के स्तर का आकलन करने के लिए स्कूल का दौरा करते हैं। ऐसा मंच उन शिक्षकों को भी प्रदान किया जाता है जो इसके लिए अनुरोध करते हैं। यह शिक्षकों की विशिष्ट आवश्यकताओं का अवलोकन करने में भी मदद करता है, जिसका उपयोग अगली कार्यशाला के सत्रों को बनाने के लिए किया जाता है।

ग) अन्य सहयोगी गतिविधियाँ

क्षमता संवर्द्धन अन्य स्वैच्छिक गतिविधियों के माध्यम से किया जाता है जो स्कूलों में समग्र रूप से बेहतर सीखने के माहौल को संभव बनाता है। उदाहरण के लिए :

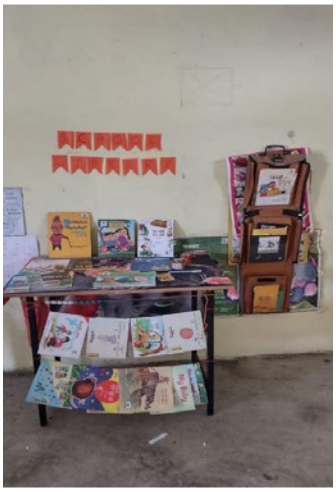

i. थैला पुस्तकालय : बुनियादी भाषा और गणित कौशलों को हासिल करने में बेहतर सहायता के लिए, रुचि रखने वाले शिक्षकों को कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं के साथ थैला पुस्तकालय संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं। इन थैलियों को एक से दूसरे को सौंपने के ज़रिए से यह सुनिश्चित होता है कि नए संसाधन हर समय उपलब्ध हैं।

ii. शिक्षा में रंगमंच : शिक्षकों और बच्चों के साथ कुछ मुद्दों पर बात करने के लिए रंगमंच एक प्रभावी माध्यम है। स्कूलों की सुबह की सभा में प्रदर्शन आयोजित किए जाते हैं, इसके बाद इस विषय पर एक घण्टे की चर्चा होती है। इसका नेतृत्व अक्सर स्थानीय युवाओं के समूह करते हैं।

जैसा कि शुरुआत में उल्लेख किया गया है, यह सिर्फ़ उदाहरण है। मूल विचार शिक्षक विकास के लिए आधारभूत प्रक्रियाओं को निर्मित करने में सक्षम होने का है, जो शिक्षकों की वास्तविक जरूरतों को पूरा करती हैं। अन्य राज्यों में इस तरह की शिक्षक सहायता प्रदान करने के लिए क्लस्टर संसाधन केन्द्रों (cluster resource centres) जैसी संरचनाओं का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता है।

4.4 कठपुतलियों की कार्यशाला

आधारभूत स्तर पर शिक्षकों को अपने शिक्षणशास्त्र में विभिन्न रोचक और आकर्षक तत्वों को शामिल करने की आवश्यकता होती है। इसमें कहानी सुनाना, अभिनय, संगीत, नृत्य, नाटक आदि जैसी विधियाँ शामिल हैं। अन्य पहलुओं के अलावा, यह महत्त्वपूर्ण है कि शिक्षक पेशेवर विकास कार्यक्रम, शिक्षकों को ऐसे कौशल विकसित करने में मदद करें जो उन्हें अपने प्रदर्शनों की सूची में इस तरह के शिक्षण को जोड़ने में सक्षम बनाते हों।

ऐसा ही एक तरीक़ा है कठपुतली बनाना। कठपुतली कला, ललित कला से लेकर प्रदर्शन कला तक, सबको अपने में समेट लेने वाली कला है। कठपुतली कला, प्रदर्शन के सबसे पुराने रूपों में से एक है और वर्षों से कला के एक परिष्कृत रूप में विकसित हुई है। साधारण अँगुली की कठपुतली से लेकर अत्यधिक जटिल कठपुतली तक तीन से अधिक लोगों द्वारा 'प्रदर्शन' की जाने वाली कठपुतली तक, इसके हज़ारों रूप हैं। भारत में कठपुतली के कई रूप हैं, जिन्हें शिक्षकों द्वारा शामिल किया जा सकता है।

कठपुतली के दो मुख्य पहलू हैं। एक है कठपुतलियों का डिज़ाइन तथा निर्माण और दूसरा है कठपुतलियों का प्रदर्शन। डिज़ाइनिंग के लिए विज़ुअलाइज़ेशन और निर्माण के तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती है, जबकि प्रदर्शन के लिए उत्कृष्ट संचार कौशल की आवश्यकता होती है।

यह एक कार्यशाला का एक उदाहरण है, जिसे शिक्षकों को कठपुतली कौशल हासिल करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस कार्यशाला में शिक्षकों को कठपुतली और कठपुतली के विभिन्न रूपों से अवगत कराया जाता है। कठपुतलियों के रूपों और सौन्दर्यबोध के बारे में चर्चा की जाती है। शिक्षक कठपुतलियों को डिज़ाइन करेंगे और बनाएँगे, एक स्क्रिप्ट तैयार करेंगे और कठपुतलियों के साथ प्रदर्शन करेंगे। इस कार्यशाला के माध्यम से, शिक्षक रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में सौन्दर्यशास्त्र और कला की सराहना करने, कठपुतली डिज़ाइन करने, अभ्यास करने और लघु कठपुतली प्रदर्शन बनाने में सक्षम होंगे। कार्यशाला के लिए शिक्षण विधि अनुभवात्मक अधिगम है। इसके माध्यम से, शिक्षक कला के विभिन्न रूपों से गुज़रते हैं - रंगों से खेलना, पोशाक डिज़ाइन करना, चेहरे का मेकअप, पटकथा लेखन, संगीत और प्रदर्शन आदि।

क) पहला दिन:

i. चार के समूह बनाए जाते हैं। प्रत्येक समूह को सभी ज़रूरी स्टेशनरी संसाधन दिए जाते हैं। (जैसे, चार्ट पेपर, कैंची, गोंद, रंग, स्टेपलर, सेलो टेप)।

ii. वे अपनी अँगुली पर आँख, नाक और मुँह की आकृतियाँ बनाकर अँगुली की कठपुतली बनाते हैं, अँगुली को रूमाल से ढकते हैं और अँगुली की कठपुतली को नचाते और बोलते हैं।

iii. वे चार्ट पेपर पर मछली खींचते हैं, फिर आकार काटते हैं। वे एक साधारण पक्षी बनाते हैं और उसे रंगते हैं, और एक साधारण काग़ज़ को मोड़कर साँप बनाते हैं। वे काग़ज़ को शंकु आकार देकर एक चूहा बनाते हैं और साधारण रेखाचित्रों का उपयोग करके एक शेर बनाते हैं। सिर्फ़ काग़ज़ को मोड़कर और रंगों का इस्तेमाल करके वे अलग-अलग जानवर बनाते हैं।

ख) दूसरा दिन:

i. वे अपने द्वारा बनाई गई सभी कठपुतलियों का प्रदर्शन करते हैं, एक कहानी बनाना शुरू करते हैं और कठपुतलियों का उपयोग करके एक छोटे से प्रदर्शन की योजना बनाते हैं। वे एक समूह के रूप में कहानी और प्रदर्शन का अभ्यास करते हैं।

ii. फिर प्रत्येक समूह अपने द्वारा बनाई गई कठपुतलियों के साथ कहानी का प्रदर्शन करता है।

ग) तीसरा दिन:

i. वे काग़ज़ और पानी के रंग का उपयोग करके सरल एक-आयामी मुखौटा बनाना शुरू करते हैं। वे मुखौटे पहनते हैं, मुखौटे के इर्द-गिर्द एक छोटी-सी स्क्रिप्ट तैयार करते हैं और मुखौटे का उपयोग करके प्रदर्शन करते हैं।

ii. वे रंगीन काग़ज़ और गोंद का उपयोग करके दो-आयामी मुखौटा बनाना सीखते हैं। वे मुखौटा पहनते हैं, मुखौटे के चारों ओर एक छोटी-सी स्क्रिप्ट तैयार करते हैं और मुखौटे का उपयोग करके प्रदर्शन करते हैं।

iii. प्रदर्शन के तुरन्त बाद प्रत्येक टीम को टिप्पणियाँ और इनपुट दिए जाते हैं।

घ) चौथा दिन:

i. वे रंगीन काग़ज़ और डंडियों की मदद से त्रि-आयामी कठपुतली बनाना सीखते हैं - ये रॉड कठपुतली हैं, जिन्हें अन्य कठपुतलियों की तरह ही इस्तेमाल किया जा सकता है।

ii. वे एक प्रदर्शन के लिए एक विस्तृत स्क्रिप्ट पर काम करते हैं, जिसे स्कूल में छोटे बच्चों के साथ उनके छोटे समूहों में उनके द्वारा बनाई गई कठपुतली का उपयोग करके किया जा सकता है।

ङ) पाँचवाँ दिन:

i. प्रत्येक समूह साधारण रोशनी के साथ वेशभूषा, सामग्री सेट, गीत और संगीत का उपयोग करके प्रदर्शन करता है।

ii. प्रदर्शन के बाद वे एक आकलन करते हैं और कार्यशाला के अपने अनुभव साझा करते हैं।

हालाँकि इस तरह की कार्यशाला शिक्षकों को कठपुतली कला में विशेषज्ञ नहीं बनाएगी, फिर भी यह उम्मीद की जाती है कि इससे उन्हें यह विचार मिलेगा कि वे अपनी कक्षाओं में अभ्यास करना शुरू कर सकते हैं और आगे इसका विकास कर सकते हैं। यह उदाहरण कार्यशाला मोड के बारे में है, इसे अलग-अलग समयों पर अन्य तरीक़ों के माध्यम से किया जा सकता है - उदाहरण के लिए, शिक्षकों की मासिक क्लस्टर-स्तरीय बैठकों में।

अनुलग्नक 3:
फाउंडेशनल स्टेज के लिए NIPUN भारत और NCF की दक्षताओं की मैपिंग

NEP 2020 के FLN सम्बन्धी पहलुओं को लागू करने के लिए NIPUN भारत ने उल्लेखनीय क़दम उठाए हैं। इस मिशन को सक्षम बनाने के लिए सम्बन्धित दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के साथ तीन विकासात्मक लक्ष्य तय किए गए हैं।

NCF के आधार पर पूरे देश में पाठ्यचर्याएँ विकसित की जाएँगी, जिसमें पाठ्यचर्या के उद्देश्य बताए गए हैं, जिनसे दक्षताएँ निकाली गई हैं और इनसे ही सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) (उदाहरणात्मक) तय किए गए हैं। फिर यही पाठ्यचर्याएँ, पूरे देश में शैक्षिक अभ्यास के लिए आधार बन जाएंगी।

विकसित की गई हर पाठ्यचर्या में दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के अपने समूह होंगे। महत्त्वपूर्ण यह है कि ये सीखने के प्रतिफल व दक्षताएँ, NIPUN भारत के सार्थक प्रयासों की संगति में हों, जिनमें शिक्षण-अधिगम सामग्री व प्रशिक्षण शामिल हैं। इससे शैक्षिक प्रयास व अभ्यास, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की पूरी संगति में हो सकेंगे।

इसे सुनिश्चित करने का तरीक़ा यह है कि पहले NIPUN भारत के विकासात्मक लक्ष्यों को इस NCF की पाठ्यचर्या के उद्देश्यों से मैप किया जाए। क्रियान्वयन के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम NIPUN भारत की दक्षताओं को NCF की दक्षताओं से मैप करना होगा।

इस अनुलग्नक में NIPUN भारत के विकासात्मक लक्ष्यों की मैपिंग NCF की पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के साथ की गई है, फिर NIPUN भारत की दक्षताओं की मैपिंग NCF की दक्षताओं के साथ की गई है। इसी तरह का मैपिंग सीखने के प्रतिफलों के लिए भी की जा सकती है।

मैपिंग के ये दो स्तर, पाठ्यचर्या की दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को उचित तरीक़े से लागू करने के लिए NIPUN भारत के तहत बनाई गई विधियों व सामग्रियों (TLM, प्रशिक्षण सामग्री आदि) के इस्तेमाल को सुगम बनाएँगे। इस पूरे अभ्यास को सावधानी से लागू किए जाने की ज़रूरत है ताकि सभी प्रयासों का सघन संयोजन हो सके और NCF के क्रियान्वयन तथा NEP 2020 के लक्ष्यों को हासिल करने की तरफ़ बढ़ा जा सके।

1. NIPUN भारत विकासात्मक लक्ष्य 1: बच्चे अच्छा स्वास्थ्य और well-being बनाए रखें

1.1 NCF पाठ्यचर्या के उद्देश्यों (Curricular Goals) से मैपिंग: इस विकासात्मक लक्ष्य 1 से मैप होने वाले पाठ्यचर्या के उद्देश्य (CG) निम्नलिखित हैं :

CG-1 बच्चे ऐसी आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखती हैं

CG-3 बच्चे एक फिट और लचीले शरीर का विकास करते हैं

CG-4 बच्चे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अर्थात अपनी भावनाओं को समझने व प्रबंधन करने, और सामाजिक मानदण्डों के प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करते हैं।

1.2 NCF दक्षताओं से मैपिंग :

नीचे दी गई तालिका में विकासात्मक लक्ष्य 1 के अंतर्गत NIPUN भारत की दक्षताओं को NCF की दक्षताओं से मैप किया गया है :

तालिका 69

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
स्वयं (self) के प्रति जागरूकता	C-4.1 परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगती है
सकारात्मक आत्म-धारणा का विकास	C-4.1 परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में 'स्व' को पहचानने लगती है
स्व-नियमन	C-4.2 अलग-अलग भावनाओं को पहचानती है और उनका उपयुक्त तरीक़े से नियमन करने के लिए सुविचारित प्रयास करती है
निर्णय लेना और समस्या समाधान	C-8.13 मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करती है और हल करती है
समाजोन्मुखी व्यवहार का विकास	C-4.3 अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ आराम से बातचीत करती है C-4.4 दूसरे बच्चों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करती है C-4.5 कक्षा और विद्यालय में सामाजिक नियमों को समझती है और उन पर सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देती है C-4.6 दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति ज़रूरत के वक़्त दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करती है C-4.7 दूसरे बच्चों के विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं और भावनात्मक ज़रूरतों को समझती है और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देती है

स्वस्थ आदतों, स्वच्छता, सफाई, और आत्मरक्षा के प्रति जागरूकता का विकास	C-1.1 पौष्टिक भोजन में रुचि व इसकी समझ दिखाती है तथा भोजन बर्बाद नहीं करती है C-1.2 अपनी देखभाल और स्वच्छता का बुनियादी व्यवहार करती है C-1.3 स्कूल/कक्षा-कक्ष को स्वच्छ और व्यवस्थित रखती है C-1.4 सामग्रियों और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का व्यवहार करती है C-1.5 गतियों (चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना) में सुरक्षा संबंधी सावधानी प्रदर्शित करती है और समुचित तरीके से ये कार्य करती है C 1.6 असुरक्षित स्थितियों को समझती है और मदद मांगती है
सकल/स्थूल मोटर कौशलों (gross motor skills) का विकास	C-3.1 विभिन्न गतिविधियों में संवेदी अनुभूतियों और शरीर संचालन के बीच समन्वय प्रदर्शित करती है C-3.2 विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में सन्तुलन, समन्वय और लचीलापन दिखाती है
सूक्ष्म मोटर कौशलों (fine motor skills) और आँख-हाथ समन्वय का विकास	C-3.3 हाथों और उंगलियों से काम करने में सटीकता और नियंत्रण दिखाती है
व्यक्तिगत और सामूहिक खेलों में भागीदारी	C-3.4 ढोने, चलने और दौड़ने में ताकत तथा सहनशक्ति प्रदर्शित करती है

2. NIPUN भारत विकासात्मक लक्ष्य 2: बच्चे प्रभावी सम्प्रेषक बनें

2.1 NCF पाठ्यचर्या के उद्देश्य :

इस विकासात्मक लक्ष्य 2 से मैप होने वाले पाठ्यचर्या के उद्देश्य (CG) निम्नलिखित हैं :

CG-9 बच्चे दो भाषाओं में रोज़मर्रा की बातचीत के लिए प्रभावी सम्प्रेषण कौशल विकसित करते हैं

CG-10 बच्चे भाषा 1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं

CG-11 बच्चे भाषा 2 (L2) में पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं

CG-12 बच्चे दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताएँ और संवेदनशीलता विकसित करते हैं और कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को सार्थक और आनंदपूर्ण तरीक़े से अभिव्यक्त करते हैं

2.2 NCF दक्षताओं से मैपिंग :

NIPUN भारत विकासात्मक लक्ष्य 2 के अंतर्गत आने वाली दक्षताओं को तीन श्रेणियों में बाँटता है। नीचे दी गई तालिका में इन्हें NCF की दक्षताओं से मैप किया गया है।

2.2.1 सुनना और बोलना :

तालिका 1

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
समझ के साथ सुनना	C-9.1 सरल गीतों, तुकबन्दियों और कविताओं को सुनती-सराहती है C-9.4 किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझती है और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देती है C-9.5 सुनाई गई/बोल कर पढ़ी गई कहानियों को समझती है, पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहती हैं, को पहचानती है
रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और बातचीत	C-9.2 ख़ुद सरल गीत और कविताएँ बनाती है C-9.3 धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकती है
भाषा और रचनात्मक चिंतन	C-9.5 सुनाई गई/बोल कर पढ़ी गई कहानियों को समझती है, पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहती हैं, को पहचानती है C-9.6 स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ छोटी कहानियाँ सुनाती है
शब्दावली विकास	C-9.7 प्रभावी ढंग से रोज़मर्रा की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानती है, उनका इस्तेमाल करती है और मौजूदा शब्दावली का इस्तेमाल करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाती है

बातचीत और बोलने का कौशल	C-9.3 धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकती है C-9.4 किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझती है और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देती है
भाषा का अर्थपूर्ण इस्तेमाल	C-9.3 धाराप्रवाह और सार्थक बातचीत कर सकती है C-9.4 किसी जटिल कार्य के लिए दिए गए मौखिक निर्देशों को समझती है और दूसरों को उसी कार्य के लिए स्पष्ट मौखिक निर्देश देती है C-9.7 प्रभावी ढंग से रोज़मर्रा की बातचीत करने के लिए पर्याप्त शब्द जानती है, उनका इस्तेमाल करती है और मौजूदा शब्दावली का इस्तेमाल करके नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगा पाती है C-10.7 लघु समाचारों, निर्देशों, व्यंजन विधियों और प्रचार सामग्री को पढ़ती-समझती है (L1)

2.2.2 समझ के साथ पढ़ना :

तालिका 2

NIPUN भारत दक्षता	**NCF दक्षता**
किताबों के साथ जुड़ाव	C-10.9 विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाती है (L1)
छपाई के प्रति जागरूकता और अर्थ निर्माण	C-10.2 किताब का बुनियादी ढाँचा/प्रारूप, छपे हुए शब्द और उनकी छपायी की दिशा के आईडिया को समझती है, और मूलभूत विराम चिह्नों को पहचानती है
पढ़ने का नाटक करना	*इस दक्षता के पहलुओं को C-10.2 (छपाई की अवधारणाएँ) और C-10.5, C-10.6 (कहानियाँ और कविताएँ पढ़ना) के सीखने के प्रतिफलों में सम्बोधित किया गया है।*
ध्वनि (Phonological) जागरूकता	C-10.1 L1 में ध्वनि जागरूकता विकसित करती है और स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) को मिलाकर शब्द बनाती है और शब्दों को स्वनिमों (phonemes) / शब्दांशों (syllables) में विभाजित करती है
ध्वनि-प्रतीक सम्बन्ध	C-10.3 लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानती है और इस ज्ञान का इस्तेमाल शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करती है
पूर्व-ज्ञान और अनुभवों का उपयोग करके अंदाज़े से पढ़ना	C-10.5 छोटी कहानियाँ पढ़ती है और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, खुद से ही उनका अर्थ समझती है (L1) C-10.6 छोटी कविताएँ पढ़ती है और शब्दों व कल्पना के चुनाव के लिए कविता की सराहना करना शुरू करती है (L1)
आनन्द और विविध उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र पठन	C-10.5 छोटी कहानियाँ पढ़ती है और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, खुद से ही उनका अर्थ समझती है (L1) C-10.9 विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाती है (L1)

2.2.3 उद्देश्य के साथ लेखन:

तालिका 3

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
शुरुआती साक्षरता कौशल	*इस दक्षता के पहलुओं को भाषा और साक्षरता की कई दक्षताओं के सीखने के प्रतिफलों तथा सौंदर्य बोध और संस्कृति संबंधी पाठ्यचर्या के उद्देश्यों में सम्बोधित किया गया है*
आत्म-अभिव्यक्ति के लिए लेखन	C-10.8 अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखती है (L1)
वर्णों और ध्वनियों के अपने ज्ञान का इस्तेमाल करके लिखने के लिए वर्तनी बनाना	C-10.3 लिपि (L1) की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानती है और इस ज्ञान का इस्तेमाल शब्दों को पढ़ने-लिखने के लिए करती है
पारम्परिक तरीके से लिखने का प्रयास करना चित्र बनाकर/ शब्दों और अर्थपूर्ण वाक्यों के ज़रिए पढ़े हुए (रीडिंग) पर प्रतिक्रिया देना तुकबन्दी वाले / तुकांत शब्द लिखना संज्ञाओं (naming words) और क्रियाओं (action words) का इस्तेमाल करके अर्थपूर्ण वाक्य लिखना अपने को अभिव्यक्त करने के लिए सन्देश लिखना मिश्रित भाषा कोड्स का इस्तेमाल करना कक्षा की गतिविधियों में और घर पर विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखना, मसलन सूची बनाना, दादा-दादी, नाना-नानी को अभिवादन, दोस्तों को सन्देश/निमंत्रण आदि लिखना	C-10.8 अपनी समझ और अनुभव को व्यक्त करने के लिए एक अनुच्छेद लिखती है (L1) (इस दक्षता में सीखने के 15 प्रतिफल अन्तर्निहित हैं जो NIPUN भारत द्वारा रेखांकित विभिन्न दक्षताओं को शामिल करते हैं।)

3. NIPUN भारत विकासात्मक लक्ष्य 3: बच्चे संलग्न शिक्षार्थी बनें और अपने आस-पास के वातावरण से जुड़ें

3.1 NCF पाठ्यचर्या के उद्देश्य :

इस विकासात्मक लक्ष्य 3 से मैप होने वाले पाठ्यचर्या के उद्देश्य (CG) निम्नलिखित हैं :

CG-2 बच्चे संवेदी अनुभूतियों में कुशाग्रता विकसित करते हैं

CG-6 बच्चे अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करते हैं

CG-7 बच्चे अवलोकन और तार्किक चिंतन के ज़रिए दुनिया को समझते हैं

CG-8 बच्चे मात्राओं, आकृतियों और मापों के माध्यम से गणितीय समझ और दुनिया को पहचानने की क्षमता विकसित करते हैं

CG-13 बच्चे सीखने की आदतें विकसित करते हैं जो उन्हें स्कूल की कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय रूप से संलग्न रहने में मदद करती हैं

3.2 NCF दक्षताओं का ख़ाका :

NIPUN भारत विकासात्मक लक्ष्य 3 के अंतर्गत आने वाली दक्षताओं को सात श्रेणियों में बाँटता है। नीचे दी गई तालिका में इन्हें NCF की दक्षताओं से मैप किया गया है।

3.2.1 संवेदी विकास :

तालिका 1

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
दृष्टि, ध्वनि, स्पर्श, गन्ध, स्वाद	C-2.1 आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अन्तर करती है C-2.2 प्रतीकों और निरूपणों के लिए दृश्य स्मृति विकसित करती है C-2.3 ध्वनियों में उसके पिच, वॉल्यूम से और ध्वनि पैटर्न्स में पिच, वॉल्यूम और टेम्पो से अंतर करती है C-2.4 विभिन्न गन्धों और स्वादों के बीच अन्तर करती है C-2.5 स्पर्श की अनुभूतियों में विभेद की क्षमता विकसित करती है

3.2.2 संज्ञानात्मक कौशल :

तालिका 2

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
अवलोकन, पहचान, स्मृति, मिलान, वर्गीकरण, क्रमिक चिन्तन, रचनात्मक चिन्तन, आलोचनात्मक चिन्तन, तर्क, जिज्ञासा, प्रयोग	C-7.1 वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के सम्बन्धों को देखती-समझती है C-7.2 प्रकृति में कार्य-कारण सम्बन्धों को सरल परिकल्पनाएँ बनाकर देखती व समझती है और परिकल्पनाओं को समझाने के लिए अपने अवलोकनों का इस्तेमाल करती है C-13.1 ध्यान व सुविचारित कर्म : विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, योजना बनाने, ध्यान केन्द्रित करने तथा गतिविधियाँ निर्देशित करने के कौशल हासिल करती है C-13.2 स्मृति और मानसिक लचीलापन : समुचित कार्यकारी स्मृति, मानसिक लचीलापन (समुचित तरीके से ध्यान बनाए रखने या बदलने के लिए) और आत्म-नियंत्रण (आवेगी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के प्रतिरोध के लिए) विकसित करती है जो संरचित वातावरण में सीखने में उसकी मदद करेगा C-13.3 अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण: वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करती है, आश्चर्य करती है और विभिन्न इंद्रियों का इस्तेमाल करते हुए अन्वेषण करती है, वस्तुओं के साथ छेड़-छाड़ करती है, सवाल पूछती है

3.2.3 परिवेश से सम्बन्धित अवधारणाएँ :

तालिका 3

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
प्राकृतिक : जानवर, फल, सब्जियाँ, भोजन	C-6.1 सभी सजीवों के प्रति परवाह और उनसे जुड़ने में खुशी दिखाती है C-7.1 वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के सम्बन्धों को देखती-समझती है
भौतिक : पानी, हवा, ऋतु, सूरज, चांद, दिन और रात	C-7.1 वस्तुओं की विभिन्न श्रेणियों और उनके बीच के सम्बन्धों को देखती-समझती है
सामाजिक : स्वयं,, परिवार, परिवहन, त्योहार, सामुदायिक सहायक आदि	C-4.6 दूसरों (जानवरों, पौधों सहित) के प्रति ज़रूरत के वक़्त दयालुता और मदद का भाव प्रदर्शित करती है C-5.1 दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करती है

3.2.4 अवधारणा निर्माण :

तालिका 4

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
रंग, आकृतियाँ, दूरी, मापन, आकार, लम्बाई, वज़न, ऊँचाई, समय	C-2.1 आकृतियों, रंगों और उनके शेड्स के बीच अन्तर करती है C-8.9 अपने आस-पास के वातावरण में वस्तुओं की लम्बाई, वज़न और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करती है C-8.10 मिनटों, घण्टों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करती है C-8.12 मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त शब्दावली विकसित करती है C-8.13 मात्राओं, आकृतियों, स्थान और मापन से सम्बन्धित सरल गणितीय समस्याओं को निरूपित करती है और हल करती है
स्थानिक समझ	C-8.8 बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानती, बनाती और वर्गीकृत करती है, और किसी स्थान (space) में वस्तुओं के सापेक्ष सम्बन्ध (relative relation) को समझती व समझाती है
एक-एक की संगति	C-8.3 सीधी और उल्टी गिनती से, और 10-10 एवं 20-20 के समूहों में 99 तक गिन पाती है

^ एक-एक की संगति, गिनने की दक्षता के अंतर्गत आने वाला सीखने का प्रतिफल है की दक्षता के भीतर है

3.2.5 संख्या बोध/समझ (Number Sense) :

तालिका 5

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
गिनकर संख्या बताना	C-8.3 सीधी और उल्टी गिनती से, और 10-10 एवं 20-20 के समूहों में 99 तक गिन पाती है
संख्या पहचान	C-8.5 दाशमिक स्थानीय मान प्रणाली की समझ के साथ 99 तक की मात्राओं को दर्शाने के लिए संख्याओं को पहचानती और उनका उपयोग करती है
क्रम की समझ (किसी संख्या से 10 आगे तक क्रम से गिन सकना)	C-8.1 चीज़ों को एक से अधिक गुणों के आधार पर समूहों और उप-समूहों में छाँटती है C-8.2 अपने परिवेश, आकृतियों, और संख्याओं में सरल पैटर्न्स को पहचानती और उनका विस्तार करती है C-8.4 99 तक की संख्याओं को आरोही और अवरोही क्रम में व्यवस्थित करती है

3.2.6 संख्याओं के बीच संक्रियाएँ :

तालिका 6

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
जोड़, घटाव	C-8.6 संयोजन (composition) और वियोजन (decomposition) की लचीली रणनीतियों का उपयोग करके आसानी से 2 अंकों की संख्याओं का जोड़ और घटाव करती है
गुणा, भाग	C-8.7 गुणा को बार-बार जोड़ और भाग को बराबर बँटवारे के रूप में जानती-समझती है

3.2.7 मापन, आकृतियाँ और अन्य दक्षताएँ :

तालिका 7

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
लम्बाई, द्रव्यमान, आयतन, तापमान	C-8.9 अपने आस-पास के वातावरण में वस्तुओं की लम्बाई, वज़न और आयतन का सरल मापन करने के लिए उपयुक्त उपकरणों और इकाइयों का चयन करती है
आकृतियाँ (द्विविमीय आकृतियाँ, त्रिविमीय आकृतियाँ, सीधी रेखा, घुमावदार रेखा, सपाट और घुमावदार सतहें)	C-8.8 बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और उनके अवलोकनीय गुणों को पहचानती, बनाती और वर्गीकृत करती है, और किसी स्थान (space) में वस्तुओं के सापेक्ष सम्बन्ध (relative relation) को समझती व समझाती है
आँकड़ों का प्रबंधन	*फाउंडेशनल स्टेज के लिए, आँकड़ों का प्रबंधन में C-29, C-31 समूहों में दी गई चीज़ों को छाँटना, वर्गीकरण, समूह बनाना और गिनना शामिल होगा*
पैटर्न	C-8.2 अपने परिवेश, आकृतियों, और संख्याओं में सरल पैटर्न्स को पहचानती और उनका विस्तार करती है
कैलेंडर गतिविधियाँ	C-8.10 मिनटों, घण्टों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करती है
तकनीकी का इस्तेमाल	C 7.3 दैनिक जीवन की परिस्थितियों में और सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों व तकनीकी का इस्तेमाल करती है

3.2.8 NCF में वर्णित अतिरिक्त दक्षताएँ

सौंदर्य बोध विकास और संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्रों के लिए NCF में वर्णित अतिरिक्त दक्षताएँ नीचे दी गई हैं।

तालिका 8

NIPUN भारत दक्षता	NCF दक्षता
	C-12.1 विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों और उपकरणों की खोज करती है और उनसे खेलती है C-12.2 संगीत, रोल-प्ले, नृत्य और गतिविधियाँ निर्मित करने के लिए अपनी आवाज़, शरीर, स्थानों और तरह-तरह की चीज़ों की खोज करती हैं, उनसे खेलती हैं C-12.3 कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नए तरीकों की खोज करती है और कल्पनाशीलता के साथ कार्य करती है C-12.4 कला में सहयोगात्मक ढंग से कार्य करती है C-12.5 कला, स्थानीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों की रचना और अनुभव करते हुए विभिन्न तरह की प्रतिक्रियाएँ संप्रेषित करती है और इनकी सराहना करती है
	C-5.1 दूसरों की मदद के लिए अपनी आयु के उपयुक्त शारीरिक कार्य करने की इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करती है
	C-13.4 कक्षा के नियम : प्रतिनिधित्व (agency) और समझ के साथ नियमों को अपनाती और उनका पालन करती है
	C-8.10 मिनटों, घण्टों, दिनों, सप्ताहों और महीनों में समय का सरल मापन करती है

अनुलग्नक 4:
भारत और दुनिया भर में ECCE पर शोध

दुनिया भर में कई समकालीन अध्ययनों से पता चला है कि गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा कार्यक्रम, जो छोटे बच्चों को उचित प्रोत्साहन और सार्थक सीखने के अनुभव प्रदान करते हैं, से न केवल स्कूल में बल्कि उससे भी आगे सीखने और बेहतर प्रदर्शन करने की व्यक्तिगत क्षमता को अत्याधिक लाभ होता है।

1. गुणवत्ता वाले ECCE कार्यक्रमों का महत्त्व

क. तंत्रिकाविज्ञान के साक्ष्य बताते हैं कि जीवन के पहले आठ वर्षों के दौरान मस्तिष्क का विकास तेज़ी से होता है। वातावरण के अनुभवों की गुणवत्ता और निरन्तरता के आधार पर मस्तिष्क में तंत्रिकाओं के बीच सम्बन्ध मज़बूत या गठित होते हैं। इन वर्षों को मानव जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण और रचनात्मक माना जाता है। इसीलिए इन वर्षों में बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए देखभाल करने वाला, पोषक, प्रेरणादायक और स्वस्थ वातावरण आवश्यक होता है।[13]

ख. मानव मस्तिष्क की मूल संरचना उन प्रक्रियाओं के माध्यम से निर्मित होती है जो जीवन के आरम्भ में शुरू होती हैं और वयस्कता में जारी रहती हैं। आनुवंशिकी, वातावरण और अनुभव मस्तिष्क की संरचना के साथ परस्पर क्रिया करते हैं और उसे प्रभावित करते हैं। नमनीयता, या मस्तिष्क की पुनर्गठित और अनुकूलन करने की क्षमता, और उसके कारण सीखना, जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में सबसे अच्छे से होता है। विकास की संवेदनशील अवधियों के अनुभव मस्तिष्क की क्षमताओं को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रारम्भिक वातावरण और शुरुआती अनुभवों का मस्तिष्क की संरचना पर विशेष रूप से मज़बूत प्रभाव पड़ता है।[13]

ग. प्रारम्भिक बाल्यावस्था का समय आजीवन सीखने और विकास की नींव रखता है और वयस्क जीवन की गुणवत्ता का एक प्रमुख निर्धारक है। अनुदैर्ध्य अध्ययन (Longitudinal studies) शुरुआत के वर्षों में आर्थिक निवेश की वापसी की एक उल्लेखनीय दर का संकेत देते हैं, जो स्कूली शिक्षा को पूरी करना और समाज के वयस्क सदस्यों के रूप में सकारात्मक योगदान सुनिश्चित करता है।[14]

घ. संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक क्षमताएँ जीवन भर अटूट रूप से जुड़ी होती हैं। प्रारम्भिक अनुभवों को प्रोत्साहित करना बाद में सीखने की बुनियाद रखता है। ख़राब शुरुआती अनुभव बाद में मस्तिष्क की क्षमताओं पर लम्बे समय तक रहने वाले हानिकारक प्रभाव डाल सकते हैं।[13]

2. भारत में अध्ययन इसी तरह के निष्कर्ष पर पहुँचे हैं

क. प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा में आयु-उपयुक्त भागीदारी को प्री-स्कूलों में जाने वाले बच्चों में ठहराव (retention) की दर में 8-20% की बढ़त के लिए ज़िम्मेदार ठहराया गया था।[15] इसी तरह, बिहार और उत्तर प्रदेश में किए गए एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि 7 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों के स्कूल में नामांकित होने की सम्भावना अधिक थी यदि वे प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों में शामिल हुए थे।[16] व्यवस्था के दृष्टिकोण से, हरियाणा आईसीडीएस केन्द्रों में पूर्वस्कूली शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन में मध्य और वरिष्ठ स्तर के अधिकारियों का सहयोग एक महत्त्वपूर्ण कारक था।[17]

ख. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा किए गए प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा प्रभाव अध्ययन (2017) ने दिखाया कि सभी राज्यों (असम, तेलंगाना और राजस्थान) में, 5 वर्ष की आयु के बच्चों की स्कूली तैयारी (school readiness) का स्तर संज्ञानात्मक और भाषा के क्षेत्र (जैसे संख्या से वस्तुओं का मिलान, चित्र में किसी वस्तु के स्थान की पहचान करना आदि) में अपेक्षाओं से बहुत कम था।[18]

जहाँ भी स्कूली तैयारी (school readiness) का स्तर बेहतर था, बच्चों ने अपना अधिकांश समय खेल-आधारित सीखने की गतिविधियों में बिताया। इन कार्यक्रमों में बच्चों के लिए अवधारणा निर्माण, अवधारणात्मक कौशल के विकास और तैयारी गतिविधियों (Readiness Activities) के लिए पर्याप्त अवसर थे।

बच्चे की उम्र, माँ की शिक्षा, घरेलू सम्पन्नता और घर पर शुरुआती सीखने का माहौल ऐसे अन्य कारक थे जिन्होंने स्कूली तैयारी के स्तर को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। अध्ययन में यह भी पाया गया कि प्री-स्कूल और प्रारम्भिक प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की भागीदारी एक रैखिक आयु-आधारित प्रक्षेपवक्र (linear age-based trajectory) का पालन नहीं करती है। कुछ राज्यों में, 4 साल के बच्चे पहले से ही स्कूल में हैं और अन्य में, 6 और 7 साल के बच्चों का एक बड़ा हिस्सा अभी भी प्री-स्कूल में है। बच्चे अनियमित रूप से स्कूल जाते हैं। 8 वर्ष की आयु आते-आते ही नामांकन स्थिर हो पाता है। यह एक ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता को पुष्ट करता है जो आयु-आधारित प्रक्षेपवक्र के बजाय बच्चों के सीखने के स्तर पर केन्द्रित हो।

ग. शोध से पता चला है कि कम आय और सीमित संसाधन वाली व्यवस्थाओं में, गुणवत्ता वाला ECCE समता को बढ़ावा देने के लिए एक तंत्र के रूप में कार्य करता है।[19]

घ. एक अध्ययन में भारत के एक जिले में आँगनवाड़ियों में नामांकित 200 बच्चों और घर में रहने वाले 200 बच्चों की तुलना छह संज्ञानात्मक कौशल – अवधारणात्मक जानकारी (conceptual information), समझ (comprehension), दृष्टि बोध (visual perceptions), स्मृति (memory) और वस्तु शब्दावली (object vocabulary) पर की गई। इस अध्ययन ने पुष्टि की कि आँगनवाड़ी में उपस्थिति का बच्चों के संज्ञानात्मक कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। भौगोलिक सीमाओं के बावजूद, यह अध्ययन प्री-स्कूल और संज्ञानात्मक विकास के बीच सम्बन्ध पर महत्त्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करता है।[20]

3. ECCE में निवेश के प्रतिफल पर अध्ययन

शिक्षा में निवेश के प्रतिफल में - निजी (अर्थात वेतन तथा सम्बन्धित सुविधाओं के साथ और रोज़गार के रूप में व्यक्ति को प्रतिफल), और सामाजिक (यानी, समाज और राष्ट्र को प्रतिफल देना - अधिक नागरिक समाज से करों के माध्यम से अर्जित राजस्व के साथ तथा कल्याण के फलस्वरूप सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों पर कम सार्वजनिक व्यय के सन्दर्भ में) दोनों शामिल हैं।

शिक्षा के लाभों का अनुमान आमतौर पर मूर्त (tangible) 'बाज़ार' के लाभों के माध्यम से होता है। ये श्रम बाज़ार (labour market) में व्यक्तियों की आय या सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में उनके योगदान जैसे आँकड़ों पर आधारित होते हैं; और ये व्यक्ति के कामकाजी जीवन की अवधि से जुड़े होते हैं।

हालाँकि, शिक्षा के कई लाभकारी प्रभावों से उपजे 'ग़ैर-बाज़ार' लाभों का एक और सेट है। ये प्रभाव अधिक मूर्त निजी और सामाजिक-आर्थिक लाभों को मिश्रित करते हैं; वे न केवल शिक्षा प्राप्तकर्ताओं और उनके परिवार को प्रभावित करते हैं, बल्कि पूरे समाज को भी प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, शिशु मृत्यु दर में कमी, स्वास्थ्य प्रभाव, जनसंख्या वृद्धि दर में कमी, लोकतंत्रीकरण और मानवाधिकार, राजनीतिक स्थिरता, अपराध दर में कमी, ग़रीबी में कमी, असमानता में कमी, और सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव।

लाभ अर्जित करने के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था और बुनियादी शिक्षा में निवेश महत्त्वपूर्ण है। दुनिया भर में कई अध्ययनों ने पुष्टि की है कि बाल विकास के शुरुआती वर्षों में निवेश से दीर्घकालिक प्रतिफल मिलते हैं। बच्चों की देखभाल से सम्बन्धित उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम, बच्चों की परवरिश (Parenting) से सम्बन्धित कार्यक्रम और बाल्य देखभाल अवकाश (Parental Leave) कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण हैं; ऐसे हस्तक्षेप आमतौर पर वंचित इलाकों में अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं।

35 से अधिक वर्षों में किए गए एक अनुदैर्ध्य अध्ययन (Longitudinal Study) ने वंचित बच्चों के लिए जन्म से पाँच साल तक के प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रमों के लाभों की गणना की। इन लाभों को शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक व्यवहार और रोज़गार में बेहतर परिणामों के रूप में परिभाषित किया गया था। परिणामों से पता चला कि वंचित बच्चों (जन्म से पाँच साल तक के) के लिए उच्च गुणवत्ता वाले प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम निवेश पर प्रति वर्ष 13% प्रतिफल दे सकते हैं। इसके अलावा, जबकि व्यापक प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों की लागत अधिक होती है, गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों में निवेश किया गया प्रत्येक अमरीकी डॉलर, 4 अमरीकी डॉलर और 16 अमरीकी डॉलर के बीच प्रतिफल दे सकता है।[(21)]

2006 में, हेकमैन ने प्रस्थापित किया कि शिक्षा के विभिन्न चरणों में वंचित बच्चों में निवेश पर प्रतिफल की दरों में गिरावट आई है। नीचे दिया गया रेखाचित्र, जिसे हेकमैन कर्व के नाम से जाना जाता है, दिखाता है कि प्रतिफल की अधिकतम दर प्री-स्कूल शिक्षा से जुड़ी है।[(22)]

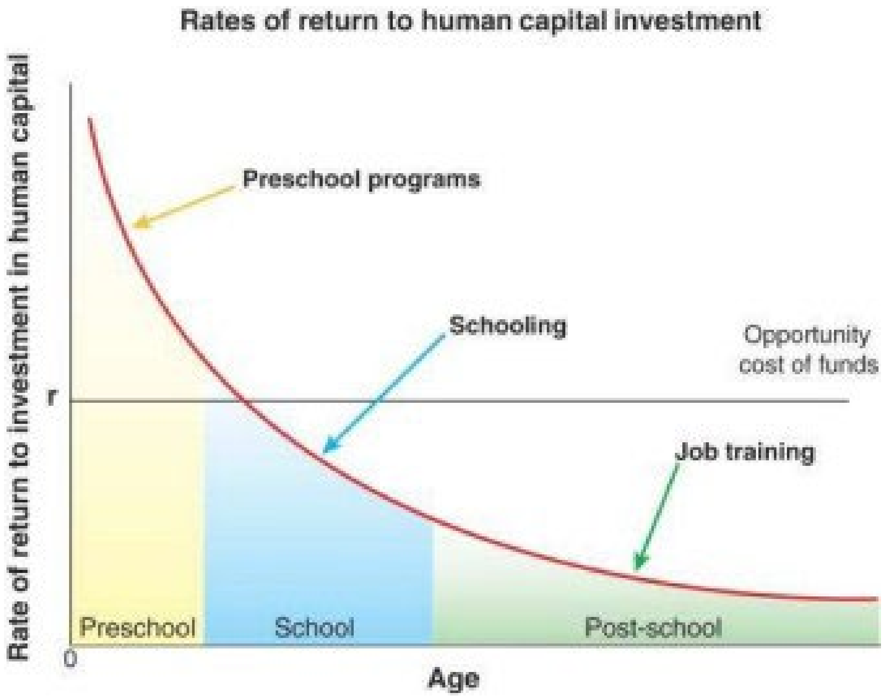

Figure 1

स्रोत : Heckman, J.J. (2006). Skill formation and the economics of investing in disadvantaged children. Science, Vol, 312. https://jenni.uchicago.edu/papers/Heckman_Science_v312_2006.pdf

प्रारम्भिक बाल्यावस्था के कार्यक्रमों के तीन गहन अध्ययनों ने प्रतिभागियों और सामान्य जन को बड़े पैमाने पर प्रतिफल दिया, जो निवेश किए गए प्रत्येक अमरीकी डॉलर के लिए अमरीकी डालर 3.23 से अमरीकी डालर 9.20 तक था।[23]

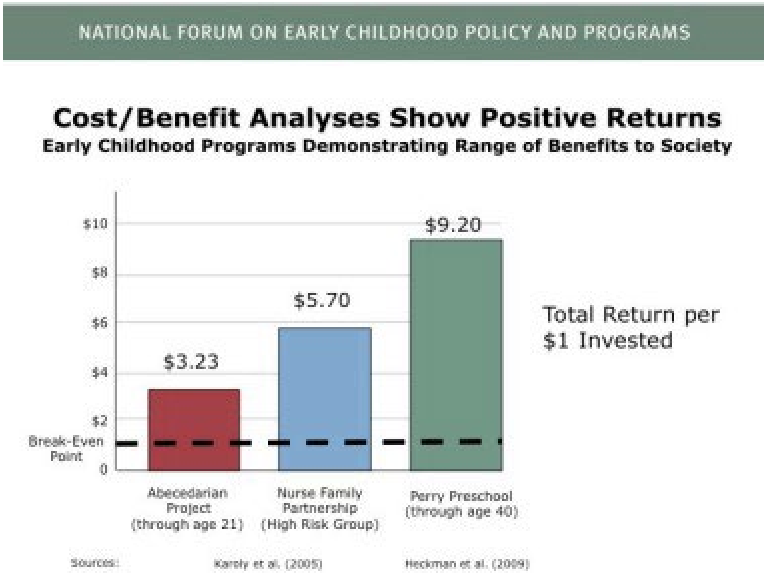

Figure 2

स्रोत: Center on the Developing Child. Harvard University. (2007). Early childhood program effectiveness. Accessed at https://46y5eh11fhgw3ve3ytpwxt9r-wpengine.netdna-ssl.com/ wp- content/uploads/2015/05/inbrief-programs-update-1

अन्य अध्ययनों ने भी ECCE पर निवेश पर प्रतिफल के लिए इसी तरह के आँकड़ों का हवाला दिया है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा के लिए 7% और 18% के बीच मुद्रास्फीति के लिए समायोजित प्रतिफल की वार्षिक दर का अनुमान लगाया गया था। इसे 1985 में शुरू हुए एक अनुदैर्ध्य अध्ययन (Longitudinal Study) द्वारा रिपोर्ट किया गया, और पाया गया कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा में निवेश किए गए प्रत्येक डॉलर के परिणामस्वरूप निवेश पर लगभग सात डॉलर का प्रतिफल प्राप्त हुआ।[24]

पारिभाषिक शब्दावली

1. आँगनवाड़ी - बच्चों की देखभाल के केन्द्र जो पूरे देश में छह साल से कम उम्र के बच्चों, माताओं और किशोरों को स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण सेवाएँ प्रदान करते हैं तथा जो एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना के तहत स्थापित हैं।
2. सन्तुलित पद्धति (Balanced approach) - साक्षरता शिक्षण की एक पद्धति, जो डिकोडिंग (नीचे देखें) के लिए स्पष्ट निर्देश और प्रस्तुत टेक्स्ट के अर्थ-निर्माण (नीचे देखें) के माध्यम से लिपि सीखने को सन्तुलित करता है।
3. बालवाटिका - 5-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए कक्षा 1 से पहले एक वर्षीय preparatory कक्षा; यह आँगनवाड़ी, प्री-स्कूल, प्राइमरी स्कूल या किसी अन्य रूप में हो सकती है।
4. बालवाड़ी - पूरे देश में दूरदराज़ के क्षेत्रों में परिवारों और समुदायों को एकीकृत शिक्षा, स्वास्थ्य और देखभाल प्रदान करने के लिए केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की एक योजना के तहत स्थापित एक प्री-स्कूल; इसे ग़ैर-सरकारी निकायों द्वारा भी स्थापित किया जा सकता है।
5. बुनियादी शिक्षा - इसका तात्पर्य वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के आधार पर उत्पादक कार्य के आस-पास केन्द्रित स्कूली पाठ्यचर्या के उस गाँधीवादी प्रस्ताव से है, जो समग्र विकास और सीखने की ओर बढ़ाता है; इसे नई तालीम के नाम से भी जाना जाता है।
6. देखभाल - किसी चीज़ या किसी के प्रति रुचि या चिन्ता व्यक्त करने वाला व्यवहार; कोई भी गतिविधि जो लोगों के बीच अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने, बनाए रखने और सुधारने का प्रयास करती है।
7. संज्ञानात्मक - सोचने/चिंतन और तर्क की प्रक्रियाओं से सम्बन्धित या इसे शामिल करती कोई भी मानसिक गतिविधि।
8. दक्षताएँ - ये सीखने की वे उपलब्धियाँ हैं जिनका अवलोकन और व्यवस्थित आकलन किया जा सकता है।
9. प्रिंट की अवधारणाएँ (या प्रिंट जागरूकता) - यह छपे हुए texts कैसे काम करते हैं, के बारे में जागरूकता है। अन्य बातों के अलावा इसमें यह ज्ञान भी शामिल है कि किताबें किसलिए हैं, छपे हुए टेक्स्ट को किस दिशा से किस दिशा में पढ़ा जाता है। इसमें लेखन के अन्य नियमों जैसे शब्दों के बीच की जगह और विराम चिह्नों का ज्ञान भी शामिल है।
10. Creche - जब बच्चों के माता-पिता व्यस्त होते हैं, ख़ासकर काम पर गए हुए होते हैं, उस समय इस जगह पर दिन में छोटे बच्चों की देखभाल की जाती है।
11. पाठ्यचर्या के उद्देश्य - ये ऐसे विवरण हैं जो पाठ्यचर्या विकास और क्रियान्वयन को दिशा देते हैं।
12. डिकोडिंग - पढ़ना सीखने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण कौशल है। यह लिपि के अक्षरों और भाषा की ध्वनियों के बीच समुचित सम्बन्ध बनाने की क्षमता है। लिखित रूप में प्रस्तुत पूर्ण शब्दों को बोलने के लिए यह क्षमता आवश्यक है।
13. विकासात्मक विलम्ब - यह किसी आयु वर्ग के बच्चों से संबंधित मानदण्डों के अनुसार बच्चे के विकास में विलम्ब को सन्दर्भित करता है। यह विलम्ब motor function, भाषा और बोलने, संज्ञानात्मक कौशल व सामाजिक कार्यों आदि में हो सकता है।
14. विकासात्मक प्रतिफल - व्यवहार जो विकास और परिपक्वता की प्रक्रिया के परिणाम हैं।
15. विकासात्मक क्षेत्र - विकास और प्रगति के क्षेत्र, अर्थात शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, संज्ञानात्मक और भाषा अर्जन।
16. प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा - जन्म से आठ वर्ष तक बच्चों की देखभाल और शिक्षा।

17. आरंभिक भाषा (Early Language) - जीवन के पहले कुछ वर्षों में बच्चे का भाषा सीखना, जिसमें मौखिक कौशल अर्जित करने, उच्चारण और स्वर का अभ्यास करने तथा नई ध्वनियों, शब्दों और भाषा के नियम सीखने की रुचि होती है और उस पर ज़ोर दिया
जाता है।
18. उद्गामी साक्षरता (Emergent Literacy) - सीखने का शुरुआती चरण जहाँ बच्चे पढ़ने और लिखने में संलग्न होते हैं। स्कूल में औपचारिक रूप से इन कौशलों से परिचित होने से पहले की अवस्था।
19. उद्गामी संख्या ज्ञान (Emergent Numeracy) - सीखने का शुरुआती चरण जहाँ बच्चे बुनियादी संख्या अवधारणाओं और गणना कौशलों में संलग्न होते हैं। स्कूल में औपचारिक रूप से इनसे परिचित होने से पहले की अवस्था।
20. भावनात्मक बुद्धिमत्ता - अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, उनका प्रबन्धन करने और सामाजिक नियमों के प्रति सकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया देने की क्षमता।
21. इनकोडिंग - किसी लिपि में ध्वनियों और प्रतीकों के बीच सम्बन्ध की समझ का उपयोग, विचार या सुनी गई भाषा से अक्षर, शब्द और वाक्य लेखन में करने का कौशल और क्षमता।
22. अनुभवात्मक अधिगम - वास्तविक जीवन की स्थितियों जैसे अनुभवों के ज़रिए गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया।
23. सूक्ष्म मोटर कौशल (Fine Motor skills) - सटीक गति के लिए हाथों और कलाई की छोटी मांसपेशियों का उपयोग करने की क्षमता।
24. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान - (FLN) - बुनियादी लिखित या पाठ्य सामग्री को पढ़ने और जोड़-घटाव जैसी मूलभूत गणितीय समस्याओं को हल करने की किसी बच्चे की क्षमता।
25. फाउंडेशनल स्टेज - 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा का चरण।
26. मुक्त खेल - शिक्षक द्वारा विकसित उत्प्रेरक वातावरण में बच्चों के नेतृत्व वाला, बच्चों द्वारा निर्देशित खेल।
27. मुक्त लेखन - लेखन गतिविधि का एक रूप जहाँ लेखक रूप, व्याकरण और शैली की चिन्ता किए बिना स्वतःस्फूर्त ढंग से और लगातार लिखता है।
28. मार्गदर्शित खेल - शिक्षक के मार्गदर्शन और मदद के साथ बच्चों के नेतृत्व वाले खेल।
29. समग्र विकास - किसी व्यक्ति में बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, नैतिक और भावनात्मक क्षमताओं का विकास।
30. समग्र प्रगति कार्ड - सीखने की उपलब्धि और विकास के सभी क्षेत्रों में बच्चे के सीखने और प्रगति का रिकॉर्ड।
31. घर की भाषा - बच्चे के घर में सदस्यों के बीच बोली जाने वाली भाषा(एँ)।
32. परिकल्पना - एक विचार जो किसी चीज़ के सम्भावित स्पष्टीकरण के लिए सुझाया गया है लेकिन अभी तक सच या सही नहीं पाया गया है।
33. समावेशन - शामिल करने का काम; यह सुनिश्चित करना कि बच्चों के व्यक्तिगत सीखने के अन्तर की परवाह किए बिना, उनके पास सभी स्कूल और कक्षा-कक्षीय प्रक्रियाओं में भाग लेने के समान अवसर हैं।
34. Integral Education - बच्चा जिसका पहले से ही हिस्सा है, उस सन्दर्भ से किसी नए ज्ञान को जोड़ने और बच्चों की मातृभाषा के उपयोग के ज़रिये बच्चों को ख़ुद को खोजने और अपनी वास्तविक क्षमता हासिल करने में मार्गदर्शन करना।
35. Integrated Learning - पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों के अन्तर्सम्बन्धों पर ध्यान केंद्रित करते हुए सीखने का एक समग्र दृष्टिकोण।

36. सीखने की उपलब्धियाँ - किसी भी क्षेत्र में सीखने के प्रतिफलों और सम्बन्धित दक्षताएँ प्राप्त करने की दिशा में प्रगति का विस्तार।
37. सीखने के प्रतिफल - ये ज्ञान, कौशलों, अभिवृत्तियों और मूल्यों के सार प्रस्तुत करने वाले कथन हैं, जो सभी बच्चों के पास अवश्य होने चाहिए, और सीखने के अनुभव या सीखने के अनुभवों के अनुक्रम के पूरा होने पर उन्हें प्रदर्शित करना चाहिए।
38. Learning trajectories - दक्षताओं को प्राप्त करने का विकासात्मक मार्ग।
39. गणितीय समझ - इसमें गणितीय ज्ञान के अर्थ और लक्ष्यार्थ (connotation) जानना और समझना शामिल है।
40. अर्थ निर्माण - यह भाषा और साक्षरता विकास के सन्दर्भ में, सुने या पढ़े जा रहे का अर्थ समझने के लिए श्रोता / पाठक की सक्रिय भागीदारी है।
41. बहुभाषिकता - यह शिक्षण और सीखने के सन्दर्भ में सम्प्रेषण के लिए घर की भाषा के अलावा कई भाषाओं का ज्ञान और सक्रिय उपयोग है।
42. एक-एक की संगति (One-to-one correspondence) - छोटे बच्चों में एक कौशल जिसमें समूह की हर वस्तु को गिनना शामिल है, इसमें हर एक वस्तु की एक संख्या नाम के साथ केवल एक बार गिनती की जाती है।
43. फोनिक्स - मेल खाती ध्वनियों के साथ अक्षरों की डिकोडिंग सिखाने की एक विधि।
44. ध्वनि जागरूकता - किसी बोले गए शब्द में ध्वनियों को पहचानने और भेद करने की क्षमता।
45. सीखने की सकारात्मक आदतें - ये सीखने की आदतें हैं जो बच्चों को स्कूली कक्षा जैसे औपचारिक सीखने के वातावरण में सक्रिय संलग्नता के लिए सक्षम बनाती हैं।
46. साक्षरता-पूर्व (Pre-literacy) - ये शुरुआती दौर में पढ़ने की तैयारी (reading-readiness) के व्यवहार और कौशल हैं, जो बच्चे को बाद में सफलतापूर्वक पढ़ने की क्षमता विकसित करने में सक्षम बनाते हैं।
47. संख्या-पूर्व (Pre-numeracy) - ये शुरुआती दौर में गिनने,, संख्याओं की पहचान व मात्राओं की तुलना करने की संख्या-तैयारी (number-readiness) के व्यवहार व कौशल हैं जो एक बच्चे को बाद में सफल गणना क्षमताएँ विकसित करने में सक्षम बनाते हैं।
48. प्रिपरेटरी स्टेज - 8 से 11 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए चरण; कक्षा 3-5 के लिए।
49. प्री-स्कूल - 6 साल और उससे कम उम्र के बच्चों के लिए शिक्षा प्रदान करने वाला स्कूल।
50. सुरक्षा - यह जोखिम का आकलन है, और नुकसान, ख़तरे या चोट से किसी व्यक्ति का सक्रिय बचाव है।
51. सम्बलन (Scaffolding) - सहयोग का विशिष्ट और व्यवस्थित रूप है जो किसी विशेष अवधारणा को सीखने में बच्चों की मदद करने के लिए बनाया जाता है।
52. स्कूल की भाषा - स्कूल में उसके सदस्यों के बीच बोली जाने वाली भाषा।
53. स्कूल preparedness - इच्छा / खुलेपन के साथ सीखने के शुरुआती अनुभवों से जुड़ने और उनका लाभ उठाने के लिए स्कूल में प्रवेश करने वाले बच्चों की तैयारी; इसे स्कूल रेडीनेस के रूप में भी जाना जाता है।
54. ख़ुद की देखभाल - ख़ुद के स्वास्थ्य, भलाई और विकास के प्रति रुचि या चिन्ता के नाते किए गए व्यवहार।
55. Separation anxiety - माता-पिता या किसी अन्य संलग्न व्यक्ति से बिछड़ने होने के दौरान कुछ बुरा होने का तीव्र या लम्बे समय तक डर।
56. स्थानिक कौशल - वस्तुओं, आकृतियों और स्थानों के सादृश्यीकरण (visualisation) और उनमें हेरफेर करने की मानसिक क्षमता।

57. उत्प्रेरणा (Stimulation) - बच्चों के साथ खेलने, पढ़ने और गाने जैसी सरल गतिविधियाँ, जो छोटे बच्चों की सोचने, सम्प्रेषण और दूसरों के साथ जुड़ने की क्षमता में सुधार करती हैं।
58. संरचित खेल - शिक्षक के नेतृत्व वाला खेल जिसमें बच्चे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
59. Subitizing - बिना गिने किसी समूह में चीजों की संख्या को सटीकता से समझने की क्षमता, आमतौर पर जब वस्तुएँ कम संख्या में हों।
60. सिनैप्टिक सह-संबंध (Synaptic connections) - ये सीखने और स्मृति को संभव बनाने वाली न्यूरॉन्स (तंत्रिका आवेगों को संचारित करने वाली तंत्रिका कोशिकाएँ) के बीच स्थानिक लिंक हैं।
61. सकल शारीरिक प्रतिक्रिया - (Total Physical Response – TPR) - मौखिक इनपुट के साथ-साथ या इस पर प्रतिक्रिया स्वरूप शारीरिक गतियों का उपयोग करते हुए भाषा या शब्दावली सिखाने की एक विधि।
62. शब्दावली - यह शब्दों (a body of words) और उन शब्दों के अर्थ को जानना है। भाषा और साक्षरता विकास के सन्दर्भ में, शब्दावली उन शब्दों के समूह (the set of words) की तरफ़ भी इशारा करती है, जिन्हें बच्चा समझता है।
63. समग्र भाषा पद्धति (Whole language approach) - भाषाओं के शिक्षण का एक दर्शन और पद्धति जहाँ किसी विशेष भाषा को अनुभवात्मक और सामाजिक तरीक़ों से अधिक समग्रता में सिखाया जाता है, इसमें भाषा के हिस्सों (ध्वन्यात्मक संरचनाएँ, व्याकरण और शब्दावली) को एक के बाद दूसरे के क्रम में नहीं पढ़ाया जाता।

सन्दर्भ (References)

1. Ministry of Education (2018-19). UDISE Data, New Delhi. Ministry of Education http://udise.in/flash.htm
2. Ministry of Women and Child Development. (2013). Draft National Early Childhood Care and Education Policy. New Delhi. Ministry of Women and Child Development. https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Early%20Childhood%20Care%20and%20Education-Resolution.pdf
3. Government of India (2022). Lok Sabha Unstarred Question no. 2146. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/179/AU2146.pdf
4. Ministry of Education (2020-21). UDISE Data, New Delhi. Ministry of Education https://dashboard.udiseplus.gov.in/#/home
5. Ministry of Health and Family Welfare. (2022). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019-20. http://rchiips.org/nfhs/NFHS-5_FCTS/India.pdf
6. Ministry of Education. (2021), 'Students' and Teachers' Holistic Advancement through Quality Education (SARTHAQ)'. New Delhi, Ministry of Education. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/SARTHAQ_Part-1_updated.pdf
7. Government of India (2020). Lok Sabha Unstarred Question no. 3980. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/175/AU3980.pdf
8. NCTE. (2020). List of recognised teacher education institutions. https://www.ncte.gov.in/website/RecognizedInstitutions.aspx
9. Ministry of Education. (2022). National Achievement Survey. National Report NAS 2021. https://nas.gov.in/download-national-report
10. Fisher, D. & Frey, N. (2013). Better Learning Through Structured Teaching: A Framework for the Gradual Release of Responsibility. Association for Supervision and Curriculum Development (ASCD).
11. UNICEF & Language and Learning Foundation. (2019). Manual for Early Language and Literacy. UNICEF
12. Fan, L. (2010). Principles and Processes for Publishing Textbooks and Alignment with Standards: A Case in Singapore. Paper presented at APEC Conference on Replicating Exemplary Practices in Mathematics Education, Koh Samui, Thailand, 7-12 Mar. 201.
13. Center on the Developing Child at Harvard University. In Brief: The Science of Early Childhood Development. (n.d.-b). Retrieved September 13, 2022, from https://developingchild.harvard.edu/resources/inbrief-science-of-ecd/
14. Heckman, J. J. (2000). Policies to foster human capital. *Research in Economics*, *54*(1), 3–56. https://doi.org/10.1006/reec.1999.0225
15. Kaul, V., Ramachandran, C., & Upadhyaya, G. C. (1994). A study of impact of preschool education on retention in primary grades. *National Council of Educational Research &Training*.
16. Hazarika, G., & Viren, V. (2013). The effect of early childhood developmental program attendance on future school enrolment in rural North India. *Economics of Education Review*, *34*, 146–161. https://doi.org/10.1016/j.econedurev.2013.02.005

17. Meenai, Z., Sen, R. S., & Firdos, S. (2015). Quality enhancement of preschool education component of ICDS through implementation of restructured curriculum in three states. In S. Azmat (Ed.), *Early learning perspectives to early childhood education (Early Childhood Development Knowledge Series)* (pp. 191–202). Global Books Organisation.

18. Kaul, V., Chaudhary, A.B., Sharma, S. (2017). *Quality and diversity in early childhood education.* Centre for Early Childhood Education and Development, Ambedkar University

19. Rao, N., & Sun, J. (2015). Quality early childhood care and education in low-resource level countries in Asia. In P. T. M. Marope & Y. Kaga (Eds.), *Investing against evidence: The global state of early childhood care and education* (pp. 211-230). UNESCO.

20. Dhingra, R., & Sharma, I. (2011). Assessment of Preschool Education Component of ICDS Scheme in Jammu District. 7. *Global Journal of Human Social Science.* https://globaljournals.org/GJHSS_Volume11/2-Assessment-of-Preschool-Education-Component-of-ICDS-Scheme-in.pdf

21. García, J.L., Heckman, J.J., Leaf, D.E., Prados, M.J. (2017). *Quantifying the life-cycle benefits of a prototypical early childhood program. Working Paper* 23479. National Bureau of Economic Research Working Paper Series. https://heckmanequation.org/www/assets/2017/01/w23479.pdf

22. Heckman, J.J. (2006). Skill formation and the economics of investing in disadvantaged children. Science*, Vol, 312.* https://jenni.uchicago.edu/papers/Heckman_Science_v312_2006.pdf

23. Center on the Developing Child. Harvard University. (2007). *Early childhood program effectiveness.*Accessed at https://46y5eh11fhgw3ve3ytpwxt9r-wpengine.netdna-ssl.com/wp- content/uploads/2015/05/inbrief-programs-update-1.pdf

24. Quinton, S. (2013). What San Antonio has to teach Washington. *National Journal*, *36*.

ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. Barrett, P., Treves, A., Shmis, T., Ambasz, D., & Ustinova, M. (2019). *The Impact of School Infrastructure on Learning: A Synthesis of the Evidence*. World Bank. https://doi.org/10.1596/978-1-4648-1378-8
2. Basham, A. L. (2004). *The Wonder That Was India: Volume 1* (Indian edition). Picador.
3. Bhattacharjea, S., & Ramanujan, P. (2019). *What do children in rural India do in their early years?* Ideas For India. Retrieved September 14, 2022, from http://www.ideasforindia.in/topics/macroeconomics/what-do-children-in-rural-india-do-in-their-early-years.html
4. Brozak, J. (2017). The Importance of a Low Student to Teacher Ratio. https://classroom.synonym.com/disadvantages-teaching-small-class-7324788.htm
5. Carpenter, T. P., & Lehrer, R. (1999). Teaching and Learning Mathematics with Understanding. In E. Fennema, & T. A. Romberg, Mathematics Classrooms That Promote Understanding. Routledge.
6. Center on the Developing Child at Harvard University. (n.d.-a). In Brief: The Science of Early Childhood Development. Retrieved September 13, 2022, from https://developingchild.harvard.edu/resources/inbrief-science-of-ecd/
7. Center on the Developing Child at Harvard University. (n.d.-b). In Brief: Early Childhood Program Effectiveness. University. Retrieved September 13, 2022, from https://developingchild.harvard.edu/resources/inbrief-early-childhood-program-effectiveness/
8. Cummins, J. (2008). BICS and CALP: Empirical and Theoretical Status of the Distinction. Street, B. & Hornberger, N. H. (Eds.). Encyclopedia of Language and Education, 2nd Edition, Volume 2: Literacy. (pp. 71-83). Springer Science + Business Media LLC. .
9. Danniels, E., & Pyle, A. (2018). Defining Play-based Learning. 7. https://www.child-encyclopedia.com/pdf/expert/play-based-learning/according-experts/defining-play-based-learning
10. Department of Education Australia . (n.d.) Play-based learning. https://earlychildhood.qld.gov.au/earlyYears/Documents/age-appropriate-pedagogies-play-based-learning.PDF
11. Dhingra, R., & Sharma, I. (2011). Assessment of Preschool Education Component of ICDS Scheme in Jammu District. 7. Global Journal of Human Social Science. https://globaljournals.org/GJHSS_Volume11/2-Assessment-of-Preschool-Education-Component-of-ICDS-Scheme-in.pdf
12. Directorate of School Education, Puducherry. (2021).*Preschool Curriculum Framework.*
13. Dweck, C. S., & Yeager, D. S. (2012). Mindsets That Promote Resilience: When Students Believe That Personal Characteristics Can Be Developed. *Educational Psychologist*, 47-51.
14. Eisner, E. W. (2002). *The Arts and the Creation of Mind*. Yale University Press.
15. Ellis, G., & Brewster, J. (2014). *Tell it again! The storytelling handbook for primary English language teachers*. British Council. https://www.teachingenglish.org.uk/sites/teacheng/files/pub_D467_Storytelling_handbook_FINAL_web.pdf
16. Fan, L. (2010). Principles and Processes for Publishing Textbooks and Alignment with Standards: A Case in Singapore. *Paper presented at APEC Conference on Replicating Exemplary Practices in Mathematics Education, Koh Samui, Thailand, 7-12 Mar. 201*.

17. Fennema, E., & Romberg, T. A. (1999). *Mathematics Classrooms That Promote Understanding*. Routledge.
18. Ganimian, A. J., Muralidharan, K., & Walters, C. R. (2021). Augmenting State Capacity for Child Development: Experimental Evidence from India. *NBER Working Paper No. 28780*. https://econweb.ucsd.edu/~kamurali/papers/Working%20Papers/w28780.pdf
19. García, J. L., Heckman, J. J., Leaf, D. E., & Prados, M. J. (2016). *The Life-cycle Benefits of an Influential Early Childhood Program* [Working Paper]. National Bureau of Economic Research. https://doi.org/10.3386/w22993
20. Gordon, A. M., & Browne, K. W. (2010). *Beginnings and Beyond: Foundations in Early Childhood Education* (8th edition). Wadsworth Pub Co.
21. Government of India. (2012). The Protection of Children from Sexual Offences Act, 2012. https://wcd.nic.in/sites/default/files/POCSO%20Act%2C%202012.pdf
22. Government of India. (2016). The Rights of Persons with Disability Act, 2016. http://www.disabilityaffairs.gov.in/upload/uploadfiles/files/RPWD%20ACT%202016.pdf
23. Government of India. (2020). Lok Sabha Unstarred Question no. 3980. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/175/AU3980.pdf
24. Government of India. (2021). Lok Sabha Unstarred Question no. 3068. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/176/AU3068.pdf
25. Government of India. (2022). Lok Sabha Unstarred Question no. 2146. http://164.100.24.220/loksabhaquestions/annex/179/AU2146.pdf
26. Gupta, A. (2013). *Early Childhood Education, Postcolonial Theory, and Teaching Practices and Policies in India: Balancing Vygotsky and the Veda* (revised edition). Palgrave Macmillan.
27. Gupta, A., & Williams, L. (2006). *Early Childhood Education, Postcolonial Theory, and Teaching Practices in India Balancing Vygotsky and the Veda*. Saint Martin's Press Inc. http://www.palgraveconnect.com/doifinder/10.1057/9780312376345
28. Gupta, V., & Samant, S. (2017). *Using Child Assessments to Improve Program Quality*. https://www.linkedin.com/pulse/using-child-assessments-improve-program-quality-vini-gupta
29. Hazarika, G., & Viren, V. (2013). The effect of early childhood developmental program attendance on future school enrollment in rural North India. *Economics of Education Review*, *34*, 146–161. https://doi.org/10.1016/j.econedurev.2013.02.005
30. Heckman, J. J. (2000). Policies to foster human capital. *Research in Economics*, *54*(1), 3–56. https://doi.org/10.1006/reec.1999.0225
31. Heckman, J. J. (2006). Skill Formation and the Economics of Investing in Disadvantaged Children. *Science*, *312*(5782), 1900–1902. https://doi.org/10.1126/science.1128898
32. International Institute for Population Sciences (IIPS) and ICF. (2021). *National Family Health Survey (NFHS-5)*, 2019-20. https://dhsprogram.com/pubs/pdf/FR375/FR375.pdf
33. Kapur, A., & Shukla, R. (2022). Saksham Anganwadi and POSHAN 2.0. *Accountability Initiative: Responsive Governance*. https://accountabilityindia.in/publication/saksham-anganwadi-budget-briefs-2022-accountability-initiative-centre-for-policy-research/
34. Kapur, M. (n.d.). *Child care in ancient India*: *A life span approach.* Retrieved September 13, 2022, from https://ipi.org.in/texts/others/malvikakapur-childcare-sp.php

35. Kaul, V. (2019). Introduction: Positioning School Readiness and Early Childhood Education in the Indian Context. In V. Kaul & S. Bhattacharjea (Eds.), *Early Childhood Education and School Readiness in India* (pp. 3–18). Springer Singapore. https://doi.org/10.1007/978-981-13-7006-9_1

36. Kaul, V., Chaudhary, A.B., Sharma, S. (2017). *Quality and diversity in early childhood education.* Centre for Early Childhood Education and Development, Ambedkar University

37. Kaul, V., Ramachandran, C., & Upadhyaya, G. C. (1994). A study of impact of preschool education on retention in primary grades. *National Council of Educational Research and Training*.

38. Kostelnik, M. J. (1998). *Guiding Children's Social Development*. Delmar Publishers.

39. Lancet. (2016). *Advancing Early Childhood Development: from Science to Scale*. An Executive Summary for The Lancet's Series. https://els-jbs-prod-cdn.jbs.elsevierhealth.com/pb-assets/Lancet/stories/series/ecd/Lancet_ECD_Executive_Summary-1507044811487.pdf

40. Meenai, Z., Sen, R. S., & Firdos, S. (2015). Quality enhancement of preschool education component of ICDS through implementation of restructured curriculum in three states. In S. Azmat (Ed.), *Early learning perspectives to early childhood education (Early Childhood Development Knowledge Series)* (pp. 191–202). Global Books Organisation.

41. Menon, S., & Das, H. V. (2019). Comprehensive literacy instruction model in Indian classrooms. *Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad*,.23. http://eli.tiss.edu/wpcontent/uploads/2017/08/Comprehensive_Literacy_Practitioner_Brief_12_PDF.pdf

42. Ministry of Education. (2016-17). *UDISE Data*. http://udise.in/flash.htm

43. Ministry of Education. (2018-19). *UDISE Data*. http://udise.in/flash.htm

44. Ministry of Education. (2019). *Draft National Education Policy 2019. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/Draft_NEP_2019_EN_Revised.pdf*

45. Ministry of Education. (2020*). National Education Policy 2020*. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

46. Ministry of Education. (2020-21). *UDISE Data*. https://dashboard.udiseplus.gov.in/#/home

47. Ministry of Education. (2022). *Prashast - A Disability Screening Checklist for Schools*. https://ncert.nic.in/pdf/DSCS_booklet.pdf

48. Ministry of Education.(2021). *'Students' and Teachers' Holistic Advancement through Quality Education (SARTHAQ)'*. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/SARTHAQ_Part-1_updated.pdf

49. Ministry of Education.(2021). *NIPUN Bharat. National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy (NIPUN Bharat): Guidelines for Implementation.*https://nipunbharat.education.gov.in/fls/fls.aspx

50. Ministry of Education.(2022).*Toy-Based Pedagogy -A Handbook- Learning for Fun, Joy and Holistic Development*. https://dsel.education.gov.in/sites/default/files/update/toy_based_pedagogy.pdf

51. Ministry of Women and Child Development. (2016). *National Plan of Action for Children, 2016 Safe Children- Happy Childhood*. https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Plan%20of%20Action%202016.pdf

52. Ministry of Women and Child Development. (2017).*Pre-School Education Kit (PSE Kit) Recommended list of play and learning materials.* https://wcd.nic.in/sites/default/files/Pre-School%20Education%20Kit.pdf

53. Ministry of Women and Child Development.(2013). *Draft National Early Childhood Care and Education Policy.* https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Early%20Childhood%20Care%20and%20Education-Resolution.pdf

54. Ministry of Women and Child Development.(2014). *Early Childhood Care and Curriculum Framework.* https://wcd.nic.in/sites/default/files/national_ecce_curr_framework_final_03022014%20%282%29.pdf

55. Ministry of Women and Child Development.(2014). *Early Childhood Care and Curriculum Framework.* https://wcd.nic.in/sites/default/files/national_ecce_curr_framework_final_03022014%20%282%29.pdf

56. Morrison, G. S. (2012). *Early Childhood Education Today Plus NEW MyEducationLab with Pearson eText—Access Card Package* (12th edition). Pearson.

57. Nag, S. (2007). Early reading in Kannada: the pace of acquisition of orthographic knowledge and phonemic awareness. *Journal of Research in Reading, ISSN 0141-0423, Volume 30, Issue 1*, 7-22.

58. Nanda, M., Banerji, M., Ramanujan, P., Chaudhary, A. B., Bhattacharjea, S., & Kaul, V. (2017). *The India Early Childhood Education Impact Study*. UNICEF. https://www.unicef.org/india/media/2076/file

59. National Council for Teacher Education (NCTE). (2022). Recognised Institutions. Eastern Regional Committee. NCTE. https://ncte.gov.in/website/ercrecognizedInstitutions.aspx

60. National Research Council. (1999). *How People Learn: Brain, Mind, Experience, and School: Expanded Edition*. https://doi.org/10.17226/9853

61. NCERT. (2005). *National Curriculum Framework 2005.* https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005-english.pdf

62. NCERT. (2006). *National Focus Group on Early Childhood Education*. https://ncert.nic.in/pdf/focus-group/early_childhood_education.pdf

63. NCERT. (2008). *Early Childhood Education. An Introduction*. https://ncert.nic.in/dee/pdf/Earlychildhood.pdf

64. NCERT. (2017). *Learning Outcomes at the Elementary Stage*. https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/tilops101.pdf

65. NCERT. (2020). *Guidelines for Preschool Education*. https://ncert.nic.in/dee/pdf/guidelines-for-preschool.pdf

66. NCERT.(2019). *The Preschool Curriculum*. https://ncert.nic.in/dee/pdf/Combined_Pre_school_curriculumEng.pdf

67. NCTE.(2010). Notification number F.No. 61 -03/20/2010/NCTE/(N&S). 2016-08-24 (1) (ncte.gov.in)

68. Nido Early School.(2017). *Project-Based Learning in Early Learning Centres*. https://www.poter.com.au/article/148/project-based-learning-in-early-learning-centres/

69. Nirmala, R., & Sun, J. (2015). Investing against evidence: The global state of early childhood care and education. In P. T. M. Marope & Y. Kaga (Eds.), *Quality early childhood care and education in low resource level countries in Asia*. UNESCO.

70. Pandey, S., & Kapur, A. (2022). Pradhan Mantri Poshan Shakti Nirman. *Accountability Initiative: Responsive Governance*. https://accountabilityindia.in/publication/pm-poshan-budget-briefs-2022-accountability-initiative-centre-for-policy-research/

71. Pinto, C. F., & Soares, H. (2012). *Using children's literature in ELT A story-based approach*. https://core.ac.uk/download/pdf/47141003.pdf

72. Prendergast, T., & Diamant-Cohen, B. (2015). Research Roundup: Investing in Early Childhood. *Children and Libraries*. https://journals.ala.org/index.php/cal/article/view/4189

73. Quinton, S. (2013). What San Antonio has to teach Washington. *National Journal*, *36*.

74. Rajesh, A., & Samant, S. P. (2017). Geet, Nacho, Gappo (Singing, Dancing, Storytelling): A route to joyful learning. In *Benefits of multilingual education.* Child Care Exchange.

75. Ramachandran, V., Das, D., Nigam, G., Shandilya, A. (2020). *Contract teachers in India. Recent status and current trends.* Azim Premji University. https://eruindia.org/files/Contract%20Teachers%20in%20India%202020.pdf

76. Rao, N. (2010). Preschool Quality and the Development of Children from Economically Disadvantaged Families in India. *Early Education and Development*, *21*(2), 167–185. https://doi.org/10.1080/10409281003635770

77. Rao, N., & Kaul, V. (2018). India's integrated child development services scheme: Challenges for scaling up: Integrated child development services. *Child: Care, Health and Development*, *44*(1), 31–40. https://doi.org/10.1111/cch.12531

78. Rao, N., & Sun, J. (2015). Quality early childhood care and education in low-resource level countries in Asia. In P. T. M. Marope & Y. Kaga (Eds.), *Investing against evidence: The global state of early childhood care and education.* UNESCO.

79. Research Group, Azim Premji University. (2021). *Issues in Education, Teachers and Teacher Education.* https://azimpremjiuniversity.edu.in/SitePages/research-projects.aspx

80. Research Group, Azim Premji University. (2014). *Pupil-Teacher Ratios in Schools and their Implications.* https://docplayer.net/10997038-Pupil-teacher-ratios-in-schools-and-their-implications-february-2014-azim-premji-foundation.html

81. Virginia Department of Education. (2022). *Standards of Learning (SOL) and Testing*. Retrieved September 13, 2022, from https://doe.virginia.gov/testing/index.shtml

82. Swaminathan, M. (2003). Training for Child Care and Education Workers in India. *International Journal of Early Years Education*, *2*, 67–76. https://doi.org/10.1080/09669760.2003.10807107

83. UNICEF. (2018). *Learning through play—Strengthening learning through play in early childhood education programmes*. (2018). UNICEF Education Section, Programme Division. https://www.unicef.org/sites/default/files/2018-12/UNICEF-Lego-Foundation-Learning-through-Play.pdf

84. Vidya Bharati. (2022). *Vidya Bharati*. Retrieved from Vidya Bharati: https://vidyabharti.net/

85. Yeager, D. S., & Dweck, C. S. (2012). Mindsets That Promote Resilience: When Students Believe That Personal Characteristics Can Be Developed. *Educational Psychologist*, *47*(4), 302–314. https://doi.org/10.1080/00461520.2012.722805

आभार

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति

- के. कस्तूरीरंगन (अध्यक्ष)
- नजमा अख़्तर
- टी. वी. कट्टीमनी
- मिलिन्द काम्बले
- धीर झींगरन
- माइकल दानिनो
- महेश चन्द्र पन्त
- मंजुल भार्गव
- शंकर मरुवाड़ा
- गोविन्द प्रसाद शर्मा
- एम. के. श्रीधर
- दिनेश प्रसाद सकलानी (सदस्य सचिव)
- जगबीर सिंह

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए अधिदेश समूह

- मंजुल भार्गव (अध्यक्ष)
- रंजना अरोड़ा
- बी. एन. गंगाधर
- धीर झींगरन
- माइकल दानिनो
- अनिरुद्ध देशपाण्डे
- अनुराग बेहार
- शंकर मरुवाड़ा
- के. रामचन्द्रन
- एम. के श्रीधर

एकीकरण समूह

- रंजना अरोड़ा
- अनिरुद्ध देशपाण्डे
- अनुराग बेहार
- मंजुल भार्गव

- एम. के. श्रीधर
- श्रीधर श्रीवास्तव
- दिनेश प्रसाद सकलानी

फाउंडेशनल स्टेज समूह

- टी. वी. कट्टीमनी
- आयुष्मान गोस्वामी
- अमरेन्द्र बेहरा
- पद्मा यादव
- के. रामचन्द्रन
- शशिकला वनजरी
- गोविन्द प्रसाद शर्मा

प्रिपरेटरी स्टेज समूह

- धीर झींगरन
- हर्षभाई पटेल
- अमरेन्द्र बेहरा
- के. रामचन्द्रन
- वाई. श्रीकान्त
- सुनीति सँवल

मिडिल स्टेज समूह

- मिलिन्द काम्बले
- माइकल दानिनो
- हर्षभाई पटेल
- एम. सी. पन्त
- प्रत्यूष कुमार मण्डल
- वाई. श्रीकान्त
- अंजुम सिबिआ

सेकेंडरी स्टेज समूह

- नजमा अख़्तर
- पी. सी. अग्रवाल
- माइकल दानिनो
- प्रत्यूष कुमार मण्डल

- मिलिन्द मराठे
- संध्या साहू
- जगबीर सिंह

शिक्षा मंत्रालय

- अनिता करवाल
- रजनीश कुमार
- लामचोंघोई स्वीटी चांग्सन

NCERT

- रंजना अरोड़ा
- आर. आर. कोइरेंग
- अमरेन्द्र बेहरा
- प्रत्यूष कुमार मण्डल
- पद्मा यादव
- सरयुग यादव
- श्रीधर श्रीवास्तव
- डी. पी. सकलानी
- सुनीति सँवल

NCF के लिए राष्ट्रीय फ़ोकस समूह

NCF के लिए राज्य फ़ोकस समूह

SCERTs और राज्यों के शिक्षा विभाग

बड़ी संख्या में शिक्षक, नागरिक समाज संगठन, स्कूल और 1.3 लाख से अधिक दूसरे हितधारक, जिन्होंने NCF के लिए ऑनलाइन सर्वेक्षण में भाग लिया

ज़िला स्तरीय परामर्शों के प्रतिभागी

समीक्षा समिति के सदस्य

अध्यक्ष के अलावा सभी नाम, उपनामों के अनुसार वर्णानुक्रम में हैं

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के विकास के लिए विस्तृत और समावेशी प्रक्रिया

NCF बनाने के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति (NSC) ने शिक्षा मंत्रालय और NCERT के साथ मिलकर एक विस्तृत, समावेशी और पुनरावृत्ति वाली प्रक्रिया निर्मित की। यह प्रक्रिया हमारे देश के विविध और जीवन्त शैक्षिक परिदृश्य से लाभान्वित हुई।

यह प्रक्रिया राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के साथ राज्य फ़ोकस समूहों की स्थापना के साथ शुरू हुई, जिसमें NCF के विकास के लिए प्रासंगिक 25 विषयों पर आधार पत्र लिखने के लिए 4000 से अधिक विशेषज्ञ शामिल थे। 32 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों द्वारा 500 से अधिक आधार पत्र प्रस्तुत किए गए।

इन 25 विषयों पर एक एकीकृत राष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ आधार पत्र विकसित करने के लिए 25 राष्ट्रीय फ़ोकस समूह भी बनाए गए।

देश भर से ज़िला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों (DIETs) ने 1550 से अधिक ज़िला परामर्श रिपोर्टें (DCR) प्रस्तुत कीं। शिक्षकों और शिक्षाविदों की राय प्राप्त करने के लिए एक मोबाइल सर्वेक्षण शुरू किया गया जिसमें 1,31,00 प्रतिभागियों ने अपने विचार साझा किए।

साथ ही, भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के साथ परामर्श बैठकें आयोजित की गईं ताकि उनकी दृष्टि को समझा जा सके और यह भी समझा जा सके कि उनकी दृष्टि को साकार करने के लिए शिक्षा कैसे महत्त्वपूर्ण है। ज़मीनी स्तर पर काम कर रहे ग़ैर सरकारी संगठनों और अन्य संस्थानों ने अपने अनुभव और सुझाव साझा किए। स्कूली शिक्षा से विद्वानों की क्या अपेक्षाएँ हैं, इस विषय में सुझाव के लिए विश्वविद्यालयों में संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं। शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों के साथ खुले परामर्श सत्रों का आयोजन किया गया। विभिन्न श्रेणियों में 100 प्रश्नों के माध्यम से भारत के नागरिकों की राय प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के लिए डिजिटल सर्वेक्षण (DiSaNC) शुरू किया गया था। इस मंच पर अब तक अभिभावकों और विद्यार्थियों सहित 10 लाख से अधिक इच्छुक नागरिकों ने अपनी राय दर्ज की है।

NSC ने हासिल सभी सुझावों का विश्लेषण-संश्लेषण करने और NCF बनाने के लिए एक सुगठित प्रक्रिया तैयार की।

इस प्रकार, यह NCF, शिक्षकों, अभिभावकों, राज्यों के प्रासंगिक सरकारी विभागों, प्रशासकों, स्कूलों, शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे ग़ैर सरकारी संगठनों, शिक्षाविदों, विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों व भारत के अन्य नागरिकों की सहभागिता से बनी गहन समावेशी प्रक्रिया का परिणाम है।

संस्करण 1.0

इस दस्तावेज़ को अद्यतन करना जारी रहेगा क्योंकि यह स्कूली शिक्षा के लिए समूची राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के साथ एकीकृत है और उसमें सम्मिलित है।

मानव जाति के हर दौर में ज्ञान, पिछली सभी पीढ़ियों द्वारा जो कुछ निर्मित हुआ, उसके योग का प्रतिनिधित्व करता है, वर्तमान पीढ़ी इसमें अपना योग देती है।

मोबियस पट्टी (Mobius strip) का रूपांकन ज्ञान की सतत, विकासशील और जीवंत प्रकृति का प्रतीक है - जिसका न कोई प्रारम्भ है, न अंत।

यह नीति इस सातत्य के एक भाग के रूप में ज्ञान के सृजन, संचरण, उपयोग और विस्तार की परिकल्पना करती है।

- NEP 2020

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
फाउंडेशनल स्टेज
2022